TEXT FLY WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178850

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—24—4-4-69—5,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83|T12N Accession No. G.H.817

Author ઠાકુર, રવીંદ્રનાથ

Title ગોળ કથાઓ

This book should be returned on or before the date last marked below.

नाव-दुर्घटना

सर्वश्रेष्ठ सामाजिक उपन्यास

लेखक—स्वर्गीय श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर

"नौकाडूबी" का अविकल अनुवाद

अनुवादक
श्रीकृष्ण बर्मा

प्रकाशक
शङ्कर सिंह
हिन्दी-पुस्तकालय बनारस ।

प्रकाशक
शङ्कर सिंह
हिन्दी-पुस्तकालय, [illegible]



द्वितीय बार १९४८
मूल्य सजिल्द ४)



मुद्रक—
कृष्णगोपाल केडिया
वणिक प्रेस,
साक्षीविनायक, बनारस।

दो शब्द

विश्व-साहित्य-संसदके अमरकलाकार तथा 'विश्वभारती' के अन्यतम संस्थापक दिवंगत रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी पीयूषवर्षिणी लेखनीके प्रति मुझ जैसे तुच्छ लेखकका कुछ लिखना देवप्रतिमाके सम्मुख सुगन्धिरागहीन करीलपत्र निवेदनके समान होगा। वह तो पटके अनुभवकी ही वस्तु है।

वास्तविकता तो यह है कि उसके ग्रन्थानुवादसे मैं स्वयं अपनेको कृतकृत्य बोध करता हूँ।

अनुवाद पाठकोंके सम्मुख है। अनुवादमें केवल एक ही बातकी चेष्टा की गयी है और वह यह, कि ठाकुर-महोदयके अनुपम सारगर्भ-शब्दोंका हनन किया नहीं गया है। मैं प्राचीन हिन्दी-सेवी हूँ; अतः आजकलके नवीन लेखकोंकी उस नीतिका मैं कायल नहीं, कि 'अनुवाद पूर्णतः अपनेमें मौलिक हो।' अतएव कुछ लोग यदि भाषापर कटाक्ष करें, तो कर सकते हैं। किन्तु मैं मूल लेखकके अनुपम शब्दों और भावोंका बलिदान कर नहीं सकता।

आशा है, रसज्ञ पाठक प्रस्तुत पुस्तकसे रस संग्रह करेंगे तथा आधुनिक उपन्यास लेखक मनस्तत्वकी निगूढ़ ग्रन्थियोंका उन्मूलन। यदि हमने कुछ भी इससे प्राप्त किया, तो यह वृद्ध लेखक अपने परिश्रमको सार्थक समझेगा।

विनीत—
श्रीकृष्ण बर्मा।

हिन्दी-साहित्य में क्रान्ति

स्वर्गीय रवीन्द्र नाथ ठाकुर लिखित अमूल्य पुस्तकें-

गीताञ्जलि—रवीन्द्रनाथ ठाकुरको पारितोषिक सवा लाख रुपया इसी पर अमरिकासे मिल चुका है जिस गीताञ्जलिकी चर्चा आज सारे संसारभरमें हो रही है, उसीका अविकल अनुवाद काव्यमें ही हो गया, इसमें अंग्रेजी गीताञ्जलि तथा बँगला दोनों ही का सम्पूर्ण अनुवाद शेष गीत तथा कविके स्वर्गारोहणके अवसर पर जो गीत पढ़ी गयी थी वह भी दे दी गयी हैं। साथ ही अंग्रेज विद्वान्की गीताञ्जलिकी महिमा-का वर्णन और श्री निरालाजीकी भूमिका और कविका चरित्र तथा चित्रके सहित अच्छे कागज पर लगभग ३५० पृष्ठोंकी सजिल्द पुस्तकका मूल्य केवल ४) रुपया मात्र है।

आँखकी किरकिरी—यह उच्चकोटिका सामाजिक उपन्यास है। इस पुस्तकके सम्बन्धमें कुछ कहना व्यर्थ है श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर जिस पुस्तकके लेखक हों फिर उसका क्या कहना है, मूल्य सजिल्दका ४)।

ठकुरानी बहूकी बाजार—यह भी श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरका ही लिखा ऐतिहासिक उपन्यास है। मू० सजिल्दका २)

पता—हिन्दी-पुस्तकालय

बुलानाला. बनारस।

नाव-दुर्घटना



१

रमेशके इस कानून-परीक्षामें पास होनेके सम्बन्धमें किसीको कोई सन्देह नहीं था। विश्वविद्यालयकी सरस्वती हमेशा अपने सुनहले कमलकी पंखड़ियोंको पसार रमेशको मेडल देती आई हैं—स्कालरशिप भी कभी खाली न गया।

परीक्षा पास करके अब उसका अपने घर जानेका विचार है। किन्तु अभीतक उसमें अपना ट्रङ्क सजानेका कोई उत्साह दिखाई न दिया; उसके पिताने शीघ्र घर चले आनेके लिये पत्र लिखा है। रमेशने जवाबमें लिखा है कि परीक्षाका फल प्रकट होते ही वह घर आयेगा।

अन्नदाबाबूका लड़का योगेन्द्र रमेशका सहपाठी है। बगलके मकानमें ही वह रहता है। अन्नदाबाबू ब्राह्मण हैं। उनकी कन्या हेमनलिनीने इस बार एफ० ए० की परीक्षा दी है। रमेश अन्नदाबाबूके घर चाय पीने अथवा योंही प्रायः जाया करता था।

हेमनलिनी स्नानके बाद बाल सुखाती हुई छतपर टहल-टहल कर पढ़ाई कण्ठस्थ किया करती थी। रमेश भी उसी समय अपने निवास-स्थानकी निर्जन छतकी निगोलपर एक किनारे किताब लेकर बैठा करता था। पढ़ाईके लिये ऐसा स्थान अनुकूल है सही; किन्तु जरा

विचार कर देखनेसे ही समझनेमें कठिनाई नहीं होती, कि बाधाएँ भी कम नहीं।

अबतक विवाहके बारेमें किसी तरफसे कोई प्रस्ताव नहीं हुआ। अन्नदाबाबूकी ओरसे प्रस्ताव न होनेका एक कारण था। एक लड़का बैरिष्टर होनेके लिये विलायत गया है; मन-ही-मन उसकी तरफ अन्नदा-बाबूका ध्यान है।

उस दिन चायके टेबिलपर एक बहस छिड़ गई। अक्षय अधिक पढ़ा न था; किन्तु इसी वजहसे उस बेचारेके चाय पीने या अन्यान्य श्रेणीके शोक. पास होनेवाले लड़कोंसे कुछ कम न थे। इसलिये हेमन-लिनीके चायके टेबिलपर कभी-कभी वह भी दिखाई दे जाता था। उसने बहस छेड़ी, कि पुरुषोंकी बुद्धि तलवार जैसी है; अधिक धार न रखी जानपर भी जरा सा दाब देनपर भी अनेक काम कर सकती है; औरतोंकी बुद्धि कलमतराश छुरी जैसी है; कितनी ही धार क्यों न धरी जाय उससे कोई बड़ा काम किया नहीं जा सकता – इत्यादि। हेमन-लिनी अक्षयकी इस बकवादकी चुपचाप उपेक्षा करनेको तैयार थी। किन्तु स्त्री-बुद्धिको कामयाब साबित करनेके पक्षमें उसका भाई योगेन्द्र भी युक्ति भिड़ाने लगा। तब रमेश अधिक बर्दाश्त कर न सका। वह उत्तेजित होकर स्त्री जातिका गुणगान करने लगा।

इस तरह रमेश जब नारी-भक्तिके लहराते हुए उत्साहमें और दिनों-से दो प्याले अधिक चाय पी गया, उस समय बैरा ने उसके हाथमें एक चिट्ठी दी। चिट्ठीकी बाहरी ओर उसके पिताके हाथसे उसका नाम लिखा था। चिट्ठी पढ़ते ही बहसको अधूरी ही छोड़ रमेश घबराकर उठ खड़ा हुआ। सबने पूछा,—'क्या बात है।' रमेशने कहा,—"देशसे पिताजी आये हैं।' हेमनलिनीने योगेन्द्रसे कहा,—"भैया, रमेशबाबू के पिताको यहाँ ही क्यों नहीं बुला लेते; यहाँ चाय आदि सब तैयार है।"

रमेश शीघ्रतासे बोल बैठा,—"नहीं, आज रहने दो, मैं जाता हूँ।"

अक्षय मन ही मन खुश होकर बोल बैठा,—"शायद यहाँ पीनेमें उन्हें आपत्ति हो सकती है।"

रमेशके पिता ब्रजमोहन बाबूने रमेशसे कहा,—"कल सवेरेकी गाड़ीसे ही तुम्हें देश चलना होगा।"

रमेशने सिर सुहलाते हुए पूछा,—"क्या कोई विशेष काम है?"

ब्रजमोहनने कहा,—"ऐसा कोई जरूरी नहीं।"

तब इतना आग्रह क्यों, यह जाननेके लिये रमेश अपने पिताके मुँहकी ओर देखता रहा; किन्तु उन्होंने उसके कौतूहलको दूर करनेकी कोई जरूरत न समझी।

जब सन्ध्या समय ब्रजमोहन बाबू कलकत्तेके अपने मित्रोंसे मिलनेके लिये बाहर निकले, तब रमेश उनके लिये एक पत्र लिखने बैठा। "श्रीचरण-कमलेषु प्रणाम" तक लिखनेके उपरान्त वह आगे कुछ न लिख सका। तब रमेश मन ही मन कहने लगा,—"मैं हेमनलिनीके बारेमें जिस बिना बचन दिये सत्यसे आबद्ध हो चुका हूँ, अब उसे पिताजीसे छिपाना किसी तरह भी उचित नहीं।" उसने कई चिट्ठियाँ कितने ही तरहसे लिखीं—किन्तु सबको फाड़कर फेंक दिया।

ब्रजमोहन भोजनकर आरामसे सो रहे। रमेश मकानकी छतपर चढ़ पड़ोसीके मकानकी ओर देखते हुए निशाचरोंकी तरह तेजीसे टहलने लगा।

रात नौ बजे अक्षय अन्नदाबाबूके घरसे निकला—रात नौ बजे उनका सदरी दरवाजा बन्द हुआ। रात दस बजेके समय अन्नदाबाबूकी बैठकका दर्वाजा बन्द हुआ; रात साढ़े दस बजे उस मकानकी कोठरी-कोठरीमें गहरी निद्रा विराजने लगी।

दूसरे दिन सवेरेकी गाड़ीमें रमेशको रवाना होना पड़ा। ब्रजमोहनबाबूकी सावधानीसे गाड़ी फेल करनेका कोई सुयोग दिखाई न दिया।

———

२

घर जानेपर रमेशको पता लगा, कि उसके विवाहके लिये पात्री और दिन स्थिर हो चुका है। लड़कीके पिता ब्रजमोहनके बाल्यमित्र ईशान जब वकालत करते थे, उस समय ब्रजमोहनकी हालत ठीक नहीं थी—ईशानकी सहायतासे ही उन्होंने उन्नति प्राप्त की थी। वही ईशान जब कुसमय मर गये तब दिखाई दिया कि उनके पास कुछ भी जमा नहीं था, कर्ज था। विधवा स्त्री एक बालिका कन्याके सहित दरिद्रता-में पड़ी। वही कन्या आज विवाहके लायक हुई है। ब्रजमोहनने उसीके साथ रमेशका विवाह ठहराया है। रमेशके हितैषियोंमें किसी-किसीने आपत्ति कर कहा था, कि सुनते हैं, कि लड़की वैसी अच्छी नहीं है। ब्रजमोहनने कहा,—"यह सब बातें मैं अच्छी नहीं सम-झता—मनुष्य फूल या तितली तो है नहीं, जिसके लिये देखनेमें अच्छी होनेका विचार सबसे पहले उठाया जाय। लड़कीकी माँ जैसी सती-साध्वी है, यदि वैसी ही लड़की भी हो, तो रमेश उसे ही अपना सौभाग्य समझेगा।"

शुभ-विवाहकी चर्चासे रमेशका मुँह सूख गया। वह उदास होकर इधर-उधर फिरने लगा। छुटकारा पानेके लिये अनेक प्रकारके उपायोंकी चिन्ता करके भी उसे कोई उपाय सम्भव न जान पड़ा। अन्तमें बड़े कष्टसे सङ्कोचको दूर करके उसने पितासे कहा,—"पिताजी, यह विवाह मेरे लिये असाध्य है। मैं दूसरी जगह वचन दे चुका हूँ।"

ब्रजमोहन—यह क्या कहते हो! बिलकुल पानपत्र तक तो हो चुका?

रमेश—नहीं ठीक तरहसे पानपत्र नहीं हुआ, लेकिन—

ब्रजमोहन—कन्याकी ओरसे सब बात-चीत हो चुकी है?

रमेश—नहीं, जिसे बातचीत कहते हैं, वह नहीं हुई—

ब्रजमोहन—जब बातचीत नहीं हुई, तब जैसे इतने दिन चुप थे, वैसे ही और कई दिन चुप रहना ही ठीक है।

रमेशने कुछ देर चुप रहनेके बाद कहा,—"और किसी कन्याको पत्नीके रूपमें ग्रहण करना मेरे हकमें अन्याय होगा।"

ब्रजमोहनने कहा, "और न करनेसे तुम्हारे लिये और भी अन्याय होगा।"

रमेश और कुछ कह न सका। वह सोचने लगा, कि इसी बीचमें दैवक्रमसे सब निपट सकता है।"

रमेशके विवाहके लिये जो दिन स्थिर किया गया था, उसके बाद एक वर्ष तक दूसरी कोई लगन थी ही नहीं—वह सोचता था, किसी तरह यह दिन बीत जाय, तो उसके लिये एक वर्षकी मीयाद बढ़ जायेगी।

नदीकी राहसे कन्याके घर जानेकी राह है—बिलकुल समीप नहीं—छोटी-बड़ी दो-तीन नदियोंको पार करनेमें तीन-चार दिन लगते हैं। ब्रजमोहनने दैवयोगसे यथेष्ट राहको छोड़ दो-एक सप्ताह पहले शुभ दिनमें यात्रा की।

हवा अनुकूल थी। शीमुल घाट पहुँचनेमें पूरे तीन दिन भी नहीं लगे। विवाहमें अब भी चार दिन की देर है।

ब्रजमोहन बाबूकी इच्छा थी, कि दो-चार दिन पहले ही पहुँचे। शीमुल घाटमें उनको समधिन गरीबी हालतमें रहती थीं। ब्रजमोहन बाबूकी इच्छा बहुत दिनसे थी, कि इनकी गृहस्थीको वे अपने गाँवमें उठा ले जायें और वहाँ उन्हें आरामसे रखकर अपने मित्रका ऋण चुकता करें। किन्तु किसी तरहका सम्बन्ध न होनेके कारण वे एका-एक इस प्रस्तावको उठाना उचित न समझे। इस बार विवाहके उपलक्ष्यमें उन्होंने अपनी समधिनको यहाँसे गृहस्थी उठानेपर राजी कर लिया है। संसारमें समधिनकी केवल एक कन्या है—उनके पास रहकर वह माता-

विहीन दामादकी माताके पदपर अधिकार कर सकेंगी; इसपर वे आपत्ति कर न सकीं। उन्होंने कहा,—"कोई जो जी चाहे कहे, जहाँ मेरे कन्या-दामाद रहेंगे, वहीं मैं भी रहूँगी।"

विवाहसे कई दिन पहले आकर ब्रजमोहन बाबू अपनी समधिनकी गृहस्थी उठा ले जानेकी व्यवस्था करने लगे। उनकी इच्छा थी, कि विवाहके बाद सब लोग एक साथ ही यात्रा करेंगे। इसी लिए वे अपने घरसे आपसकी स्त्री पुरुषोंके साथ आये थे।

विवाहके समय रमेशने ठीक प्रकारसे मन्त्रका उच्चारण नहीं किया, शुभदृष्टिके समय उसने आँखें मूँद लीं, फूलशय्याकी हँसी-मजाकको वह चुप-चाप सिर झुकाकर सह गया, रातको शय्यापर मुँह फेरकर सोय, सवेरे बिस्तरसे उठकर बाहर भागा।

विवाहकी रस्में पूरी होनेपर औरतें एक नावमें, बूढ़े एक नावमें, तथा और उसके साथियोंने एक अलग नावसे यात्रा की। और एक नावपर रौशनचौकीका दल समय-समय पर जैसी-तैसी रागिनी छेड़ने लगा।

सारे दिन असहनीय गर्मी थी। आकाशमें बादल नहीं, फिर भी आकाश बदरङ्ग हो रहा था—किनारेके वृक्षोंके पीले पत्ते हिलते तक न थे। मल्लाह पसीनेसे तर थे। शामको अँधेरा होनेसे पहले ही मल्लाहोंने कहा,—"बाबू, अब नाव घाट लगाता हूं। आगे बहुत दूरतक नाव बाँधनेकी जगह नहीं है।" ब्रजमोहन बाबू राहमें देर नहीं होने देना चाहते थे। उन्होने कहा,—"यहाँ बाँधना ठीक न होगा। आज पहली रात चाँदनी रहेगी, आज बालूहाटामें पहुँचकर नाव बाँधो। तुम लोगोंको ईनाम मिलेगा।"

नाव गाँव छोड़कर आगे बढ़ी। एक ओर रेतीका मैदान था, दूसरी ओर टूटे-फूटे कगारे। आकाशमें चाँद निकला; किन्तु वह शराबीकी आँखोंकी तरह गँदला दिखाई दे रहा था। ऐसे समय आकाश

में बिना मेघके न जाने कहाँसे गर्जनकी आवाज सुनाई दी। पीछे दिगन्तकी ओर देखनेसे दिखाई दिया, कि टूटी-फूटी डाल और पत्तोंके साथ कतवार और धूल-बालूको आकाशमें उड़ाती हुई प्रचण्ड वायु बड़े वगसे चली आ रही हैं "बाँधो-बाँधो, सम्हालो-सम्हालो, हाय-हाय" करते-करते क्षणभरमें क्यासे क्या हो गया, कोई कह नहीं सकता। एक बवण्डर सँकरी राहसे बड़े वेगके साथ सब उखाड़ता और चौपट करता कई नावोंको कहांसे कहाँ ले गया; इसका कोई पता नहीं।

———

२

अन्धड़ समाप्त हो गया है। बहुत दूर तक व्याप्त मरुमय रेतीली-भूमिको निर्मल चाँदनी विधवाके सफेद वस्त्रकी तरह ढके हुए है। नदीमें नाव नहीं, लहरें भी नहीं, रोगकी तकलीफोके बाद जैसे मृत्यु निर्विकार शान्ति देती है, वैसी ही शान्ति जल स्थलमें विराज रही है।

होशमें आनेपर रमेशने देखा, वह नदीके किनारे पड़ा है। क्या बीती, इसके समझनेमें उसे कुछ समय लगा—इसके बाद दुःस्वप्नकी तरह सब घटनाएँ उसके मनमें जाग उठीं। यह पता लगानेको वह उठ बैठा कि उसके पिता और अन्यान्य जाति-भाइयोंकी क्या दशा हुई। चारो ओर उसने निगाह फेर कर देखा, कहीं किसीका कोई नामनिशान भी नहीं। तब वह नदीके किनारे-किनारे ढूँढ़ता हुआ चला।

पद्माकी दो शाखा-बाहुके बीचमें यह शुभ्र द्वीप नङ्गे शिशुकी तरह चित पड़ा हुआ है। रमेश जब एक शाखाके किनारेसे घूमकर दूसरी शाखाके किनारे पहुँचा तब उसे कुछ दूरीपर लाल कपड़े जैसा कुछ दिखाई दिया। बढ़कर रमेशने पास पहुँचकर देखा, कि लाल चूनरी पहने नववधू मुर्देकी तरह पड़ी हुई है।

रमेश जानता था कि, पानीमें डूबे आदमीकी श्वास-क्रियाको किस

कृत्रिम उपायसे लौटाया जाता है। बहुत देरतक रमेश बालिकाके दोनों हाथोंको एकबार उसके सिरकी ओर ले जा फिर उसके पेट तक ले आता रहा। धीरे-धीरे बहूकी सांस चली और उसने आँखें खोल दीं।

तब बहुत थकावट जान पड़नेपर रमेश कुछ देर चुपचाप बैठ रहा। उसके श्वासमें इतनी भी हिम्मत नहीं थी, कि वह उस बालिकासे कुछ पूछे।

बालिका अभीतक अच्छी तरह होशमें आई नहीं थी। एकबार आँख खोलनेके बाद फिर उसकी आँखें मुँद गईं। रमेशने परीक्षाकर देखा, कि उसकी श्वास-क्रियामें अब कोई बाधा नहीं। तब इस जनहीन जल-स्थलकी सीमामें जीवन-मृत्युके मध्यमें उस पीली चाँदनीकी रोशनीमें रमेश बालिकाके चेहरेकी तरफ बहुत देरतक देखता रहा।

कौन कहता है, कि सुशीला देखनेमें अच्छी नहीं है। यह मुँदी आँखोंका सुकुमार छोटा-सा मुखड़ा – इतने बड़े आकाशके बीच फैली हुई चाँदनीमें केवल यह सुन्दर कोमल मुखड़ा देखने योग्य चीजकी तरह गौरवसे खिला हुआ है।

रमेश और सब बातें भूलकर सोचने लगा,—"अच्छा ही हुआ, कि इसे मैं विवाह-मण्डपके कलरवमें भीड़-भाड़के बीच देख न सका। इसे मैं सबकी तरह कभी भी देख न सकता। इसमें साँस का संचार करके मैंने विवाहके मन्त्रपाठसे बढ़कर इसे अपना बना लिया है। मन्त्रका उच्चारण करके मैं इसे निश्चित प्राप्यके स्वरूपमें पाता, किन्तु यहाँ मैंने इसे अनुकूल विधाताके प्रसादके रूपमें प्राप्त किया है"

होशमें आनेपर बहूने बैठकर अपने शिथिल वस्त्रको खिसका कर माथेसे घूँघट खींच लिया। रमेशने पूछा,—"तुम्हारी नावके और सब लोग कहाँ गये; कुछ जानती हो?"

उसने चुपचाप सिर हिला दिया। रमेशने उससे पूछा,—"तुम

यहाँ थोड़ी देर बैठ सकोगी; मैं जरा चारों ओर घूमकर कुछ पता लगा आऊँ ?"

बालिकाने इसका कोई जवाब नहीं दिया। किन्तु मानो उसका सारा शरीर संकुचित हो बोल उठा,—यहाँ मुझे अकेली छोड़कर न जाओ।

इसे रमेश समझ गया। उसने एक बार खड़े होकर चारों ओर देखा—सफेद बालूमें कहीं कोई निशान तक नहीं। उसने अपने लोगों-को खूब जोर लगाकर ऊँची आवाजमें पुकारा; किन्तु कहीं किसीका कोई पता नहीं।

रमेश वृथा चेष्टा छोड़कर बैठ गया। उसने देखा—बहू मुँहपर दोनों हाथ रख रुलाई रोकनेकी चेष्टा कर रही है। उसकी छाती फूल-फूल उठती है। रमेश धीरजके कोई शब्द न कह बालिकाके पास बैठ धीरे-धीरे उसके माथे और पीठपर हाथ फेरने लगा। अब उसकी रुलाई रोके न रुकी—वह बिना कुछ बोले सिसक उठी। रमेशकी भी दोनों आँखोंसे आँसूकी धारा बह पड़ी।

हृदयके श्रान्त होनेपर जब रोना बन्द हुआ, उस समय चन्द्र अस्त हो गया था। अन्धकारके बीच यह निर्जन भूमि अद्भुत स्वप्नके समान जान पड़ने लगी। बालूके मैदानकी शुभ्रता प्रेतलोकके समान मलिन हो गई थी। तारोंकी क्षीण रोशनीमें नदी अजगर साँपके जैसे चिकने काले चमड़ेकी तरह झिल-मिला रही थी।

तब रमेशने बालिकाके भयसे शीतल कोमल छोटे-छोटे हाथोंको अपने हाथमें लेकर उसे और भी अपनी ओर खींच लिया। भयभीत बालिकाने कोई बाधा न दी। उस समय वह मनुष्यके सामीप्यका अनुभव करनेके लिये व्याकुल थी। अटल अन्धकारके बीच सांससे हिलती हुई रमेशकी छातीका आश्रय पाकर उसे कुछ आराम जान पड़ा। उस समय उसके लज्जा करनेका समय नहीं था। रमेशकी

दोनों भुजाओंके बीच उसने बड़े आग्रहके साथ अपना स्थान बना लिया।

सवेरेका शुक्र तारा अस्त हो चला, पूर्व ओरसे नीली नदीकी रेखापर पहले आकाश जब पीलापनसे लाल-लाल हो उठा, तब दिखाई दिया कि निद्रा-विह्वल रमेश बालूपर पड़ा सो रहा है और उसकी छाती-से सटी हुई हाथके ऊपर शिर रखे हुई नववधू गहरी नींदमें निमग्न है। अन्तमें सवेरेकी मीठी धूप जब दोनोंकी आँखोंपर पड़ी, तब दोनों घबराकर जाग उठे। विस्मित होकर यह दोनों कुछ देरतक चारों ओर देखते रहे; इसके बाद एकाएक याद आई, कि यह अपना घर नहीं है; याद आई कि यह लोग बहके चले आये हैं।

४

सवेरेके समय मछुओंकी नावके सफेद-सफेद पाल नदीमें छा पड़े। रमेशने उन्हीं लोगोंको आवाज दे मछुओंकी सहायतासे एक बड़ी पन-सुइया किराये पर ली और खोये हुए आत्मीयोंकी खोजके लिये पुलिस नियुक्त कर बहूको साथ ले घरकी ओर प्रस्थान किया।

गाँवके घाटपर नाव पहुँचते ही रमेशको खबर लगी, कि पुलिसने उसके पिता, सास और कई सम्बन्धियोंकी लाशें नदीसे निकाली हैं। किसीको भी यह आशा न रही, कि गिनतीके मल्लाहोंके अतिरिक्त और भी कोई बचा है।

घरमें रमेशकी बूढ़ी दादी थीं, वह बहूके साथ रमेशको आया देख जोर-जोरसे रोने लगीं। पड़ोसके जो लोग बारातमें गये थे, उनके भी घर-घरमें रोना मच गया। न शंख बजा और न हुलुध्वनि हुई, किसीने भी बहूका परछन न किया, किसीने उसकी ओर देखा तक नहीं।

रमेशने ठीक किया था, कि श्राद्धादि होनेके बाद ही वह बहूको लेकर कहीं और चला जायगा—किन्तु पैत्रिक सम्पत्तिकी व्यवस्था किये बिना उसे कहीं हटनेकी भी फुरसत नहीं थी। परिवारकी शोकातुर स्त्रियाँ तीर्थवासके लिये उसे घेरे हुई थीं; उनका भी कोई प्रबन्ध करना होगा।

इन सब काम-काजोंसे फुरसतके समय रमेश प्रेम चर्चासे भी विरत नहीं था। यद्यपि पहले जैसा सुना गया था, बहू वैसी बिलकुल ही बालिका न थी। गाँवकी औरतें उसकी अधिक उम्रपर धिक्कारा करती थीं; तथापि उससे कैसे प्रेम बढ़ाया जा सकता है, इसके लिये बी० ए० पास इस लड़केको अपनी किताबोंमें कोई उपाय सुझाई न दिया। वह इसे सदाके लिये असम्भव और असङ्गत समझता था। फिर भी किताबोंकी पढ़ाईकी अभिज्ञतासे समझमें कुछ न आनेपर भी आश्चर्यकी बात यह थी, कि उसका उच्चशिक्षित मन भीतर-ही-भीतर एक अपरूप रससे परिपूर्ण हो इस छोटी सी लड़कीके आगे झुक पड़ा था। उसने कल्पना द्वारा इस बालिकाको अपने भविष्यकी गृह-लक्ष्मीके रूपमें सुशोभित कर रखा था। इससे उसकी स्त्री एक हो होकर भी वह बालिका बहू, युवती प्रेमिनी और सन्तानोंकी प्रतिभावती माताके रूपमें उसके ध्यान-नेत्रोंके सामने विचित्र भावसे विकसित हो उठी थी। जैसे चित्रकार अपने भावी चित्रकी और कवि अपनी भावी कविताकी सुन्दर-रूपमें कल्पना कर हृदयके भीतर बड़े आदरके साथ पोषित करता है, वैसे ही रमेशने इस छोटी सी बालिकाको उपलक्ष्यमात्र बनाकर अपनी भावी प्रेयसीको—कल्याणीकी महिमामयी मूर्त्तिके रूपमें अपने हृदयमें प्रतिष्ठित किया।

———

५

इस प्रकार प्रायः तीन महीने बीत गये। सम्पत्तिकी व्यवस्था भी पूरी हुई। वृद्धाएँ तीर्थवासके लिये तैयार हो गईं। पड़ोसियोंके घरसे दो-तीन सहेलियाँ भी नई बहूसे परिचय स्थापनके लिये आने जाने लगीं। रमेशके साथ बालिकाके प्रेमकी पहली गाँठ धीरे-धीरे पक्की होने लगी।

अब सन्ध्या समय निर्जन छतपर खुले आकाशके नीचे दोनों चटाई बिछाकर बैठने लगे हैं। रमेश पीछेसे आकर एकाएक बालिकाकी आँखें मूँद लेते और उसके शिरको खींचकर छातीसे लगा देते; बहू जब रात अधिक न होनेपर भी खा-पीकर सो रहती, तब रमेश तरह-तरहके खुराफातोंसे उसे जगाकर उसकी चिढ़से तिरस्कृत भी होते थे।

एक दिन सन्ध्या समय रमेशने बालिकाके शिरके जूड़ेको हिलाकर कहा,—"सुशीला, आज तुमने अच्छी तरहसे चोटी नहीं की।"

बालिकाने कहा,—"भला, तुम लोग मुझे सुशीला कहकर क्यों बुलाते हो?"

रमेश इस प्रश्नका मतलब न समझ सकनेके कारण चुपचाप उसके मुँहकी ओर देखते रह गये।

बहूने कहा,—"क्या मेरा नाम बदल जानेपर ही मेरा मान होगा? मैं तो बचपनसे ही अमान्य हूँ,—शायद मरनेपर ही मेरा यह अमान दूर होगा।"

एकाएक रमेशकी छाती धड़क उठी, उनका मुँह पीला पड़ गया। उनके मनमें यह संशय एकाएक जाग उठा—मानो न जाने कैसा प्रमाद छा गया। रमेशने पूछा,—बचपनसे ही तुम अमान कैसे हुईं?"

बहूने कहा,—मेरे जन्मसे पहले ही मेरे पिताकी मृत्यु हो गई; मुझे जन्म देकर छः महीन बाद ही मेरी माँ मर गईं। मैं मामाके घर बड़े कष्टसे रही। एकाएक सुनाई दिया, कि न जाने कहाँसे आकर तुमने

मुझे पसन्द कर लिया है—दो दिनमें ही विवाह हो गया; इसके बाद देखो कौन-कौनसी विपदाएँ बीत गईं।"

रमेश निश्चल होकर तकिये पर शिर रख लेट गये। आकाशचन्द्र निकले थे, उसकी चाँदनी काली दिखाई देने लगी। रमेशको और कुछ पूछते भय जान पड़ने लगा। जो कुछ मालूम हुआ, उसे ही वे बकवाद और स्वप्न समझ अपनेसे दूर ही हटाये रखना चाहते थे। होशमें आये हुए मूर्च्छितकी गहरी साँसकी तरह गर्माके मौसमकी दक्षिणी हवा चलने लगी। चन्द्रमाकी चाँदनीमें निद्राहीन कोकिल कूक रहा था—समीप ही नदीके घाटमें बँधी नावोंसे मल्लाहोंके गाने आकाश-में फैल रहे थे। बहुत देरतक कोई बात न उठने पर बहूने धीरे-धीरे रमेशको हिलाकर कहा,—"क्या सो गये?"

रमेशने कहा,—"नहीं तो"

इसके बाद भी रमेश बहुत देर तक चुप रहे। बहू न जाने कब धीरेसे सो गई। रमेश उठ बैठे और उसके मुँहकी ओर देखने लगे विधाताने इसके ललाटमें जो गुप्त लेख लिख दिया आज तक उसका एक निशान भी उसके चेहरेपर दिखाई न दिया। ऐसे सौन्दर्यके भीतर ऐसा भीषण परिणाम कैसे छिपकर निवास कर रहा है!

६

रमेश समझ गया कि यह बालिका उसकी विवाहिता स्त्री नहीं है; किन्तु यह मालूम करना सहज नहीं, कि तब यह किसकी स्त्री है। रमेशने कौशलके साथ पूछा,—"विवाहके समय जब तुमने मुझे पहले-पहल देखा, तब तुम्हारे मनमें क्या आया?"

बालिकाने कहा,—"मैंने तुम्हें देखा ही नहीं, मैं आँखें नीची किये हुई थी।"

रमेश—तुमने मेरा नाम भी नहीं सुना?

बालिका—जिस दिन सुना, कि विवाह होगा, उसके दूसरे ही दिन विवाह हो गया—मैंने तुम्हारा नाम सुना ही नहीं। मामीने मुझे चटपट बिदा कर दिया।

रमेश—अच्छा, तुमने लिखना-पढ़ना भी तो सीखा है; खूब सफाई-के साथ लिखो तो सही।

रमेशने उसके हाथमें कागज और पेनसिल दे दी। उसने कहा,—"शायद अब मैं लिख न सकूँगी। मेरा नाम लिखनेमें बहुत सहज है।"—यह कहकर उसने बड़े-बड़े अक्षरोंमें अपना नाम लिखा—श्रीमती कमलादेवी।

रमेश—अच्छा, मामाका नाम लिखो।

कमलाने लिखा—श्रीयुक्त तारिणीचरण चट्टोपाध्याय।

साथ ही उसने पूछा,—"लिखनेमें कोई भूल तो नहीं हुई है?"

रमेशने कहा,—"नहीं। अच्छा अपने गाँवका नाम लिखो तो सही।"

उसने लिखा—धोबापूकुर।

इस तरह अनेक उपायोंसे बहुत ही सावधानीके साथ रमेशने इस बालिकाके जीवन-वृत्तान्तका जो कुछ आविष्कार किया, उससे कोई विशेष सुविधा नहीं हुई।

इसके बाद रमेश अपने कर्तव्यके बारेमें विचार करने बैठा। सम्भव है कि इसका पति डूबकर मर गया हो। यदि किसी तरह इसकी ससुरालका पता लगाया जाय और वहाँ इसे भेजा जाय, तो शुबहा है, कि वे लोग इसे ग्रहण न करेंगे। मामाके घर भेजनेसे भी इसके हकमें उचित न होगा। इतने दिनतक बहूके रूपमें पराये घर निवास करने पर आज यदि सच्चा हाल प्रकट किया जाय, तो समाजमें इसकी क्या गति होगी—इसका ठिकाना कहाँ लगेगा। यदि कहीं इसका पति जीवित ही हो, तो क्या इसे ग्रहण करनेकी इच्छा या साहस करेगा। इस समय

इस लड़कीको जहाँ ढकेला जाय, वहाँ ही यह अतल समुद्रमें पड़ेगी।

इसे अपनी स्त्रीके अतिरिक्त और किसी रूपमें रमेश अपने यहाँ रख नहीं सकता; और भी कहीं इसके रहनेका स्थान नहीं। किन्तु ऐसा ही समझकर इसे अपनी स्त्रीके नामसे ग्रहण करना भी उचित नहीं। रमेशने भविष्यत्के पटपर अनेक रङ्गकी स्नेहसिक्त कूचियोंसे गृहलक्ष्मीके रूपमें जो मूर्त्ति अङ्कित की थी; उसे फिर शीघ्रतासे मिटाना पड़ा।

रमेश अब अपने गाँवमें रह न सका। यह सोचकर, कि कलकत्तेमें लोगोंकी भीड़के भीतर छिपकर रहनेसे कोई उपाय किया जा सकता है, रमेश कमलाको लेकर कलकत्ते आया। पहले जहाँ रहता था, उससे बहुत दूरीपर उसने अपना डेरा डाला।

कलकत्ता देखनेके लिये कमलाके आग्रहकी सीमा न थी। पहले दिन मकानमें प्रवेश करते ही वह खिड़कीमें जा बैठी – वहांसे जनस्रोतके अविश्राम प्रवाहमें उसके मनमें नये-नये कौतूहल होने लगे। घरमें एक मजदूरनी थी, उसके लिये कमरा बहुत पुराना था। वह बालिकाके विस्मयको निरर्थक मूर्खता समझ चिढ़कर बोल उठी, –"माँ जो, मुँह पसार कर क्या देख रही हो? बहुत दिन चढ़ा, स्नान न करोगी।"

मजदूरनी दिन भर काम करके रातको चली जाती है। रात-दिन रहनेवाली कोई मिली नहीं। रमेश सोचने लगा,—"अब तो मैं कमलाको एक ही शय्यापर रख नहीं सकता – फिर अपरिचित स्थानमें यह बालिका अकेली कैसे रात काटेगी।"

रातको भोजनके बाद मजदूरनी चली गई। रमेशने कमलासे, उसका बिस्तर दिखाते हुए कहा,—"तुम सो जाओ; मैं इस किताबके पढ़नेके बाद सोऊंगा।"

इस तरह रमेशने एक किताब लेकर पढ़नेका बहाना किया। थकी हुई कमलाको नींद आते देर न लगी।

वह रात ऐसी ही बीती। दूसरी रातको भी रमेशने किसी बहाने

कमलाको अकेली ही बिछौने पर सुला दिया। उस रात बड़ी गर्मी थी। सोने वाली कोठरीके सामने एक खुलता छोटी सी छत थी। वहीं एक दरी बिछाकर रमेश लेट रहा और अनेक चिन्ताएँ करते-करते हाथका पंखा झलते-झलते अधिक रात गये सो गया।

रात दो-तीन बजेके समय अधनींदे रमेशको अनुभव हुआ, कि वह अकेला नहीं सोया है और उसके लिये धीरे धीरे हाथका पंखा चल रहा है। रमेशने नींदकी झोंकमें अपने पास सोई हुईको अपनी ओर खींच लिया और बिड़बिड़ाकर कहा,—"सुशीला, तुम सोओ; मुझे पंखा न झलो।" अन्धकारसे डरी हुई कमला रमेशकी बाहोंमें सिमट छातीसे लगकर आरामसे सो रही।

सवेरे रमेश जागने पर चौंक उठा। उसने देखा, कि सोई हुई कमलाका दाहिना हाथ उसके गलेमें लिपटा है—वह निःसङ्कोच रमेशपर अपने विश्वस्त अधिकारका विस्तार कर उसकी छातीसे सटी हुई है। निद्रित बालिकाके चेहरेकी ओर देख रमेशकी आंखों-में आंसू भर आया! वह संशयहीन कोमल हाथोंकी लपेटको कैसे अलग करे? उसे यह भी याद आई, कि रातको बालिका उसके पास लेटकर धीरे-धीरे पंखा हाँकने लगी थी ठण्डी सांस भरकर धीरे-धीरे बालिकाके बाहु-बन्धनसे निकलकर रमेश धीरेसे उठ गया।

बहुत देर बिचार कर रमेशने स्थिर किया कि कमलाको बालिका-विद्यालयकी बोर्डिङ्गमें रखना ठीक है। ऐसा होने से कुछ दिनके लिये इस चिन्तासे उसको छुटकारा मिलेगा।

रमेशने कमलासे पूछा,—"कमला, तुम पढ़ना चाहती हो?"

कमला रमेशके मुँहकी ओर देखती रह गई; मतलब यह कि "तुम कहते क्या हो?"

रमेशने लिखने पढ़नेसे उपकार और आनन्दके बारेमें बहु-

तेरी बातें कह डालीं; जिसकी कोई आवश्यकता न थी।

कमलाने कहा,—"मुझे लिखना-पढ़ना सिखाओ।"

रमेशने कहा,—"तब तुम्हें स्कूल जाना पड़ेगा।"

कमलाने विस्मयके साथ कहा,—"स्कूल? इतनी बड़ी होकर मैं स्कूल जाऊँगी?"

कमलाकी उम्रकी मर्यादाके अभिमानपर रमेशने मुस्कुराकर कहा,—"तुमसे भी बड़ी बहुतेरी लड़कियाँ स्कूल जाती हैं।"

इसके बाद कमलाने कुछ न कहा। एक दिन गाड़ीकी सवारीसे वह रमेशके साथ स्कूल गई। बहुत बड़ा मकान—कमलासे बड़ी और छोटी कितनी ही लड़कियाँ थीं, जिनका अन्दाज नहीं। विद्यालयकी मास्टरानीके हाथ कमलाको सौंप जब रमेश चलने लगे, तब कमला भी उनके साथ चलनेको तैयार हो गई। रमेशने कहा,—"तुम कहाँ चलोगी? तुम्हें यहीं रहना पड़ेगा।"

कमलाने डरी हुई आवाजमें कहा,—"तुम भी यहाँ न रहोगे?"

रमेश—मैं यहाँ रह नहीं सकता।

कमलाने रमेशका हाथ पकड़कर कहा,—"तब मैं भी यहाँ न रहूँगी; मुझे ले चलो।"

रमेशने हाथ छुड़ाकर कहा,—"छिः, कमला!"

इस धिक्कारसे कमला चुपचाप खड़ी रह गई। उसका चेहरा एकबारगी उतर गया। रमेश दुःखित मनसे शीघ्र बाहर निकल गया, किन्तु बालिकाका वह स्तम्भित, असहाय, भयभीत चेहरा उसके हृदयमें अङ्कित हो गया।

७

रमेशका विचार था, कि अब वह अलीपुरमें वकालत आरम्भ कर दे। किन्तु उसका मन टूट गया था। इस समय उसमें मन स्थिर कर कामकाजमें हाथ लगाने और पहले-पहलके काममें अनेक विघ्न बाधाओं को दूर करनेकी तेजस्विता नहीं थी। वह कुछ दिन गङ्गाके पुल और गोलदीघीमें बेकार घूमने-फिरने लगा। एकबार मनमें आया, कि कुछ दिनके लिये पश्चिम भ्रमण कर आये, इसी समय अन्नदाबाबूके पाससे एक चिट्ठी आई।

अन्नदाबाबूने लिखा है,—

"गेजेटमें देखा, कि तुम पास हो गये—किन्तु यह समाचार तुम्हारी ओरसे न पाकर मैं दुःखी हुआ। बहुत दिनोंसे तुम्हारा कोई समाचार नहीं मिला। तुम कैसे हो और कब कलकत्ते आओगे; इसकी खबर देकर मुझे निश्चिन्त और सुखी करना।"

यहाँ यह कहना अप्रासङ्गिक न होगा कि अन्नदाबाबू जिस विलायत गये लड़केके ऊपर निगाह रखे थे, वह बैरिष्टर होकर लौट आया और एक धनीकी कन्याके साथ उसके विवाहकी तैयारी हो रही है।

रमेश किसी तरह भी यह तै न कर सका, कि इस बीचमें जो घटनाएँ हो गई हैं, उनके बाद हेमनलिनीके साथ पहलेकी तरह मिलना-जुलना उचित है या नहीं। इस समय कमलाके साथ उसका जो सम्बन्ध है, उस बातको वह किसीके आगे खोलना उचित नहीं समझता। निरपराधिनी कमलाको वह संसारके आगे बदनाम नहीं करना चाहता। फिर भी, यदि वह हेमनलिनीसे सब बातें साफ-साफ नहीं कह लेता, तो उसपर वह अपना पहलेका अधिकार कैसे प्राप्त कर सकता है।

किन्तु अन्नदाबाबूके पत्रका जवाब न देना किसी तरह भी उचित

नहीं। उसने लिखा,– "अनेक कारणवश आपसे मुलाकात कर नहीं सका हूँ; क्षमा कीजियेगा।" उस पत्रमें उसने अपना नया पता नहीं लिखा।

इस चिट्ठीको रमेशने डाकमें छोड़ दिया। इसके दूसरे दिन वकालती पोशाक पहन वह अलीपुरकी अदालतमें हाजिरी देने गया।

एक दिन वह अदालतसे लौटनेके समय कुछ दूर पैदल चलनेके बाद एक गाड़ीवानसे किरायेकी बातचीत करने लगा। इसी समय उसे व्यग्रताके साथ किसीकी पहचानी हुई आवाज सुनाई दी,--"पिता जी, वह देखिये रमेश बाबू।"

"गाड़ीवान, ठहरो-ठहरो।"

गाड़ी रमेशकी बगलमें आकर ठहर गई। उस दिन अलीपुरके चिड़ियाखानेमें एक निमन्त्रणमें शामिल हो अन्नदाबाबू अपनी कन्याके साथ मकान लौट रहे थे। इसी समय एकाएक मुलाकात हो गई।

गाड़ीमें हेमनलिनीका वह स्निग्ध और गम्भीर मुखड़ा, विशेष रूपसे पहनी वही साड़ी, उसके बाल गुँथनेकी निराली परिपाटी, उसके हाथका चिकना कड़ा और डैमसकट छीली हुई सोनेकी दो-दो चूड़ियाँ देखकर रमेशकी छातीसे एक लहर उठ उसके गलेतक लहरा उठी।

अन्नदाबाबूने कहा,— 'कहोजी, रमेश, बड़े भाग्यसे राहमें मुलाकात हो गई। आजकल तो तुमने चिट्ठी लिखना भी बन्द कर दिया है; लिखते भी हो, तो उसमें पता नहीं लिखते। इस समय कहाँ जा रहे हो? क्या कोई विशेष काम है?"

रमेशने कहा,--"नहीं; अदालतसे लौट रहा हूँ।"

अन्नदाबाबू—तब चलो, हमलोगोंके यहाँ चाय तो पी लो।

रमेशका हृदय भर आया था—अब इनकार करनेकी जगह नहीं थी। वह उनकी गाड़ीमें बैठ गया। बड़ी चेष्टासे सङ्कोच दूरकर हेमनलिनीने पूछा—"आप अच्छी तरह हैं?"

हेमनलिनीने प्रश्नका उत्तर न पानेपर फिर कहा,--"आपने अपने पास होनेका समाचार भी हम लोगोंको नहीं दिया ?"

रमेशके पास इस प्रश्नका कोई जवाब नहीं था। उसने कहा,—मैंने पढ़ा था, कि आप भी पास हो गई हैं ?"

हेमनलिनीने हँसकर कहा,—"यह भी कम नहीं है, कि आप हम-लोगोंकी याद तो रखते हैं !"

अन्नदाबाबूने पूछा,—"तुमने अब मकान कहाँ लिया है ?"

रमेशने कहा,—"दर्जीपाड़ामें।"

अन्नदाबाबूने कहा,—"क्यों, कोलू-टोलावाला तुम्हारा मकान बुरा तो नहीं था।"

जवाबकी आशासे हेमनलिनीने विशेष कौतूहलके साथ रमेशकी ओर देखा। उस दृष्टिने रमेशपर चोट की—वह शीघ्रतासे बोल बैठा,—"हाँ, उसी मकानमें लौटनेका विचार है।"

उसके मकान बदलनेके अपराधको हेमनलिनीने ही ग्रहण किया है, इस बातको रमेश समझ गया। सफाई देनेका कोई उपाय न देख उसे मन-ही-मन पीड़ा हुई। दूसरी ओरसे फिर कोई प्रश्न न हुआ। हेमन-लिनी गाड़ीके बाहर सड़ककी ओर देखने लगी। किन्तु रमेशसे रहा न गया, वह आप ही आप बोल बैठा,—"मेरी एक सम्बन्धी हेदुआके पास रहती हैं; उनकी देख-रेख रखनेके लिये ही दर्जीपाड़ामें रहता हूं।"

रमेश सरासर झूठ नहीं बोला; किन्तु सुननेमें बात बहुत असङ्गत जान पड़ी। कभी-कभी सम्बन्धीकी खबर लेनेके लिये क्या कोलुटोलासे हेदुआ बहुत दूर है ? हेमनलिनीकी दोनों आँखें गाड़ीसे बाहर सड़ककी ओर ही लगी रहीं। अभागे रमेशको कुछ भी न सूझा कि इसके बाद क्या कहे। वह एकबारगी पूछ बैठा,—"योगेन्द्रका क्या हाल है ?"

अन्नदाबाबूने कहा,—"वह कानूनकी परीक्षामें फेल हो, पश्चिमकी ओर हवा बदलने गया है।"

गाड़ीके यथास्थान पहुँचनेपर परिचित मकान और उसकी सजावटने रमेशके ऊपर मन्त्रजाल डाल दिया। रमेशकी छातीसे एक गहरी साँस निकली।

रमेश बिना कुछ बोले-चाले चाय पीने लगा। एकाएक अन्नदाबाबू पूछ बैठे—"इस बार तो तुम बहुत दिनतक देशमें रुक रहे; क्या कोई काम था?"

रमेशने कहा,—"पिताजीकी मृत्यु हो गई।"

अन्नदाबाबू—ऐं, यह क्या कहते हो! यह कैसी बात! कैसे मृत्यु हुई?"

रमेशने कहा, - वे पद्मानदीसे नावकी सवारीपर घर लौट रहे थे; एकाएक तूफानसे नाव डूबनेपर उनकी मृत्यु हुई।"

जैसे तेज हवा चलनेसे अकस्मात् बादल फट जाते और आसमान साफ हो जाता है, वैसे ही इस शोक-समाचारसे रमेश और हेमनलिनीके बीचकी ग्लानि क्षणभरमें दूर हो गई। हेमने पछतावेके साथ मन-ही-मन कहा,—"मैंने समझनेमें भूल की थी—वे पितृवियोगके शोक और कुछ झमेलोंसे घबरा उठे होंगे। शायद अब भी इसीसे उदास हो रहे हैं। उनपर संसारका कौन-सा सङ्कट पड़ा था. उनके मनपर क्या बीत रही थी, इसकी कोई जानकारी न होनेसे ही हम लोगोंने उन्हें दोषी मान लिया था।"

हेमनलिनी इस पितृ-विहीनका अधिक आदर करने लगी। रमेशको भोजनकी इच्छा नहीं थी, किन्तु हेमनलिनीने बहुत जिदकर उसे खिलाया। उसने कहा,—"आप बहुत कमजोर हो गये हैं, शरीरसे लापरवाही न करें।" फिर उसने अन्नदाबाबूसे कहा,—"पिताजी, रमेश बाबू आज रातको भी यहाँ ही भोजन करें।"

अन्नदाबाबूने कहा,—"अच्छी बात है।"

इसी समय अक्षय आ पहुँचा। अन्नदाबाबूके चायके टेबिलपर कुछ

दिनतक अक्षयने आधिपत्य किया। आज एकाएक रमेशको देख वह चौंक पड़ा। किन्तु अपनेको सँभाल उसने हँसकर कहा,—"यह क्या, ये तो रमेश बाबू हैं! मैं पूछता हूँ, कि क्या हमलोगोंको बिलकुल ही भूल गये?"

रमेशने कोई जवाब न दे सिर्फ हँस दिया। अक्षयने कहा,—"आपके पिताजी जिस शीघ्रतासे आपको पकड़ ले गये, उससे मैं समझ रहा था, कि वे इस बार आपका विवाह किये बिना न छोड़ेंगे—बचके निकल आ सके न?"

हेमनलिनीने अक्षयकी ओर नाराजीके साथ देखा।

अन्नदाबाबूने कहा,—"अक्षय, रमेशके पिताकी मृत्यु हो गई।"

रमेश उदास मुँह नीचे किये बैठा रहा। उसके घावपर नमक छिड़कनेके खयालसे हेमनलिनी मन-ही-मन अक्षयपर बहुत नाराज हुई। वह शीघ्रताके साथ रमेशसे बोल बैठी,—"रमेशबाबू, आपने हम लोगोंका नया अल्बम् नहीं देखा।" कहती हुई वह अल्बम् लाकर रमेशके टेबिलके एक किनारे रख तसवीरोंकी आलोचना करने लगी; वह इसी समय धीरेसे पूछ बैठी,—"रमेशबाबू, शायद आप अपने नये घरमें अकेले ही रहते हैं?"

रमेशने कहा,—"हाँ।"

हेमनलिनी—हमलोगोंके बगलवाले मकानमें आप आनेमें देर न करें।

रमेशने कहा,—"अच्छा, मैं इस सोमवारको निश्चय आ जाऊँगा।"

हेमनलिनी—"मैं चाहती हूँ कि बी० ए० की फिलासफीके बारेमें आपसे पूछ लिया करूँ।"

इसपर रमेशने बड़ा उत्साह प्रकट किया।

———

८

रमेशने पहलेवाले मकानमें आनेमें देर नहीं की।

इससे पहले हेमनलिनीके साथ जो कुछ मनोमालिन्य था, वह अब न रहा। रमेश मानो बिलकुल घरेलू आदमी हो गया। हँसी-तमाशे, निमन्त्रण—आमन्त्रणकी धूम मच गई।

अनेक समय सबक याद करनेके पहले हेमनलिनीका चेहरा बदला हुआ रहता था। जान पड़ता था कि मानो जरा जोरोंकी हवा लगनेसे ही कोमल शरीर हिलकर टूट पड़ेगा। उस समय वह बोलती भी कम थी और उसके साथ बातें करनेमें भी भय होता था, कहीं मामूली बातसे भी नाराज न हो उठे।

इधर कई दिनोंमें ही उसमें आश्चर्यरूपसे परिवर्तन हो गया है। उसके पीले कपोलपर लावण्यकी मुलायमियत दिखाई दी है। उसकी आँखें इस समय बात-बातमें हास्यच्छटासे नाच उठती हैं। पहले वह वेशभूषामें मन लगाना चापल्य और अन्याय समझती थी। अब किसीसे बिना बहस न जाने क्यों उसका मन पलटा जा रहा है, जिसे सिवा अन्तर्यामीके और कोई नहीं बता सकता।

कर्त्तव्यकी बुद्धि रखनेवाले भारसे दबे रमेशमें भी कुछ कम गम्भीरता नहीं थी। विचारशक्तिकी प्रबलतासे उसका शरीर और मन असली हो गया था। आकाशके ज्योतिर्मय ग्रह-तारे जैसे चलते-फिरते-घूमते रहते हैं, किन्तु मानमन्दिर अपने यन्त्र-तन्त्रके साथ बहुत सावधानीसे चुपचाप बैठा रहता है—वैसे ही रमेश चलते हुए जमानेके बीच अपने पोथी-पत्रे और युक्ति तर्कके भारसे स्तम्भित हो रहा था, वह भी आजकल न जाने कैसे हलका हो गया है। आजकल हर समय हँसी-मजाकका ठीक जवाब न दे सकनेपर ठहाका लगाकर हँस देता

है। उसके सिरपर अभीतक कङ्घी नहीं फिर सकी, किन्तु उसका दुपट्टा अब पहलेकी तरह मैला नहीं रहता। उसके शरीरपर और मनमें इस समय एक चलती हुई शक्तिका आविर्भाव हुआ है।

———

६

प्रेमियोंके लिये काव्यमें जिन सब आयोजनोंकी व्यवस्था है, उन सबका कलकत्ता शहरमें अभाव है। कहाँ फुले हुए अशोक और मौलश्रीकी वह कतारें, कहाँ विकसित माधवीका वह प्रच्छन्न लतावितान, कहाँ आमके रससे रसीली कोकिलकी कू-कू? फिर भी, इस सूखे और कठोर सौन्दर्यहीन आधुनिक नगरमें प्रेमकी जादू विद्या धक्का खाकर निकल नहीं जाती। इस गाड़ी घोड़ेकी भाड़में, लोहेकी सीकड़ोंमें बँधी ट्रामकी राहमें वह चिरकिशोर प्राचीन देवता अपने धनुषके छिपे निशानेसे, लाल पगड़ीवाले पहरेदारोंके सामने कितनी रात बीते या कितने दिन चढ़े कितनी ही बार कितने ही स्थानोंमें वार किया करते हैं, इसका कोई अन्दाज नहीं।

रमेश और हेमनलिनी चमड़ेकी दूकानके सामने, मोदीकी दूकानकी बगलमें किरायेके मकानमें रहनेकी वजह प्रणय-विकासके सम्बन्धमें कुञ्जकी कुटियोंमें विहार करनेवालोंसे कुछ कम थे, यह कोई भी कह नहीं सकता। अन्नदाबाबूके चायके रससे सिंचे मलिन छोटेसे टेबिलके कमल-सरोवर न हो सकनेपर भी रमेशको किसी तरहका अभाव नहीं जान पड़ा। हेमनलिनीकी पाली हुई बिल्ली कृष्णसार-मृग-छौना न होनेपर भी रमेश पूर्णस्नेहके साथ उसकी गरदनको सुहलाता था—वह बिल्ली जब धनुषकी तरह पीठ फुला आलस्य छोड़ शरीर चाट-चाटकर अपनी शोभा बढ़ाने लगती, तब रमेशकी मुग्ध-

दृष्टिमें गौरव प्राप्त करनेके लिये वह किसी चौपायेसे कम नहीं जान पड़ती थी।

हेमनलिनी परीक्षा पास करनेकी व्यग्रतामें सिलाईकी शिक्षामें विशेष चतुरता प्राप्त नहीं कर सकी। कुछ दिनसे वह सिलाईमें चतुर एक सखीसे मन लगाकर सिलाई सीख रही थी। सिलाईके कामको रमेश बिलकुल अनावश्यक और तुच्छ समझता था। साहित्य और दर्शनमें हेमनलिनीके साथ उसका खूब लेन देन चलता था; किन्तु सिलाईके बारेमें रमेशको दूर हो रहना पड़ता था। इससे वह प्रायः ही अधीर होकर कह बैठता था,—"आजकल आपको सिलाईका काम इतना अच्छा क्यों लगता है? जिसके लिये समय बितानेका कोई उपाय नहीं, उन्हींके हकमें यह काम अच्छा है।" हेमनलिनी इसका कोई जवाब न देकर मुस्कुराकर सुईमें रेशम पिरोने लगती थी। अक्षय तीव्र स्वरमें बोल बैठता—"जिन सब कामोंकी संसारमें कोई जरूरत है; वह सब रमेश बाबूकी समझमें तुच्छ हैं। महाशय, चाहे कोई कितना ही बड़ा तत्त्वज्ञानी और कवि क्यों न हो, तुच्छ कामोंके त्याग-से उसका काम एक दिन भी नहीं चलता।" रमेश उत्तेजित हो इसके विरुद्ध तर्क करनेके लिये कमर कसकर बैठ जाता; तब हेमनलिनी बीचमें बाधा देकर बोल बैठती,—"रमेश बाबू, आप सब बातोंका जवाब देनेके लिये इतने व्यस्त क्यों हो उठते हैं? इससे संसारमें नाहकका बत-बढ़ाव होता है, जिसका कोई ठिकाना नहीं।" यह कहती हुई वह सर नीचाकर घर गिनती हुई सावधानीसे सुई चलाने लगती है।

एक दिन सवेरे रमेशने अपने पढ़नेके कमरेमें बैठते ही देखा कि टेबिलके ऊपर रेशमका फूल कढ़ा और मखमली कोनेसे मढ़ा एक ब्लाटिंग-पैड सजाकर रखा हुआ है। उसके एक कोनेमें 'र' अक्षर कढ़ा था और दूसरे कोनेपर सुनहरे जरीके तारसे एक कमल अङ्कित था।

पैडका इतिहास और अर्थ समझनेमें रमेशको क्षण-मात्रकी भी देर न लगी। उसकी छाती खिल उठी। अब उसकी अन्तरात्माने बिना तर्क और प्रतिवादके स्वीकार कर लिया, कि सिलाईका काम तुच्छ नहीं है। ब्लाटिंग पैडको हृदयसे लगाकर वह अक्षयसे भी हार माननेको राजी हो गया। उस ब्लाटिंग-पैडपर उसी समय एक चिट्ठीका कागज रख उसमें लिखा—

"यदि मैं कवि होता, तो कविता लिखकर बदला चुकाता; किन्तु मैं काव्यकी प्रतिभासे वञ्चित हूँ। ईश्वरने मुझे देनेकी क्षमता नहीं दी, लेकिन लेनेकी क्षमता भी तो कुछ है; आशातीत उपहारको मैंने कैसे ग्रहण किया उसे अन्तर्यामीके अतिरिक्त और कोई जान नहीं सकता। दान आँखोंसे दिखाई देता है, किन्तु आदान हृदयके भीतर छिपा रहता है। इति! चिरऋणी!"

यह चिट्ठी हेमनलिनीके हाथ पड़ी। इसके बाद इस बारेमें दोनोंमें कोई बातचीत नहीं हुई।

वर्षाकाल आ गया। बरसातका मौसम कम से-कम शहरी मनुष्य-समाजके लिये उतना सुखकर नहीं—वह वन-प्रान्तके लिये ही विशेष उपयोगी है; शहरके मकानवाले अपनी खिड़कियोंको बन्द रख, राह-चलतू अपने छातेको खोल; ट्रामगाड़ी अपने पर्दे गिरा वर्षाको रोकनेकी चेष्टामें पसीने-पसीने हो उठते हैं। नदी, पर्वत और वनप्रान्त वर्षाको सादर मित्र समझकर स्वागत करते हैं। इसलिये वहाँ ही वर्षाका यथार्थ आदर होता है—वहाँ सावनमें देवलोक और भूलोकके आनन्द-सम्मेलन के बीच किसी प्रकारका विरोध नहीं।

किन्तु नवीन प्रेम मनुष्यको वन पर्वतके साथ एक श्रेणीयुक्त कर देता है। लगातार वर्षासे अन्नदाबाबूका चूल्हा दूना विकल हो उठा; किन्तु रमेश और हेमनलिनीके मनकी स्फूर्तिमें कुछ भी बाधा न पड़ी। मेघकी छाया, वज्रकी तड़प और वर्षाके कलकल शब्दने इन दोनोंके

मनमें और भी घनिष्टता ला दी। बरसातके बहाने रमेशके अदालत जानेमें प्रायः ही बाधा पड़ने लगी। किसी-किसी दिन सवेरे ऐसी घोर वृष्टि होती है, जिससे हेमनलिनी घबराकर बोल बैठती,—"रमेशबाबू, इस वृष्टिमें आप घर कैसे जायेंगे।" रमेश बड़ी लज्जाके साथ जवाब देता, "इतना ही तो? किसी प्रकार निकल जाऊँगा।" हेमनलिनी कहती,—भींगनेसे सर्दी हो जायगी। यहाँ भोजन करके ही जाइये न?" सर्दी हो जानेका खयाल रमेशको नहीं था; उनके मित्रोंने सहजमें ही उन्हें कभी सर्दी होते देखा भी नहीं, किन्तु बरसातके समय उसे हेमनलिनीकी सेवाके अधीन होना पड़ता था—दो कदम चलकर उसे घर जाना भी अन्याय और दुःसाहस जान पड़ता था। किसी दिन बादलोंमें विशेष लक्षण दिखाई देते ही हेमनलिनीके घर रमेशके लिये खिड़की और शामको पकौड़ियोंका निमन्त्रण मिल जाता था। अच्छी तरह देखनेमें आया, कि इन लोगोंको एकाएक सर्दी लग जानेका आशङ्का जितनी प्रबल थी, उतना रसोई बनानेकी झंझटके लिये नहीं था।

इसी तरह दिन बीतने लगे। रमेशने इसका विचार नहीं किया कि इस अपनेमें विस्मृत हो जानेवाले हृदयके आवेशका परिणाम क्या होगा। किन्तु अन्नदाबाबू समझते थे और उनके समाजके और भी चार आदमी इसकी आलोचना करते थे। रमेशमें जितना पाण्डित्य था, उतना कर्त्तव्य-ज्ञान नहीं था; उसपर वर्त्तमान मुग्धताकी अवस्थामें उसकी सांसारिक बुद्धि और भी मलिन हो पड़ी थी। अन्नदाबाबू नित्य ही विशेष आशासे उसके मुँहकी ओर देखते थे, किन्तु उन्हें उधरसे कोई जवाब मिलता न था।

———

१०

अक्षयका गला विशेष सुरीला नहीं था; किन्तु जब वह स्वयं बेहाला बजाकर गाता था, तब अच्छे समझदारोंके अतिरिक्त साधारण श्रोता किसी तरहकी आपत्ति करते न थे; यहाँतक कि और गानेका अनुरोध करते थे। अन्नदाबाबूको सङ्गीतका शौक नहीं था, किन्तु इस बातको वे स्वीकार नहीं करते थे—फिर भी, वे अपनेको उससे बचाते थे। कोई अक्षयसे गानेका अनुरोध करता, तो वे बोल बैठते,—"यही तो तुम लोगोंमें दोष है। बेचारा गाना जानता है, इसलिये उसपर यों अत्याचार करना चाहिये।"

अक्षय विनीत भावसे कहता,—"नहीं-नहीं अन्नदाबाबू, इसके लिये चिन्ता न करें; इसमें अत्याचार काहेका।"

अनुरोध करनेवालोंकी ओरसे जवाब मिलता,—"तब फिर होने दिया जाय।"

उस दिन शामको खूब घनघोर घटा घिरी थी। प्रायः अँधेरा हो चला, फिर भी, वृष्टि नहीं रुकी। अक्षय पानीकी वजह बैठा रह गया। हेमनलिनीने कहा,—"अक्षय बाबू, कुछ गाइये।"

यह कहकर हेमनलिनी हार्मोनियमपर स्वर देने लगी।

अक्षयने बेहाला मिलाकर गाना शुरू किया—

"वायु बहे पुरवैया, नींद नहीं बिनु सैंया"

गानेके सब शब्दोंका अर्थ समझमें नहीं आता है—किन्तु उसके शब्द-शब्दका अर्थ समझनेकी जरूरत भी नहीं। जब मनमें विरह वेदनाका सञ्चार होता है, तब उसका जरासा आभास मिलना ही बहुत है। अर्थ समझा गया, कि बादलोंसे बूंदे झर रही हैं, मोर बोल रहे हैं और एकके लिये दूसरेकी व्याकुलताका अन्त नहीं।

अक्षय स्वरकी भाषामें अपने हृदयकी छिपी हुई बातके कहनेकी चेष्टा कर रहा था किन्तु यह भाषा और भी दो आदमियोंके काम आ

रही थी। दो आदमियोंका हृदय उस स्वर लहरीका आश्रय ले एक दूसरेपर आघात-प्रतिघात कर रहा था। संसारमें कुछ भी अकिञ्चित रह नहीं गया। सब मनोहर हो गया। संसारमें अबतक जिस मनुष्यने जितना प्रेम किया है, वह सभी मानो दो हृदयोंमें विभक्त हो अनिर्वचनीय सुख-दुःखकी आकांक्षा और आकुलतासे कम्पित होते रहे।

उस दिन मेघमें जैसा जमाव था, उसी प्रकार गाना भी जमा हुआ था। हेमनलिनी सिफारिश करने लगी,—"अक्षय बाबू, गाना खत्म न होने दीजिये और एक—और एक छेड़िये।"

उत्साह और आवेगमें आकर अक्षयका गाना लगातार चलने लगा। गानेका स्वर जम गया, उसमें कहींसे फर्क न पड़ा। मानो रह-रहकर बिजली चमकने लगी—वेदनासे चतुर हृदय मानो उसमें लिप्त हो गया।

उस दिन बहुत रातको अक्षय अपने घर गया। रमेश बिदा होनेके समय मानो गानेके स्वरोंके भीतरकी तरह चुपचाप हेमनलिनीके मुँहकी ओर देखने लगा। हेमनलिनीने भी उसके मुँहकी ओर देखा। दोनोंकी दृष्टिमें गानेकी छाया छा रही थी।

रमेश घर चला गया। वृष्टि क्षण भरके लिए रुक गई थी, फिर रिमझिम पानी बरसने लगा। रमेशको उस रात नींद नहीं आई। हेमनलिनी भी बहुत देरतक चुपचाप बैठी उस ओर अँधेरेमें पानीके बरसनेकी आवाज सुन रही थी। उसके मनका तार-तार बज रहा था—

"वायु बहे पुरवैया, नींद नहीं बिनु सैंया।"

दूसरे दिन सवेरे रमेश ठण्डी साँस ले सोचने लगा,—"अगर मैं गाना गा सकता, तो उसके बदलेमें अपनी अनेक विद्याओंको दान करनेमें न चूकता।"

किन्तु रमेशको यह आशा नहीं थी, कि किसी उपायसे किसी समय वह भी गाना गा सकेगा। उसने निश्चय किया; कि वह बजाना सीखेगा। इससे पहले एक दिन उसने एकान्त पाकर अन्नदाबाबूके घर-

का बेहाला उठाकर छड़ीसे रगड़ दी, छड़ीकी एक ही रगड़से सरस्वती ऐसा आर्त्तनाद कर उठीं, कि उसने बेहालासे छेड़छाड़ करना बहुत बड़ी निष्ठुरता समझ उस आशाको छोड़ दी। आज वह एक छोटा-सा हारमोनियम खरीद लाया। कोठरीके भीतरसे दरवाजा बन्दकर वह बहुत ही सावधानीसे उसपर उँगली चलाकर यह समझ गया, कि चाहे जो हो, इस यन्त्रमें बेहालासे अधिक सहिष्णुता है।

दूसरे दिन अन्नदाबाबूके घर पहुँचते ही हेमनलिनीने रमेशसे कहा, "आपके घरसे कल हारमोनियमकी आवाज आ रही थी।"

रमेश समझा था कि दरवाजा बन्द कर देनेसे किसीको खबर न होगी। किन्तु कान ऐसे हैं, जो रमेशकी कोठरीके बन्द शब्दकी भी खबर लेते हैं। रमेशको कुछ लज्जित हो मंजूर करना पड़ा, कि वह एक हारमोनियम खरीद लाया है और उसकी इच्छा है, कि बजाना सीखे।

हेमनलिनीने कहा,—'घरमें दरवाजा बन्दकर नाहक क्यों इतनी चेष्टा करते हैं? उससे तो अच्छा है, कि आप हमारे यहाँ अभ्यास करें, जहाँतक मुझे आता है, मैं भी सहायता करूँगी।"

रमेशने कहा,—"किन्तु मैं बिलकुल अनजान हूँ, मुझे सिखानेमें आपको बहुत कष्ट उठाना पड़ेगा।"

हेमनलिनीने कहा,—मुझमें जो कुछ विद्या है, उससे मैं अनजानको ही किसी तरह सिखा सकती हूँ।

क्रमशः प्रमाणित होने लगा, कि रमेशने अपना जो परिचय दिया वह बिलकुल सही था। ऐसे शिक्षककी बेमाँगी सहायता मिलनेपर भी स्वरके ज्ञानने रमेशके माथेमें घुसनेकी कोई राह न पाई तथा तैराक जैसे पानीमें पड़ पागलकी तरह हाथ-पैर फटकारता है, रमेश भी सङ्गीतके घुटने भर पानीमें वैसा ही व्यवहार करने लगा। कोई ठिकाना नहीं कि उसकी उँगली कब कहाँ जाकर पड़ती है। क्षण-क्षणमें बेसुरा स्वर बजने लगा, किन्तु रमेशके कानमें वह बेसुरा नहीं जँचता था। सुरे

और बेसुरेमें उसे कोई अलगाव न जान पड़ा; खूब निश्चिन्त मनसे वह सर्वत्र राग-रागिनीका उल्लंघन करने लगा। हेमनलिनी बीच-बीचमें बोल बैठती,—"यह क्या करते हैं, भूल हो रही है।" किन्तु इसी समय शीघ्रताके साथ दूसरी भूल पहलेकी भूलको छिपा लेती थी! गम्भीर स्वाभावका मेहनती रमेश सहज ही छोड़नेवाला नहीं था। सड़क पीटने वाला इञ्जन जैसे मन्दगतिसे चलता है, वह जरा भी नहीं देखता, कि उसके नीचे क्या पिस रहा है; अभागे स्वर और हारमोनियमके पर्दोंपर रमेशकी ऊँगलियाँ वैसी अन्धताके साथ बार-बार आने-जाने लगीं।

रमेशकी इस बेवकूफीपर हेमनलिनी हँस रही थी और रमेश भी हँस रहे थे। रमेशके भूल करनेकी असाधारण शक्तिसे हेमनलिनीको बहुत आमोद हो रहा था। भूलसे, बेसुरेपनसे, अक्षमतासे आनन्द प्राप्त होना प्रेमकी ही शक्तिका काम है। बच्चा जब चलना आरम्भ करता है, तब बार-बार भूलसे इधर-उधर पैर फेंकता है; किन्तु माताका स्नेह उतनेसे ही उछल पड़ता है। बजानेके सम्बन्धमें रमेश जिस विचित्रताके साथ अपनी भूल प्रकट करता है, हेमनलिनीके लिये उतना ही कौतुक हो जाता है।

रमेश बीच-बीचमें बोल बैठता,—"अच्छा, आप इतनी हँसती क्यों हैं? जब आप पहले-पहल बजाना सीखती थीं, तब क्या आपसे भूल नहीं होती थी?"

हेमनलिनीने कहा,—"भूल तो निश्चय होती थी, किन्तु सच कहती हूँ, रमेश बाबू, आपके साथ मेरी तुलना नहीं हो सकती।"

इससे रमेश दबता न था, हँसकर फिर आरम्भसे बजाना शुरू कर देता था। अन्नदाबाबू सङ्गीतकी भलाई-बुराईके सम्बन्धमें कुछ भी समझते न थे। वे बीच-बीचमें गम्भीर भावसे कान खड़ेकर बोल बैठते,—"ठीक है, रमेशका हाथ धीरे-धीरे सुधर रहा है।"

हेमनलिनी कहती,—"हाथको बेसुरेकी आदत हो रही है।"

अन्नदा—नहीं, नहीं; पहले जैसा सुना था, उससे अब कुछ-कुछ अभ्यास हो चला है। मुझे तो ऐसा जान पड़ता है, कि रमेश यदि लगा रहेगा, तो उसका हाथ वैसा बुरा न होगा। गाने-बजानेमें और नहीं, खूब अभ्यास करना चाहिये। सरगमका अभ्यास हो जानेपर सब आप ही सहज हो जाता है।

इन सब बातोंपर प्रतिवाद नहीं चलता। सबको बेजवाब हो सुनना पड़ता है।

११

प्रायः हर साल शरत्कालमें पूजाका टिकेट शुरू होनेपर हेमनलिनी-को साथ ले अन्नदाबाबू जबलपुरमें अपने बहनोईके यहाँ घूमने-फिरने चले जाते हैं। पाचनशक्ति बनाये रखनेके लिये उनकी यह सालाना चेष्टा थी।

आधा भादों बीत गया, अब पूजाकी छुट्टीमें अधिक देर नहीं। अन्नदाबाबू अभीसे अपनी यात्राकी तैयारीमें व्यस्त हो रहे हैं।

विच्छेद समीप देख आजकल रमेशने खूब मेहनतके साथ हार्मो-नियम सीखना आरम्भ किया है। एकदिन बात ही बातमें हेमनलिनीने कहा,—"रमेश बाबू, मुझे ऐसा जान पड़ता है कि कमसे कम कुछ दिन आपको वायु-परिवर्तनकी आवश्यकता है। क्यों पिताजी?"

अन्नदाबाबूने सोचा, कि बात तो ठीक है, क्योंकि इस बीच रमेश-के ऊपर शोक और दुःखका बहुत दुर्योग हुआ है। उन्होंने कहा,—"कुछ दिनके लिये घूम-फिर आना ही बेहतर है, समझे रमेश, चाहे पश्चिम हो या और किसी देशमें, मैंने देखा है, कि इससे कुछ दिनके लिये कुछ फल अवश्य होता है। पहले तो कुछ दिन भूख खूब बढ़ती है, खूब

अच्छी तरह भोजन होता है; इसके बाद फिर वही। फिर पेट भारी हो जाता है, छाती जलने लगती है; जो खाया जाता है, वही—"

हेमनलिनी—रमेश बाबू, आपने नर्मदाका झरना देखा है ?

रमेश—नहीं, मैंने नहीं देखा।

हेमनलिनी—यह आपको देखना चाहिये, क्यों पिताजी ?

अन्नदाबाबू—हाँ, ठीक तो है, रमेश हमलोगोंके साथ ही क्यों न चले चलें। हवा खोगे भी होगी और सङ्गमरमरका पहाड़ भी देखने में आयेगा।

जलवायु बदलना और सङ्गमरमरका पहाड़ देखना, यह दोनों ही रमेशके लिये इस समय बहुत जरूरी है। इसलिये रमेशको भी राजी होना पड़ा।

उस दिन रमेशका शरीर मानों हवामें उड़ा जा रहा था। अशान्त हृदयके आवेगको किसी रास्ते लगा रखनेके लिये वह अपने घरका दर्वाजा बन्दकर हार्मोनियम ले कर बैठ गया। आज उसे इधर-उधरका कुछ ज्ञान न रहा—बाजेके पर्दोंपर पागलकी तरह उसकी उँगलियाँ ताल-बेताल हो नाचने लगीं। हेमनलिनीके दूर जानेकी सम्भावनासे कई दिनसे उसका हृदय बहुत बेचैन था आज उसने प्रसन्नताके वेगमें सङ्गीतविद्याके सम्बन्धमें न्याय-अन्याय सभी समझदारीको विसर्जन कर दिया।

इसी समय दर्वाजेपर धक्का लगते हुए आवाज आई,—"आह, सब चौपट; ठहरिये, ठहरिये, रमेश बाबू, यह आप क्या कर रहे हैं !"

रमेशने लज्जित लाल मुख किये हुए दर्वाजा खोल दिया। अक्षयने कोठरीमें प्रवेशकर कहा,—"रमेश बाबू आप छिपे-छिपे यह कैसा काण्ड कर रहे हैं; क्या यह आपका दीवानी अदालतकी किसी कानूनी धारामें नहीं आता ?"

रमेश हँसने लगा; बोला,—"मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूँ।"

अक्षयने कहा,—"रमेश बाबू, यदि आप कुछ बुरा न मानें, तो आपके साथ मैं एक बातकी आलोचना करना चाहता हूँ।"

रमेश उत्कण्ठाके साथ आलोच्य-विषयके सुननेकी प्रतीक्षा करने लगा।

अक्षय—आप इतने दिनमें क्या समझे, क्योंकि हेमनलिनीकी भलाई बुराईके प्रति मैं लापरवाह नहीं हूँ।

रमेश हाँ ना कुछ न कह चुपचाप सुनता रहा।

अक्षय—उसके सम्बन्धमें आपका क्या विचार है, यह पूछनेका अधिकार मुझे है; क्योंकि मैं अन्नदाबाबूका शुभचिन्तक हूँ।

यह बात और बातका ढँग रमेश बाबूको बहुत खराब जँचा। किन्तु कड़ा जवाब देनेका अभ्यास और क्षमता रमेशमें नहीं थी। उसने मीठे स्वरमें कहा,—"आपके मनमें इस आशङ्काके होनेका कोई कारण भी है, कि उनके सम्बन्धमें मेरा कोई खराब विचार है?"

अक्षय—देखिये, आप हिन्दू-परिवारके हैं; आपके पिता हिन्दू थे। मैं सब जानता हूँ; आपके ब्राह्मके घर विवाह करनेकी आशङ्का से वे आपका विवाह करनेके लिये आपको देश ले गये थे।

इस समाचारके अक्षयके जाननेका एक कारण था। क्योंकि अक्षयने ही रमेशके पिताके मनमें यह आशङ्का उत्पन्न कर दी थी। रमेश क्षणभरके लिये अक्षयके मुँहकी तरफ देख न सका।

अक्षयने कहा,—"एकाएक आपके पिताजीकी मृत्यु हो जानेसे क्या आप अपनेको स्वाधीन समझते हैं? उनकी इच्छा थी, कि—"

रमेशसे अब सहा न गया; उसने कहा,—'देखिये अक्षय बाबू, दूसरेके सम्बन्धमें यदि आपको मुझे उपदेश देनेका अधिकार हो, तो

दे सकते हैं; मैं सुन लूँगा। किन्तु मेरे पिताके साथ मेरा जो सम्बन्ध है, उसमें आप कुछ न कहिये।"

अक्षयने कहा,—"अच्छा ठीक है, इन बातोंको छोड़िये। किन्तु हेमनलिनीसे विवाह करनेके विचार और उसकी अवस्थाके बारेमें आप जानते हैं या नहीं; यह तो बताइये।"

रमेश चोटपर चोट खाता हुआ क्रमशः उत्तेजित हो रहा था—उसने कहा,—"देखिये अक्षयबाबू, आप अन्नदाबाबूके मित्र हो सकते हैं, किन्तु मेरे साथ आपकी इतनी घनिष्ठता नहीं है। दया करके आप यह सब प्रसङ्ग न छेड़िये।"

मेरे बन्द करनेसे यदि सबकी बातें बन्द हो जायँ, और आप जैसे इस समय नतीजेका खयाल न करके आरामसे दिन बिता रहे हैं, वैसे ही बराबर बिता सकते, तब तो कोई बात ही न थी। किन्तु समाज आप जैसे निश्चिन्त स्वभावके लोगोंके लिये सुखका स्थान नहीं है। यद्यपि आपलोग बहुत उच्च आदमी हैं। संसारकी बातोंका उतना खयाल नहीं करते, फिर भी चेष्टा करनेसे इतना तो समझ सकेंगे, कि जिस भले आदमीकी कन्याके साथ ऐसा व्यवहार कर रहे हैं, उससे बाहरी लोगोंकी जवाबदेहीसे आप अपनेको बचा न सकेंगे—आप जिन लोगोंकी श्रद्धा करते हैं, उन लोगोंको लोक समाजमें अश्रद्धाभाजन बनानेका यही उपाय है।

रमेश—आपके उपदेशोंको मैं कृतज्ञताके साथ ग्रहण करता हूँ। मेरा जो कर्त्तव्य है, उसे मैं शीघ्र ही ठीक कर लूँगा और उसका पालन करूँगा; इसके सम्बन्धमें आप निश्चिन्त रहें—अब इसके बारेमें अधिक आलोचना करनेकी जरूरत नहीं।

अक्षय।—मुझे आपने बहुत बचाया रमेशबाबू, इतने दिनके बाद आप अपना कर्तव्य स्थिर करेंगे और उसका पालन करेंगे, इतनेसे ही मैं निश्चिन्त हो गया। आपके साथ आलोचना करनेका मुझे शौक नहीं

है। आपकी सङ्गीत-शिक्षामें बाधा दे मैं अपराधी हुआ हूं—क्षमा कीजियेगा। आप फिर बजाना शुरू करें, मैं चला।

यह कहता हुआ अक्षय तेजीके साथ बाहर निकल गया।

इसके बाद अत्यन्त बेसुरी सङ्गीत-चर्चा भी नहीं चली। रमेश माथेके नीचे दोनों हाथ रख बिछौनेपर चित हो लेट गया। बहुत देरतक इसी प्रकार पड़ा रहा। एकाएक घड़ीमें टन-टनकर पांच बजते ही वह तेजीसे उठ बैठा। अन्तर्यामी ही जानें, कि उसने क्या विचार स्थिर किया—किन्तु शीघ्र पड़ोसीके घर जाकर दो प्याला चाय पीना चाहिये, इसके बारेमें उसे कोई सङ्कोच न रहा।

हेमनलिनी ने चौंककर पूछा,—"रमेशबाबू, क्या आपकी तबीयत खराब है?"

रमेशने कहा, "वैसी कोई बात नहीं।"

अन्नदाबाबने कहा,—"और कुछ नहीं हाजमेमें कुछ गड़बड़ी हुई है—पित्ताधिक्य है। मैं जो गोली खाया करता हूँ, उसमेंसे एक गोली खाव तो सही।"

हेमनलिनीने हँसकर कहा,—'पिताजी, तुम अपने साथियोंको वह गोली खिला चुके हो, किन्तु उससे तो उन्हें कोई उपकार नहीं दिखाई दिया।"

अन्नदा।—लेकिन कोई खराबी तो नहीं हुई। मैंने खुद परीक्षा करके देखा है, कि अबतक मैंने जितने प्रकारकी गोलियाँ खाईं, उनमें यह सबसे फायदेमन्द है।

हेमनलिनी।—पिताजी, जब तुम कोई नई गोली खाते हो, तब कुछ दिनतक उसकी बहुत तारीफ करते हो—

अन्नदा।—तुम लोगोंको तो कुछ विश्वास ही नहीं होता—अच्छा अक्षयसे पूछो, मेरी दवासे उसको फायदा होता है या नहीं।

उस प्रामाणिक गवाहके भयसे हेमनलिनीको चुप हो जाना पड़ा।

किन्तु गवाह आप ही आकर हाजिर हो गया। आते ही उसने अन्नदा-बाबूसे कहा,—'अन्नदाबाबू, आप अपनी वह गोली मुझे दें। उससे बहुत फायदा हुआ है। आज शरीर बहुत हलका जान पड़ता है।"

अन्नदाबाबूने बड़े गर्वसे अपनी लड़कीके मुँहकी ओर देखा।

— - —

१२

गोली खिलानेके बाद अन्नदाबाबूने अक्षयको शीघ्र छोड़ना नहीं चाहा। अक्षय भी जानेके लिये विशेष शीघ्रता न दिखा बार-बार रमेशके चेहरेके प्रति कटाक्षपात करने लगा। रमेशकी आँखोंसे सहज ही कुछ नहीं देख पड़ता—किन्तु आज उसकी दृष्टिने अक्षयके कटाक्ष-को समझ लिया। वह बार-बार उसे उत्तेजित भी करने लगा।

पश्चिम घमने जानेका समय समीप है—मन ही मन उसीके विचार-में आज हेमनलिनीका चित्त बहुत प्रसन्न था। उसने सोच रखा था, कि आज रमेश बाबूके आनेपर वह छुट्टी बितानेके सम्बन्धमें उससे कितनी ही सलाहें करेगी। वहाँ एकान्तमें कौन-कौन-सी किताबें पढ़कर खतम करना चाहिये; उसके बारेमें भी तय करके एक याददाश्त बना लेना चाहिये। ठीक हुआ था, कि आज रमेश जरा जल्दी ही आयेगा; क्योंकि चायके समय अक्षय या कोई-न-कोई आ ही जाता है; तब सलाहमें सुविधा नहीं हो सकती।

किन्तु आज रमेश और दिनोंसे भी देरमें आया। उसके चेहरेका भाव भी चिन्तायुक्त है। इस से हेमनलिनीके उत्साहको बहुत ठेस लगी। मौका देखकर उसने रमेशसे धीरे-धीरे पूछा,—"आज आप बहुत देर करके आये?"

रमेश किसी और खयालमें चुप हो रहा; कहा,—"हाँ, आज देर हुई सही।"

हेमनलिनीने आज शीघ्रतासे दिन-ही-दिन चोटी कर ली थी। शिर-गूँथने और कपड़े बदलनेके बाद वह कई बार घड़ीकी तरफ ताक-ताक रह गई—कभी-कभी मनमें आता था, कि कहीं घड़ी गलत तो नहीं है, अभी शायद अधिक देर नहीं हुई। जब इतना धीरज रखना असाध्य हो उठा, तब उसने खिड़कीके पास बैठ सिलाईका काम हाथमें ले अधीर मनको शान्त करनेकी चेष्टा की। इसके बाद वह गम्भीर मुँह लेकर आया-किस कारण देर हुई. इसका रमेशके पास कोई जवाब न था—मानो आज जरा जल्दी आनेकी कोई शर्त ही नहीं हुई थी!

हेमनलिनीने किसी तरह चाय पीना समाप्त किया। कोठरीमें किनारे एक तिपाईके ऊपर कुछ किताबें थीं; हेमनलिनी जान बूझकर रमेशका ध्यान आकर्षित करनेके लिये उन किताबोंको उठाकर कमरेसे बाहर जानेको तैयार हुई। तब एकाएक रमेशको याद आया, उसने शीघ्रतासे उसके पास पहुँचकर कहा,—"इन्हें कहाँ ले जाती हो? आज जरा किताबें चुन लेना चाहिये।"

हेमनलिनीके होंठ काँप रहे थे। उसने उबलते हुए आँसुओंके वेग-को रोक काँपती हुई आवाजमें कहा,—"रहने दीजिये, किताबें चुन-कर क्या होगा।"

यह कहती हुई वह तेजीके साथ वहाँसे चली गई। उसने अपने सोनेवाले कमरेमें जाकर किताबोंको जमीनमें फेंक दिया।

रमेशका मन और भी विकल हो उठा। अक्षयने मन-ही-मन हँसकर कहा—"रमेशबाबू, जान पड़ता है, कि आज आपका शरीर उतना अच्छा नहीं है।"

रमेशने इसके जवाबमें कुछ बिड़बिड़ाकर कहा, जो किसीकी समझमें नहीं आया। शरीरके नामसे उत्साहित हो अन्नदाबाबूने कहा, "मैंने तो रमेशको देखते ही यह बात कही थी।"

मुस्कुराते हुए अक्षयने कहा—"शरीरकी ओर ध्यान रखना शायद

रमेश जैसे लोग तुच्छ समझते हैं। ये लोग भावराज्यके आदमी हैं—खाना हज़म न होनेपर उसके लिये चेष्टा करना गँवारूपन समझते हैं।"

अन्नदाबाबूने इस बातको गम्भीर भावसे उठाकर बड़े विस्तारके साथ प्रमाणित कर दिया कि भावप्रधान आदमी होनेपर हाजमेका खयाल तो रखना ही चाहिये।

रमेश चुपचाप बैठा मन-ही-मन जल रहा था।

अक्षयने कहा,—"रमेशबाबू, मेरी सलाह मानिये—अन्नदाबाबूकी गोली खाकर आज जरा सवेरे ही खाकर सो रहिये।"

रमेशने कहा,—अन्नदाबाबूसे आज मुझे कुछ खास बात करनी है; इसीसे बैठा हुआ हूँ।"

अक्षयने कुरसीसे उठते हुए कहा,—"देखिये तो सही, यह बात पहले कहनी चाहिये थी। रमेशबाबू सब बातें पेटमें रखते हैं; आखिर जब समय बीत जाता है, तब घबरा उठते हैं।"

अक्षयके चले जानेपर रमेश अपने जूतेकी ओर निगाह रख झुकी हुई अँधमुँदी हुई आँखें कर कहने लगा,—"अन्नदाबाबू, आपने मुझे सम्बन्धीकी तरह अपने घरमें आने-जानेका अधिकार दिया है, इसे मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ; जिसे मैं जुबानसे अदा नहीं कर सकता।"

अन्नदाबाबूने कहा,—"विचित्र बात है। तुम हमारे योगेन्द्रके मित्र हो, तुम्हें घरका लड़का न समझूँ तो और क्या समझूँ?"

भूमिका तो बँध गई किन्तु, अब आगे क्या कहना चाहिये, यह रमेशकी समझमें न आया। अन्नदाबाबूने रमेशका रास्ता साफ कर देनेके खयालसे कहा,—"रमेश, तुम्हारे जैसे लड़केको घरका बना सकनेमें मेरा भी कम सौभाग्य नहीं।"

इसपर भी रमेश बात उठा न सका।

अन्नदाबाबूने कहा,—"देखो न, तुम लोगोंके सम्बन्धमें बाहरके लोग बहुतेरी बातें कहते हैं। लोग कहते हैं, कि हेमनलिनी विवाहके योग्य

हो गई है, इस समय उसका साथी चुननेके लिये बहुत सावधान होनेकी आवश्यकता है। मैं उन लोगोंको जवाब देता हूँ, कि मैं रमेशपर बहुत विश्वास रखता हूँ—वह मेरे साथ कभी अनुचित व्यवहार न करेगा।"

रमेश।—अन्नदाबाबू, मुझे तो आप अच्छी तरह जानते हैं; यदि आप मुझे अपने मनमें योग्यपात्र समझते हैं, तो यह—

अन्नदा।—यह कहनेकी जरूरत ही नहीं। हम लोगोंने तो सब एक प्रकारसे ठीक कर रखा है—सिर्फ तुम्हारे यहाँ जो दुर्घटना हो गई, इससे दिन स्थिर नहीं कर सका। किन्तु बेटा, अब देर करना उचित नहीं। समाजमें इसके बारेमें तरह-तरहकी बातें उठ रही हैं—उसे जहाँतक होसके, दबा देना ही उचित है। तुम क्या समझते हो?

रमेश।—आप जैसी आज्ञा देंगे, वैसा ही होगा। अवश्य ही सबसे पहले आपकी लड़कीकी सलाह लेना उचित है।

अन्नदा।—यह तो है ही। किन्तु एक प्रकारसे वह सब जान चुकी है। फिर भी, कल सवेरे सब बातें पक्की कर लूँगा।

रमेश।—आपके सोनेमें अब देर हो रही है, अब आज्ञा दीजिये।

अन्नदा।—जरा ठहरो। मैं चाहता हूँ, कि मेरे जबलपुर जानेसे पहले ही तुम लोगोंका विवाह हो जाय, तो अच्छा है।

रमेश।—इसमें अब कौनसी देर है।

अन्नदा।—नहीं अब भी दस दिनकी देर है। आगामी रविवारको यदि तुम लोगोंका विवाह हो जाय, तो इसके बाद भी यात्राकी तैयारीके लिये दो-तीन दिनका समय मिलेगा। समझे रमेश, मैं इतनी जल्दी न करता—किन्तु मैं अपने शरीरके लिये चिन्तित हूँ।

रमेश राजी हो गया और एक गोली निगलकर घर चला गया।

———

१३

विद्यालयकी छुट्टी समीप है। छुट्टीके समय भी कमलाको विद्यालयमें ही रखनेके लिये रमेशने पहले ही मास्टरानीसे सब ठीक कर रखा है।

रमेशने सबेरे उठ मैदानके एकान्तमें टहलते-टहलते स्थिर किया, कि विवाहके बाद वह कमलाके बारेमें हेमनलिनीसे सब घटनाएँ आदि से अन्ततक विस्तारके साथ कह देगा। इसके बाद कमलासे भी सब बातोंके कहनेका अवकाश मिलेगा। इस तरह दोनों तरफ समझाव-बुझाव हो जानेपर कमला स्वच्छन्द सखीके रूपमें हेमनलिनीके साथ रहने लगेगी। देशमें इस बातपर बहुतेरी बातें उठ सकती हैं. यही समझकर उसने हज़ारीबाग में जाकर वकालत करना स्थिर किया।

मैदान से लौटने पर रमेश अन्नदाबाबू के घर गया। सीढ़ीपर एका-एक हेमनलिनीसे मुलाकात हो गई। और दिन इस तरह मुलाकात होने पर कुछ बात-चीत होती थी। आज हेमनलिनीका चेहरा लाल हो उठा उस लालिमामें मुस्कुराहटकी आभा ऊषाके प्रकाशकी तरह चमक उठी—हेमनलिनी मुँह फेर आँखें नीचीकर तेज़ीके साथ चली गई।

हेमनलिनीसे हार्मोनियमकी जो गत सीखी थी, उसीको रमेश घर जाकर खूब अच्छी तरह माँजने लगा। किन्तु सारे दिन एक ही गत बजानेसे काम नहीं चलता। उसने कविताकी पुस्तक पढ़नेकी चेष्टा-की—उसके मनमें आया, उसके प्रेमका जो सुर बहुत ऊँचाईपर चढ़ गया है, वहाँ तक किसी भी कविताका भाव चढ़ नहीं रहा है।

उधर हेमनलिनी अशान्त आनन्दके साथ अपने घरका सब काम निपटाकर दोपहरमें अपने सोनेकी कोठरीका द्वार बन्दकर सिलाई लेकर बैठ गई। उसके चेहरे पर परिपूर्ण प्रसन्नताकी शान्ति विराज रही थी। एक सर्वाङ्गीण सार्थकता उसपर छाई हुई थी।

चायके समयसे पहले ही कविताकी पुस्तक और हारमोनियम छोड़ रमेश अन्नदाबाबूके घर आ पहुँचा। अन्य दिन हेमनलिनीके साथ मुलाकात होनेमें देर नहीं लगती थी। किन्तु आज उसने चायकी कोठरीमें देखा, कि वह शून्य है; दो-मञ्जिलेकी बैठकमें देखा, वह भी शून्य है; हेमनलिनी अभीतक अपने सोनेकी कोठरीसे नीचे नहीं उतरी।

अन्नदाबाबू ठीक समयसे आकर टेबिलपर अधिकार कर बैठे। रमेश बार-बार चकित हो दर्वाजेकी ओर देखने लगा।

पैरका शब्द सुनाई दिया, किन्तु घरमें अक्षयने प्रवेश किया। उसने बहुत ही सहृदयता दिखाते हुए कहा,—"यहाँ हैं रमेशबाबू, मैं आपके घर गया था।"

यह सुनते ही रमेशके चेहरेपर उद्वेगकी छाया पड़ गई।

अक्षयने हँसकर कहा,—"डरते क्यों हैं रमेशबाबू, मैं आपपर आक्रमण करने नहीं गया था। शुभ-समाचारपर अभिनन्दन प्रकट करना इष्ट-मित्रोंका कर्त्तव्य है—उसीका पालन करने गया था।"

इस बातपर अन्नदाबाबूका खयाल आया, कि हेमनलिनी मौजूद नहीं है। हेमनलिनीको आवाज दी—कोई जवाब न पाकर उन्होंने ऊपर जाकर कहा, "हेम, यह क्या बात है अभीतक सिलाई लेकर बैठी हुई हो? चाय तैयार हो गई। रमेश और अक्षय आ गये।"

हेमनलिनीने जरा रक्तिम चेहरेसे कहा,—"पिताजी, मेरी चाय ऊपर भेज दीजिये—आज मैं इस सिलाईको खतम कर देना चाहती हूँ।"

अन्नदा—तुममें यही बड़ा दोष है हेम, जब किसी कामको ले बैठती हो, तब और किसी बातका खयाल नहीं करती। जब पढ़ती थी, तब किताब हाथसे छूटती न थी, अब सिलाई लेकर बैठी हो, तो सब काम छोड़ बैठी हो। नहीं-नहीं, यह न होगा—चलो, नीचे चलकर चाय पी लो।

यह कहते हुए अन्नदाबाबू जबरदस्ती हेमनलिनीको नीचे ले आये। वह आते ही किसीकी ओर निगाह न कर शीघ्रताके साथ चाय देनेमें व्यस्त हो गई।

अन्नदाबाबूने घबराकर कहा,—हेम, यह क्या करती हो। मेरे प्यालेमें चीनी क्यों दे रही हो। मैं तो कभी भी चीनी डाली चाय नहीं पीता।"

अक्षयने हँसकर कहा,—"आज वे अपनी उदारताको सँभाल नहीं सक रही हैं—आज सबको मीठा खिलायेंगी।"

हेमनलिनीके प्रति यह छिपी दिल्लगी रमेशके मनमें असह्य हुई। उसने मन-ही-मन विचार किया, कि चाहे जो हो, विवाहके बाद अक्षय-से किसी प्रकारका लगाव न रखना चाहिये।"

इसके तीन-चार दिन बाद एक दिन सन्ध्या समय चायके टेबिल पर अक्षयने कहा,—"रमेशबाबू, अब आप अपना नाम बदल दीजिये।"

रमेशने इस दिल्लगी की चेष्टापर चिढ़कर कहा,—"यह तो कहिये, कि क्यों नाम बदल दूं?"

अक्षयने समाचार-पत्र खोलकर कहा,—"यह देखिये, आपके नाम-के एक छात्रने किसी औरको अपने नामसे इम्तेहान दिलाकर पास करा दिया, वह एकाएक गिरफ्तार हो गया।"

हेमनलिनी जानती है, कि रमेश मुँहपर जवाब नहीं देता—इस-लिये अक्षय रमेशपर जितनी चोटें चलाता था, उसका जवाब अबतक नहीं देता—इसलिये अक्षयको वह बिना जवाब दिये रह न सकी। गहरे क्रोधके लक्षणको छिपाकर उसने जरा हँसकर कहा,—"शायद जेल-खानोंमें अक्षय नामके भी बहुतेरे लोग हैं।"

अक्षयने कहा,—"यह देखिये, मित्रभावसे अच्छी सलाह देनेपर लोग बुरा मानते हैं। और कुछ इतिहास सुनाऊँ? आप तो जानती हैं, मेरी छोटी बहन शरत् बालिका विद्यालयमें पढ़ने जाती है। उसने कल

शामको आकर बताया, कि तुम्हारे रमेशबाबूकी स्त्री हमारे स्कूलमें पढ़ती है। मैंने कहा, दुत पगली ! क्या मेरे रमेश के अलावा संसारमें कोई दूसरा रमेश नहीं है। इस पर शरतने कहा, कि चाहे जो हो, वे अपनी स्त्री पर बड़ा अत्याचार कर रहे हैं। छुट्टीमें प्रायः सभी लड़कियाँ घर जाती हैं—उन्होंने अपनी स्त्रीको बोर्डिंगमें ही रखनेका बन्दोबस्त किया है। वह बेचारी रो-रोकर मर रही है। मैंने उसी समय मनमें सोचा, कि यह बात तो अच्छी नहीं। शरतने जैसी भूल की, वैसी ही भूल और लोग भी तो कर सकते हैं।"

अन्नदाबाबू हँस पड़े: कह बैठे—"अक्षय, तुम क्या पागलोंकी तरह बातें कर रहे हो ? किसी रमेशकी स्त्री स्कूलमें पढ़ती और रोती है, तो इसलिये रमेश अपना नाम बदल दे ?"

इसी समय उदास मुँहसे रमेश वहांसे उठकर चला गया। अक्षय बोल उठा—"यह क्या रमेशबाबू, आप नाराज होकर चले क्यों जा रहे हैं ? आप समझ रहे है, कि मैं आपपर सन्देह कर रहा हूँ ?" कहता हुआ, वह भी रमेशके पीछे चला।

अन्नदाबाबूने कहा,—'यह सब क्या खुरफात है ?"

हेमनलिनी रोने लगी। अन्नदाबाबूने घबराकर कहा,—'यह क्या हेम. रोती क्यों है ?"

उसने उमड़ती हुई रुलाईके कारण भरभराई आवाजमें कहा,—"पिताजी, यह अक्षयबाबूका अन्याय है। वे मेरे घर आये भले आदमी-का इस तरह क्यों अपमान करते हैं ?"

अन्नदाबाबूने कहा,—"अक्षय दिल्लगीमें न जाने क्या बक गया, इसपर इतना घबरानेकी क्या जरूरत है ?"

"इस प्रकारकी दिल्लगी असहनीय है।"—कहती हुई हेमनलिनी तेजीके साथ ऊपर चली गई।

इस बार कलकत्ते आनेके बादसे रमेश बड़ी मेहनतके साथ कमला-

के पतिकी खोज कर रहा था। उसने बड़े कष्टसे धोबापूकुरका पता लगाकर कमलाके मामा तारिणीचरणको एक चिट्ठी भी भेजी है।

इस घटनाके दूसरे दिन सवेरे रमेशको उस पत्रका जवाब मिला। तारिणीचरणने लिखा है,—"दुर्घटनाके बाद मेरे दामाद श्रीमान् नलिनाक्षका अबतक कोई पता नहीं लगा। वे रङ्गपुरमें डाक्टरी करते थे—वहाँ चिट्ठी लिखनेसे जान पड़ा है कि वहाँ भी आजतक किसीको उनका कुछ पता न चला। उसका जन्मस्थान कहाँ है, इसका पता नहीं।"

आज रमेशबाबूकी यह भी आशा जाती रही, कि नलिनाक्ष जीवित है।

सवेरे रमेशको और भी कई चिट्ठियाँ मिलीं। विवाहका समाचार पाकर उनके सङ्गी साथियोंने उन्हें अभिनन्दन-पत्र लिखा है। उसमें किसीने अपने हकका तकाजा किया है तो किसीने चुपके-चुपके विवाह ठीक कर लेनेपर हँसीके साथ तिरस्कार किया है।

इसी समय अन्नदाबाबूके घर नौकरने रमेशके हाथमें एक चिट्ठी दी। हस्ताक्षर देख रमेशबाबूकी छाती दहल उठी।

चिट्ठी हेमनलिनीकी थी। रमेश समझ गया, कि अक्षयकी बातोंसे हेमनलिनीके मनमें सन्देह हुआ है और उसीको दूर करनेके लिये उसने रमेशको पत्र लिखा है।"

उसने चिट्ठी खोलकर देखा, उसमें लिखा था—

"अक्षयबाबूने कल आपके साथ अन्याय किया है। मैं समझती थी, कि आज सवेरे ही आप आयेंगे, आये क्यों नहीं? अक्षयबाबूकी बातोंको आप अपने मनमें स्थान देते हैं? आप तो जानते हैं, कि मैं उनकी बातें मानती ही नहीं। आज उस समय आप जरा जल्दी ही आयें—आज मैंने सिलाई छोड़ रखी है।"

इन कई लाइनोंमें हेमनलिनीके धीरजसे भरे कोमल हृदयमें चोट पहुँचनेका अनुभवकर रमेशकी आँखोंमें आँसू भर आया। रमेश समझ

गया कि कलसे ही हेमनलिनी रमेशका दुःख दूर करनेके लिये व्यग्रता-के साथ आसरा देख रही है। इसी तरह उसकी रात बीती और इसी तरह सवेरा बीत गया। अन्तमें न रह सकनेपर उसने यह चिट्ठी लिखी है।

रमेश कलसे ही सोच रहा था, कि हेमनलिनी से सब बातें खोलकर कह देना उचित है। किन्तु कलके मामलेसे कहना कठिन हो गया। अब तो शायद यह समझा जायगा, बात खुल जानेपर अपनी निरपराधिता साबित कर रहा है। केवल इतना ही नहीं, इससे अक्षयकी भी जीत होगी; वह भी इसे असह्य होगा।

रमेश सोचने लगा—"निश्चय ही अक्षयके मनमें यह खयाल है कि कमलाका पति कोई अन्य रमेश है। नहीं तो अबतक वह केवल इशारा करके ही शान्त न होता; महल्ले भरमें शोर मचा देता। अतएव इस समय कोई-न कोई उपाय होना जरूरी है।"

इसी समय डाकसे और चिट्ठी आई। रमेशने खोलकर देखा, वह चिट्ठी स्त्री-विद्यालयकी प्रबन्धिनीके पाससे आई है। उन्होंने लिखा है, कि कमला बहुत दुःखी है; उसे इस हालतमें छुट्टीके समय वे विद्यालयकी बोर्डिङ्गमें रखना उचित नहीं समझतीं। आगामी शनिवारको स्कूलमें छुट्टी हो जायगी: उसी समय उसे विद्यालयसे घर ले जाना उचित है।

आगामी शनिवारको कमलाको विद्यालयसे ले आना पड़ेगा और आगामी रविवारको रमेशका विवाह है।

"रमेशबाबू, मुझे क्षमा कीजियेगा" कहता हुआ इसी समय अक्षय आ पहुँचा। उसने कहा,—"ऐसी एक मामूली दिल्लगीसे आप इतने नाराज हो जायेंगे, यह पहले मालूम होनेसे मैं यह बात कहता ही नहीं। दिल्लगीमें कुछ सचाई होनेसे ही लोग चिढ़ते हैं। किन्तु जो बिलकुल ही गलत है, उसपर आप सबके सामने इतने नाराज क्यों हुए। अन्नदा-बाबू तो कलसे ही मुझे धिक्कार रहे हैं—हेमनलिनी मुझसे बोलती ही नहीं।

आज सवेरे मैं उन लोगोंके यहाँ गया था, वे लोग कमरेसे उठकर चले गये। भला आप ही कहिये, कि मैंने ऐसा कौनसा अपराध किया है।"

रमेशने कहा,—"इन सब बातोंका विचार समयपर होगा। इस समय मुझे माफ करें—मुझे बहुत जरूरी काम है।"

अक्षय - शायद रौशनचौकीका बयाना देने जा रहे हैं। क्योंकि समय बहुत कम है। मैं आपके शुभकर्ममें बाधा नहीं दिया चाहता, जाता हूँ।

अक्षयके चले जानेपर रमेश अन्नदाबाबूके घर पहुँचा। घरमें घुसते ही हेमनलिनीसे उसकी मुलाकात हुई। आज रमेशके जरा जल्दी आनेके खयालसे हेमनलिनी पहलेसे ही तैयार बैठी थी। उसने अपनी सिलाई-का काम मोड़कर रूमालमें बाँध टेबिलपर रख दिया था। पास ही हार्मोनियम बाजा भी रखा था। आज उसका विचार था कि कुछ सङ्गीतकी चर्चा हो। इसके अलावा अव्यक्त सङ्गीत तो हो ही रहा है।

रमेशके घरमें घुसते ही हेमनलिनीके चेहरेपर एक उज्ज्वल और कोमल-आभा छिटक पड़ी। किन्तु वह क्षणभरमें ही मैली पड़ गई, जब रमेशने और कोई बात न छेड़कर पहले ही पूछा कि अन्नदाबाबू कहाँ हैं।"

हेमनलिनीने जवाब दिया,—"पिताजी अपने बैठकमें हैं। क्यों क्या अभी उनसे कुछ प्रयोजन है? वह तो बस चाय पीनेके समय उतरेंगे।"

रमेश।—नहीं मुझे बहुत जरूरत है। देर करना उचित नहीं।

हेमनलिनी।—तो जाइये, वे कमरेमें ही हैं।

रमेश चला गया। जरूरत है! संसारमें जरूरतके लिये सब्र नहीं। इसके कारण प्रेमको भी दर्वाजेपर बैठके प्रतीक्षा करनी पड़ती।

शरत्के साफ दिनने मानो श्वास छोड़ अपने आनन्द-भण्डारके सोनेके सिंहद्वारको बन्द कर दिया। हेमनलिनी हार्मोनियमके पाससे

कुर्सी हटाकर टेबिलके पास बैठ मन लगाकर सिलाई करने लगी। सुई चुभने लगी; केवल बाहर नहीं, भीतर भी। रमेशकी जरूरत भी शीघ्र पूरी नहीं हुई। जरूरत राजाकी तरह अपना समय पूरा लेती है—और प्रेम कङ्गाल है।

— —— —

१४

रमेशने अन्नदाबाबूके कमरेमें प्रवेश किया। उस समय अन्नदाबाबू अखबारसे मुँह ढँक आरामकुर्सी पर पड़े सो रहे थे। रमेशके घरमें पहुँच खांसनेसे ही वे चौंककर उठे और अखबारको हाथमें लेकर कहा,—"देखा रमेश इस बार हैजेसे कितने आदमी मर रहे हैं?"

रमेशने कहा,—'विवाह कुछ दिनके लिये रोकना होगा—मुझे कुछ विशेष जरूरत है।"

अन्नदाबाबूके माथेसे शहरकी मौतका विवरण एकबारगी ही हवा हो गया। क्षणभर रमेशके मुंहकी ओर देखते रहकर उन्होंने कहा,—"यह कैसी बात रमेश! मैं निमन्त्रण जो भेज चुका हूँ।"

रमेशने कहा,—इस रविवारके बदले आगेका रविवार रख आज ही फिर निमन्त्रण पत्र भेज देना चाहिये।"

अन्नदा—रमेश, तुमने तो मुझे हैरान कर दिया। क्या यह भी मुकद्दमा है, कि अपनी सुविधाके अनुसार तुम तारीख रख लो! जरा सुनूँ तो सही, तुम्हें कौनसी जरूरत है।

रमेश—एक खास जरूरत है, देर होनेसे काम न चलेगा।

अन्नदाबाबू हवाकी चपेटसे गिरे हुए केलेके वृक्षकी तरह आराम कुर्सीपर लम्बे हो गये। उन्होंने कहा,—देर करनेसे काम न चलेगा। अच्छी बात है, उत्तम बात है तुम्हारी जो इच्छा हो, करो। निमन्त्रण पलटानेकी व्यवस्थामें तुम्हें जो उचित जान पड़े, वही करो। लोग

जब मुझसे पूछेंगे, तो कह दूँगा, कि मैं इस बारेमें कुछ नहीं जानता—उन्हें क्या जरूरत है, यह वही जानें; उन्हें कब सुविधा होगी, इसे वही बता सकते हैं।"

रमेश कोई जवाब न दे चुप बैठा रहा। अन्नदाबाबूने फिर कहा,—"हेमनलिनीसे सब बातें बता दी हैं?"

रमेश—नहीं, वह अभी कुछ नहीं जानतीं।

अन्नदा—लेकिन उसका जानना जरूरी है। अकेले तुम्हारा ही विवाह तो है नहीं।

रमेश—मैंने सोचा था, कि पहले आपको खबर देकर तब उन्हें दूँगा।

अन्नदाबाबू बुला बैठे,—"हेम, हेम!"

हेमनलिनीने कमरेमें प्रवेशकर कहा,—"क्या पिताजी।"

अन्नदा—रमेशका कहना है, कि उन्हें कुछ विशेष काम है, अभी उन्हें विवाह करनेकी फुरसत नहीं।

हेमनलिनीने उदास हो रमेशकी ओर देखा। रमेश अपराधीकी तरह चुपचाप बैठा रहा।

रमेशको यह आशा नहीं थी, कि हेमनलिनीको यह समाचार इस रूपमें दिया जायगा। अप्रिय समाचारने एकाएक बहुत ही रूढ़भावसे किस प्रकार हेमनलिनीपर मर्मान्तिक आघात किया, उसका अनुभव भी अपने व्यथित हृदयसे किया। किन्तु जो तीर एक बार चल जाता है, वह फिर पलटाये नहीं पलटता—रमेशने साफ देखा कि उस निठुर तीरने हेमनलिनीके हृदयके बीचोंबीच चोट किया।

इस बातको अब किसी तरह नरम कर लेनेका कोई उपाय नहीं। सच ही है विवाह इस समय रुक जायगा, रमेशको खास जरूरत है क्या जरूरत है इसे भी वह कह नहीं सकता। इससे बढ़कर कोई नई व्यथा क्या हो सकती है।

अन्नदाबाबूने हेमनलिनीकी ओर देखकर कहा,—'तुम्हीं लोगोंका काम है, अब तुम्हीं लोग इसकी कोई मीमांसा कर लो।"

हेमनलिनीने शिर झुकाकर कहा,—"पिताजी, मैं इसके बारेमें कुछ नहीं जानती" – यह कहती हुई जैसे बरसातके बादलके मुँहपर सूर्य्यास्त की मलिन आभा मिल जाती है, वैसे ही वह वहाँसे चली गई।

अन्नदाबाबू अखबारको मुँहके सामने रख पढ़नेके बहाने सोचमें पड़ गये। रमेश चुपचाप बैठा रहा।

एकाएक रमेश चौंककर उठा और चला गया। बैठनेके बड़े कमरेमें जाकर उसने देखा, कि हेमनलिनी खिड़कीके पास चुपचाप खड़ी है। उसकी आँखोंके सामने पूजाकी छुट्टीसे पहलेका कलकत्ता, जुआरमें आई नदीके समान समूची सड़क और गलियोंमें जन-प्रवाहसे चञ्चल और मुखर हो रहा है।

रमेश एकबारगी उसके सामने जानेमें सङ्कुचित हुआ। पीछेकी ओरसे कुछ देरके लिये स्थिर-दृष्टिसे उसे देखने लगा। शरत्के सान्ध्य प्रकाशमें खिड़कीमें खड़ी इस मूर्त्तिने रमेशके मनमें एक चिरस्थायी चित्र अङ्कित कर दिया। वह सुकुमार कपोलका एक अंश, यत्नके साथ गुथी हुई चोटी, गर्दनपर लहराते कोमल बाल, उसके नीचे सोनेकी हारकी एक आभा, बाईं ओर लटकते हुए अञ्चलका टेढ़ापन—सभी रेखा-रेखामें उसके पीड़ित मनके ऊपर जमकर बैठ गया।

रमेश धीरे-धीरे हेमनलिनीके पास आकर खड़ा हो गया। हेमनलिनी रमेशके बदले सड़कके लोगोंकी ओर मानों अधिक उत्सुकताका बोध करने लगी। रमेशने भरभराई हुई आवाजमें कहा,—"आपसे मेरी एक भिक्षा है।"

रमेशकी आवाजमें उछलती हुई वेदनाके आघातका अनुभवकर क्षण भरमें हेमनलिनीने मुंह फेरा। रमेश बोल उठा,—'तुम मुझपर अविश्वास न करना।' रमेशने यह पहले-पहल हेमनलिनीको "तुम"

कहा। "तुम मुझसे इतना कह दो, कि मुझपर कभी अविश्वास न करोगी। मैं भी अन्तर्यामीको हृदयसे साक्षी देकर कहता हूँ, कि तुम्हारे आगे मैं कभी अविश्वासी न बनूँगा।"

रमेशके मुंहसे और कोई बात न निकली, उसकी आँखोंमें आंसू झलझला आये। हेमनलिनीने अपने निस्तब्ध करुण नेत्रोंसे रमेशके मुंहकी ओर स्थिर हो देखा। इसके बाद एकाएक बहती हुई आंसुओंकी धारा हेमनलिनीके दोनों गालोंपर झर-झर बहने लगी। देखते-देखते उस एकान्त खिड़कीके पास दोनोंमें वाक्यहीन शान्ति और धैर्यका स्वर्गखण्ड सृजित हो गया।

कुछ देर इसी प्रकार अश्रुजलसे भीगते हुए सुगंभीर मौनके साथ हृदयको निमग्न रख जरा आरामसे ठण्ठी सांस लेकर रमेशने कहा, "मैंने सप्ताह भरके लिये विवाह स्थगित रखनेका जो प्रस्ताव किया है, उसका कारण तुम जानना चाहती हो?

हेमनलिनीने चुपचाप शिर हिलाया—वह नहीं जानना चाहती।

रमेशने कहा,—"विवाहके बाद मैं तुमसे सब बातें खोल-कर कहूँगा।"

इस बातसे हेमनलिनीके कपोलका किनारा जरा गुलाबी हो उठा।

आज भोजनके उपरान्त जब हेमनलिनी रमेशके साथ मिलनकी आशासे उत्सुकताके साथ सब सजावट कर रही थी, उस समय वह अनेक बातें, अनेक एकान्तकी सलाहें, अनेक छोटे मोटे सुख-चित्रकी कल्पना कर रही थी। किन्तु अभी जो कुछ देर पहले दोनोंके हृदयने विश्वासका माला-बदलौअल किया—यह जो आंखोंसे आंसू बह पड़े और बातचीत कुछ न हुई तथा दोनों ही एक-दूसरेकी बगलमें कुछ देर तक खड़े रहे—उस एकान्त आनन्द, गंभीर शान्ति और परम धैर्यकी कल्पना भी वह नहीं कर सकी थी।

हेमनलिनीने कहा,--"तुम जरा पिताजीके पास जाओ, वे नाराज़ हो गये हैं।"

रामेश प्रसन्नचित्तसे संसारके छोटे-बड़े आघात-संघातको छातीपर सहनेके लिये चला।

१५

अन्नदाबाबूने रमेशको फिर अपनी कोठरीमें प्रवेश करते देख आग्रहके साथ उसके मुँहकी ओर देखा।

रमेशने कहा,--"अगर निमन्त्रणका फर्द मेरे हाथ दें, तो मैं दिन-परिवर्तनकी सूचना आज ही रवाना कर दूँ।"

अन्नदाबाबूने कहा,--"तब, दिन बदलनेकी ही सलाह ठहरी?"

रमेशने कहा,--"हाँ, दूसरा कोई उपाय दिखाई नहीं देता।"

अन्नदाबाबूने कहा,--देखो बेटा मुझे इस बारेमें न घसीटो, जो कुछ बन्दोबस्त करना है, वह तुम्हीं करो। मैं लोक-हँसाई न सहूँगा। विवाहके मामलेको यदि अपनी मर्जीके अनुसार लड़कोंका खेल बना डालो तब मेरे जैसे बूढ़ोंका इसमें न रहनाही अच्छा है। यह लो. अपनी निमन्त्रणकी फेहरिस्त। इस बीचमें मैं जितने रुपये खर्च कर चुका, उसमें ही कितने रुपये बर्बाद हो जायँगे। मुझमें इतनी ताकत नहीं है, कि बारबार इस तरह रुपयेको पानीमें बहाऊँ।

रमेश सब खर्च और व्यवस्था अपने ऊपर लेनेको तैयार हुआ। वह उठनेकी तैयारी कर रहा था, ऐसे समय अन्नदाबाबूने फिर कहा,--"रमेश, तुमने ठीक किया है, कि विवाहके बाद वकालतकी प्रैक्टिस कहाँ करोगे? कलकत्तेमें ही न?"

रमेशने कहा,—"नहीं! पश्चिममें कोई अच्छी जगह ढूँढ रहा हूँ।"

अन्नदाबबू—वही ठीक है, पश्चिम ही अच्छी जगह है। इटावा

भी कोई खराब जगह नहीं। वहाँका पानी हाजमेके लिये बहुत मुफीद है—मैं वहाँ महीने भर रहा—उस एक महीनेमें मेरा भोजन दूना हो गया था। देखो बेटा, संसारमें मेरी यह एक ही बेटी है—मैं सदा उसके पास-पास न रहूँगा, तो वह भी सुखी न होगी; मैं भी निश्चिन्त रह न सकूँगा। इसीसे मेरी इच्छा है कि तुम्हें एक स्वास्थ्यकर जगह देखकर रहना चाहिये।

अन्नदाबाबू एक अपराधका मौका पा रमेशपर तरह-तरहकी हुकूमत चलाने लगे। उस समय यदि रमेशको इटावेकी सलाह न दे गारो या चेरापूँजीकी सलाह देते, तो उसपर भी वह उसी समय राजी हो जाता। उसने कहा,—"जैसी आज्ञा, मैं इटावेमें ही प्रैक्टिस करूँगा।" यह कहकर रमेश निमन्त्रण बदलनेका कार्यभार ले चला गया।

कुछ देर बाद अक्षयके आनेपर अन्नदाबाबूने कहा,—"रमेशने अपना विवाह एक सप्ताहके लिये टाल दिया है।"

अक्षय—नहीं-नहीं, आप यह क्या कहते हैं! यह भी कभी हो सकता है? परसो ही तो विवाह है!

अन्नदा—समय टालना तो नहीं चाहता था—ऐसा तो मामूली लोगोंमें भी नहीं होता। किन्तु आजकल तुम लोगोंके मामलेमें सभी सम्भव है।

अक्षय अपने मुँहको गम्भीर बना आडम्बरके साथ चिन्ता करने लगा। कुछ देर बाद उसने कहा,—आप लोग एकबार जिसे सत्पात्र समझ लेते हैं, उसकी ओरसे दोनों आँखें बन्द कर लेते हैं। जिसके हाथ लड़कीको सदाके लिये समर्पण करना चाहते हैं, उसके बारेमें अच्छी तरह खोज-खबर रखना उचित है। हो सकता है, कि कोई स्वर्गका देवता ही हो, फिर भी, सावधान रहनेवालेका कभी विनाश नहीं होता।"

अन्नदा—रमेश जैसे लड़केपर भी यदि सन्देह करना पड़े, तब तो ससारमें किसीके साथ कोई सम्बन्ध रखना ही असम्भव जान पड़ता है।

अक्षय—अच्छा, रमेश बाबूने कोई कारण बताया, कि वे क्यों विवाहका दिन टाल रहे हैं?

अन्नदाबाबूने माथेपर हाथ फेरते हुए कहा,—"नहीं, उसने कारण तो कुछ नहीं बताया; पूछने पर कहा, कि बहुत जरूरी काम है।"

अक्षय मुँह फेरकर जरा हँस दिया। इसके बाद कहने लगा,—"जान पड़ता है, कि आपकी लड़कीसे रमेशने कोई कारण बताया हो।"

अन्नदाबाबू—हो सकता है।

अक्षय—उसे जरा बुलाकर पूछना चाहिये।

"ठीक कहते हो"—कहकर अन्नदाबाबूने ऊँची आवाजसे हेमनलिनीको बुलाया। हेमनलिनी कोठरीमें अक्षयको देख इस तरह बापके सामने खड़ी हुई, जिसमें अक्षय उसका मुँह न देख सके।

अन्नदाबाबूने पूछा,—"विवाहका दिन एकाएक टाल देनेके बारेमें रमेशने उसका कोई कारण भी तुम्हें बताया है?"

हेमनलिनीने सिर हिलाकर कहा,—"नहीं।"

अन्नदाबाबू—बड़े आश्चर्यकी बात है। जैसा रमेश, वैसी ही तुम। उसने आकर कह दिया, कि 'मुझे विवाहकी फुरसत नहीं है'; तुमने भी कह दिया 'अच्छी बात है, फिर किसी दिन होगा।' बस, फिर कोई बात ही नहीं।

अक्षयने हेमनलिनीका पक्ष लेकर कहा,—"जब एक आदमी साफ-साफ कारण छिपा रहा है, तब उससे कुछ पूछना भी तो अच्छा नहीं जान पड़ता। यदि कहने लायक बात होती, तो रमेशबाबू आप ही कह देते।"

हेमनलिनीका मुँह लाल हो गया। उसने कहा,—"इस बारेमें मैं

बाहरी लोगोंकी कोई बात सुनना नहीं चाहती। जो हो गया, उससे मेरे मनमें कोई क्षोभ नहीं।"

यह कहती हुई हेमनलिनी तेजीके साथ वहांसे चली गई। अक्षयने पीले मुँहपर हँसी लाकर कहा,—"संसारमें मित्रताके काममें ही सबसे अधिक लांछना है। मैंने मित्रताके गौरवका अच्छी तरह अनुभव कर लिया है। आपलोग चाहे मुझसे घृणा करें या गाली दें। रमेशपर सन्देह करना ही मैं मित्रका कर्त्तव्य समझता हूं। आप लोगोंके लिये जहाँ कहीं खराब सम्भावना होती है, वहाँ मैं बिना शङ्का किये नहीं रहता। मुझमें यही एक बहुत बड़ी कमजोरी है; यह मुझे मानना ही पड़ेगा। जो हो, योगेन्द्र तो कल आयेंगे ही; वह भी यदि सब देख-सुनकर अपनी बहनके सम्बन्धमें निश्चिन्त हो सकेंगे, तो फिर मैं भी कुछ न कहूँगा।"

अन्नदाबाबू अच्छी तरह समझते हैं, कि रमेशसे प्रश्न करनेका समय है; किन्तु जो बात अनजान है, उसे जबर्दस्ती मथकर उसमें एकाएक कोई अन्धड़ खड़ा करनेके भयसे उन्होंने स्वभावतः उसके लिये कोई आग्रह नहीं किया।

अक्षयके ऊपर उन्हें क्रोध आया। उन्होंने कहा,—"अक्षय, तुम्हारा स्वभाव बड़ा सन्देही है। बिना प्रमाणके क्यों तुम नाहक—"

अक्षय अपनेको दबाना जानता है, किन्तु लगातारकी चोटसे आज उसका भी धीरज छूट गया। उसने भी उत्तेजित होकर कहा,—"देखिये अन्नदाबाबू मुझमें बहुतेरे दोष हैं। मैं सत्पात्रसे कुढ़ता हूँ—मैं साधु लोगोंपर सन्देह करता हूं। भले आदमियोंकी लड़कियोंको फिलासफी पढ़ाने लायक विद्या मुझमें नहीं है और उसीके साथ काव्यकी आलोचना करनेकी श्रद्धा भी मैं नहीं करता—साधारण लोगोंमें ही मेरी गिनती है—किन्तु सदासे मैं आपके प्रति अनुरक्त हूँ; और लोगोंका

अनुगत हूँ। रमेशबाबूके साथ किसी विषयमें मेरी तुलना हो नहीं सकती—किन्तु जरासा अहंकार भी मुझमें है, आप लोगोंके आगे मैंने कभी कुछ छिपाया नहीं। आपलोगोंके आगे अपनी दीनता प्रकटकर मैं भिक्षा चाहता हूँ; किन्तु मेरा स्वभाव सेंध लगाकर चोरी करना नहीं है। इस बातका क्या अर्थ है, यह कल ही आप लोगोंको मालूम हो जायगा।"

१६

चिट्ठी लिखते-लिखते रात हो गई। रमेश सोने गया; किन्तु नींद नहीं आई। उसके मनमें गङ्गायमुनाकी तरह सफेद और काली दो रङ्गकी चिन्ताकी धाराएँ बह रही थीं। दोनोंके एक साथ होनेवाले कल्लोलने उसके विश्रामको हवा कर दिया।

कई बार करवट लेकर वह उठ बैठा। खिड़कीके पास खड़े होकर देखा, कि उसकी सन्नाटी गलीके किनारे एक ओर मकानोंकी छाया और दूसरी ओर शुभ्र चाँदनीकी रेखा है।

रमेश चुपचाप खड़ा रहा। जो नित्य है, शान्त है, विश्वव्यापी है, जिसमें द्वन्द्व नहीं, दुविधा नहीं, उसीमें रमेशके हृदयकी प्रकृति पिघलकर मिल गई। वह शब्दविहीन, सीमाविहीन, महालोकके नेपथ्यसे सदासे जन्म-मृत्यु, कर्म और विक्रम, आरम्भ और अन्त किसीको न सुनाई देनेवाले सङ्गीतके अपरूप तालमें विश्वकी रङ्गभूमिके भीतर प्रवेश कर रहा है। रमेशने उस प्रकाश और अन्धकारमें अतीत देशसे नर-नारियोंके प्रेमको इन तारोंकी रोशनीमें आविर्भूत होते देखा।

तब रमेश धीरे-धीरे छतपर चला गया। उसने अन्नदाबाबूके मकानकी ओर देखा। सब सन्नाटा। उसने देखा मकानकी दीवारपर,

कार्निसके नीचे खिड़की और दर्वाजोंकी दरारमें, चूने और रङ्गमें चाँदनी और छायाकी विचित्र आकारकी रेखा फैली हुई है।

यह कैसा विस्मय। एक जनपूर्ण नगरके भीतर उस मामूली मकानमें किसी मानीके वेशमें यह कैसा विस्मय। इस राजधानीमें कितने छात्र, कितने वकील, कितने प्रवासी और निवासी हैं; इसके बीच रमेश-जैसे एक साधारण आदमीने न जाने कहाँसे एक दिन आश्विनकी पीली धूपमें उस खिड़कीके पास एक बालिकाके सामने चुपचाप खड़े हो जीवन और जगत्‌को अपरिसीम-आनन्दमय रहस्यके बीच तैरते हुए देखा—यह कैसा विस्मय है! हृदयके भीतर आज यह कैसा विस्मय है, हृदयके बाहर आज यह कैसा विस्मय है!

बहुत राततक रमेश छतपर टहलता रहा। धीरे-धीरे कब किस समय चाँदका टुकड़ा सामनेके मकानकी ओटमें उतर गया; पृथ्वीपर रातकी कालिमा गहरी हो गई उसे पता नहीं—उस समय भी आकाश विदा होती हुई चाँदनीके आलिङ्गनसे पीला हो रहा था।

रमेशका थका हुआ शरीर शीतसे काँप उठा। एकाएक एक आशङ्का रह-रहकर उसके हृदयको दबाने लगी। याद आया कि जीवनके रणक्षेत्रमें कल फिर उसे संग्राम करनेको बाहर निकलना पड़ेगा। उस आकाशमें यद्यपि चिन्ताकी रेखा नहीं, चाँदनीमें चेष्टाकी चञ्चलता नहीं, रात और दिन निस्तब्ध और शान्त हैं, संसारकी प्रकृति इन अनगिनत तारोंके चिरकर्मके भीतर चिर-विश्राममें विलीन है—तथापि मनुष्यके युद्धका अन्त नहीं, सुख और दुःखमें, बाधा और विघ्नमें सारा जन-समाज तरङ्गित हो रहा है। एक ओर अनन्तकी यह नित्यशान्ति, और दूसरी ओर संसारका यह नित्य संग्राम है—दोनों एक ही समय एक साथ कैसे रह सकते हैं; रमेशके हृदयमें दुश्चिन्ता होते भी यह प्रश्न उदित हुआ। कुछ देर पहले रमेशको विश्वलोकके अन्तःपुरमें प्रेमका जो

एक शाश्वत सम्पूर्ण शान्तमूर्ति दिखाई दे रही थी, वही प्रेम क्षणभर बाद संसारके संघर्ष और जीवनकी जटिलतामें कदम-कदमपर क्षुब्ध और क्षुण्ण दिखाई देने लगा। इनमें कौन सत्य है और कौन माया!

१७

दूसरे दिन सवेरेकी गाड़ीसे योगेन्द्र पश्चिमसे लौटकर आ गया। आज शनिवार है, कल रविवारको हेमनलिनीके विवाहकी बात है। किन्तु अपने घरके दर्वाजेपर पहुँचनेपर उत्सवका कोई भी निशान उसे दिखाई न दिया। योगेन्द्र सोचता आ रहा था, कि अबतक उसके मकानके बरामदेमें देवदारुके पत्तोंकी माला लटका दी गई होगी—किन्तु उसने आकर देखा, कि श्रीहीन और मलिन बगलके मकानोंमें और उसके मकानमें कोई प्रभेद नहीं है।

शङ्का हुई, कि कहीं कोई बीमार-तीमार तो नहीं हुआ। मकानमें प्रवेशकर देखा कि चायके टेबिलपर उसके लिये भोजन तैयार है और अन्नदाबाबू अधूरे चायके प्यालेको सामने रख अखबार पढ़ रहे हैं।

योगेन्द्रने घरमें घुसते ही पूछा,—"हेम कैसी है?"

अन्नदाबाबू—अच्छी है।

योगेन्द्र—विवाहका क्या हाल है?

अन्नदाबाबू—कलके रविवारके बादके रविवारको होगा।

योगेन्द्र—क्यों?

अन्नदाबाबू—क्यों, यह अपने मित्रसे पूछो। रमेशने हमलोगोंसे केवल इतना ही कहा है, कि उसे कोई खास जरूरत है; इसलिये इस रविवारको विवाह बन्द रखना चाहिये।

योगेन्द्रने अपने असमर्थ बापके ऊपर मन ही मन नाराज होकर

कहा,—"पिताजी, मेरे न रहनेसे तुम लोग बड़ीसे बड़ी गलती कर बैठते हो। रमेशका जरूरत ही किस बातकी है? वह स्वाधीन है। उसके अपने सम्बन्धी कोई नहीं ही कहना चाहिये। यदि उसके रुपये पैसेके सम्बन्धमें कोई गड़बड़ी हुई होती, तो उसे खोलकर कहनेमें कोई बाधा न थी। रमेशको तुमने सहज ही छोड़ कैसे दिया?"

अन्नदाबाबू—अच्छा, ठीक तो है; वह कहीं भागा तो है नहीं, तुम्हीं उससे पूछ लेना।

यह सुनकर योगेन्द्र उसी समय जल्दीसे गर्मागर्म एक प्याला चाय पीकर बाहर निकल पड़ा।

अन्नदाबाबूने कहा,—"उफ, योगेन्द्र इतनी जल्दी काहेको पड़ी है। अभी तुमने भोजन भी नहीं किया।"

यह आवाज योगेन्द्रके कानतक नहीं पहुँची। वह रमेशके मकानमें घुस तेजीके साथ सीढ़ियाँ तैकर ऊपर पहुँचा। "रमेश! रमेश!" रमेशका कोई पता नहीं। उसने घर-घरमें ढूँढ़कर देखा, रमेश अपने सोनेके घरमें भी नहीं है, बैठनेके घरमें नहीं, छतपर नहीं, एक-एक मंजिलेमें कहीं नहीं। बहुत आवाज लगानेके बाद बैरेसे मिलकर पूछा,—बाबू कहाँ हैं?"

बैराने कहा,—बाबू तो सबेरे ही बाहर निकल गये हैं।"

योगेन्द्र—कब आयेंगे?

बैराने बताया, कि बाबू अपने कुछ कपड़े-ओपड़े लेकर बाहर गये हैं। कह गये हैं, कि लौटनेमें चार-पाँच दिन लगेंगे। बैराको यह नहीं मालूम कि वे कहाँ गये हैं।

योगेन्द्र गम्भीर हो कर अपने चायके टेबिलपर लौट आया। अन्नदा-बाबूने पूछा—"क्या हुआ?"

योगेन्द्रने चिढ़कर कहा,—"होगा क्या, जिसके साथ आजके बाद कल लड़कीका विवाह करना है, उसे कौनसी जरूरत पड़ी है, वह कब

कहाँ रहता है ; इसकी खोज-अब तो तुम लोग रखते नहीं। फिर भी, तुम्हारे मकानके बगलमें वह रहता है।"

अन्नदाबाबूने कहा,—"क्यों, कल रातको भी तो रमेश अपने मकानमें ही था ?"

योगेन्द्रने उत्तेजित हो कहा,—"तुम लोग नहीं जानते, कि वह कहाँ जायेगा, उसका बैरा नहीं जानता कि वह कहाँ गया है, यह कैसी लुक्का-चोरीका मामला चल रहा है ? मुझे तो यह सब उचित नहीं जान पड़ रहा है। पिताजी, तुम इतने निश्चिन्त कैसे हो ?'

अन्नदाबाबूने इस धिक्कारसे बहुत चिन्तित होनेकी चेष्टा प्रकट की। उन्होंने गम्भीर होकर कहा,—"ठीक तो है; यह सब कैसी बात है ?"

कर्त्तव्यहीन रमेश अनायास कल रातको अन्नदाबाबूसे बिदा होकर जा सकता था। किन्तु यह बात उसके मनमें आई भी नहीं। वही जो उसने "खास जरूरत है" कहा, उसीके साथ मानो वह सब बातें कह गया; रमेशका यही खयाल था। इस एक ही बातसे उसने सब बातोंसे छुट्टी पाली, यह समझ, वह अपने उपस्थित काममें लगकर दौड़धूप करने लगा।

योगेन्द्र—हेमनलिनी कहाँ है ?

अन्नदाबाबू—आज वह जल्दी ही चाय पीकर ऊपर चली गई।

योगेन्द्रने कहा,—"रमेशके इन सब अद्भुत आचरणोंसे शायद बेचारी बहुत लज्जित हुई है—इसीसे मुझसे मुलाकात होनेके भयसे भागी है।"

सङ्कुचित और व्यथित हेमनलिनीको धीरज देनेके लिये योगेन्द्र ऊपर गया। हेमनलिनी अपने बड़े कमरेमें चौकीपर चुपचाप बैठी थी। योगेन्द्रके पैरकी आवाज सुनते ही उसने पढ़नेके बहाने एक किताब उठा ली। योगेन्द्रके जाते ही उठकर और हँसकर उसने कहा,—"आहा, दादा ! कब आये ? तुम तो उतने अच्छे दिखाई नहीं देते।"

योगेन्द्रने चौकीपर बैठकर कहा,—"अच्छे दिखाई देनेकी बात भी तो नहीं है। मैंने सब बातें सुना हैं। किन्तु इस बारेमें तुम कोई चिन्ता न करना। मेरे न रहनेसे ही यह सब बखेड़ा हो गया। अब मैं सब ठीककर दूँगा। अच्छा हेम, रमेशने तुमसे कोई कारण नहीं बताया?"

हेमनलनी मुश्किलमें पड़ी। रमेशके बारेमें यह सन्देहपूर्ण आलोचनाएँ उसके लिये असह्य हो गई हैं। योगेन्द्रसे वह बात कहना नहीं चाहती, कि रमेशने विवाह टालनेके सम्बन्धमें उससे कोई बात नहीं कही है। फिर भी, झूठ बोलना उसके लिये असम्भव है। हेम-नलिनीने कहा—"वे मुझे कारण बतानेको तैयार थे, मैंने सुननेकी कोई जरूरत नहीं देखी।"

योगेन्द्रने मनमें कहा, कि यह बड़े ही अभिमान की बात है और यह अभिमान बिलकुल स्वाभाविक है। उसने कहा,—"अच्छा, तुम कुछ डरना नहीं, मैं आज ही सब कारण समझ लूँगा।"

हेमनलिनीने किताबके पन्नेको नाहक उलट-पलटकर कहा,—"दादा, मुझे कोई डर नहीं। कारण जाननेके लिये तुम उनपर कोई जोर न देना; क्योंकि मैं ऐसा नहीं चाहती।"

योगेन्द्रने सोचा कि यह भी अभिमानकी बात है। उसने कहा,—"अच्छा, इसकी कोई चिन्ता तुम्हें न करनी होगी।" यह कहकर वह जानेको तैयार हुआ।

हेमनलिनीने उसी समय चौकीसे उठकर कहा,—"नहीं दादा, इस बातके लिये तुम उनसे आलोचना करने जाने न पाओगे। तुम लोग उनके बारेमें मनमें चाहे जो समझो, मैं उनपर जरा भी सन्देह नहीं करती।"

तब योगेन्द्रके मनमें एकाएक आया कि यह तो अभिमान जैसा नहीं सुनाई देता। तब स्नेहमिश्रित करुणाके साथ वह मन ही मन

हँसा। सोचने लगा कि इन लोगोंमें संसारकी कुछ समझ नहीं है। एक ओर पढ़ी-लिखी भी काफी है और संसारके समाचार भी बहुत जानती है; किन्तु यह जानकारी नहीं हुई, कि किस स्थानपर सन्देह करना चाहिये। इस निःसशय भरोसेके साथ रमेशके छद्म व्यवहारकी तुलनाकर योगेन्द्र मन ही मन रमेशपर और भी चिढ़ गया। कारण जाननेकी प्रतिज्ञा उसके मनमें और भी दृढ़ हो गई। योगेन्द्रके दूसरी बार उठनेकी चेष्टा करनेपर हेमनलिनीने पास जाकर उसका हाथ पकड़ कहा,—"दादा, तुम प्रतिज्ञा करो, कि उनके आगे यह सब बातें बिलकुल न उठाओगे।"

योगेन्दने कहा,—"यह देखा जायगा।"

हेमनलिनी—नहीं दादा, देखा जायगा नहीं। मुझे बचन दे जाओ। मैं निश्चय कहती हूँ, कि तुम लोगोंके लिये कोई चिन्ताका कारण नहीं। एकबार मेरी यह बात भी मानो।

हेमनलिनीकी ऐसी दृढ़ता देख योगेन्दने सोचा कि तब निश्चय ही रमेशने हेमसे सब बातें कह दी हैं। किन्तु हेमको जैसे-तैसे समझा लेना कोई मुश्किल बात नहीं। उसने कहा, "देखो हेम अविश्वासकी कोई बात नहीं है। कन्यापक्षके अभिभावकोंका जो कर्त्तव्य है, वह तो करना ही पड़ेगा। यदि तुम्हारे साथ उसका कोई समझौता हो गया है, उसे तुम लोग ही समझो; किन्तु इतना ही यथेष्ट तो नहीं हुआ—हम लोगोंको भी उससे समझौता करना है। सच बात कहनेमें हर्ज क्या है, हेम, इस समय तुम्हारे बदले हमलोगोंके साथ ही उसके समभाव-बुझावका सम्बन्ध अधिक है—विवाह हो जानेपर हमलोगोंके अधिक बोलनेकी कोई जगह रह न जायगी।"

यह कह योगेन्द्र शीघ्रतासे उठकर चला गया। प्रेम जिस आवरण और ओटको खोजता है, वह रह नहीं गया। हेमनलिनी और रमेशके जिस सम्बन्धने क्रमसे विशेषरूपसे घनिष्ठ हो दोनोंको केवल दो ही कर

रखा है, उसे दस आदमियोंके सन्देहका कठिन स्पर्श बराबर चोट कर रहा है। चारों ओरके इन सब आन्दोलनोंकी चोटसे हेमनलिनी ऐसी व्यथित हो गयी है कि उसका अपने आदमियोंके साथ मिलना भी कठिन हो गया है। योगेन्द्रके चले जानेपर भी हेमनलिनी चुपचाप चौकीपर बैठी रह गई।

योगेन्द्रके नीचे पहुँचते ही अक्षयने आकर कहा,—"अच्छा योगेन्द्र आ गये? सब बातें सुन ली न? अब तुम्हारी क्या इच्छा है?"

योगेन्द्र—मनमें तो बहुत कुछ आ रहा है; किन्तु अनुमानके ऊपर मिथ्या वादानुवादसे क्या होगा? क्या यह चायके टेबिलपर बैठकर मनस्तत्वकी सूक्ष्म आलोचनाका समय है।

अक्षय—तुम तो जानते ही हो, कि सूक्ष्म आलोचना करनेका अपना स्वभाव ही नहीं है; उसे चाहे मनस्तत्व कहो, दर्शन कहो, या काव्य ही क्यों न कहो। मैं तो कामकी बातें ही समझता हूँ—तुम्हारे आगे यही कहनेको आया हूँ।

अधीरस्वभाव योगेन्द्रने कहा,—"अच्छा, कामकी ही बात होगी बता सकते हो, कि इस समय रमेश कहाँ है?"

अक्षयने कहा,—"बता सकता हूँ।"

योगेन्द्रने पूछा,—"कहाँ है?"

अक्षयने कहा, "अभी मैं तुमसे यह न बताऊँगा। आज तीन बजे एकदम रमेशसे तुम्हें मिला दूँगा।"

योगेन्द्रने कहा,—"बात क्या है, कुछ कहो तो सही। तुम लोग तो सबके सब साक्षात् पहेली बन गये हो। कुछ दिनके लिये हवाखोरी-को गया; इतना ही सुयोग पाकर संसार ऐसा भयानक और रहस्यमय हो उठा है। नहीं-नहीं अक्षय, इस तरह चुप्पे-चुप्पे काम न चलेगा।"

अक्षय—मैं यह सुनकर खुश हुआ। चुप्पे-चुप्पे न रहनेके कारण ही मेरे लिये सब अचल हो रहा है—तुम्हारी बहनने तो मेरा मुँह

देखना भी छोड़ दिया है। तुम्हारे पिता मुझे सन्दिग्धचित्त कहकर गाली देते हैं और रमेशबाबू भी मुझसे मुलाकात होनेपर आनन्दसे रोमाञ्चित नहीं होते। अब केवल तुम्ही बाकी हो। तुमसे मैं डरता हूँ—तुम सूक्ष्म आलोचनाके आदमी नहीं हो; तुम्हारे लिये सीधा काम ही सहज है—मैं आलसी आदमी हूँ, तुम्हारी चोट मुझसे सही न जायगी।

योगेन्द्र—देखो अक्षय, तुम्हारी यही सब पेंचीली चाल मुझे अच्छी नहीं लगती। मैं अच्छी तरह समझता हूँ, कि तुम कोई बात सुनाना चाहते हो, तब उसे छिपाकर उसकी दर बढ़ानेकी चेष्टा क्यों कर रहे हो। सरल भावसे कह डालो, बस सब खतम हुआ।

अक्षय—अच्छा ठीक है, तब मैं शुरूसे ही कहूंगा—क्योंकि बहुत सी बातें तुम्हें मालूम ही नहीं हैं।

———

१८

रमेश दर्जी-पाड़ाके जिस मकानमें था, उसकी मीयाद अभी खतम नहीं हुई है; उसे किसीको किरायेपर देनेके बारेमें रमेशको विचार करनेका अवसर भी नहीं मिला। वह इधर कई महीनेसे सांसारिक बाहरी दौड़में पड़ा है, नुकसान और नफेका उसने खयाल भी नहीं किया।

आज सवेरे ही उसने उस घरमें पहुँच घर-द्वार साफ करा लिया है; चौकीपर बिछौना बिछवाया है और भोजनादिका भी बन्दोबस्त कर रहा है। आज स्कूलकी छुट्टीके बाद कमला आयेगी।

उसके आनेमें अब भी देर है। इस बीच रमेश चौकीपर चित लेट भविष्यकी बातें सोचने लगा। इटावा उसने कभी नहीं देखा—किन्तु पश्चिमके दृश्यकी कल्पना करना सहज नहीं। शहरके किनारे उसका मकान है—वृक्षोंकी कतारसे छायादार हुई सड़क उसके बागके

किनारेसे चली गई है—रास्तेके किनारे बहुत बड़ा खेत है,—उसके बीच-बीचमें कुएँ और पशुपक्षियोंको भगानेके लिये माचा बँधा है। खेत सींचनेके लिये बैलसे पुरवट चलता है, दोपहर भर उसका करुण शब्द सुनाई देता है—कभी-कभी रास्तेकी धूल उड़ाते हुए एक्का-गाड़ी भी दौड़ते हैं; जिसके झन् झन् शब्दसे धूपसे जलता आकाश जाग उठता है। उस सुदूर प्रवासकी तेज धूप, उदास दोपहर और शून्य निर्जनतामें वह दर्वाजा बन्द बँगलेमें सारे दिन हेमनलिनीके अकेली रहनेकी कल्पनाकर क्लेशका अनुभव कर रहा था। उसके पास सखीके रूपमें कमलाको देख उसे कुछ आराम मिला।

रमेशने निश्चय किया है, कि अभी वह कमलासे कुछ न कहेगा। विवाहके बाद हेमनलिनी का उसकी छातीसे लगाकर मौका देख सकरुण स्नेहके साथ वह उसे धीरे-धीरे सच्चा इतिहास सुनायेगा जहाँ-तक कम वेदनाके साथ सम्भव होगा, वह कमलाके जीवनसे इस जटिल रहस्यजालको धीरे-धीरे फैला देगा। इसके बाद उस दूर विदेशमें अपने परिचित समाजके बाहर किसी प्रकारका आघात हुए बिना वह कमला-को बहुत सहजमें अपने साथ मिलाकर अपना लेगा।

उस समय दोपहरमें गली सन्नाटी थी:—जिनको आफिस जाना था, वे आफिस चले गये, जिनको नहीं जाना है, वे दोपहरमें सोनेकी तैयारीमें हैं। बहुत कम तपनसे तपा आश्विन महीनेका दोपहर मधुर हो रहा है—आगामी छुट्टीका आनन्द मानो अभीसे आकाशमें आनन्द-का आभास फैल पड़ा है। रमेश अपने निर्जन स्थानमें निस्तब्ध मध्याह्न-के चित्रको सुखके रङ्गमें रञ्जित कर रहा था।

इसी समय किसी बहुत बड़ी गाड़ीकी आवाज सुनाई दी। वह गाड़ी रमेशके द्वारपर आकर लगी। रमेश समझ गया, कि स्कूलकी गाड़ी कमलाको पहुँचाने आई है। उसका हृदय चञ्चल हो उठा। कमलाको किस रूपमें देखेगा, उसके साथ कैसे बातचीत होगी, कमला

रमेशसे कैसे मिलेगी, एकाएक यह सब चिन्ताएँ उसे आन्दोलित करने लगीं।

नीचे रमेशके दो नौकर थे—उन दोनोंने पहले ही कमलाका ट्रङ्क आदि ऊपर पहुँचाया। इसके बाद कमला घरके दर्वाजेतक आकर रुक गई, भीतर नहीं आई।

रमेशने कहा,—"कमला, आओ न।"

कमलाने सङ्कोच दूरकर घरमें प्रवेश किया। छुट्टीके समय रमेश उसे विद्यालयमें ही रखना चाहता था; वह रो-गाकर चली आई है; इस घटनासे और कई महीनेके विच्छेदसे उसके मनमें कुछ सङ्कोच आ गया है। इसीसे कमला घरमें प्रवेशकर रमेशके मुँहकी ओर बिना ताके गर्दन टेढ़ीकर कोठरीसे बाहर निकल आई।

रमेश कमलाको देखकर कुछ विस्मित हुआ। मानो उसे फिरसे नई देख रहा है। इन कई महीनोंमें उसमें आश्चर्य रूपसे परिवर्त्तन हुआ है। बिना फूली हुई लताकी तरह बहुत बढ़ गई है। गाँवकी लड़कीके अधखिले शरीरमें स्वास्थ्यकी जो परिपुष्टता थी, वह कहाँ गई? उसके गोल-गोल मुखड़ेने बदलकर लम्बाईके रूपमें एक विशेषता प्राप्त की है, उसके गालोंकी पहलेकी श्यामताने गायब हो कोमल पीलापन ग्रहण कया है। अब उसके चलने-फिरने और भाव-भङ्गीमें किसी प्रकारकी जड़ता नहीं है। आज कोठरीमें प्रवेशकर जब वह जरा तिरछी गर्दनकर खुली खिड़कीके सामने खड़ी हुई, तो उसके चेहरेपर शरत्के मध्याह्नकी रोशनी आकर पड़ी; उस समय उसके माथेपर कपड़ा नहीं था, लाल फीतेसे गुँथी हुई उसकी चोटी पीठपर पड़ी हुई थी, हलके नीलाभ रङ्गकी मैरिनाकी साड़ी उसके अधखिले शरीरको लपेटे हुई थी—तब रमेश उसकी ओर कुछ देरतक देख चुप हो रहा।

कमलाका सौन्दर्य इस कई महीनेमें रमेशके मनमें छायाकी तरह

हो रहा था; आज उस सौन्दर्यने विकाश प्राप्तकर एकाएक उसके मनमें चिहुँक पैदा कर दी है। वह इसके लिये तैयार नहीं था।

रमेशने कहा,—"कमला, आओ बैठो।"

कमला एक चौकीपर बैठ गई। रमेशने कहा,—"स्कूलमें तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है?"

कमलाने बहुत संक्षेपमें कहा,—"ठीक चल रही है।"

रमेश सोचने लगा कि अब क्या कहूँ। एकाएक याद आया—उसने कहा,—जान पड़ता है कि बहुत देरसे तुमने कुछ खाया नहीं है; तुम्हारा खाना तैयार है। क्या यहीं लानेको कहूँ?"

कमलाने कहा,—"मैं न खाऊँगी, खाकर आई हूँ।"

रमेशने कहा,—"कुछ भी न खाओगी? मिठाई न खाना हो, तो फल है—शरीफा, सेब और बेदाना—"

कमलाने कुछ न बोल सिर हिला दिया।

रमेशने फिर एकबार कमलाके मुँहकी ओर देखा। कमला उस समय जरासा शिर झुकाकर अंग्रेजी शिक्षाकी किताबकी तस्वीरें देख रही थी। सुन्दर मुख सोनेकी सलाईकी तरह अपने चारों ओरके सौन्दर्यको जगा रही थी। शरत्के प्रकाशमे मानो प्राण आया, आश्विनके दिनने मानो आकार धारण किया। जैसे केन्द्र अपनी परिधिको नियमित करता है—वैसे ही इस लड़कीने आकाशको, वायुको, प्रकाशको मानो विशेष रूपसे अपनी ओर आकर्षित कर लिया—फिर भी वह इसके बारेमें कुछ भी न समझ चुपचाप पढ़नेकी किताबमें तसवीरें देख रही थी।

रमेशने शीघ्रतासे उठकर एक थालमें कुछ सेब, नासपाती और बेदाना लेकर उसके सामने रखा। कहा,—कमला! मैं देख रहा हूँ, कि तुम कुछ खाती ही नहीं हो, किन्तु मुझे भूख लगी है; मैं अब सब्र नहीं कर सकता।"

यह सुनकर कमला जरा हँस पड़ी। इस अकस्मात्की हँसीके प्रकाशसे दोनोंके हृदयका कुहरा मानो बहुत कुछ दूर हो गया।

रमेश छुरी लेकर सेब तराशने लगा। किन्तु किसी प्रकारके हाथके कामका रमेशको बिलकुल शऊर नहीं। उसे एक ओर भूख, दूसरी ओर टेढ़े-मेढ़े तराशको देख बालिका खूब हँसी—वह खिलखिलाकर हँस पड़ी।

रमेशने हँसीके उल्लासमें खुश होकर कहा—"शायद मैं ठीक तरहसे काट नहीं सकता, इसीसे तुम हँस रही हो! अच्छा, तुम तराश दो, देखूँ तुम्हारा शऊर!"

कमलाने कहा,—मैं हँसुआसे काट सकती हूँ, छुरीसे नहीं।"

रमेशने कहा,—"तो क्या तुम समझती हो कि यहाँ हँसुआ नहीं है?" एक नौकरको बुलाकर पूछा,—हँसुवा है?" उसने कहा,—है, रातके भोजनका सब सामान ले आया हूँ।"

रमेशने कहा,—अच्छी तरह धोकर हँसुआ ले आओ।"

नोकर हँसुआ ले आया।

कमला जूता उतार हँसुआ लेकर नीचे बैठी और मुस्कुराती हुई निपुण हाथसे घुमाघुमाकर फलका छिलका उतार चकत्ते-चकत्ते काटने लगी। रमेश भी उसके सामने जमीनमें बैठ फलके टुकड़ोंको थालीमें रखने लगा।

रमेशने कहा,—"तुम्हें भी खाना पड़ेगा।"

कमलाने कहा,—"नहीं।"

रमेशने कहा,—"तब मैं भी न खाऊँगा।"

कमलाने रमेशके मुँहकी ओर निगाह उठाकर कहा,—"अच्छा, पहले तुम खा लो, इसके बाद मैं भी खा लूँगी।"

रमेशने कहा,—"देखो बादको धोखा न देना।"

कमलाने गम्भीरभावसे गर्दन हिलाकर कहा,—"नहीं, सच कहती हूँ, धोखा न दूंगी।"

बालिकाकी इस सत्य प्रतिज्ञासे राजी हो रमेशने थालीसे एक टुकड़ा फल उठाकर मुँहमें डाला।

एकाएक उसका खाना बन्द हो गया। उसने देखा, कि उसके सामने ही दरवाजेसे बाहर योगेन्द्र और अक्षय खड़े हैं।

अक्षयने कहा,—'रमेश बाबू, माफ करियेगा; मैं समझ रहा था कि शायद आप यहाँ अकेले ही हैं। योगेन्द्र, पहले खबर न दे एकाएक इस प्रकार आ पड़ना उचित नहीं हुआ। बोलो, हम लोग नीचे चलकर बैठें।"

हँसुआ फेंक कमला चटपट उठ बैठी। घरसे निकल जानेकी राहमें ही दो आदमी खड़े हैं। योगेन्द्रने थोड़ा खिसककर रास्ता छोड़ दिया; किन्तु कमलाके चेहरेसे उसकी निगाहें न हटीं। उसने उसे घूरकर अच्छी तरह देख लिया। कमला सिकुड़कर दूसरी कोठरीमें निकल गई।

१६

योगेन्द्रने पूछा,—"रमेश, यह लड़की कौन है?

रमेशने कहा,—"मेरी एक सम्बन्धिनी।"

योगेन्द्रने कहा,—"कैसी सम्बन्धिनी? शायद उसके बड़ोंमें कोई नहीं है, स्नेहका सम्बन्ध भी जान नहीं पड़ता। मैंने तुमसे तुम्हारे सब सम्बन्धियोंकी बात सुनी है, इसके बारेमें कोई बात सुननेमें नहीं आई।"

अक्षयने कहा,—"योगेन्द्र, यह तुम्हारा अन्याय है—मनुष्यके लिए क्या कोई ऐसी बात नहीं हो सकती, जिसे अपने मित्रसे भी छिपाना पड़ता है।"

योगेन्द्र—क्यों रमेश, क्या बहुत गुप्त बात है?

रमेशका चेहरा लाल हो उठा; उसने कहा,—"हाँ, गुप्त है। इस लड़कीके बारेमें मैं तुम लोगोंसे कोई आलोचना करना नहीं चाहता।"

योगेन्द्र—किन्तु दुर्भाग्यसे मैं तुम्हारे साथ आलोचना करनेकी विशेष इच्छा रखता हूँ। हेमके साथ यदि तुम्हारे विवाहका प्रस्ताव न होता, तब किसके साथ तुम्हारा कितना सम्बन्ध बढ़ा हुआ है, उससे कोई प्रयोजन न होता। जो गुप्त है, वह गुप्त ही रहता।

रमेशने कहा,—"मैं तुम लोगोंसे सिर्फ इतना ही कह सकता हूँ, कि संसारमें किसीके साथ मेरा ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं है, जिससे हेमनलिनीके पवित्र सम्बन्धसे किसी तरहका वास्ता हो।

योगेन्द्र—शायद तुम्हारे विचारसे कोई बाधा हो नहीं सकती। किन्तु हेमनलिनीके सम्बन्धियोंको हो सकती है। मैं एक बात तुमसे पूछता हूँ, कि जिसके साथ तुम्हारा जो सम्बन्ध है, उसे छिपानेका कारण क्या है?

रमेश—यदि मैं उस कारणको ही बता दूँ, तो फिर गुप्त बात कहाँ रही? तुम मुझे बचपनसे जानते हो—इसलिये कोई कारण न पूछकर केवल मेरी बातपर तुम लोगोंको विश्वास रखना चाहिये।

योगेन्द्र—क्या इस लड़कीका नाम कमला है?

रमेश—हाँ।

योगेन्द्र—तुमने अपनी स्त्रीके नामसे इसका परिचय दिया है या नहीं?

रमेश—हाँ, दिया है।

योगेन्द्र—तब भी तुमपर विश्वास रखना चाहिये ? तुम हम लोगोंके आगे साबित करना चाहते हो कि यह तुम्हारी स्त्री नहीं है। दूसरेसे बताया है कि यह तुम्हारी स्त्री है—यही सत्यपरायणताका ठीक दृष्टान्त है ?

अक्षय—विद्यालयके नियमके खिलाफ यह दृष्टान्त व्यवहारमें लाया नहीं जा सकता। किन्तु भाई योगेन्द्र, ससारमें दो पक्षके लिये दो प्रकारकी बातें कही जा सकती हैं; खास-खास हालतोंमें इसकी जरूरत पड़ती है। कमसे कम इसमें एक तो सत्य है ही। हो सकता है, रमेश बाबू तुमसे जो कहते हैं, वही सत्य हो।

रमेश—मैं तुम लोगोंसे कोई बात कहना नहीं चाहता। केवल इतना ही कहता हूँ, कि हेमनलिनीके साथ विवाह करना मेरे लिये कर्त्तव्य-विरुद्ध न होगा। कमलाके सम्बन्धमें तुम लोगोंके साथ बातें करनेमें बहुतेरी बाधाएँ हैं—चाहे तुम लोग मुझपर सन्देह ही क्यों न करो, मैं उसके साथ किसी तरहका अन्याय न करूँगा। अपने सुख दुःख और मान-अपमानका विषय होता, तो मैं तुम लोगोंसे कभी न छिपाता, किन्तु दूसरेके लिये मैं अन्याय नहीं कर सकता।

योगेन्द्र—हेमनलिनीसे तुमने यह सब बातें कही हैं ?

रमेश—नहीं। सोचा था, कि विवाहके बाद उनसे सब कह दूँगा। यदि वह इच्छा करें, तो अब भी उनसे कह सकता हूँ।

योगेन्द्र—अच्छा, मैं कमलासे इसके बारेमें दो-एक प्रश्न कर सकता हूँ ?

रमेश—नहीं, किसी तरह भी नहीं। अगर तुम मुझे अपराधी समझते हो, तो मेरा यथा-उचित विधान कर सकते हो। किन्तु तुम लोगोंके सामने प्रश्नोत्तर करनेके लिये मैं बेकुसूर कमलाको खड़ी नहीं कर सकता।

योगेन्द्र—किसीको सवाल-जवाब करनेकी जरूरत भी नहीं है। जो मालूम करना था, उसे मैं समझ गया। प्रमाण काफी मिल गया। अब मैं तुमसे स्पष्ट कहता हूँ, कि इसके बाद अब यदि तुम मेरे घरमें प्रवेश करनेकी चेष्टा करोगे, तो तुम्हें अपमानित होना पड़ेगा।

रमेशका मुँह पीला पड़ गया, वह चुपचाप बैठा रहा।

योगेन्द्रने कहा,—"और एक बात है—हेमको तुम चिट्ठी लिख न सकोगे—उसके साथ प्रकट छिपकर तुम्हारा कोई सम्बन्ध भी न रहेगा। यदि चिट्ठी लिखोगे, तो जिस बातको तुम गुप्त रखना चाहते हो, उसे मैं प्रमाणोंके साथ सब लोगोंके आगे प्रकट कर दूँगा। अभी अगर मुझसे कोई पूछेगा, कि तुम्हारे साथ हेमका विवाह क्यों छूट गया, तो मैं कह दूँगा, कि इस विवाहमें मेरी सम्मति नहीं थी, इसलिये छूट गया; भीतरी बातें न बताऊँगा किन्तु तुम यदि सावधान न होगे, तो सब बातें खुल पड़ेंगी। तुम इस समय पाखण्डियों जैसा व्यवहार कर रहे हो। फिर भी, मैं जो अपनेको दबाये हुआ हूँ, वह तुम्हारे ऊपर दया करके नहीं—इसके साथ मेरी बहन हेमका लगाव है, इसीसे तुम इतने सहजमें छुटकारा पा गये। अब तुमसे मेरा यह आखिरी कहना है कि किसी समय हेमके साथ तुम्हारा जो कुछ परिचय था, उसका कुछ प्रमाण तुम्हारी बातों या व्यवहारसे प्रकट न होने पाये। इसके बारेमें मैं तुमसे सत्य कहला न सका क्योंकि इस मिथ्याके बाद सत्य तुम्हारे मुँहसे माननीय न होगा। अब भी यदि लज्जा हो और अपमानका भय हो, तो मेरी बातपर भ्रमसे भी लापरवाही न करना।"

अक्षय—योगेन्द्र, अब इतना क्यों। रमेश बाबू निरुत्तर हो गये हैं, तब भी तुम्हारे मनमें दया नहीं आती? अब चलो! रमेश बाबू, कुछ खयाल न कीजियेगा, अब हम लोग जाते हैं!

योगेन्द्र और अक्षय चले गये। रमेश लकड़ीकी मूर्त्तिकी तरह

कठोर हो बैठा रहा। बुद्धि-भ्रष्टता दूर होनेपर वह सोचने लगा, कि मकानसे बाहर निकलकर वह तेजीके साथ कदम बढ़ाकर सारी अवस्थाको एक बार समझ ले। किन्तु, उसे याद आया कि कमला है, उसे अकेली छोड़ वह कहीं जा नहीं सकता।

रमेशने बगलकी कोठरीमें जाकर देखा, कि कमला सड़ककी तरफकी एक खिड़कीकी झिलमिली खोलकर चुप बैठी हुई है। रमेशके पैरकी आवाज सुन उसने झिलमिली बन्दकर मुँह फेरा। रमेश जमीनमें ही बैठ गया।

कमलाने पूछा,—"यह दोनों कौन थे? आज सवेरे हमारे स्कूल गये थे।"

रमेशने ताज्जुबके साथ पूछा,—"स्कूल गये थे?"

कमलाने कहा,—"हाँ। यह लोग तुम्हारे बारेमें कुछ पूछ रहे थे।"

रमेशने कहा,—"यही पूछते होंगे, कि तुम मेरी कौन हो?"

कमलाने अबतक ससुरालके अनुशासनके अभावसे लज्जा करना नहीं सीखा था, तब भी बचपनके संस्कारसे रमेशकी इस बातसे उसका चेहरा लाल हो उठा।

रमेशने कहा,—"मैंने उन लोगोंको जवाब दिया है, कि तुम मेरी कोई नहीं हो।"

कमला समझी, कि रमेश उसे लज्जित करनेके लिये ऐसा कह रहे हैं। उसने मुँह फेरकर कहा,—"जाओ।"

रमेश सोचने लगा, कि कमलासे कैसे सब बातें खोलकर कहे।

कमला एकाएक व्यग्र हो उठी। उसने कहा,—"वह देखो तुम्हारा फल कौवा खाये जा रहा है।" यह कहती हुई वह तेजीके साथ दूसरी कोठरीमें गई और कौवेको भगाकर फलकी थाली उठा लाई।

रमेशने सामने थाली रखकर कहा,—"तुम न खाओगी?"

रमेशको अब भोजनमें उत्साह नहीं था—किन्तु कमलाकी इस सेवाने उसके हृदयमें स्पर्श किया। इसीसे उसने कहा,—"कमला, तुम न खाओगी ?"

कमलाने कहा—"पहले तुम खा लो।"

जरा-सा मामला। अधिक कुछ नहीं, किन्तु रमेशकी वर्त्तमान अवस्थाने उसके कोमल हृदयपर चोट पहुँचाई। रमेश कुछ न बोल जबर्दस्ती फल खाने लगा।

खाना समाप्त हो जानेपर रमेशने कहा,—"कमला, आज रातको हम लोग देश चलेंगे।"

कमलाने आँखें नीची और उदासकर कहा,—"वहाँ मुझे अच्छा नहीं लगता।"

रमेश—स्कूलमें रहना अच्छा लगता है ?

कमला—नहीं, मुझे स्कूल न भेजना। मुझे लज्जा आती है। लड़कियाँ मुझसे केवल तुम्हारी ही बातें पूछती रहती हैं।

रमेश—तब तुम क्या कहती हो ?

कमला—मैं कुछ भी कह नहीं सकती। वह सब मुझसे पूछती थीं कि तुम क्यों मुझे छुट्टीके समय भी स्कूलमें रखना चाहते हो—मैं—

कमला अपनी बात समाप्त न कर सकी। रमेशके हृदयके घावपर फिर चोट लगी।

रमेश—तुमने कह क्यों नहीं किया कि वह मेरे कोई नहीं हैं।

कमलाने चिढ़कर रमेशकी ओर टेढ़ी निगाहोंसे देखा—कह बैठी,—'जाओ !"

रमेश फिर चिन्ता करने लगा, कि क्या किया जाय ? इधर रमेशकी छातीके भीतर धँसी हुई वेदना कीड़ेकी तरह छेद करती हुई बाहर निकलनेकी चेष्टा कर रही थी। तबतक योगेन्द्रने हेमनलिनीसे क्या कहा होगा, हेमनलिनी क्या समझ रही होगी, सच्ची घटना हेमनलिनीको

कैसे समझाई जाय यदि हेमनलिनीसे सदाके लिये उसका विच्छेद हो जाय तब जिन्दगी कैसे कटेगी यह सब ज्वालामय प्रश्न उसके हृदयमें जम रहे थे, फिर भी, अच्छी तरह विचार करनेका समय रमेशको मिल नहीं रहा था। रमेश इतना समझ गया था, कि कमलाके साथ रमेशका सम्बन्ध झलकनेमें उसके मित्रों और शत्रुओंकी मण्डलीमें आलोचनाका कठोर विषय हो पड़ा है। इस झमेलेमें यह अफवाह अच्छी तरह फैल पड़ेगी, कि रमेश कमलाका पति है। इस समय रमेशके लिये कमलाके साथ कलकत्तेमें एक दिन रहना भी कठिन हो गया है।

किसी और खयालमें डूबते हुए चिन्ता करनेके समय कमलाने उसके चेहरेकी ओर देखकर कहा,—"तुम क्या सोच रहे हो? अगर तुम देशमें रहना चाहो, तो मैं भी वहाँ ही रहूंगी।"

बालिकाके मुँहसे आत्मसंयमकी यह बात सुन रमेशकी छातीमें फिर चोट लगी। फिर उसने सोचा, कि क्या किया जाय? फिर वह चिन्तामें डूब देरतक सोचते-सोचते कमलाके मुँहकी ओर देखा और देखता ही रह गया।

कमलाने गम्भीर मुँह करके पूछा,—"अच्छा, क्या तुम इस बात-पर नाराज हुए हो, कि मैं छुट्टीके समय स्कूलमें नहीं रही? सच-सच कहो।"

रमेशने कहा,—"सच कहता हूँ, मैं तुमसे नाराज नहीं हुआ हूँ; मैं अपने ही ऊपर नाराज हो रहा हूँ।"

रमेश चिन्ताके जालसे जबर्दस्ती अपनेको निकाल कमलाके साथ बात करनेमें लग गया। उसने उससे पूछा,—"अच्छा कमला, यह तो बताओ कि इतने दिनोंमें तुमने स्कूलमें क्या सीखा?"

कमला बड़े उत्साहके साथ अपनी शिक्षाका हिसाब देने लगी। पृथिवीकी गोल आकृतिकी चर्चाको सुनाकर रमेशको आश्चर्यमें डालने-

की चेष्टा करने लगी; तब रमेशने गम्भीर होकर भूमण्डलकी गोलाईपर सन्देह प्रकट किया। उसने कहा,—"भला यह भी कभी हो सकता है ?"

कमलाने आश्चर्यके साथ आँखें फाड़कर कहा,—"वाह, हमारी किताबमें लिखा है, मैंने पढ़ा है।"

रमेशने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा,—"क्या बकती हो ? किताबमें लिखा है ? कितनी बड़ी किताब है ?"

इस बातसे कमलाने कुछ सङ्कोचके साथ कहा.—"बहुत बड़ी किताब नहीं है—किन्तु छपी हुई किताब है। उसमें तसवीर भी है।"

इतने बड़े प्रमाणपर रमेशको हार माननी पड़ी। इसके बाद कमलाने शिक्षाकी बाते समाप्तकर विद्यालयकी लड़कियों और गुरुआनीकी चर्चा छेड़ी, वहाँके दैनिक कामके बारेमें बकवाद करने लगी। रमेश दूसरी ही चिन्तामें डूबा हुआ बीच-बीचमें 'हां' करता गया। कभी उसकी बातोंमें मौका पा बीच-बीचमें टोक भी बैठता था। बातों ही बातमें कमला कह उठी -- 'तुम मेरी बातें सुनके भी नहीं सुन रहे हो।" यह कहती वह नाराज होकर उठ खड़ी हुई।

रमेशने चौंककर कहा "नहीं नहीं, कमला, तुम बुरा न मानो, आज मैं अच्छा नहीं हूँ।"

'अच्छा नहीं' सुनकर कमलाने उसी समय पलटकर पूछा,—"तुम्हारी तबीयत खराब है ? क्या हुआ है ?"

रमेशने कहा,—'कोई ठीक बीमारी नहीं है--समझो कुछ नहीं है कभी-कभी मेरी तबीयत ऐसी हो जाया करती है--फिर आप ही अच्छी हो जाती है।"

कमलाने रमेशको शिक्षाके बारेमें मन बहलाये रखनेके खयालसे कहा,—"मेरे भूगोल-प्रवेशमें पृथिवीका जो चित्र है, वह देखोगे ?"

रमेशने आग्रह प्रकाशकर देखना चाहा। कमलाने शीघ्रताके साथ किताब लाकर रमेशके सामने खोलकर रख दिया। कहा,—"यह जो दो गोल देखते हो, वह असलमें एक है। गोल वस्तुका आगा-पीछा एक साथ तो दिखाई दे नहीं सकता।"

रमेशने कुछ अपनी जानकारीका बहानाकर कहा,—"चिपटे चीजका भी आगा पीछा दिखाई नहीं देता।"

कमलाने कहा,—"इसलिये इस चित्रमें पृथिवीके दोनों पीठ अलग-अलग छापे गये हैं।"

इसी प्रकार सन्ध्या बीत गई।

२०

अन्नदा बाबू बहुत धीरजके साथ आशा कर रहे थे, कि योगेन्द्र अच्छा समाचार लेकर आयेगा; सब झमेला बहुत सहजमें साफ हो जायेगा। योगेन्द्र और अक्षयने जब घरमें प्रवेश किया, तब अन्नदा बाबूने डरते हुए दोनोंके मुँहकी ओर देखा।

योगेन्द्रने कहा,—"पिताजी, तुम रमेशको इतना चढ़ा दोगे, यह कोई जानता न था। मुझसे कहनेसे मैं क्या अब उसके साथ बातचीत करा न देता?"

अन्नदाबाबू—रमेशके साथ हेमनलिनीके विवाहमें तुम्हारी राय है। तुम एक बार पहले ही मुझसे कह चुके हो। अगर तुम्हारी बाधा देनेकी इच्छा थी, तो तुम मुझसे—

योगेन्द्र—एक-बारगी बाधा देनेका विचार मेरे मनमें नहीं हुआ, किन्तु इसी वजह—

अन्नदाबाबू—देखो तो सही, इसमें "इसी वजह" की क्या जरूरत है। या तो अग्रसर होने देते या बाधा देते; इसके अलावा और क्या होता।"

योगेन्द्र—इसीसे एकबारगी इतना आगे बढ़ाना—

अक्षयने हँसकर कहा,—"कितनी ही चीजें ऐसी हैं, जो अपनी झोंकसे ही अग्रसर होती हैं, उसे सहारा नहीं देना पड़ता—बढ़ते-बढ़ते आप ही बाढ़पर पहुँच जाती हैं। किन्तु जो हो गया, उसके लिये नाहक बहस उठानेसे फायदा; अब जो कर्तव्य है, उसकी सलाह करो।

अन्नदाबाबूने डरते डरते पूछा—"रमेशसे तुम लोगोंकी मुलाकात हुई?"

योगेन्द्र—खूब अच्छी तरह हुई—इससे बढ़कर मुलाकात होनेकी आशा नहीं थी। यहाँतक कि उसकी स्त्रीसे भी परिचय हो गया।

अन्नदाबाबू चुपचाप हैरान होकर देखते रहे। कुछ ठहरकर उन्होंने पूछा,—"किसकी स्त्रीके साथ परिचय हुआ?"

योगेन्द्र—रमेशकी स्त्रीके साथ।

अन्नदाबाबू—तुम क्या कहते हो, मेरी समझमें नहीं आ रहा है। किस रमेशकी स्त्री?

योगेन्द्र—हमारे इन्हीं रमेशकी। पाँच-छः महीने पहले जब वह देश गया था, तब वह विवाह करनेके लिये ही गया था।

अन्नदाबाबू किन्तु उसके पिताकी मृत्यु होनेसे विवाह नहीं हो सका।

योगेन्द्र—मृत्युके पहले ही विवाह हो गया।

अन्नदाबाबू चुपचाप शिर सुहलाने लगे। कुछ देर सोचकर उन्होंने कहा,—"तब तो हमारी हेमके साथ उसका विवाह हो ही नहीं सकता।"

योगेन्द्र—हमलोग भी यही कहते हैं--

अन्नदाबाबू - तुम लोग तो यही कह रहे हो, लेकिन इधर विवाहकी सारी तैयारी जो हो गई है !--इस रविवारको न हो सकनेकी वजह अगले रविवारके लिये चिट्ठी भेज दी गई है—अब उसे रोककर फिर चिट्ठी लिखनी होगी।

योगेन्द्र--विवाह रोकनेकी जरूरत ही क्या है--कुछ परिवर्तनसे काम चला लेना चाहिये।

अन्नदाबाबूने आश्चर्यके साथ कहा'--'इसमें परिवर्त्तन कैसा ?"

योगेन्द्र—जहाँ परिवर्त्तन करनेकी आवश्यकता होती है. वहाँ करना ही पड़ता है। रमेशके बदले और कोई पात्र ठीकर जैसे हो अगले रविवारको ही काम हो जाना चाहिये। नहीं तो लोगोंके सामने मुँह कैसे दिखाया जायगा ?

यह कहकर योगेन्द्रने एक बार अक्षयके मुँहकी ओर देखा। अक्षयने विनम्रताके साथ सिर झुका लिया।

अन्नदाबाबू—इतनी जल्दी पात्र कहाँ मिलेगा ?

योगेन्द्र—इसके लिये तुम निश्चिन्त रहो।

अन्नदाबाबू--किन्तु हेमको भी तो राजी ह ना चाहिये।

योगेन्द्र--रमेशका सारा हाल सुननेपर वह निश्चय राजी हो जायगी।

अन्नदाबाबू--तुम्हें जो अच्छा जान पड़े, वही करो। किन्तु रमेशसे अच्छा मेलजोल भी हो गया था। उसमें उपार्जन करने लायक अच्छी विद्या और बुद्धि भी थी। अभी परसो हमारी उसकी बातें तय हुई, कि वह इटावामें जाकर प्रैक्टिस करेगा; इसी बीच यह सब बखेड़ा खड़ा हो गया।

योगेन्द्र--इसके लिये काहेकी चिन्ता है पिताजी, इटावामें रमेश अब भी प्रैक्टिस कर सकता है। जाऊँ हेमको बुला लाऊँ, क्योंकि अब अधिक समय नहीं है।

कुछ देर बाद योगेन्द्र हेमनलिनीके साथ कमरेमें आया। अक्षय कमरेके एक कोनेमें किताबोंकी आलमारीके पास बैठा था।

योगेन्द्रने कहा,--"बैठो हेम, तुमसे कुछ बातें करनी है।"

हेमनलिनी चुपचाप चौकीपर बैठ गई क्योंकि यह उसके लिये परीक्षाका समय है।

योगेन्द्रने भूमिका बाँधते हुए पूछा—"रमेशके व्यवहारमें तुम्हें सन्देहका कोई कारण दिखाई नहीं देता ?

हेमनलिनीने कुछ न कहकर सिर्फ शिर हिला दिया।

योगेन्द्र—उसने जो विवाह एक सप्ताहके लिये टाल दिया; उसमें ऐसा कौन सा कारण था, जो हम लोगोंसे कहा नहीं जा सकता था ?

हेमनलिनीने नीची निगाहकर कहा,—"कोई कारण तो होगा ही।"

योगेन्द्र—यह तो ठीक है। कारण तो है ही; किन्तु क्या वह सन्देहजनक नहीं है ?

हेमनलिनीने फिर शिर हिलाकर प्रकट किया,—"नहीं।"

इन सब लोगोंसे अधिक रमेशपर उसका विश्वास देख योगेन्द्रको क्रोध आया। सावधानीसे अब भूमिका चलाये न चलो।

योगेन्द्र जरा कड़ाईके साथ कहने लगा,—तुम्हें याद होगा, कि रमेश कोई छ महीने पहले अपने बापके साथ देश चला गया था। इसके बाद कुछ दिनतक उसकी चिट्ठिपत्री न पाकर हमलोग आश्चर्यमें आये थे। यह भी तुम जानती हो, कि रमेश दोनों समय हम लोगोंके घर आता था। जिसने हमारे बगलके मकानमें जगह लिया था, वह कलकत्तेमें आकर भी हम लोगोंसे एक बार भी न मिला। दूसरे मकान

में छिपकर रहने लगा। इतना होनेपर भी तुम लोग विश्वास कर उसे घर ले आये। मेरे रहते क्या कभी ऐसा होने पाता ?"

हेमनलिनी चुप रही।

योगेन्द्र—रमेशके ऐसे आचरणका कोई अर्थ तुम लोगोंकी समझमें आया। क्या इसके बारेमें कोई प्रश्न तुम लोगोंके मनमें नहीं उठा ? उसपर रमेशपर इतना गहरा विश्वास !

हेमनलिनी चुप रही।

योगेन्द्र—ठीक है, अच्छी बात है; सरलस्वभावा तुम किसीपर भी सन्देह नहीं करतीं—आशा है, कि मुझपर भी तुम्हारा बहुत विश्वास होगा। मैं स्वयं स्कूल जाकर खबर ले आया हूँ कि रमेश अपनी ही कमलाको वहाँ बोर्डर रखके पढ़ाता था। छुट्टीके समय भी उसने उसे वहीं रखनेका विचार किया था। दो-तीन दिन हुए, रमेशको स्कूलकी प्रधाना गुरुआनीका एक पत्र मिला, कि छुट्टीके समय कमला स्कूलमें नहीं रह सकती। आज उसे छुट्टी मिली है—स्कूलकी गाड़ीने दर्जीपाड़ाके एक खिड़कीबन्द मकानमें कमलाको पहुँचा दिया। उस मकानमें मैं स्वयं गया था। मैंने देखा, कि कमला हँसुएसे सेब काट-काटकर दे रही है और रमेश उसके सामने जमीनमें बैठकर एक-एक टुकड़ा खा रहा है। रमेशसे पूछा, कि यह क्या बात है। अगर रमेश एकबार भी कहता, कि कमला उसकी स्त्री नहीं है, तब भी उसकी बातपर भरोसाकर किसी तरह सन्देहको दूर करनेकी चेष्टा की जाती। किन्तु वह हाँ-ना कुछ भी कहना नहीं चाहता। तब क्या इतनेपर भी तुम रमेशपर विश्वास रखना चाहती हो ?

प्रश्नके जवाबके आसरे योगेन्द्रने हेमनलिनीके मुँहकी ओर देखा, कि उसके मुँहपर स्वाभाविक उदासी छा गई है। क्षणभरमें वह सामनेकी ओर झुककर बेहोश हो चौकीसे नीचे गिर गई।

अन्नदाबाबू घबरा उठे। उन्होंने जमीनमें पड़ी हेमनलिनीके शिरको

अपनी छातीसे लगाकर कहा,—"बेटी, क्या हो गया बेटी ! इन लोगों-की बातपर तुम कुछ भी विश्वास न करना—सब झूठ है !"

योगेन्द्रने अपने पिताको हटाकर हेमनलिनीको एक काउचपर लेटा दिया। इसके बाद सुराहीसे पानी लेकर लगातार उसके मुँहपर छींटा देने लगा। अक्षयने एक पंखा ले उसके मुँहपर हवा करना शुरू किया।

हेमनलिनी थोड़ी ही देरमें आँखें खोलकर चौंक पड़ी—अन्नदाबाबू-की ओर देख उसने चीखकर कहा,—"पिताजी, पिताजी, अक्षयबाबूको यहाँसे हटाइये।"

अक्षय पंखा फेंककर कोठरीसे बाहर जा दर्वाजेकी ओटमें खड़ा हो गया। अन्नदाबाबू काउचपर बैठ हेमनलिनीके शिर और शरीरपर हाथ फेरने लगे—वे ठण्डी साँस ले बोले,—"बेटी !"

देखते-देखते हेमनलिनीकी आँखोंसे आँसूकी धारा बहने लगी। उसकी साँस फूलने लगी। वह पिताके जंघेसे छाती दबाकर उमड़ती हुई रुलाई-को रोकनेकी चेष्टा करने लगी। अन्नदाबाबू आँसुओंसे भरभराई हुई आवाजमें कहने लगे,—'बेटी तुम निश्चिन्त हो। रमेशको मैं अच्छी तरह पहचानता हूँ—वह कभी अविश्वासी हो नहीं सकता। योगेन्द्रने निश्चय ही भूल की है।"

योगेन्द्रसे अब न रहा गया; उसने कहा,—"पिताजी, झूठा भरोसा न दीजिये। अभीके कष्टसे बचानेसे उसे दूना कष्ट भोगना पड़ेगा। पिताजी, इस समय हेमको कुछ सोचने विचारनेका समय दीजिये।"

हेमनलिनी उसी समय पिताके जंघेसे उठ बैठी और योगेन्द्रकी ओर देखकर कहने लगी,—"मुझे जो कुछ समझना था, समझ चुकी। जबतक मैं उनके मुँहसे सब बातें सुन न लूँगी तबतक मैं किसीकी बातपर विश्वास न करूँगी; यह निश्चय है।"

यह कहती हुई वह उठकर बैठ गई। अन्नदाबाबूने घबराहटके साथ उसे पकड़कर कहा—'तुम लेट रहो।"

हेमनलिनी अपने पिताके हाथका सहारा ले अपने सोनेवाली कोठरी में चली। उसने बिछौनेपर लेटकर कहा,—"पिताजी, कुछ देरके लिये मुझे अकेली रहने दो—मैं सोऊँगी।"

अन्नदाबाबूने कहा,—"हरियाकी माँको बुला दूँ? वह तुम्हें पंखा झलेगी।"

हेमनलिनीने कहा,—"पंखेकी जरूरत नहीं।"

अन्नदाबाबू बगलकी कोठरीमें आकर बैठ गये। इस लड़कीको छः महीनेकी बच्ची छोड़ इसकी माँ मर गई, उसी हेमकी चिन्तामें वे डूब गये। उन्हें वही सेवा, वही धैर्य और वही सदाकी प्रसन्नता उन्हें याद आई। वही गृहलक्ष्मीकी प्रतिमाके समान यह लड़की उनकी गोदमें इतने दिनोंमें बड़ी हुई है, उसके अनिष्टकी आशङ्कासे उनका हृदय व्याकुल हो उठा। बगलकी कोठरीमें बैठे-बैठे वे मन ही मन उसका सम्बोधनकर कहने लगे,—"बेटी, तुम्हारा सारा विघ्न दूर हो. तुम सदा सुखसे रहो—तुम्हें सुखी देख, स्वस्थ देख, जिससे तुम प्रेम करती हो, उसके घरमें लक्ष्मीकी तरह तुम्हें प्रतिष्ठित देख मैं खुशीसे तुम्हारी माके पास जा सकूँगा।" यह कहते हुए उन्होंने कुरतेसे अपने आँसू पोंछे।

औरतोंकी बुद्धिपर योगेन्द्र पहलेसे ही बहुत लापरवाह था, आज वह और भी दृढ़ हो गया। स्त्रियाँ प्रत्यक्ष प्रमाणपर भी विश्वास नहीं करतीं, इनसे कैसे निपटा जाय, दो और दो चार हो जायेंगे, इससे मनुष्योंको सुख हो या दुःख, इसको वे स्थान विशेषमे अनायास ही अस्वीकार कर सकती हैं। अगर युक्ति कालेको काला कहे और इनका प्रेम उसे गोरा बताये, तो युक्तिपर ये बहुत ही नाराज हो उठती हैं। योगेन्द्र यह समझ ही न सका, इनके साथ लोग संसार कैसे चलाते हैं।

योगेन्द्रने आवाज दी,—"अक्षय।"

अक्षयने धीरे-धीरे कोठरीमें प्रवेश किया। योगेन्द्रने कहा,—"सब सुन लिया न। तब क्या उपाय है?"

अक्षयने कहा,—" मुझे इन सब मामलोंमें क्यों घसीटते हो। मैंने आजतक कोई बात नहीं कही; तुमने आकर मुझे इस मुश्किलमें फँसा दिया।"

योगेन्द्र—अच्छा, यह सब शिकायतें बादको करना। अब हेम-नलिनीके सामने रमेशके मुँहसे सारी बातें कबूल कराये बिना दूसरा उपाय नहीं है।

अक्षय—पागल हुए हो? कहीं आदमी अपने मुँहसे—

योगेन्द्र—अथवा वह एक चिट्ठी लिखे, तो और भी अच्छा हो। यह भार तुम्हें लेना पड़ेगा। किन्तु अब देर करनेसे काम न चलेगा।

अक्षय—देखूँ, मैं कहाँतक क्या कर सकता हूँ।

२१

रात नौ बजे रमेश कमलाको लेकर स्यालदह स्टेशन गया। जानेके समय जरा फेर खाकर गया। गाड़ीवानको बिना जरूरतके कई गली घुमाकर ले गया। कोलूटोलामें एक मकानके सामने आकर उसने आग्रह-के साथ मुँह बढ़ाकर देखा। परिचित मकानमें उसे किसी तरहका परिवर्त्तन दिखाई नहीं दिया।

रमेशने एक ऐसी गहरी साँस ली, जिससे ऊँघती हुई कमला चौंक-कर जाग गई। पूछा,—"क्या हुआ?"

रमेशने जवाब दिया,—"कुछ नहीं।" और कुछ न बोला। गाड़ीके अँधेरेमें चुपचाप बैठा रहा। देखते-देखते वह खिड़कीके कोनेपर शिर रख फिर सो गई। कुछ देरके लिये कमलाका होना रमेशको असहनीय जान पड़ा।

घोड़ागाड़ी ठीक समयसे स्टेशन पहुँची। सेकेण्ड-क्लासका एक डब्बा पहलेसे ही रिजर्व कर लिया गया था - कमला और रमेश उसमें जाकर बैठे। एक किनारेकी बेञ्चपर कमलाके लिये बिछौना बिछा गाड़ीकी बत्तीके नीचेका पर्दा खींच अन्धकार करते हुए रमेशने कमलासे कहा,—"बहुत देरसे तुम्हारे सोनेका समय हो गया है; अब तुम सोओ।"

कमलाने कहा,—"मैं गाड़ी छूटनेपर सोऊँगी, तबतक खिड़कीके पास बैठकर कुछ देखूँगी।"

रमेश राजी हो गया। कमला माथेका कपड़ा खींच प्लाटफार्मकी तरफके बेञ्चपर बैठ आते-जाते लोगोंको देखने लगी। रमेश बीचके बेञ्चपर बैठ किसी और ही चिन्तामें बैठा रहा। गाड़ी छूटते ही रमेश चौंक उठा, उसे जान पड़ा, मनो एक जान-पहचानका आदमी गाड़ीकी ओर दौड़ा आ रहा है। रेलवे कर्मचारीकी बाधासे निकलकर एक आदमी किसी तरह गाड़ीमें चढ़ गया; खींचा-खींचीमें उसका चादर कर्मचारीके हाथमें ही रह गया। चादर लेनेके लिये जब उसने खिड़कीसे झुककर हाथ बढ़ाया, तब रमेशने अच्छी तरह पहचान लिया, कि वह और कोई नहीं, अक्षय है।

इस चादर खींचाखींचीके तमाशेसे बहुत देरतक कमलाकी हँसी रुक न सकी।

रमेशने कहा,—"साढ़े दस बज गया है—गाड़ी छूट गई, अब तुम सोओ।"

बालिका बिछौनेपर लेटकर जबतक नींद न आई, तबतक ठहर-ठहरकर खिलखिलाकर हँस पड़ती थी।

किन्तु इस मामलेमें रमेशको कोई विशेष आनन्द न आया।

रमेश जानता था, कि किसी गाँवसे अक्षयका कोई सम्बन्ध नहीं है। वह पुश्त, दर-पुश्तसे कलकत्तेका रहनेवाला है। आज इतनी रातको वह

दौड़कर कलकत्ता छोड़ कहाँ जा रहा है ? रमेश समझ गया, कि अक्षय उसके पीछे लगा है।

अगर अक्षय उसके गाँवमें पहुँच खोज करना शुरू करे, तो वहाँ रमेशके मित्र और शत्रुमें एक तरह की कानाफूसी होने लगेगी। तब मामला और खराब हो जायगा; यह सोचकर रमेशका हृदय अशान्त हो उठा। उसके गाँवके लोग क्या कहेंगे; कैसी घोंटाई चलेगी; यह सब रमेशको प्रत्यक्ष दिखाई देने लगा। कलकत्ते जैसे शहरमें हर समय एकान्त मिल सकता है—किन्तु गाँवकी गंभीरतामें थोड़ीसी छेड़छाड़से ही आन्दोलनकी लहरें लहराने लगेंगी। इस बातपर रमेश जितना विचार करता गया, उतना ही उसका मन सङ्कुचित होने लगा।

जब बारिकपुरमें गाड़ी रुकी, तब रमेशने खिड़कीसे गर्दन बढ़ाकर देखा, कि अक्षय उतरा नहीं। नैहाटीमें बहुतेरे लोग चढ़ने-उतरने लगे, किन्तु उसमें अक्षय दिखाई न दिया। एक वृथा आशासे व्यग्र होकर बाहर देखा—उतरनेवालोंमें अक्षय नहीं दिखाई दिया। इसके बाद और किसी स्टेशनपर उसके उतरनेकी सम्भावना नहीं थी।

बहुत रात गये रमेश थककर सो रहा।

दूसरे दिन सवेरे ग्वालन्दामें रमेशने देखा कि अक्षय माथे और मुँहपर चादर लपेट हाथमें बेग लिये पैर बढ़ाता हुआ स्टीमरकी ओर चला।

इसी स्टीमरपर रमेश सवार होनेवाला था। स्टीमरके छूटनेमें अब भी देर थी। किन्तु दूसरे घाटपर एक और स्टीमर छूटनेकी तैयारीमें सीटी बार-बार दे रहा था। रमेशने पूछा—"यह स्टीमर कहाँ जायगा ?" मालूम हुआ कि "पश्चिम"।

"कहाँतक जायगा ?'

"पानी न घटा, तो काशीतक जायगा।"

यह सुनकर रमेशने शीघ्रताके साथ उस स्टीमरपर सवार हो कमलाको एक कमरेमें बैठा दिया—इसके बाद उसने शीघ्रतासे दूध, चावल-दाल और एक घौद केला खरीद लाया।

इधर अक्षय दूसरे स्टीमरपर अन्य मुसाफिरोंसे पहले सवार हो और सिकुड़कर एक जगह खड़ा हुआ, जहाँसे वह सब मुसाफिरोंका आना-जाना देख रहा था। यात्रियोंको कोई जल्दी तो थी नहीं। क्योंकि स्टीमर छूटनेमें देर है—मुसाफिर लोग इस अवसरमें मुँह-हाथ धो, स्नानकर या कोई-कोई किनारेपर रसोई बनाने लगे। अक्षय ग्वालन्दोसे अपरिचित था। उसने सोचा, कि किसी होटल या दूकानमें रमेश कमलाको खिला-पिला रहा है।

अन्तमें स्टीमर सीटी देने लगा। तब भी रमेश दिखाई न दिया। काँपते हुए तख्तेके ऊपरसे यात्रियोंका दल स्टीमरपर चढ़ने लगा। बार-बार सीटीकी आवाजसे लोगोंकी शीघ्रता बढ़ने लगी। किन्तु आये हुए और आनेवालोंमें रमेशका कोई निशान भी न मिला। जब मुसाफिरोंकी संख्या बन्द हुई—तख्ता उठा लिया गया और कप्तानने लङ्गर उठा लेनेका हुक्म दिया, तब अक्षयने घबराकर कहा—"मैं उतरूँगा।" किन्तु खलासियोंने उसकी बातपर ध्यान भी नहीं दिया। डक दूर नहीं था, अक्षय उसपर कूद पड़ा।

किनारे पहुँचने पर भी उसे रमेशका कोई पता न लगा। थोड़ी ही देर हुई, ग्वालन्दोसे सवेरे की पैसिञ्जर कलकत्तेकी ओर चली गई। अक्षयने मन ही मन सोचा, कि कल रातको गाड़ीमें सवार होनेके समयकी खींचा-तानीमें निश्चय उसे रमेशने देख लिया। रमेश उसकी चालाकीका अनुमानकर अपने देश न जा सवेरेवाली गाड़ीसे कलकत्ते चला गया। अगर कलकत्तेमें कोई छिपनेकी चेष्टा करे, तो उसे खोज निकालना बहुत कठिन है।

२२

अक्षय सारे दिन ग्वालन्दोमें छटपटाकर शामकी डाकगाड़ीमें सवार हो गया। दूसरे दिन सवेरे कलकत्ते पहुँचते ही वह सबसे पहले रमेशके दर्जीपाड़ावाले मकानमें गया; देखा कि दर्वाजा बन्द है; पूछकर मालूम किया, कि वहाँ कोई नहीं आया।

कोलूटोलामें आकर देखा, कि रमेशके मकानमें सन्नाटा है। तब अन्नदाबाबूके घर पहुँच उसने योगेन्द्रसे कहा—"भाग गया—मैं उसे पकड़ न सका।"

योगेन्द्रने कहा—"यह क्यों ?"

अक्षयने अपने भ्रमणका सारा हाल सुना दिया।

अक्षयको देखकर रमेशका कमलाके साथ भागना रमेशके विरुद्ध योगेन्द्रका सन्देह निश्चित विश्वासके रूपमें बदल गया।

योगेन्द्रने कहा—"किन्तु अक्षय, रमेशकी यह सब युक्तियाँ किसी काम न आयेंगी। केवल हेमनलिनी ही नहीं; पिताजीने भी सिर्फ एक ही रट लगाई है—उनका कहना है, कि रमेशके मुँहसे उसकी सारी बातें सुने बिना वह किसी तरह उसपर अविश्वास न करेंगे। यहाँतक कि यदि रमेश आज भी आकर पिताजीसे कह दे, कि "अभी मैं कुछ न कहूँगा"; तब वे हेमके साथ उसका विवाह करनेमें देर न करेंगे। इन लोगोंके कारण मैं बड़ी मुश्किलमें पड़ा हूँ। पिताजी हेमनलिनीका कष्ट जरा भी सह नहीं सकते—अगर हेम आज जिद कर बैठे—"रमेशकी दूसरी स्त्री रहे, मैं उससे ही विवाह करूँगी, तो जान पड़ता है; कि पिताजी इसीपर राजी हो जायँगे। जैसे हो और जहाँतक जल्द हो, रमेशसे यह बातें कबूल कराना ही पड़ेगा। तुम्हारे हताश होनेसे काम न चलेगा। मैं इस काममें लग सकता था किन्तु मेरी बुद्धिमें कोई चाल ही न सुझाई दी। शायद मैं रमेशसे मारपीट भी

कर बैठता। शायद अभीतक तुमने मुँह नहीं धोया और न चाय ही पी है।"

अक्षय मुँह धोकर चाय पीते-पीते कुछ सोचने लगा। इसी समय अन्नदाबाबू हेमनलिनीका हाथ पकड़े चाय पीनेके लिये कमरेमें गये। अक्षयको देखते ही हेमनलिनी पलटकर कमरेसे बाहर चली गई।

योगेन्द्रने क्रोधके साथ कहा—"यह हेमकी बहुत बड़ी भूल है। पिताजी, तुम हेमकी इस अभद्रताका समर्थन न करो। उसे जबर्दस्ती यहाँ ले आना चाहिये। हेम-हेम ?"

तबतक हेमनलिनी ऊपर चली गई। अक्षयने कहा—"योगेन्द्र, देखता हूँ कि तुम मेरे कामको खराब कर दोगे। उसके सामने मेरे सम्बन्धमें कोई बात ही न कहो। समयपर इसका फैसला होगा; जबर्दस्ती करनेसे सब मट्टी हो जायगा।"

अक्षय चाय पीकर चला गया। अक्षयमें हिम्मतकी कमी नहीं थी। चाहे सब लक्षण उसके प्रतिकूल हों, फिर भी चिपके रहना जानता है। उसके चेहरेके भावमें किसी प्रकारका विकार दिखाई नहीं देता। वह चिढ़कर कभी गम्भीर मुँह होने नहीं देता या वहांसे हटता नहीं। अनादर और अपमानसे वह विचलित नहीं होता। आदमी टकसाली है। उसपर किसीका कैसा ही व्यवहार क्यों न हों वह ज्यों का त्यों कायम रहता है।

अक्षयके चले जानेपर अन्नदाबाबू हेमनलिनीको पकड़े हुए चायके टेबिलपर आये। आज उसके कपोल पीले हो रहे हैं—उसकी आँखोंके नीचे काली रेखा पड़ गई है। कमरेमें आते ही उसने निगाह नीची कर ली, योगेन्द्रके मुँहकी ओर देख न सकी। वह जानती थी, कि योगेन्द्र उसपर और रमेशपर नाराज है, उनके खिलाफ कठोर विचार कर रहा है। इसीलिये योगेन्द्रके साथ बातचीत-देखादेखी होना, उसके लिये कठिन हो गया है।

यद्यपि प्रेमने हेमनलिनीके विश्वासको अलग कर रखा था, तथापि विचारको बिलकुल ताक पर उठा धरनेसे काम नहीं चलता। योगेन्द्रके सामने हेमनलिनी कल अपने विश्वासकी दृढ़ता दिखाकर चली गई थी, किन्तु रातके अन्धकारमें सोनेवाली अकेली कोठरीमें उसका बल भरपूर न रहा। वास्तवमें शुरूसे ही रमेशके व्यवहारका कोई अर्थ समझमें नहीं आता। हेमनलिनी अपने विश्वासके किलेमें सन्देहके कारणोंको वह जितने चेष्टासे घुसने नहीं दिया चाहती—उतनी ही जोरसे वह बाहरसे आघात करता है। जैसे माता सांघातिक आघातसे अपने बच्चेको छातीसे चिपकाकर रक्षित रखती है, वैसे ही हेमनलिनी रमेशके विश्वासको प्रमाणोंसे विरुद्धकर हृदयमें चिपकाये हुई है। किन्तु हाय, जोर सभी समय बराबर नहीं रहता।

हेमनलिनीकी बगलकी कोठरीमें ही रातको अन्नदाबाबू सोये थे। वह समझ रहे थे, कि हेम बिछौनेपर इधरसे उधर करवटें बदल रही थी। व बीच बीचमें उसकी कोठरीमें पहुँच पूछते भी थे,—बेटी, तुम्हें नींद नहीं आ रही है?" हेमनलिनी जवाब देती थी,—"पिताजी, तुम क्यों जाग रहे हो? मुझे नींद आ रही है, मैं अभी सो जाऊँगी।"

दूसरे दिन सवेरे उठ हेमनलिनी छतपर टहल रही थी। रमेशके घरके एक भी दरवाजे-एक भी खिड़की खुली नहीं थी।

धीरे-धीरे सूर्य पूर्व ओरके मकानोंकी चोटीपर दिखाई दिये। हेमनलिनीके लिये आजका यह नवीन अभ्युदित दिन इतना शुष्क, शून्य, आशाहीन और आनन्दहीन जान पड़ा, कि वह उस छतके एक कोनेमें बैठ दोनों हाथसे मुँह ढककर रोने लगी। आज सारे दिन कोई न आयेगा, चायके समय किसीकी भी आशा नहीं; यह कल्पनाका सुख भी दूर हो गया है, कि बगलके मकानमें कोई है तो सही।

"हेम! हेम!"

हेमनलिनीने चटपट उठ आँखके आँसू पोछकर जवाब दिया,—"क्या है पिताजी !'

अन्नदाबाबूने छतपर आ हेमनलिनीकी पीठपर हाथ फेरते हुए कहा,— 'आज मुझे उठनेमें देर हो गई।"

अन्नदाबाबू चिन्ताकी वजह रातको सो नहीं सके - सवेरेके समय उन्हें नींद आ गई थी। वे सवेरेकी रोशनी पड़ते ही उठ बैठे और हाथ-मुँह धोकर हेमनलिनीकी खबर लेने लगे। उन्होंने देखा, कि घरमें कोई नहीं है। सवेरे हेमनलिनीको अकेली घूमने जाना उनके हृदयको ठेस लगी। उन्होंने कहा,—"चलो बेटी, चाय पीने चलो।"

हेमनलिनीकी इच्छा नहीं थी, कि वह चायके टेबिलपर योगेन्द्रके सामने बैठकर चाय पिये। किन्तु वह जानती थी, कि किसी प्रकार भी नियमके खिलाफ काम होनेसे उसके पिताको कष्ट होता है। इसके अतिरिक्त वह नित्य अपने हाथसे अपने पिताके प्यालेमें चाय उँडेलती थी; अपनी इस सेवासे उसने अपनेको वञ्चित होने नहीं दिया।

नीचेके कमरेमें पहुंचनेसे पहले जब उसने बाहरसे ही सुना, कि योगेन्द्रके साथ कोई बातचीत कर रहा है, तब उसकी छाती काँप उठी। एकाएक याद आई, कि शायद रमेश आया है। इतने सवेरे और कौन आयेगा।

काँपते पैर उसने कमरेमें जाकर देखा, कि अक्षय है; उस समय वह अपनेको किसी तरह भी सँभाल न सकी—उसी समय वह पलटकर बाहर निकल आई।

जब दूसरी बार अन्नदाबाबू उसे कमरेमें ले गये, तब वह अपने पिताकी कुरसीके पास खड़ी हो उनके प्यालेमें चाय देने लगी।

योगेन्द्र हेमनलिनीके व्यवहारसे बहुत चिढ़ा हुआ था। हेम रमेशके लिये जो शोकका अनुभव कर रही थी, वह उसे असहनीय हो रहा था। इसके बाद जब उसने देखा, कि—अन्नदाबाबू इस शोकमें उसका

साथ दे रहे हैं और वह भी संसारके लोगोंके बदले अन्नदाबाबूकी स्नेहकी छायामें अपनी रक्षा करनेकी चेष्टा कर रही थी, तब उसका अधैर्य और भी बढ़ गया। वह सोचने लगा, कि मानो हम सबके सब अत्याचारी हैं। हम लोग जो स्नेहके कारण कर्त्तव्यपालनकी चेष्टा कर रहे हैं, हम लोग जो यथार्थरूपसे उसका मङ्गल साधन कर रहे हैं—उसके लिये जरा भी कृतज्ञता प्रकाश करना तो दूरकी बात, उलटे मन ही मन हमलोगोंको दोषी समझ रही है। पिताजीको तो किसी बातकी समझ है नहीं। अब धीरज देनेका समय नहीं है—अब आघात करनेका समय है। ऐसा न कर पिताजी अप्रिय सत्यको उससे दूर रखना चाहते हैं।

योगेन्द्रने अन्नदाबाबूसे कहा,—'सुना है पिताजी, कि क्या हुआ?"

अन्नदाबाबूने डरते हुए पूछा,—"नहीं क्या हुआ?"

योगेन्द्र—रमेश कल अपनी स्त्रीको लेकर ग्वालन्दो मेलसे देश जा रहा था—अक्षयको उस गाड़ीमें चढ़ते देख देश न जाकर फिर कलकत्ते लौट आया है।

हेमनलिनीका हाथ काँप उठा—चाय ढालनेके समय चाय गिर गई। वह कुरसीपर बैठ गई।

योगेन्द्र उसके मुँहकी ओर देखकर कहने लगा,—"भागनेकी जरूरत क्या थी, यह मेरी समझमें नहीं आया। अक्षयके सामने तो पहले ही प्रकट हो गया था। एक तो उसका पहलेका व्यवहार ही खूब हुआ—इसके बाद यह कायरता, यह चोरकी तरह इधर-उधर भागते फिरना मेरे आगे तो बहुत ही खराब जँचता है। नहीं मालूम, कि हेम क्या समझती है—क्योंकि इस तरह भागना ही उसके अपराधका यथेष्ट प्रमाण है।"

हेमनलिनीने काँपते काँपते कुरसीसे उठकर कहा,—'दादा, मैं प्रमाणोंकी कोई परवा नहीं रखती। तुम लोग इसका विचार करना चाहते हो, तो करो—मैं विचारक नहीं हूँ।"

योगेन्द्र—तुम्हारे साथ जिसके विवाहका सम्बन्ध हो रहा है, क्या उससे हमलोगोंका कोई सम्बन्ध नहीं है ?

हेमनलिनी—विवाहकी बात कौन करता है। तुम लोग तोड़ना चाहो, तो तोड़ दो-यह तुम लोगोंकी इच्छापर है। किन्तु मेरा मन तोड़नेके लिये झूठी चेष्टा न करो।

यह कहते कहते हेमनलिनी स्वरके साथ रो उठी। अन्नदाबाबूने चटपट उसके आँसूसे भींगे मुँहको छातीसे लगाकर कहा—"चलो हेम, हमलोग ऊपर चलें।"

२३

स्टीमर छूट गया। पहले और दूसरे दर्जेके कमरेमें कोई नहीं था। रमेशने एक कमरा पसन्दकर उसमें अपना बिस्तर लगा दिया। सवेरेके समय दूध पीकर उस कमरेकी खिड़की खोल कमला नदी और किनारेका तमाशा देखने लगी।

रमेशने कहा,—जानती हो कमला, कि हम लोग कहाँ जा रहे हैं ?"

कमलाने कहा,—"देश जा रहे हैं।"

रमेश—देश तो तुम्हें अच्छा नहीं लगता—हम देश न जायेंगे।

कमला—मेरे लिये तुम देश जाना छोड़ दोगे ?

रमेश - हाँ, तुम्हारे लिये।

कमलाने मुँह भारीकर कहा,—"ऐसा क्यों करते हो। मैंने किसी दिन बात बातमें कुछ कह दिया। तुमने वही मान लिया। तुम जरा-जरा-सी बातपर नाराज हो जाते हो।"

रमेशने हँसकर कहा,—"मैं जरा भी नाराज नहीं हुआ हूँ। देश जानेकी मेरी भी इच्छा नहीं है।

तब कमलाने उत्सुकताके साथ पूछा,—"तब हम लोग कहाँ जा रहे हैं ?

रमेश—पश्चिम।

"पश्चिम"का नाम सुन कमलाकी आँखें चमक उठीं। पश्चिम ! जो लोग सदा घरमें ही दिन बिताते हैं, उनके आगे पश्चिमके नामसे क्या पूछना है। पश्चिममें तीर्थ, पश्चिममें स्वास्थ्य है, पश्चिममें नये-नये देश हैं, नये नये दृश्य हैं, कितने ही राजे और सम्राटोंकी पुरानी कीर्ति है कितने ही कारीगरीसे बने देवालय हैं, कितनी ही प्राचीन कहानी कितने ही वीरत्वका इतिहास है।

कमलाने प्रसन्न होकर पूछा,—पश्चिम हम लोग कहाँ जा रहे हैं ?"

रमेशने कहा.—"कुछ ठीक नहीं। मुँगेर, पटना, दानापुर, बक्सर, गाजीपुर, काशी जहाँ हो, एक जगह उतरना चाहिये।"

इन सब कितने ही जाने और अनजाने शहरोंका नाम सुन कमलाकी कल्पना और भी उत्तेजित हो उठी। उसने दोनों हाथ बजाकर कहा —' तब तो बड़ा मजा है।"

रमेशने कहा,—"मजा तो पीछे आयेगा; इधर कई दिन खाना-पीना कैसे चलेगा। तुम खलासियाके हाथकी रसोई खा सकोगी ?"

कमलाने घृणासे मुँह बिगाड़कर कहा,—हे राम, मुझसे यह न होगा।"

रमेश—तब कौन सा उपाय करना चाहिये।

कमला—मैं खुद बना लूँगी।

रमेश—तुम बना सकती हो ?

कमलाने हँसकर कहा,—"तुम क्या समझते हो, कि मैं नहीं जानती। मै क्या जरा सी बच्ची हूं, कि खाना बनाना भी नहीं जानती। मामाके यहाँ तो मैं बराबर रसोई बनाया करती थी।"

रमेशने तुरत पछतावा प्रकट करते हुए कहा,—"ठीक है, तब तो तुमसे इसके बारेमें पूछकर मैंने उचित नहीं किया। तब अब रसोईकी तैयारी की जाय—क्या कहती हो ?"

यह कह रमेश चला गया और ढूँढ़-ढाँढ़कर लोहेका एक चूल्हा उठा लाया। केवल इतना ही नहीं काशी पहुँचा देनेके खर्च और प्रलोभन दे उमेश नामके एक कायस्थके लड़केको पानी भरने और बरतन मलनेके लिये ठीक कर लाया।

रमेशने कहा,—"कमला, आज क्या बनाओगी ?"

कमलाने कहा,—"तुमने जैसी तैयारी की है। सिर्फ चावल और दाल है— आज खिचड़ी बनाती हूं।"

रमेश खलासियोंसे कमलाके बताये अन्दाजसे मसाला ले गया।

रमेशकी अनजानियतपर कमला हँस उठी। उसने कहा,—"सिर्फ मसाला लेकर क्या करूँगी ? सिल लोढ़ा न होनेसे यह पीसा काहेपर जायगा। तुम भी खूब हो !"

बालिकाकी इस आज्ञाको मानकर रमेश सिल-लोढ़ेकी खोजमें चला। सिल-लोढ़ा न मिलनेसे खलासियोंके पाससे लोहेका इमामदस्ता उठा लाया।

इमामदस्तेमें मसाला कूटनेका अभ्यास कमलाको नहीं था। लाचार वह उसीको लेकर बैठी। रमेशने कहा,—"न हो, तो मै और किसीसे मसाला पिसवा ले आऊँ।"

कमला इसपर राजी नहीं हुई। उसने स्वयं ही उत्साहके साथ काम शुरू किया। इसका अभ्यास न होनेसे उसे तमाशा जान पड़ने लगा। मसाला छिटक-छिटकर चारो ओर फैल रहा था और उसकी यह हँसी देख रमेश भी हँसने लगा।

इस तरह मसाला कूटनेका काम समाप्त होनेपर कमरमें आँचल खोस

कमलाने एक अच्छी जगह देख रसोई चढ़ा दी। कलकत्तेसे एक हण्डीमें सन्देस लाया गया था, उसी हण्डीसे आजका काम चल गया।

रसोई चढ़ाकर कमलाने रमेशसे कहा,—"तुम जाओ, जल्दी स्नान कर आओ—मेरी रसोईमें अधिक देर नहीं है।"

रसोई बन गई, रमेश स्नान कर आया। अब प्रश्न यह था, कि किस चीजमें खाया जाय।

रमेशने उठते-उठते कहा,—"खलासियोंके पाससे थाली लाई जा सकती है।"

कमलाने कहा,—"छिः!"

रमेशने मीठे वचनसे समझाया कि ऐसा काम वह इससे पहले कई बार कर चुका है।"

कमलाने कहा—"पहले जो हो गया, वह हो गया; अब न होने पायेगा—मैं उसे देख न सकूँगी।"

यह कहती हुई वह सन्देशकी हण्डीके मुँहपर ढँके पत्तलको धोकर साफ कर लाई। उसने कहा,—"आज दिन तुम इसी पर खाओ, फिर देखा जायगा।"

पानीसे धोये पोंछे रसोईके स्थानमें रमेश पवित्र भावसे बैठ कर भोजन करने लगा। दो-एक ग्रास खाते ही उसने कहा,—"वाह! अच्छी खिचड़ी बनी।"

कमलाने लज्जित हो कहा,—"जाओ, तुम तो हँसी करते हो।"

रमेशने कहा,—"हँसी नहीं, तुम अभी देखना।" यह कहकर उसने पत्तलके अन्नको समाप्त कर फिर माँगा। कमलाने एक बारगी बहुत-सा दे दिया। रमेशने घबराकर कहा,—"यह क्या करती हो। तुम्हारे लिये कुछ बचा है?"

"बहुत है, इसके लिये तुम चिन्ता न करो।"

रमेशके तृप्तिके साथ भोजन करनेपर कमला बहुत खुश हुई। रमेशने पूछा,—"तुम कैसे खाओगी ?"

कमलाने कहा,—'क्यों, इसी पत्तलसे काम चलेगा।"

रमेश घबरा उठा। उसने कहा,—"नहीं, ऐसा हो नहीं सकता।"

कमलाने आश्चर्यके साथ कहा,—"क्यों; इसमें हर्ज क्या है ?"

कमलाने कहा,—"खूब होना चाहिये—मैंने सब ठीक कर लिया है। उमेश, तू कहेमें खायगा ?"

उमेशने कहा —माजी, नीचे हलवाई पूरी बेच रहा है, मैं उससे पत्तल माँगे लाता हूँ।"

रमेशने कहा,—"तुम यदि उसी पत्तलमें खाना चाहती हो, तो मुझे दो, मैं उसे धो दूँ।"

कमलाने बहुत संक्षेपमें कहा,—"पागल हुए हो ?" इसके बाद ही वह फिर बोल उठी,—"मैंने पान नहीं लगाया, तुम पान लाये ही नहीं।"

रमेशने कहा,—नीचे पानवाला पान बेच रहा है।"

इस तरह बहुत ही सहजमें गृहस्थी हो गई। रमेश मन ही मन सोचमें पड़ गया। वह सोचने लगा, कि दाम्पत्यके भावको कैसे बचाया जाय।"

गृहिणीके पदपर अधिकार कर लेनेके लिये कमलाको बाहरी किसी प्रकारकी सहायता लेनेकी जरूरत नहीं दिखाई दी। उसने अपने मामाके घर रहनेके समय रसोई बनाई है, लड़का खेलाया है, घरका सब काम चलाया है। उसकी निपुणता, तत्परता और काममें उत्साह देख रमेश बहुत खुश हुआ—किन्तु उसीके साथ वह और बातें भी सोचने लगा, कि भविष्यमें इसके साथ कैसा वर्ताव किया जाय ? उसे कैसे पासमें रखूँ और दूर भी रखूँ। दोनोंके बीचमें रेखा कैसे खींची जाय। हम दोनोंके बीच यदि हेमनलिनी होती, तो सब काम बहुत

ही सुन्दरतासे हो जाता। किन्तु यदि उधरकी आशा छोड़ना ही पड़े, तो अकेली कमलाको लेकर सब समस्याओंकी मीमांसा कैसे होगी; इसे सोचना भी कठिन है। रमेशने सोचा कि असल बात कमलासे कह देना ही उचित है; जब वह छिपाये नहीं छिपती।

२४

अब भी दिन बहुत है; ऐसे समय स्टीमर रेतमें फँस गया। उस दिन बहुत खींचाखींची करनेपर भी स्टीमर तैर न सका। ऊँचे करारेके नीचे जलचर पक्षियोंके पैरसे अङ्कित एक तह बालूका निचला तट कुछ दूरतक फैला हुआ दिखाई दे रहा था। यहीं गाँवकी स्त्रियाँ उस समय दिनके आखिरी समयमें पानी ले जानेके लिये घड़े लेकर आ रही थीं। उनमें कोई-कोई चञ्चला बिना घूँघटकी ओटसे स्टीमरकी ओर देख-देखकर अपना कौतूहल मिटा रही थीं। ऊँची आवाज देनेवाले स्टीमरको विपद्में पड़े देख गाँवके लड़के करारेके ऊपर खड़े हो चिल्ला-चिल्लाकर स्टीमरको चिढ़ाने और नाचने लगे।

चिल्लाकर स्टीमरको चिढ़ाने और नाचने लगे।

उस पारकी जलशून्य रेतीमें सूर्य अस्त हुए। रमेश स्टीमरकी रेलिंग पकड़ सन्ध्याकी आभामें पश्चिमी दिगन्तकी ओर चुपचाप देख रहा था। कमला घेरा बांधी रसोईकी जगहसे निकल कमरेके दर्वाजेके पास खड़ी हो गई। रमेशको शीघ्र पीछेकी ओर मुँह फेरते न देख वह जरा मीठे स्वरमें खाँस दी। किन्तु इसका भी कोई नतीजा न निकला। तब वह चाबियोंके गुच्छेसे ठक-ठक करने लगी। जब आवाज तेज हुई, तब रमेशने पीछेकी ओर देखा। कमलाको देख, उसने उसके पास आकर कहा,—"यह बुलानेका कैसा कायदा है?"

कमलाने कहा,—"तब कैसे बुलाऊँ?"

रमेशने कहा,—"क्यों, मां-बापने मेरा नाम किसलिये रखा है—

क्या वह किसी व्यवहारमें आने लायक नहीं है ? जरूरत पड़नेपर मुझे रमेशबाबू कहकर बुलानेमें क्या हर्ज है ?"

फिर वही एक तरहकी दिल्लगी कमलाके कपोलों और कानोंपर सन्ध्याकी आभाके अलावा और एक लालीने साथ दिया—उसने गर्दन टेढ़ीकर कहा,—"तुम न जाने क्या-क्या बका करते हो, जिसका कोई ठिकाना नहीं। सुनो, तुम्हारा भोजन तैयार है, जरा जल्दी ही खालो। आज उस समय तुम अच्छी तरह खा नहीं सके।"

नदीकी हवासे रमेशको भूख जान पड़ती थी। उसने इसलिये कुछ नहीं कहा था, कि कमला तैयारी करनेमें घबरा न उठे। इस समय बिना मांगे भोजन मिलनेके सुखसे उसका हृदय हिल उठा—इसमें एक विचित्रता थी। केवल भूख मिटानेकी सम्भावनाका सुख नहीं—बल्कि उसके अनजानमें एककी चिन्ता जाग रही थी—एक प्रकारकी चेष्टा फैली हुई थी—उसके लिये एक कल्याणका विधान आप ही अपना काम कर रहा था; इस गौरवका अनुभव उसके हृदयमें हुए बिना नहीं रहा। किन्तु यह उसके लिये प्राप्य नहीं—इतनी बड़ी चीज़ केवल भ्रमके ऊपर प्रतिष्ठित थी इस चिन्ताके निठुर आघातसे भी वह बच न सका—वह शिर नीचाकर ठण्डी साँस लेता हुआ कमरेमें आया।

कमलाने उसके चेहरेका भाव देख आश्चर्यमें आकर कहा,—"तुम्हारी शायद खानेकी इच्छा नहीं है ? भूख नहीं लगी है ? मैं तुम्हें जबर्दस्ती खानेको कह रही हूँ।"

रमेशने चटपट प्रसन्नताका ढोंग करते हुए कहा,—"तुम्हें जबदस्ती करनेकी जरूरत ही क्या है ? मेरा पेट आप ही ज़ोर मार रहा है। इस समय तो खूब चाभी खटखटाकर तुमने बुला लिया, नहीं तो अन्तमें परोसनेके समय मानो दर्पहारी मधुसूदनके ही दर्शन होते।"

यह कह रमेशने कमरेमें इधर-उधर निगाह फेर फिर कहा,—खानेकी तो कोई चीज दिखाई नहीं दे रही है, बहुत भूख होनेपर भी

यह असबाब मेरे पेटमें हजम न हो सकेगा—क्योंकि बचपनसे मुझे और ही कुछ खानेका अभ्यास है।" यह कहते रमेशने सब असबाबोंकी ओर उंगली घुमाई।

कमला खिलखिलाकर हँस पड़ी। हँसीका वेग रुकनेपर उसने कहा,—"जान पड़ता है, कि अब सब्र नहीं है? जब आकाशकी ओर देख रहे थे, तब शायद भूख-प्यास नहीं थी। फिर जैसे ही मैंने बुलाया, वैसे ही जान पड़ा मानो बड़ी भूख लगी हुई है! अच्छा, तुम एक मिनट बैठो, मैं अभी लिये आती हूँ।"

रमेशने कहा,—"लेकिन देर होनेसे यह बिछौना वगैरह कुछ भी तुम्हारे देखनेमें न आयेगा—तब मेरा दोष न देना।"

रसिकताके इस तरह दोहराये जानेसे कमलाको बहुत ही प्रसन्नता हुई। उसे फिर जोरसे हँसी आ गई। सरल हँसीकी लहरीसे घरको सुधामय बना कमला तेजीके साथ खाना लेने चली गई। रमेशकी सूखे काठ जैसी प्रफुल्लताकी बनावटी दीप्ति क्षणभरमें कालिमामें व्याप्त हुई।

शालके पत्तेसे ढँकी एक चंगेरी लेकर शीघ्र ही कमला कमरेमें आई। बिछौनेके ऊपर चंगेरी रख उसने अपने आँचलसे जमीनको झाड़ दिया।

रमेशने चौंककर कहा,—"यह क्या करती हो?"

कमलाने कहा,—"मैं तो अभी कपड़े बदलूंगी।"—कहकर उसने शालके पत्तलपर पूरी और तरकारी बहुत ही निपुणताके साथ परोस दिया।

रमेशने कहा,—"बड़े आश्चर्यकी बात है। यह पूरियोंका इन्तजाम कैसे कर लिया?"

कमलाने सहज ही रहस्य न खोल बहुत गम्भीर मुँह बनाकर कहा,—भला कैसे किया, बताओ तो सही!"

रमेशने बहुत सोच-समझकर कहनेका ढोंग रच कहा,—"जरूर तुमने खलासियोंके जलपानमें अपना हिस्सा-बाँट भी लगाया है।"

कमलाने खूब चिढ़कर कहा—"कभी नहीं; राम-राम!"

रमेशने खाते-खाते पूरियोंके आदि कारणके सम्बन्धमें कितने ही प्रकारकी असम्भव कल्पनाएँकर कमलाको चिढ़ा दिया। जब उसने कहा कि अलिफ लैलाके चिरागवाले अलादीनने बलूचिस्तानसे गरमा-गरम पकौड़ियाँ निकालकर अपने दैत्यके हाथ सौगात भेजा होगा, तब कमला किसी तरह भी धीरज रख न सकी; उसने मुँह फेरकर कहा—"तो फिर जाओ, मैं बोलूँगी ही नहीं।"

रमेशने घबराकर कहा—"नहीं-नहीं, मैं हारा। यह बीच नदीमें पूरियाँ—यह कैसे सम्भव हो सकता है; मेरी समझमें कुछ आ ही नहीं रहा है। फिर भी खानेमें बड़े स्वादकी हुई हैं।"

यह कह रमेश बातके निर्णयका आसरा न देख पेट भरनेकी श्रेष्ठताको साबित करता हुआ खाने लगा।

स्टीमरके रेतीमें फँस जानेपर सूने भण्डारको भरनेकी इच्छासे कमलाने उमेशको गाँवमें भेजा था। स्कूलमें रहनेके समय जलपानके लिये रमेशने कमलाको जो रुपये दिये थे, उसमेंसे कुछ बच रहे थे, उन्हींको खर्चकर उसने थोड़ासा घी मैदा मँगा लिया था। कमलाने उमेशसे पूछा—"बता, तू क्या खायगा?"

उमेशने कहा—"माजी, अगर तुम राजी हो, तो गाँवमें अहीरके घर बहुत ही सरस दही देख आया हूँ—केला तो घरमें है ही, दो-एक पैसेका दाना-चबेना लेनेसे ही इस समयका फलाहार हो जायगा"

लोभी बालकके फलाहारके उत्साहसे कमला भी उत्साहित हो उठी—उसने कहा—"कुछ पैसे बचे हैं उमेश?"

उमेशने कहा—"नहीं माजी"

कमला मुश्किलमें पड़ी। रमेशसे कैसे मुँह खोलकर रुपये माँगे,

इसी चिन्तामें पड़ गई। कुछ ठहरकर उसने कहा—"अगर आज तेरे भाग्यमें फलाहार न बदा हो, तो पूरियाँ हैं—इसके लिये कोई चिन्ता नहीं। चल, मैदा गूँध दे।"

उमेशने कहा—"क्या कहूँ मा, जो दही देख आया हूँ, आहा !"

कमलाने कहा—"देख उमेश, बाबू जब खाने बैठें, तब तू आकर बाजारके लिये पैसे माँगना।"

रमेशका भोजन कुछ समाप्त हो चलनेपर उमेश उनके सामने खड़ा हो सङ्कोचसे सिर खुजलाने लगा। रमेशने उसके मुँहकी ओर देखा। उसने आधी जुबान कहा—"मा, बाजारके लिये पैसा—"

तब रमेशको एकाएक याद आया, कि भोजनकी तैयारीके लिये रुपयेकी जरूरत पड़ती है; अलादीनके चिरागके आसरे काम नहीं चलता। उसने व्यस्त हो कहा—"कमला, तुम्हारे पास तो रुपये हैं नहीं। मुझे तुमने याद क्यों न दिला दी।"

कमलाने चुपचाप अपना कुसूर मान लिया। भोजनके बाद रमेशने कमलाको एक छोटा मनीबेग देकर कहा—'खर्चके अनुसार इसमें पूरा धनरत्न है।"

इस तरह गृहस्थीका सारा भार आप ही आप कमलाके हाथ आने लगा। रमेश फिर एकबार स्टीमरकी रेलिंग पकड़ पश्चिम ओर देखने लगा। पश्चिम आकाशकी ओर देखते-देखते उसकी आँखोंके सामने अन्धकार फैल गया।

उमेशने आज पेट भर चिउड़ा-दही-केला मलकर फलाहार किया। कमलाने सामने खड़ी हो उसके जीवन-वृतान्तको विस्तारके साथ सुना।

विमाताके शासनसे घरसे उपेक्षित उमेश काशीमें अपनी नानीके यहाँ भागा जा रहा था—उसने कहा—"मा जी, अगर तुम अपने ही पास रखो, तो मैं कहीं न जाऊँगा।"

माता-विहीन बालकके मुँहसे मा शब्द सुन बालिकाके कोमल हृदयके किसी एक गम्भीर हिस्सेसे जननीका स्वर बज उठा—कमलाने मीठे स्वरमें कहा—"अच्छी बात है उमेश, तू हम लोगोंके साथ ही रह।"

———

२५

किनारेकी वनराजिकी कालिमाने सन्ध्या-वधूके सुनहरे अंचलमें काला किनारा खींच दिया है। गाँवोंकी मादमें सारे दिन रहकर जङ्गली हंसोंका दल आकाशके मलिन सूर्यास्तकी आभामें उस पारके वृक्षशून्य बालूकी रेतीके गड्ढोंके जलाशयमें रात बितानेके लिये चले। कौवोंके घोंसलेमें आनेका कलरव बन्द हुआ। उस समय नदीमें नावें नहीं थीं—सिर्फ एक बड़ी डोंगी गाढ़े सुनहरे-सब्ज स्थिर पानीके ऊपर अपनी कालिमाको साथ साथ लिये चुपचाप गोंनपर खिंची जा रही थी।

रमेश स्टीमरकी छतपर सामनेकी ओर उदय हुए तरुण चन्द्रकी चाँदनीमें बेतकी कुरसीपर बैठा हुआ था।

पश्चिम आकाशमें सन्ध्याकी आखिरी स्वर्णच्छटा लीन हो गई। चाँदकी चाँदनीके इन्द्रजालसे कठोर संसार मानो विगलित हो पड़ा। रमेश आप ही आप धीरे-धीरे कह उठा—"हेम, हेम!" उस नामका शब्द मानो सुमधुर स्पर्शके रूपमें उसके समूचे हृदयको बारबार घेर प्रदक्षिणा करने लगा—उसी नामके शब्दमात्र मानो असीम करुणाके रससे सिक्त छायामय दृष्टिके रूपमें उसके मुँहपर वेदनाको विकीर्ण कर देखने लगा। रमेशका सारा शरीर रोमांचित और दोनों आँखें आँसूसे तर हो गईं।

उसने गत दो वर्षके जीवनके सब इतिहासको उसके मनके सामने फैला दिया—हेमनलिनीके प्रथम परिचयका दिन उसे याद आया। उस

दिनको रमेश अपने जीवनके विशेष दिनके रूपमें पहचान नहीं सका। योगेन्द्र जब उसे अपने चायके टेबिलपर ले गया, उस समय वहाँ हेमनलिनीको बैठी देख लजालु रमेशने अपनेको बहुत असमंजसमें पाया था। धीरे-धीरे लज्जा दूर हुई, हेमनलिनीके साथ वह अभ्यस्त हो चला, क्रमसे उस अभ्यासके बन्धनने रमेशको बन्दी बना लिया। काव्य-साहित्यमें रमेशने प्रेमका विषय जो कुछ पढ़ा था, उन सबको वह हेमनलिनीसे मिलाने लगा। मैं प्रेम करता हूँ, यह समझकर उसने मन ही-मन अहंकारका अनुभव किया। उसके सहपाठी लोग परीक्षामें पास होनेके लिये प्रेमकी कविताके अर्थको जुबानी रटकर ही मर रहे थे, किन्तु रमेश सचमुच प्रेम करता है इसलिये अन्य छात्रोंको वह अपना कृपापात्र समझ रहा था। रमेशने आज विचारकर देखा, कि उस दिन भी वह प्रेमके दर्वाजेके बाहर ही था। किन्तु जब एकाएक कमलाने आकर उसके जीवनकी समस्याको जटिल बना डाला, तब अनेक प्रकारके विरुद्ध घात-प्रतिघातसे देखते देखते हेमनलिनीके प्रति उसका प्रेम आकार धारणकर जीवन ग्रहण करता हुआ जाग्रत हो उठा।

रमेश अपनी दोनों हथेलियोंके बीच शिर झुकाकर विचारमें डूब गया, कि सामने ही तो सारा जीवन पड़ा हुआ है—उसका भूखा उपवासी जीवन—दुश्छेद्य संकटके जालमें जकड़ा हुआ है। क्या इस जालको वह जबर्दस्ती दोनों हाथोंसे तोड़कर फेंक न सकेगा।

यह सोचकर उसने दृढ़ सङ्कल्पके आवेगमें एकाएक आँखें खोलकर देखा—समीप ही बेतकी दूसरी कुरसीकी पीठको पकड़े कमला खड़ी है। कमलाने चकित होकर कहा—"तुम सो गये थे, शायद मैंने आकर तुम्हें जगा दिया।"

पछताती हुई कमलाको जानेपर उद्यत देख रमेश शीघ्रतासे बोल उठा—"नहीं नहीं कमला, मैं सोया नहीं था—तुम बैठो, तुमसे एक कहानी कहूँ।"

कहानीका नाम सुन कमला प्रसन्न होकर कुर्सी खींच बैठ गई। रमेशने ठीक किया था, कि कमलासे सब बातें खोलकर कह देनेकी जरूरत है। किन्तु उसे वह एकाएक बड़ी चोट दे न सका। इसीसे उसने कहा, कि बैठो तुम्हें एक कहानी सुनाऊँ।

रमेशने कहा--"उस जमानेमें एक जातिके क्षत्रिय थे—वे लोग—"

कमला पूछ बैठी—"किस जमानेमें? बहुत बीते जमानेसे भी पहले?"

रमेशने कहा—"हाँ, बहुत दिन पहले। तब तुम्हारा जन्म भी नहीं था।"

कमला—शायद तुम्हारा जन्म हो गया था। तुम बहुत दिनके आदमी हो! अच्छा आगे कहो।

रमेश—उन क्षत्रियोंका नियम था, कि वे स्वयं विवाह करने न जाते, अपनी तलवार भेज देते थे। उस तलवारके साथ बहूका विवाह हो जाने पर उसे अपने घर लाकर फिर विवाह करते थे।

कमला—ऐसा न! छिः, यह कैसा विवाह!

रमेश—मैं भी ऐसे विवाहको पसन्द नहीं करता, किन्तु क्या करूँ—जिन क्षत्रियोंकी बात कह रहा हूँ, वे ससुरके घर जाकर विवाह करनेमें अपना अपमान समझते थे। मैं जिस राजाकी कहानी कह रहा हूँ, वह उसी जातिका क्षत्रिय था। एक दिन वह—

कमला—तुमने यह नहीं कहा, कि कहाँका राजा।

रमेश बोल उठा—"मद्रदेशका राजा एक दिन वह राजा—

कमला—पहले राजाका नाम तो कहो!"

कमला सब बातोंको साफ कर लेना चाहती है। उसके आगे कुछ छिपानेसे चल नहीं सकता। अगर रमेश यह जानता, तो पहलेसे और तैयार हो लिया होता। अब वह समझ गया, कि कमलाको कहानी

सुननेका आग्रह है, किन्तु उसके लिये उसमें कहींसे फर्क पड़ना असह्य है।

रमेशने इस एकाएकके प्रश्नसे कुछ ठहरकर कहा,—"राजाका नाम रणजित् सिंह।"

कमलाने एक बार फिर दोहरा लिया,—"मद्रदेशका राजा, रणजित सिंह। इसके बाद ?"

रमेश—इसके बाद एक दिन राजाने भाटके मुँहसे सुना कि उसकी ही जातिके एक राजाके परमासुन्दरी कन्या है।

कमला—वह कहाँका राजा था ?

रमेश—समझ लो, कि काँचीका।

कमला—समझ क्या लूँ। तो क्या सचमुच वह काँचीका राजा नहीं था ?

रमेश—काँचीका ही राजा था, उसका नाम सुनना चाहती हो ? अमरसिंह।

कमला—और उस लड़कीका नाम नहीं कहा ? वही परमासुन्दरी कन्या !

रमेश—हाँ-हाँ भूल हो गई। उस लड़कीका नाम था चन्द्रा—

कमला—आश्चर्य है। तुम ऐसे ही भूलते हो ! तुम तो मेरा ही नाम भूल गये थे ?

रमेश—कोशलके राजाने भाटके मुँहसे यह सुन—

कमला—यह कोशलके राजा कहाँसे कूद पड़े। तुम तो मद्रदेशका राजा कह रहे थे न ?

रमेश—तो क्या तुम समझती हो, कि वह एक ही जगहका राजा था ? वह कोशलका भी राजा था और मद्रदेशका भी राजा था।

कमला—दोनों राज्य शायद पास ही पास हैं ?

रमेश—बिलकुल सटे हुए।

इस प्रकार बार-बार भूल करते हुए और सतर्क कमलाके प्रश्नकी सहायतासे इन भूलोंका किसी तरह संशोधन करते हुए रमेश इस प्रकार एक कहानी सुना गया—

"मद्रराज रणजित्सिंहने काँचीके राजाके पास राजकन्याके विवाह-का प्रस्ताव लेकर दूत भेज दिया। काँचीके राजा अमरसिंह खुशी-खुशी राजी हो गये।

'तब रणजित् सिंहने अपने छोटे भाई इन्द्रजित्सिंहको सैन्य-सामन्तके साथ निशान उड़ाते गाड़ा-नगाड़ा और दुन्दुभी-दमामा बजाते काँजीके राजाके बगीचेमें जाकर तम्बू लगा दिया। काँची नगरीमें उत्सवकी धूप मच गई।

"राजाके ज्योतिषियोंने गणना कर शुभ दिन और क्षण स्थिर कर दिया। कृष्णाद्वादशी तिथिमें रात ढाई पहरके बाद लग्न है। रातमें नगरके घर-घर फूलोंकी मालाएँ लटकाई गईं और दीवाली जगमगा उठी। आज रातमें राजकुमारी चन्द्राका विवाह है।"

"किन्तु राजकुमारी चन्द्राको यह खबर नहीं, कि किसके साथ उसका विवाह है। उसके जन्मके समय परमहंस परमानन्द स्वामीने राजासे कहा था, कि तुम्हारी इस कन्यापर अशुभ ग्रहोंकी दृष्टि है, विवाहके समय किसी तरह कन्या अपने पतिका नाम न जानने पाये।"

"यथा समय तलवारके साथ राजकन्याका गठ-बन्धन हो गया। इन्द्रजित्सिंहने दहेज सामने रख अपनी भौजाईको प्रणाम किया। मद्रराज्यके रणजित् और इन्द्रजित् दोनों ही दूसरे राम लक्ष्मण थे। इन्द्रजित्ने आर्या चन्द्राके घूंघटकी ओटमें उसके लज्जारुण मुँहकी ओर नहीं देखा—उन्होंने केवल उनके नूपुर पहने सुकुमार चरणोंकी महावर-देखा भर देखी।"

"रीतिके मुताबिक विवाहके दूसरे दिन मोतियोंकी माला और झालर लटकी पालकीपर बहूको ले इन्द्रजित् अपने देशकी ओर चले।

अशुभ ग्रहकी याद आ जानेसे शङ्कित-हृदय काँचीराजने कन्याके माथ-पर दाहना हाथ रख आशीर्वाद दिया। माता कन्याका मुँह चूम-चूम आँसुओंकी धारा रोक न सकी—देव-मन्दिरमें हजारों ग्रह-पण्डित स्वस्ति-वाचनमें नियुक्त हुए।"

"काँचीसे मद्र बहुत दूर—प्रायः एक महीनेकी राह है। दूसरी रातको जब बतसा नदीके किनारे छावनी डाल इन्द्रजित् दलबलके साथ विश्राम करनेकी तैयारी कर रहे थे, तब वनके भीतर कुछ मशालोंकी रोशनी दिखाई दी। समाचार जाननेके लिये इन्द्रजित्ने सैन्यके आद-मियोंको भेजा।"

"सैनिकने आकर कहा, कि 'कुमार, यह भी एक विवाहकी बारात है। यह भी हमारी ही जातिके क्षत्रिय हैं—अस्त्र-विवाहकी रस्म पूरी कर बहूको पतिके घर ले जा रहे हैं। राहमें अनेक विघ्नोंका भय है; इससे ये लोग कुमारसे शरणकी प्रार्थना कहते हैं—आज्ञा होगी, तो कुछ दूरतक ये लोग हमारे आश्रयमें यात्रा करेंगे।"

"कुमार इन्द्रजित्ने कहा,—'शरणमें आयेको आश्रय देना हमारा धर्म है। यत्नके साथ इन लोगोंकी रक्षा करो।"

"इस तरह दोनों छावनी एक साथ पड़ गई।"

"तीसरी रात अमावस्या थी। सामने छोटे-छोटे पहाड़ और पीछे जंगल। थके हुए सिपाही झिल्लीकी झनकार और समीपके झरनेकी कलध्वनिमें गहरी नींद लेने लगे।"

"इसी समय एकाएक कोलाहल सुन सब लोगोंने जाकर देखा, कि मद्र-छावनीके घोड़े पागलकी तरह इधर-उधर दौड़ रहे हैं—किसीने उनकी रस्सी काट दी—बीच-बीचके किसी तम्बूमें आग लगी हुई है। उसकी रोशनीसे अमावसकी रात लाल हो उठी है।"

"समझ में आया कि डाकुओंने आक्रमण किया है। मार-काट होने लगी—अन्धकारमें शत्रु-मित्रका पहचानना कठिन हो गया। सब प्रबन्ध

बिगड़ गया। इस सुयोगमें डाकू लूट-पाटकर जंगल-पहाड़ोंमें गायब हो गये।

"युद्धके बाद राजकुमारी दिखाई न दी। वह मारे भयके अपनी छावनीसे बाहर निकल गई थी और एक दल आदमियोंको भागते देख अपने दलका आदमी समझ वह उन्हींके साथ मिल गई।

'वह दल, दूसरे विवाहवालोंका था। इस झमेलेमें डाकू लोग उनकी पुत्रवधूको हरणकर ले गये थे। राजकन्या चन्द्राको वे लोग अपनी बहू समझ तेजीसे कदम बढ़ाते अपने देशकी ओर चल पड़े।

"वह सब दरिद्र क्षत्रिय थे, कलिङ्गमें समुद्रके किनारे इन लोगोंका निवास था। वहाँ राजकन्याके साथ दूसरी ओरके वर का मिलन हुआ। वरका नाम चेतसिंह था।

"चेतसिंहकी माने आकर बहूको वरण किया; वह बहूको घरमें ले गई। अपने सगे सम्बन्धी सभीने कहा कि 'अहा! ऐसा रूप तो देखनेमें नहीं आता।'

"मुग्ध चेतसिंह नई बहूको घरकी कल्याणलक्ष्मी समझ मन-ही-मन उसकी पूजा करने लगे। राजकन्या भी सतीधर्मकी मर्यादा जानती थीं, उन्होंने चेतसिंहको अपना पति समझ उसके लिये मन-ही-मन अपने जीवनको न्योछावर कर दिया।

"नये-विवाहकी लज्जा करते कुछ दिन लगे। जब लज्जा दूर हुई, तब बातों-ही-बातों चेतसिंहको मालूम हुआ कि जिसे वह बहू समझकर घर ले आया है, वह तो राजकुमारी चन्द्रा है।"

———

२६

कमलाने साँस रोक बहुत ही आग्रहके साथ पूछा,—"इसके आगे ?"

रमेशने कहा,—"बस, मैं यहींतक जानता हूँ, इसके आगे नहीं जानता; तुम्हीं बताओ, आगे क्या है ?"

कमला—नहीं-नहीं, यह न होगा, इसके आगे क्या हुआ, वह मुझसे कहो।

रमेश—मैं सच कहता हूँ, जिस किताबमें मैंने यह कहानी पाई है, वह अभी पूरी तरहसे प्रकाशित नहीं हुई—मालूम नहीं, कि आखिरी अध्याय कब समाप्त होगा ?"

कमलाने बहुत क्रोधकर कहा,—"जाओ, तुम बड़े पाजी हो। यह तुम्हारा बड़ा अन्याय है।"

रमेश—तुम उनपर नाराज हो, जो किताब लिख रहे हैं। तुमसे मैं केवल इतना ही पूछता हूँ, कि चन्द्राके साथ चेतसिंह अब कैसा व्यवहार करेगा ?"

कमला नदीकी ओर देखकर कुछ सोचने लगी—बहुत देर बाद उसने कहा,—"मैं नहीं जानती, कि वह कैसा व्यवहार करेगा—मेरी समझमें तो कुछ आता ही नहीं।"

रमेशने कुछ देर चुप रहकर कहा,—"क्या चेतसिंह चन्द्रासे सब बातें खोलकर कहेगा ?"

कमलाने कहा,—तुम ठीक तरहसे कहानी न कहकर जान पड़ता है, सब गोलमाल कर रखोगे। "यह तो बहुत ही बुरा जान पड़ता है। सब बातें साफ साफ होनी चाहिये।"

रमेशने हाँ में हाँ मिलाकर कहा,—"यह तो होना ही चाहिये।"

कुछ देर ठहरकर फिर रमेशने कहा,—"अच्छा कमला, यदि—"

कमला—यदि क्या ?"

रमेश—समझ लो, कि मैं यदि सचमुच चेतसिंह होऊँ और तुम यदि चन्द्रा हो—"

कमला बोल बैठी,—"तुम ऐसी बात मुझसे न कहो; सच कहती हूँ, मुझे यह अच्छा नहीं लगता।"

रमेश—नहीं, तुम्हें कुछ कहना ही पड़ेगा—यदि ऐसा हो, तो तुम्हारा क्या कर्त्तव्य है और मेरा क्या कर्तव्य है ?

कमला इस बातका कोई जवाब न दे कुर्सी छोड़कर तेजीके साथ चली गई। उसने देखा, कि उमेश कमरेमें बैठकर चुपचाप नदीकी ओर देख रहा है। उसने पूछा,—"उमेश, तूने कभी भूत देखा है ?"

उमेशने कहा,—"देखा है मा।"

यह सुनते ही कमला समीप ही रखे बेंतके एक मोढ़ेको खींच उसपर बैठ गई और तब उसने कहा,—"कैसे भूत देखा था, बता।"

कमलाके नाराज हो चली जानेपर रमेशने उसे फिर नहीं बुलाया। चन्द्रमाका टुकड़ा उसकी आँखोंके सामने घने बाँसके जंगलकी ओटमें अदृश्य हो गया। डेकके ऊपरकी रोशनी बुझाकर खलासी लोग स्टीमरके नीचेके तलेमें भोजन और विश्रामके लिये चले गये थे। पहले और दूसरे दर्जेमें कोई यात्री नहीं था। तीसरी श्रेणीके अधिकांश यात्री भोजनादि बनानेके लिये पानी थहा कर रेतीमें उतर गये थे। किनारे अन्धकार पूर्ण झाड़ी-झंखाड़ोंके बीच ही समीपके बाजारकी रोशनी दिखाई दे रही थी। भरी हुई नदी तेज धारासे लङ्गरके लोहेके सीकड़को झनकारती हुई बही चली जा रही थी और रह रहकर गङ्गाकी सफेद धारासे स्टीमरको कम्पित कर रही थी।

इस अनजान गहराई, इस अन्धकारके पुंज, इस अपरिचित दृश्यकी प्रकाण्ड अपूर्वताके बीच निमग्न हो रमेशने अपने कर्त्तव्यकी समस्याको प्रकट करनेकी चेष्टा की। रमेश समझ गया, कि हेमनलिनी या कमलामें किसी एकको विसर्जन करना ही पड़ेगा। बीचमें दोनों ही की रक्षा करते

हुए चले चलनेका कोई उपाय नहीं है। फिर भी हेमनलिनीको आश्रय है,—अब भी हेमनलिनी रमेशको भूल सकती है, वह और किसीसे विवाह कर ले सकती है, किन्तु कमलाका त्याग करनेसे इस जीवनमें उसके लिये और कोई उपाय नहीं।

मनुष्यके स्वार्थका कोई अन्त नहीं। हेमनलिनी रमेशको भूल सकती सकती है, उसकी रक्षाका उपाय है—रमेशके सम्बन्धमें उसके लिये अनन्यगति नहीं है, इससे रमेशको कुछ भी धीरज नहीं हुआ, बल्कि उसके आग्रहकी अधीरता और दूनी हो गई। उसे जान पड़ा मानो हेमनलिनी अभी उसके सामनेसे हटकर सदाके लिये बेकाबू हो जा रही है; अब भी मानो उसे हाथ बढ़ाकर पकड़ा जा सकता है।

दोनों हथेलियोंपर वह अपना मुँह रखकर सोचने लगा। कुछ दूरपर शियाल बोला; गाँवके दो-चार असहिष्णु कुत्ते भौंक पड़े। तब रमेशने हथेलीपरसे मुँह उठाकर देखा, कमला जनशून्य अन्धकारमें डेककी रेलिंग पकड़कर खड़ी है। रमेशने कुरसीसे उठ उसके पास जाकर कहा,—"कमला, तुम अभी सोना नहीं चाहतीं? रात तो कम नहीं है।"

कमलाने कहा,—"तुम सोने न जाओगे?"

रमेशने कहा,—मैं अभी जाऊँगा, पूर्वके कमरेमें मेरा बिछौना हो गया है। तुम अब देर न करो।"

कमला और कुछ न कहकर धीरे-धीरे अपने कमरेमें चली गई। वह रमेशसे कह न सकी, कि उसने कुछ ही देर पहले भूतकी कहानी सुनी है और उसका कमरा अकेला है।

कमलाको अनिच्छासे धीरे-धीरे पैर बढ़ाते देख रमेशके हृदयमें कुछ चोट पहुँची; उसने कहा,—"डरो नहीं कमला—तुम्हारे कमरेके पास ही मेरा कमरा है; मैं बीचका दर्वाजा खोल दूँगा।"

कमलाने हिम्मत के साथ अपने शिरको ऊँचाकर कहा,—"मैं डरूँ किस लिये ?"

रमेश अपने कमरेमें जा बत्ती बुझाकर सो रहा। उसने मन-ही-मन कहा,—"कमलाको परित्याग करनेकी कोई राह दिखाई नहीं देती। अतएव हेमनलिनीको बिदा करूँ। आज यही ठीक हुआ, अब दुविधामें रहना ठीक नहीं।"

रमेश अन्धकारमें लेटकर यह अनुभव करने लगा कि हेमनलिनीको बिदा करनेमें जीवनकी बहुतेरी बातोंको बिदा करनी पड़ेगी। रमेश अब बिछौनेपर चुपचाप पड़ा न रह सका-उठकर बाहर आया—रातके अन्धकारमें एकबार उसे ऐसा जान पड़ा, कि उसकी लज्जा और उसकी वेदना अनन्त देश और अनन्त कालको आवृत किये हुए नहीं है। आकाशमें छाये हुए सदा जगमगानेवाले तारे स्तब्ध हैं - रमेश और हेमनलिनीका छोटासा इतिहास उन्हें स्पर्श भी नहीं कर रहा है—यह आश्विनकी नदी अपने निर्जन बालुकातट और फूले हुए कासके वनके नीचे इन तारोंसे झिलमिलाती रातमें सोये हुए ग्रामवासियोंके वनकी छायामें बहती चली जा रही है। इस समय रमेशके जीवनका सब धिक्कार श्मशानके भस्मकी चिरधैर्यमयी धरणीमें मिलकर सदाके लिये नीरव हो गया है।

२७

दूसरे दिन कमला जब नींदसे जागी उस समय सवेरेकी अँधेरी थी। चारों ओर देखा, कमरेमें कोई नहीं। याद आया कि वह स्टीमरमें है। धीरे-धीरे उठकर दर्वाजेकी फाँकसे देखा, कि निस्तब्ध जलके ऊपर सूक्ष्म और सफेद कुहरा छाया हुआ है—अन्धकारमें पीलापन आ गया है और पूर्व ओर वृक्षोंकी श्रेणीके पीछे आकाशमें सुनहरी छटा

छहरा रही है। देखते-देखते नदीकी पीली और नीली धारामें मछुओंकी डोंगियाँ सफेद-सफेद पाल ताने फैल पड़ीं।

कमला किसी तरह समझ न सकी, कि उसके मनमें कौन सी एक गूढ़ वेदना पीड़ा दे रही है। शरत्कालके शिशिरके वाष्पका अम्बर धारण किये हुई ऊषा आज अपनी आनन्दमूर्तिका दर्शन क्यों नहीं दे रही है। न जाने क्यों अश्रुजलका आवेग बालिकाकी छातीके भीतरसे गलेसे होती हुई आंखोंमें बारबार आकुल हो उठती है। उसके ससुर नहीं, सास नहीं, सहेली नहीं, स्वजन-सम्बन्धी कोई नहीं; यह बात कल तो उसके मनमें नहीं उठी, इस बीचमें क्या हो गया, जिससे आज उसके मनमें आ रहा है, कि अकेले रमेशका भरोसा नहीं? मनमें ऐसा क्यों हो रहा है, यह विश्वभुवन बहुत बड़ा है और यह बालिका बहुत छोटी।

कमला बहुत देरतक दर्वाजा पकड़े चुपचाप खड़ी रही। नदीका जल-प्रवाह सोनके पानीकी तरह चमकने लगा। इस समय खलासी अपने काममें लग गये हैं; इञ्जनने धकधकाना आरम्भ कर दिया है—लङ्गर उठा और जहाज ठेलनेके शब्दसे कुसमय जागे हुए बालकोंका दल नदी किनारेकी ओर दौड़ आया।

ऐसे समय रमेश इस गड़बड़से जागकर कमलाकी खबर लेनेके लिये उसके दर्वाजेके सामने आया। कमलाने चौंककर साड़ी ठीक होनेपर भी उसे और खींचकर मानो अपनेको विशेषरूपसे छिपानेकी चेष्टा की।

रमेशने कहा—"कमला तुम मुँह-हाथ धो चुकी हो?"

इस प्रश्नसे कमलाके क्रोधका क्या कारण है, यह उससे यदि पूछा जाय, तो वह कुछ भी बोल नहीं सकती। किन्तु उसे एकाएक क्रोध आ गया। उसने दूसरी ओर मुँह फेर केवल शिर हिला दिया।

रमेशने कहा—"दिन चढ़नेपर लोग जाग जायेंगे—इसी समय तैयार हो क्यों नहीं लेतीं।"

कमला इस बातका कोई जवाब न दे एक चुनी हुई साड़ी और अँगोछा और एक कुरतीको कुरसीसे उठाकर तेजीके साथ रमेशकी बगलसे नहानेकी कोठरीमें चली गई।

रमेश जो सवेरे-सवेरे उठकर कमलाका इस प्रकार आदर करने आया, वह कमलाके लिये बहुत अनावश्यक जान पड़ा। यह बात नहीं; उसने मानो उसका अपमान किया। कमला एकाएक इस बातको समझ गई है, कि रमेशके सम्बन्धकी सीमा केवल दूर-दूरकी है, वह एक जगह आकर रुक जाती है। ससुरालमें किसी बड़ेने उसे लज्जा करना नहीं सिखाया—माथेपर किस हालतमें घूँघटका परिमाण कितना होना चाहिये, इसका अभ्यास भी उसे नहीं हुआ। लेकिन आज रमेशके सामने आते ही क्यों अकारण उसकी छाती लज्जासे संकुचित होने लगी?

स्नान करके कमला जब अपने कमरेमें आई, तब दिनका काम उसके सामने आया। लटकते हुए आँचलसे चाबीका गुच्छा ले उसने कपड़ेका बैग खोला, उसमें एक छोटासा मनीबेग दिखाई दिया। इस मनीबेगको पाकर कमलाने कल एक नया गौरव प्राप्त किया था। उसके हाथमें एक स्वाधीन शक्ति आ गई थी। उसने बड़े यत्नसे मनीबेगको अपने कपड़ेके ट्रङ्कमें चाबी बन्द करके रखा था। आज कमला उस मनीबेगको हाथमें लेकर प्रसन्न नहीं हुई। आज उसे यह मनीबेग अपना नहीं जान पड़ा—यह रमेशका ही है। इस मनीबेगमें कमलाकी पूर्ण स्वाधीनता नहीं। इसलिये यह मनीबेग कमलाके लिये एक भारमात्र है।

रमेशने कमरेमें जाकर कहा—"चुपचाप बैठकर खुले बक्समें कौनसा आनन्द ले रही हो?"

कमलाने मनीबेग उठाकर कहा—"यह अपना मनीबेग लो।"

रमेशने कहा—' उसे मैं लेकर क्या करूँगा ?"

कमलाने कहा—"तुम्हें जिस चीजकी जरूरत हो, उसे समझकर मँगा दो।"

रमेश—शायद तुम्हें कोई जरूरत नहीं है ?

कमलाने कुछ गर्दन टेढ़ीकर कहा—"रुपयेकी मुझे क्या जरूरत ?"

रमेशने हँसकर कहा—"इतनी बड़ी बात कितने आदमी हैं, जो कह सकते हैं। जो हो, जो तुम्हारे लिये इतने अनादरकी चीज है, उसे ही क्या दूसरेको देना चाहिये ? मैं उसे क्यों लूँ ?"

कमलाने कोई जवाब न दे जमीनमें मनीबेग रख दिया।

रमेशने कहा—"अच्छा कमला सच कहो, मैंने जो अपनी कहानी समाप्त नहीं की, उससे तुम मुझपर खफा हो गई हो ?"

कमलाने शिर नीचाकर कहा—"खफा कौन होता है ?"

रमेश—खफा नहीं हुई हो, तो इस मनीबेगको रखो। तब समझूँगा, कि तुम्हारी बात सच है।

कमला—क्रोध न करने हीसे क्या मनीबेग रखना पड़ेगा ? अपनी चीज तुम रखते क्यों नहीं।

रमेश—वह मेरी चीज तो है नहीं—दी हुई चीज लेकर क्या मरने पर ब्रह्मदैत्य होऊँ। शायद मुझे इसका डर नहीं है।

रमेशके ब्रह्मदैत्य होनेकी आशङ्कासे कमलाको एकाएक हँसी आ गई। उसने हँसते-हँसते कहा—"कभी नहीं यह तो मैंने कभी नहीं सुना, कि दी हुई चीज वापस लेनेसे ब्रह्मदैत्य होना पड़ता है।"

इस अकस्मातकी हँसीसे सन्देहका सूत्रपात हुआ। रमेशने कहा—दूसरेके मुँहसे कैसे सुन सकोगी ? अगर कभी किसी ब्रह्मदैत्यसे मुलाकात हो, तो उससे पूछनेपर सच-झूठका पता लगेगा।"

कमलाने एकाएक कौतूहलमें आकर पूछा--"अच्छा हँसी नहीं--तुमने कभी सचमुचके ब्रह्मदैत्यको देखा है ?"

रमेशने कहा,—सचमुचका नहीं, लेकिन ऐसे मैंने अनेक ब्रह्मदैत्यों-को देखा है। बिलकुल सच्ची चीज संसारमें दुर्लभ है।"

कमला—क्यों, उमेश तो कहता था—

रमेश—उमेश ? उमेश कौन है ?

कमला—वाह, यही लड़का जो हमलोगोंके साथ जा रहा है, उसने खुद ब्रह्मदैत्य देखा है।

रमेश—यह बात मुझे स्वीकार करनी ही पड़ेगी, कि इन सब बातों-में मैं उमेशकी बराबरीका नहीं हूँ।

इस बीच बड़ी मेहनतसे खलासियोंके दलने स्टीमरको तैराकर छोड़ दिया है। जहाज कुछ ही दूर गया होगा, ऐसे समय एक आदमी माथे पर दौरा लादे किनारे-किनारे दौड़ता हुआ हाथ उठाकर स्टीमर ठहरानेका अनुरोध करने लगा। कप्तानने उसकी घबराहटका खयाल नहीं किया। तब वह आदमी रमेशकी ओर देख "बाबू-बाबू" कहकर चिल्लाने लगा। रमेशने कहा,—"इस आदमीने मुझे स्टीमरका टिकेट बाबू समझ लिया है।" रमेशने उसे दोनों हाथके इशारेसे बताया, कि स्टीमर रोकनेकी क्षमता मुझमें नहीं है।

एकाएक कमला बोल उठी,—"यह तो उमेश है; नहीं-नहीं, उसे छोड़कर न जाओ—चढ़ा लो।"

रमेशने कहा,—मेरी बातपर वह स्टीमर क्यों रोकने लगा।

कमलाने कातरताके साथ कहा,—"नहीं, तुम रोकनेको कहो—तो सही—किनारा बहुत दूर नहीं।"

रमेशने कप्तानके पास जाकर उससे स्टीमर रोकनेका अनुरोध किया—उसने कहा,—बाबू, कम्पनीका नियम नहीं है।"

कमलाने बाहर निकलकर कहा,—"उसे छोड़कर मैं जा न सकूँगी—जरा रोको। वह हमारा उमेश है।"

तब रमेश नियम लङ्घन और आपत्ति-भञ्जनके सहज उपायको काममें लाया। पुरस्कारके धीरजसे कप्तान स्टीमर रोक और उमेशको चढ़ाकर उसपर बहुत नाराज होने लगा। उसका कुछ भी खयाल न कर वह कमलाके पैरोंके पास पहुँच ऐसा बैठा, मानो कुछ हुआ ही नहीं है; वह हँसने लगा।

तबतक कमलाके मनका क्षोभ मिटा न था। उसने कहा,—"हँस रहा है अगर वह स्टीमर न रोकता, तो तेरा क्या हाल होता?"

उमेशने उसका कोई जवाब न दे झोली खोल दी। एक गुच्छा कच्चा केला, कई तरहका शाक, कुम्हड़ेका फूल और बैगन बाहर निकल आया।

कमलाने पूछा,—"यह सब कहांसे ले आया?"

उमेशने उसके संग्रह करनेका जो इतिहास सुनाया, वह किसी तरह भी सन्तोषजनक नहीं था। कल बाजारसे दही लानेके समय वह गाँवमें किसीके छप्पर और किसीके खेतमें यह सब खानेकी चीज देख आया था। आज सवेरे स्टीमर छूटनेसे पहले किनारे उतर यथास्थानसे यह सब चीजें चुन ले आया था; उसने किसीसे कुछ पूछनेकी जरूरत नहीं देखी।

रमेशने बहुत नाराज होकर कहा,—"पराये खेतसे तू यह सब चोरी करके ले आया है?'

उमेशने कहा,—"चोरी क्यों करूँ। खेतमें बहुत था, मैं तो यह थोड़ा ही सा ले आया हूँ, इसमें हर्ज क्या है।"

रमेश—थोड़ा-सा लानेसे चोरी नहीं हुई? दरिद्र कहींका जा, यह सब यहांसे ले जा।

उमेशने करुणाके साथ एकबार कमलाके मुँहकी ओर देखकर कहा,—"मा, इसका हमारे देशमें पिड़िशाक कहते हैं, इसकी भजिया बहुत सरस होती है। और यह सब बेता शाक—

रमेशने दूने क्रोधसे कहा,—"ले जा अपने पिड़ि शाकको। नहीं तो मैं सब नदीके पानीमें फेंक दूँगा।"

अब क्या करे, यह सोचकर उसने कमलाके मुँहकी ओर देखा। कमलाने उसे ले जानेका इशारा किया। उस इशारेमें करुणाकी छिपी हुई प्रसन्नता देख उमेश शाक-सब्जी बटोर झोलेमें रखकर धीरे-धीरे ले गया।

रमेशने कहा,—"यह बहुत बड़ी बदमाशी है। इस लड़केको तुम सहारा न देना।"

रमेश चिट्ठियाँ लिखनेके लिये अपने कमरेमें चला गया। कमलाने गर्दन फेरकर देखा—सेकेण्ड क्लासके डेकके पास स्टीमरके हालकी तरफ, जहाँ रसाईकी जगह ठीक का गई थी, वहाँ उमेश चुपचाप बैठा है।

सेकेण्ट क्लासमें कोई यात्री नहीं था! कमलाने शिरसे कमरतक एक रैपर ओढ़ उमेशके पास जाकर पूछा,—"क्या वह सब फेंक दिया?"

उमेशने कहा,—"फेकूँ काहेको। उस घरमें मैंने सब रख दिया है।"

कमलाने नाराज होनेका बहाना कर कहा,—"लेकिन तूने बड़ी बदमाशी की। अब कभी ऐसा न करना, अगर स्टीमर चला जाता तब?

यह कह कोठरीके भीतर जा कमलाने कड़ी आवाजमें कहा,—"ला हँसुआ ले आ।'

उमेश हँसुआ ले आया। कमला शीघ्रताके साथ उमेशकी लाई हुई तरकारियाँ काटने लगी।

उमेशने कहा,—"माँ इन शाकोंके साथ राई बड़ा मजा देती है।"

कमलाने झिड़ककर कहा,—"तब पीस राई।"

इस तरह उमेशकी हिम्मत न बढ़ानेके ख्यालसे कमला इस होशियारीसे काम लेने लगी। उसने बहुत गम्भीर मुँह बनाकर उसके शाक, तरकारी और बैगन आदि काट डाले।

हाय, घरसे निकाले लड़केको सहारा न देनेसे कमलासे रहा कैसे जाता। शाक चुराना कितना खराब काम है, इसे कमला ठीक तरहसे समझी नहीं—किन्तु निराश्रय लड़केकी लालसा कितनी बड़ी है, उसे वह समझती है। कमलाको थोड़ा खुश करनेके लिये यह दरिद्री लड़का कलसे इन शाकोंको चुरानेकी कोशिशमें लगा था; जरा और देर होनेसे ही स्टीमरसे छूट जाता। इतनी करुणा कमलाको जरूर आई।

कमलाने कहा—"उमेश! तेरे लिये कलका दही कुछ रखा है, आज तुझे फिर दही खिलाऊँगी; लेकिन खबरदार, ऐसा काम अब कभी न करना।"

उमेशने बहुत दुःखित होकर कहा,—"माँ, तो तुमने कलका वह दही खाया ही नहीं?"

कमलाने कहा—"तेरी तरह मुझे दहीकी लालच नहीं है। किन्तु उमेश, सब कुछ तो हुआ, मछलीका क्या होगा? बिना मछलीके बाबू कैसे खायेंगे।"

उमेश—मछलीका इन्तजाम हो सकता है माँ, किन्तु बिना पैसाके कैसे होगा।"

कमला फिर शासन करने लगी। उसने अपनी सुन्दर भौंहोंको टेढ़ी करनेकी चेष्टाकर कहा—"तेरे जैसा बेवकूफ मैंने नहीं देखा। मैंने तुझे कब बिना पैसे चीजें लानेको कहा है?"

कलसे उमेशके मनमें न जाने कैसा खयाल जम गया है, कि कमला रमेशसे पैसा लेनेमें हिचकती है। इसके अलावा रमेशको यह सब अच्छा भी नहीं लगता। इसीसे रमेशका आसरा छोड़ केवल वह और कमला, दोनों निरुपाय मिलकर किस उपायसे गृहस्थी चला सकते हैं; इसके

कुछ उपाय उसने मन-ही मन सोच रखा था। शाक, बैगन और कच्चे केलेके लिये तो वह निश्चिन्त हो चुका था, लेकिन मछलीके लिये अभी-तक उसे कोई युक्ति नहीं सूझी। संसारमें निःस्वार्थ भक्तिके बलसे मामूली दही और मछली जुटाई नहीं जा सकती; इन सबके लिये पैसा चाहिये—इसलिये कमलाके इस अकिञ्चन भक्त बालकके लिये संसार सहज स्थान नहीं।

उमेशने कुछ कातर होकर कहा—"मा, अगर बाबूसे कहकर किसी तरह पाँच पैसेका ठिकाना कर सको, तो मैं एक बड़ी सी रोहू मछली ला सकता हूँ।"

कमलाने घबराकर कहा—नहीं-नहीं, अब मैं तुझे स्टीमरसे उतरने न दूँगी। जब तू रेतीमें जा पड़ेगा, तो तुझे कोई न चढ़ायेगा।"

उमेशने कहा—"किनारे क्यों उतरने जाऊँ। आज सवेरे खलासियोंके जालमें बहुत बड़ी-बड़ी मछलियाँ फँसी हैं—उनमें एकाध वह बेच भी सकते हैं।"

यह सुन चटपट कमलाने एक रुपया लाकर उमेशके हाथमें दिया—कहा—"जो खर्च हो, वह देकर बाकी लौटा ला।"

उमेश मछली ले आया, किन्तु कुछ लौटाकर नहीं लाया, कहा—"एक रुपयेसे कम किसी तरह मानता ही नहीं था।"

कमला समझ गई कि यह सच नहीं बोल रहा है—उसने कुछ हँसकर कहा—"अब स्टीमर ठहरे, तो रुपये भुनाके रखना होगा।"

उमेशने गम्भीर मुँह बनाकर कहा—"यह बहुत जरूरी है। समूचा रुपया बाहर निकलनेसे फिर लौटाना कठिन है।"

भोजन करते समय रमेशने कहा—"बहुत अच्छा बना है। किन्तु यह सब तुमने मँगाया कहाँसे! यह तो रोहूका सिरा है!—यह कहते हुए उसने सिरेको उठाकर कहा—"यह तो स्वप्न नहीं, माया

नहीं; मतिभ्रम भी नहीं—यह सचमुच सिरा है—जिसे रोहित मत्स्य कहते हैं, यह उसीका उत्तम अङ्ग है।"

इस तरह उस दिनके दोपहरका भोजन बड़ी तय्यारीके साथ समाप्त हुआ। रमेशने डेकपर रखी आराम कुरसीपर लेट पचानेकी ओर ध्यान दिया। तब कमला उमेशको खिलाने बैठी। मछलीकी भजिया उमेशको इतनी अच्छी लगी, कि उसके भोजनका उत्साह कौतूहल न होकर धीरे-धीरे आशङ्काजनक हो उठा। कमलाने घबराकर कहा—"उमेश, अब न खा। तेरे लिये भजिया रखे देती हूं, रातको फिर खाना।"

इस तरह दिनके काम और हसी खेलमें प्रातःकालके हृदयका बोझ दूर कैसे हो गया, इसे कमला समझ भी न सकी।

धीरे-धीरे दिन समाप्त हो चला। सूर्यकी धूप तिरछी होकर बड़ी छटाके साथ पश्चिम ओरसे स्टीमरकी छतपर पहुँची। लहरीदार पानी-पर तीसरे पहरकी हलकी धूप झिलमिलाने लगी। नदीके दोनों किनारे नवीन श्यामल शरत्के खेतकी खेतोंके बीचकी राहसे गाँवकी रमणियाँ हाथ-मुँह धोनेके लिये बगलमें घड़ा दबाकर आने-जाने लगीं।

कमला पान बनाना समाप्तकर शिर गूँथ, मुँह-हाथ धो, कपड़े बदलकर जब शामके लिये तैयार हुई, तब सूर्य गाँवके बाँस-वनके पीछे पीछे अस्त हो गया। स्टीमरने उस दिनके लिये स्टेशनपर लङ्गर डाल दिया।

आज कमलाको रातकी रसोईका उतना झगड़ा नहीं। सवेरेकी कई तरकारियाँ इस समय काम आयेंगी। ऐसे समय रमेशने आकर कहा,—"आज भोजन बहुत हो गया, इस समय मैं भोजन न करूँगा।"

कमलाने दुःखी होकर कहा,—"कुछ न खाओगे? केवल मछली भाजासे—"

रमेशने संक्षेपमें कहा,—"नहीं, रहने दो मछली भाजा।" यह कहता हुआ वह चला गया।

तब कमलाने उमेशके पत्तलपर सब मछली भाजा और भजिया परोस दी। उमेशने कहा,—'अपने लिये तुमने कुछ नहीं रखा?"

कमलाने कहा,—"मैं खा चुकी हूँ।"

इस तरह कमलाकी इस तैरती हुई गृहस्थीका एक दिनका काम पूरा हुआ।

उस समय जल और स्थलमें चाँदनी फैल पड़ी। किनारे कोई गाँव नहीं,—धानके खेतमें सघन-कोमल विस्तीर्ण सब्ज और जनशून्यताके ऊपर निःशब्द चाँदनी विरहिणीकी तरह जाग रही है।

किनारे टीनसे छाई छोटासी कोठरीमें स्टीमरका आफिस है; वहाँ एक दुबला-पतला क्लर्क स्टूलके ऊपर बैठ डेस्कके ऊपर किरासिन तेलकी छोटीसी लम्पी जलाकर रजिस्टर लिख रहा था। खुले दर्वाजेसे रमेश उस क्लर्कको देख रहा था। ठण्डी साँस लेकर रमेश सोच रहा था,—"मेरा भाग्य यदि मुझे इस क्लर्ककी तरह सङ्कीर्ण और स्पष्ट जीवन-यात्रामें बाँध देता—तो हिसाब लिखता, काम करता, काममें भूल होनेसे मालिककी घुड़की सहता और काम खतमकर रातको घर जाता—तब कहीं जानमें जान आती।'

आफिस घरकी रोशनी बुझ गई। क्लर्ककी कोठरीका ताला बन्दकर ओसके भयसे माथेपर रैपर लपेट निर्जन शस्यके खेतकी बीचकी राहसे धीरे-धीरे किधर चला गया, फिर दिखाई न दिया।

कमला बहुत देरसे चुपचाप स्टीमरकी रेलिंग पकड़ पीछे खड़ी थी, रमेशको कुछ खबर नहीं कमलाको खयाल था, कि शामको रमेश उसे बुलायेगा। इसलिये काम-काज समाप्तकर जब उसने देखा, कि रमेश उसको खोजने नहीं आया, तब वह आप ही धीरे धीरे स्टीमरकी छतपर पहुँची। किन्तु वह एकाएक ठिठककर खड़ी हो गई, रमेशके सामने आ न सकी। चन्द्रमाकी चाँदनी रमेशके मुँहपर पड़ रही

थी—वह सुख मानो बहुत दूर है—कमलाके साथ उसका कोई सरोकार नहीं। ध्यानमग्न रमेश और उस सङ्गी-विहीना बालिकाके बीच मानो चाँदनीकी चादरसे सिरसे पैरतक ढँक विराट रात्रि होठोंके ऊपर उँगली रख चुपचाप खड़ी पहरा दे रही थी।

रमेशने जब दोनों हाथसे मुँह ढाँक टेबिलके ऊपर शिर रखा, तब कमला धीरे-धीरे अपने कमरेकी ओर चली गई। पैरकी आवाज नहीं होने पाई, इसलिये कि कहीं रमेशको यह पता न लगे, कि वह खबर लेने आई थी।

किन्तु उसका सोनेका कमरा सन्नाटा और अँधेरा था। उसमें जाते ही उसकी छाती काँप उठी; उसने अपनेको बिलकुल ही परित्यक्त और अकेली समझा—उस छोटीसी लकड़ीकी कोठरीमें किसी अपरिचित जानवरकी तरह मुँह बाये अन्धकार फैल पड़ा। वह कहाँ जाय? कहाँ अपने शरीरको लुढ़का आँख मूँद यह समझे, कि यह मेरी अपनी कोठरी है?

कोठरीमें झाँककर कमला फिर पीछे पलटी। उसके बाहर आनेके समय रमेशके छातेके टीनके ट्रङ्कपर गिरनेसे आवाज हुई। उस आवाजसे चौंककर रमेशने मुँह फेरा और कुरसीसे उठकर देखा, कि कमला अपने सोनेके दर्वाजेपर खड़ी है। उसने कहा—"यह क्या कमला, मैं समझता था, कि तुम अबतक सो गई होगी। क्या तुम्हें डर लगता है? अच्छा, अब मैं बाहर न बैठूँगा। मैं इस बगलकी कोठरीमें सोने जाता हूँ—बीचका दर्वाजा खोले देता हूँ।"

कमलाने हिम्मतके साथ कहा—"मैं नहीं डरती।" यह कहती वह तेजीके साथ अँधेरी कोठरीमें घुसी। उसने बीचके उस दर्वाजेको बन्द कर दिया जिसे रमेशने खोल दिया था। उसने बिछौनेपर सोकर चादरसे अपना मुँह ढँक लिया। मानो उसने संसारमें और किसीको न पा केवल आने ही द्वारा अपनेको ढँक लिया। उसका हृदय विद्रोही

हो उठा। जहाँ भरोसा नहीं, स्वाधीनता नहीं, वहाँ जीवन कैसे बचे।

रात मानो कटती ही नहीं। इस बीच रमेश भी बगलकी कोठरीमें सो गया। अब बिछौनेपर कमलासे रहा न गया। धीरे-धीरे वह बाहर निकल आई। स्टीमरकी रेलिंग पकड़ किनारेकी ओर देखने लगी। आदमीका कहीं पता नहीं—चाँद पश्चिमकी ओर झुक पड़ा है। दोनों किनारेके खेतोंके बीचका सँकरा रास्ता अदृश्य हो गया है। उस ओर देख कमला सोचने लगी, कि इस रास्तेसे कितनी औरतें पानी लेकर नित्य अपने घर जाती हैं। घर! घरकी याद आते ही उसका प्राण छातीसे बाहर निकलनेको छटपटाने लगा। केवल दो घर हैं:- वह भी घर कहाँ! सन्नाटा किनारा भ्रम रट रहा है,—प्रकाण्ड आकाश दिगन्तसे दिगन्ततक स्तब्ध है। अनावश्यक है आकाश—अनावश्यक है संसार—छोटी बालिकाके लिये यह अन्तहीन विशालता बिलकुल ही अनावश्यक है—केवल उसे एक घरका प्रयोजन था।

ऐसे समय कमला एकाएक चौंक पड़ी—न जाने कौन उसके पास ही खड़ा है।

"भय नहीं माँ, मैं हूँ उमेश। रात बहुत बीती, क्या नींद नहीं है?"

अब तक आँसू टपका नहीं था; देखते-देखते दोनों आँखोंसे आँसू लुढ़क पड़ा। बड़ी-बड़ी बूँदे किसी तरह रोके न रुक सकी; केवल झर-झर बहने लगीं। गर्दन टेढ़ीकर कमलाने उमेशकी ओरसे मुँह फेर लिया। पानीसे भरा हुआ मेघ उड़ा जाता है;—जैसे ही उसमें, उसकी ही तरह घर त्यागे हुई हवा लगती है, वैसे ही उसका पानीका बोझ लुढ़क पड़ता है—उस गृहहीन दरिद्र बालक द्वारा जरा आदरका वचन सुनते ही कमलाकी अपनी छातीमें भरा आँसुओंका बोझ फिर रोके न रुका। उसने कुछ कहनेकी कोशिश की, किन्तु रुँधे हुए गलेसे आवाज नहीं निकली।

पीड़ित चित्त उमेशकी समझमें न आया, कि कैसे धीरज दिया जाता है। अन्तमें कुछ देर चुप रह वह एकाएक बोल उठा,—"मा, तुमने जो रुपया दिया था, उसमेंसे सात आने बचे हैं।"

तब कमलाके आँसुओंका बोझ हलका हो चला था। उमेशकी इस चालबाजीके समाचारसे उसने स्नेहमिश्रित हँसी हँसकर कहा,—"अच्छी बात है, उसे अपने ही पास रहने दे। जा, अब सो रह।"

चन्द्रमा पेड़ोंकी आड़में उतर पड़ा। इस बार कमला जैसे ही बिछौनेपर आकर लेटी, वैसे ही उसकी थकी हुई आँखें नींदसे भर उठीं—सबेरेकी धूपने जब उसके दर्वाजेपर थपकी दी, तब वह नींदमें पड़ी हुई थी।

२८

कमलाका दूसरा दिन आरम्भ हुआ। उस दिन उसकी आँखोंमें सूर्यकी रोशनी क्लान्त, नदीकी धारा क्लान्त और किनारेके वृक्ष भी बहुत दूरके राही पथिककी तरह क्लान्त दिखाई दिये।

उमेश जब उसके काममें सहायता देने आया, तब कमलाने आलस्यके स्वरमें कहा,—"जा उमेश, आज मुझे दिक न कर।"

उमेश सहज ही माननेवाला लड़का नहीं। उसने कहा,—"मैं दिक क्यों करूँगा, मसाला पीसने आया हूँ।"

सबेरे रमेशने कमलाके मुँहका भाव देख पूछा था,—"कमला, क्या तुम्हारी तबीयत खराब है?"

यह प्रश्न कितना अनावश्यक और असङ्गत है, जिसके जवाबमें कमला चुपचाप गर्दन हिलाकर रसोई घरमें चली गई।

रमेशने सोचा, कि समस्या प्रतिदिन कठिन ही होती जाती है। बहुत शीघ्र इसका कुछ फैसला होना जरूरी है। हेमनलिनीके साथ

एक बार साफ बातचीत हो जाने पर कर्त्तव्य-निर्द्धारण सहज हो जायगा; रमेशने मन-ही-मन ऐसी ही आलोचना की।

बहुत विचारके बाद वह हेमको चिट्ठी लिखने बैठा। बार बार लिखता और बार बार काटता था; ऐसे समय "महाशय, आपका नाम" सुनकर उसने अपना शिर उठाया। देखा, कि एक प्रौढ़ उम्रके भले आदमी हैं, पकी हुई मूँछे माथेके सामनेकी ओरके पतले बाल सफेदी लिये सामने ही उपस्थित है। रमेशका लगा हुआ चित्त चिट्ठीकी लिखावटसे एकबार उखड़कर क्षणभरके लिये कौतूहली हो उठा।

"आप ब्राह्मण हैं? नमस्कार। आपका नाम रमेश बाबू है—यह मैं पहले ही जान चुका हूँ—फिर भी देखिये, हमारे देशमें नाम पूछते हुए परिचय करनेकी प्रणाली है। यह भलमनसियत है। आजकल कोई-कोई इससे बहुत बुरा मानते हैं। आप यदि नाराज हुए हों, तो क्षमा कीजियेगा! मुझसे पूछिये, मैं अपना नाम बताऊँगा, अपने बापका नाम बताऊँगा, दादा का नाम बतानेमें भी आपत्ति काहे की?"

रमेशने हँसकर कहा,—"मेरी नाराजगी इतनी भयङ्कर नहीं; सिर्फ आपका नाम सुननेसे ही मैं खुश होऊँगा।"

"मेरा नाम त्रैलोक्य चक्रवर्ती"। पश्चिममें सब लोग मुझे 'चाचा' कहा करते हैं। आपने तो इतिहास पढ़ा है। भारतवर्षमें भरत चक्रवर्त्ती राजा थे—वैसे ही मैं सारे पश्चिम देशमें चक्रवर्ती चाचा हूँ। जब पश्चिम जा रहे हैं, तब मेरा परिचय आपसे छिपा न रहेगा। किन्तु आप कहाँ जा रहे हैं?"

रमेशने कहा,—"अभीतक मैं कुछ ठीक नहीं कर सका।"

त्रैलोक्य—आपके ठीक करनेमें देर हो सकती है, किन्तु स्टीमरपर चढ़नेमें तो देर नहीं सही जा सकती।

रमेशने कहा,—"एक दिन गोवालन्दोमें उतरकर देखा कि स्टीमर

सीटी दे रहा है। उस समय यह जान पड़ा, कि मेरे निश्चय करनेमें देर है, किन्तु स्टीमर छूटनेमें देर नहीं। इसलिये जो काम जल्दीका था, उसे ही मैंने पूरा किया।"

त्रैलोक्य—तब आप नमस्कारके योग्य हैं। आपके प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ रही है। हम लोगोंमें और आपमें बहुत प्रभेद है। हमलोग पहले मन ठहराते हैं, इसके बाद स्टीमरपर चढ़ते हैं—क्योंकि हम लोग बहुत भीरु स्वभावके हैं। आपने जाना तो स्थिर किया, किन्तु यह स्थिर नहीं किया कि कहाँ जायेंगे; यह क्या कम है। आप परिवारके साथ ही हैं?"

"हाँ" कहकर उत्तर देनेमें रमेशको क्षणभरके लिये खटका जान पड़ा। उसे चुप देख चक्रवर्त्तीने कहा,—"मुझे माफ कीलियेगा। मैं पहले ही यह खबर पा चुका हूँ, कि आप परिवारके साथ हैं। बहूजी उस घरमें रसोई बना रही हैं, मैं भी पेटके लिये रसोईघरकी खोजमें वहाँ जा पहुँचा। मैंने बहूजीसे कहा,—'बेटी, मुझे देखकर सङ्कोच न करना - मैं पश्चिम देशका एकमात्र चक्रवर्त्ती चाचा हूं।' आहा, बहू मानो साक्षात् अन्नपूर्णा हैं। मैंने उनसे फिर कहा,—'बेटी, जब तुमने रसोई घरपर दखल जमा लिया है, तब अन्नसे मुझे वञ्चित न करना, मैं लाचार हूँ। बहू जरा हँस दीं, समझ गया, कि प्रसन्न हैं; अब मुझे कोई चिन्ता नहीं। पत्रेमें शुभ घड़ी देखकर सदा प्रस्थान किया करता हूँ, किन्तु ऐसा सौभाग्य हर बार नहीं होता। आप काम कर रहे हैं, अब आपको तङ्ग न करूँगा - अगर कहें, तो बहूको कुछ सहायता दूं। मेरे रहते वे कमल जैसे हाथोंमें बेड़ी क्यों पहनें। नहीं नहीं, आप लिखिये—आपके उठनेकी जरूरत नहीं—मैं परिचय कर लेना जानता हूँ।"

यह कहते-कहते चक्रवर्त्ती चाचा बिदा हो रसोई घरकी ओर चले। उन्होंने वहाँ पहुँचते ही कहा,—"बहुत अच्छी खुशबू निकल रही है—

जैसा भोजन होगा, वह मुँहमें जानेसे पहले ही मालूम हो गया। किन्तु गुड़म्बा मैं बनाऊँगा बेटी – जो लोग पश्चिमकी गरमीमें नहीं रहते, वे ठीक तरहसे गुड़म्बा बनाना नहीं जानते। तुम सोच रही होगी, कि बूढ़ा क्या बक रहा है; लेकिन इमली तो है ही नहीं, गुड़म्बा कैसे बनेगा? अच्छा, मेरे रहते तुम्हें इमलीकी चिन्ता नहीं। जरा सब्र करो, मैं सब इन्तजाम किये देता हूँ।"

यह कहते हुए चक्रवर्त्तीने कागजमें लपेटे एक बर्तनसे कासुन्दी निकाल कर सामने रख दिया। कहा,—"मैं जो गुड़म्बा बनाऊँगा वह आज खाकर बाकी उठाके रख देना होगा; उसे खर्च होते चार दिन लगेंगे। इसके बाद देखते ही समझ जाओगी, कि चक्रवर्त्ती चाचा भी कुछ दिमाग रखते हैं; साथ ही गुड़म्बा भी बनाते हैं। जाओ बेटी, अब तुम जाकर मुँह-हाथ धोओ। दिन बहुत चढ़ आया। रसोईमें जो बाकी है, मैं पूरा कर दूंगा। कुछ सङ्कोच न करना,—मुझे इन सब कामोंका अभ्यास है। मेरे परिवारके सब लोग सुस्त हैं; उन सबकी अरुचि दूर करनेके लिये गुड़म्बा बनाते-बनाते मेरा हाथ मँज गया है। बूढ़ेकी बात सुनकर हँस रही हो—किन्तु यह हँसीकी बात नहीं; बिलकुल सच है।"

कमलाने हँसकर कहा,—"मैं आपसे गुड़म्बा बनाना सीखूँगी।"

चक्रवर्त्ती—अरे बस, भाई बस, विद्याकी गूढ़ता नष्ट करूँ, तो वीणापाणि अप्रसन्न हो जायेंगी। दो-चार दिन इस बूढ़ेकी खुशामद करनी पड़ेगी। मैं किस तरह खुश होऊँगा, यह तुम्हें सोचकर समझना पड़ेगा। मैं खुद ही विस्तारके साथ सब कह दूँगा। पहली बात तो यह, कि मैं पान बहुत खाता हूं। किन्तु सुपारीका टुकड़ा न होना चाहिये। मुझे बसमें लाना सहज काम नहीं—किन्तु तुम्हारे हँसमुख चेहरेको देख मेरा काम बहुत कुछ अग्रसर हो रहा है। क्योंरे, तेरा नाम क्या है?"

उमेशने कोई जवाब नहीं दिया। वह नाराज था—वह सोच रहा था, कि कमलाके स्नेहराज्यमें यह बूढ़ा न जाने कहाँ से आकर मेरा शरीकदार बन बैठा। कमलाने उसे चुप देखकर कहा,—"उसका नाम उमेश है।"

वृद्धने कहा,—' यह लड़का बहुत अच्छा है। यह साफ देख रहा हूँ, झटपट इसका मन मिलाये नहीं मिलता। इससे मुझसे खूब पटेगी। किन्तु अब तुम देर न करो, मुझे रसोई बनाते कुछ भी देर न लगेगी।"

कमलाको एक तरहकी शून्यता जान पड़ती थी; इस बूढ़ेके पानेसे वह दूर हो गई।

रमेश भी इस वृद्धके आनेसे बहुत कुछ निश्चिन्त हुआ। पहले कई महीनेतक रमेश कमलाको अपनी स्त्री समझता था। तबसे अबकी निकटवर्तितामें बहुत फर्क है, एकाएक ऐसा प्रभेद देख बालिकाके हृदयमें चोट लगे बिना न रही। इस समय यह चक्रवर्त्ती आकर यदि रमेशकी ओरसे कमलाको चिन्ताको कुछ हटा सकें तो रमेश अपने हृदयकी चोटकी ओर भी कुछ ध्यान दे।

समीप ही उसके कमरेके दर्वाजेपर आके कमला खड़ी हो गई। उसके मनमें इच्छा थी, कि बेकामका दोपहर वह चक्रवर्त्तीके साथ काट सकेगी। चक्रवर्त्ती उसे देखते ही बोल उठे,—' नहीं बेटी, नहीं यह ठीक नहीं हुआ। यह किसी तरह भी ठीक नहीं।"

कमला 'क्या ठीक नहीं' न समझ कर आश्चर्यसे कुछ सङ्कोचमें पड़ी वृद्धने कहा,—'यह जूता! रमेश बाबू, यह आप ही का काम है चाहे जो कहें, यह आप अधर्म कर रहे हैं—देशकी मिट्टीको इस चरण-स्पर्शसे वंचित न करें, नहीं तो देश मिट्टी हो जायगा। रामचन्द्र यदि सीताको डासनका बूट पहनाते, तो क्या लक्ष्मण चौदह वर्षतक वनमें चल फिर सकते कभी नहीं। मेरी बात सुनकर रमेश बाबू हँस रहे हैं—मनमें मेरी बात जमती नहीं है। आपतो स्टीमरकी सीटी

सुनकर ठहर न सके, एकदम सवार हो बैठे, किन्तु यह सोचा भी नहीं, कि कहाँ जा रहे हैं।"

रमेशने कहा,—"तो चाचा, आप ही हमलोगोंके जानेकी जगह ठीक कर दें। स्टीमरकी सीटीसे आपकी सलाह पक्की होगी।"

चक्रवर्त्तीने कहा,—"यह देखिये, आपकी विवेचना शक्तिने इसी बीच उन्नति प्राप्त की है—फिर भी अभी थोड़ी देरका परिचय है। तब चलिये, गाजीपुर चले चलिये—जाओगी बेटी गाजीपुर? वहाँ गुलाबके खेत हैं और वहाँ तुम्हारा यह बूढ़ा चक्र भी रहता है।"

रमेशने भी कमलाके मुँहकी ओर देखा। कमलाने उसी समय शिर हिलाकर अपनी राय दे दी।

इसके बाद उमेश और चक्रवर्त्तीने मिलकर लज्जित कमलाके कमरेमें सभा स्थापित की। रमेश एक ठण्डी साँस छोड़कर बाहर ही रह गया। दोपहरके समय स्टीमर धकाधक चला जा रहा था। शरत्की धूपसे रँगे हुए दोनों किनारे शान्तिमय वैचित्र्यके स्वप्नकी तरह आँखोंके आगे परिवर्त्तित होता जा रहा था। कहीं धानके खेत, नाव बाँधनेके घाट, कहीं बालूका किनारा, कहीं गाँवके ग्वाले, कहीं बाजारके टीनका छाजन, कहीं पुराने वृक्षकी छायाके नीचे खेनेवाली नावके आसरे दो-चार पार उतरनेवाले यात्री दिखाई दिये। इस शरत्के मध्याह्नकी स्तब्धतामें समीपके ही कमरेके भीतरसे जब क्षण-क्षणके कमलाके स्निग्ध कौतुककी हँसी रमेशके कानोंमें पहुँचती, तब उसकी छाती धड़क उठी। यह सब कितना सुन्दर है, फिर भी दूर है। यह सब रमेशके आर्त जीवनमें बहुत ही भयानक चोट पहुंचाते हुए विच्छिन्न हैं।

———

२६

कमलाकी उम्र अब भी कम है - कोई संशय, आशङ्का उसे स्थायी होकर उसके मनमें ठहर नहीं सकती।

रमेशके व्यवहारके बारेमें इन कई दिनोंसे उसे किसी तरहकी चिन्ता करनेका समय नहीं मिला। धारा जहाँ बाधा पाती है, वहीं उसके साथका सब कतवार भी जाकर इकट्ठा हो जाता है—कमलाके मनकी धाराका सहज प्रवाह रमेशके आचरणसे एकाएक एक जगहसे रुका और उसीमें भँवर पड़नेसे तरह-तरहकी बातें एक ही जगह घूम-घूमकर टकराने लगीं। बूढ़े चक्रवर्त्तीको पानेसे हँसी, गप्प, रसोई, खाना—इन सबसे कमलाके हृदयका स्रोत सब बाधाओंको तोड़ता हुआ चला गया—भँवर कट गई, जो कुछ कतवार जमता या घूमता था, वह सब बह गया। उसने अपने बारेमें कुछ सोचा ही नहीं।

आश्विनके सुन्दर दिनने नदी किनारेके विचित्र दृश्योंको रमणीय बना, उसीके बीच कमलाके नित्यके आनन्दित गृहिणीपनेको मानो सुनहरे चित्रके बीच-बीचमें कविताके सरल पृष्ठोंकी तरह पलटने लगा।

कामके उत्साहसे दिन आरम्भ होता था। उमेश आजकल स्टीमरसे होशियार रहता है; किन्तु उसकी झोली भर जाती है। छोटीसी गृहणीके भीतर उमेशकी झोली सवेरेके समय बड़े कौतूहलका विषय बन जाती है। "यह क्यारे, यह तो कद्दू है। अरे राम, यह सहजन तू कहाँसे बटोर लाया?" उमेश कहता—"यह देखो, चाचाजी, खट्टा पालन भी इन पश्चिमी लोगोंके देशमें मिलता है, यह मैं जनता न था।" झोलीके बारेमें रोज सवेरे इस प्रकार एक कोलाहल मचता है। जिस दिन रमेश उपस्थित रहता है उस दिन यह बातें कुछ बेसुरी जान पड़ती हैं—वह चोरीका सन्देह किये बिना न रहता था। कमला उत्तेजित होकर कह देती—"वाह, मैंने अपने हाथसे उसे पैसे गिनके दिये हैं।"

रमेश कहता—"इसीसे उसकी चोरीकी सुविधा दूनी हो जाती है। वह पैसे भी चुराता और तरकारी भी चुराता है।"

यह कह उमेशको बुलाकर कहता—"अच्छा, हिसाब तो बता।"

तब उसके एकबारके हिसाबसे दूसरी बारका हिसाब मेल नहीं खाता था। जोड़ लगानेपर जमासे खर्च अधिक बढ़ जाता था। इससे उमेश जरा भी लज्जित नहीं होता। वह कहता—"अगर मैं हिसाब ही ठीक रख सकता, तो मेरी यह दशा क्यों होती? मैं कहीं मुनीमी न करता, क्यों चाचाजी?"

चक्रवर्त्ती कहते—"रमेश बाबू, भोजनके बाद आप इसका विचार कीजिएगा—तब आप सुविचार कर सकेंगे—अभी तो मैं इस लड़केको उत्साहित किये बिना रह नहीं सकता। बेटा उमेश; चीजोंका संग्रह करना भी किसी विद्यासे कम नहीं है—बहुत थोड़े लोग ऐसा कर सकते हैं। चेष्टा सभी करते हैं, किन्तु सफल कितने होते हैं? रमेश बाबू, मैं गुणीका आदर करना जानता हूँ। आजकल सहजनका समय नहीं है, लेकिन कहिये तो सही, बड़े सवेरे विदेशमें सहजन कितने लड़के हैं, जो ला सकें। महाशय, सन्देह अनेक कर सकते हैं—किन्तु हजारमें एक संग्रह करना जानते हैं।"

रमेश—चाचा, यह अच्छी बात नहीं है, आप उत्साह देकर भूल-कर रहे हैं।

चक्रवर्त्ती—लड़केमें अधिक विद्या नहीं है, यह भी बात है। अगर यह उत्साहका भाव भी नष्ट हो जायगा, तो बहुत ही कष्टकी बात होगी; कमसे कम जब तक हम लोग इस स्टीमरपर हैं। अरे उमेश, कल थोड़ी सी नीमकी पत्ती ले आना—अगर नरम मिले, तो बहुत ही अच्छा है—बेटी सुक्तनू अवश्य ही चाहिये—हमारे आयुर्वेदमें कहा है—जाने दो इस समय आयुर्वेदकी बात, इधर देर हुई जा रही है। रमेश, सब्जी अच्छी तरह धो ला!

रमेश इस प्रकार जितना उमेशपर सन्देह करता, किटकिटाता, उमेश उतना ही कमलाको अपनाता जाता था। इस बीच चक्रवर्त्तीके उसका पक्ष लेनेपर कमलाका दल रमेशसे कुछ स्वतन्त्र होता जाता था। रमेश अपनी सूक्ष्म विचार-शक्तिको लेकर एक ओर अकेला और दूसरी ओर कमला, उमेश और चक्रवर्त्ती अपने कर्म सूत्रसे, स्नेहके सूत्रसे, आमोद-प्रमोदके सूत्रसे सबको मिला एक ओर हैं। चक्रवर्त्तीके आनेपर उनके उत्साहके संक्रामक तापसे रमेश कमलाको पहलेसे अधिक उत्साहके साथ देखने लगा था, किन्तु वह इस दलमें मिल नहीं सकता था। जैसे बड़ा जहाज किनारे लगना चाहता है, लेकिन पानी कम होनेसे उसे कुछ दूरीपर लङ्गर डाल खड़ा हो जाना पड़ता है, और इधर छोटी-छोटी पनसुइया अनायास ही किनारे जा लगती हैं, वही दशा रमेशकी है।

पूर्णिमाके एकाध दिन इधर एक दिन सवेरे उठकर देखा गया, कि ढेरके ढेर काले बादल दल बाँधकर आकाशमें छाये हुए हैं। हवा धीरे धीरे बह रही है। कभी-कभी पानी बरसता है फिर कुछ देरके लिये धूप भी निकल आती है। आज बीच गङ्गामें कोई नाव नहीं, जो एकाध दिखाई भी देती हैं, उनकी घबराहट साफ समझमें आती है। पानी भरनेवाली औरतें आज घाटपर अधिक नहीं ठहर रही हैं। पानीके ऊपर बादलकी बिजलीसे चमक पैदा हो जाती है और पानी इस किनारेसे उस किनारे तक बड़ी-बड़ी लहरें ले रहा है।

स्टीमर ठीक तरहसे चला जा रहा है। इस दुर्दिनकी कितनी ही असुविधाओंमें भी किसी प्रकार कमलाकी रसोई चल रही है। चक्रवर्त्तीने आकाशकी ओर देखकर कहा,—"बेटी, ऐसा करो जिसमें उस समय रसोई न बनाना पड़े। तुम खिचड़ी चढ़ा दो, इस बीच मैं रोटी बेलकर रखे देता हूँ।"

खाना पीना समाप्त होनेमें आज अधिक समय बीत गया। झटकेकी

हवाका जोर और भी बढ़ गया। नदी फेनिल हो-होकर लहराने लगी। कुछ मालूम नहीं, कि सूर्य अस्त हो गया या कुछ दिन रहते ही आज स्टीमरने लङ्गर डाल दिया।

सन्ध्या हो गई, कहीं कहीं फटे बादलोंके बीचसे पीले हँसुएके समान चन्द्रमाकी चाँदनी निखर आती थी। बड़े झटकेके साथ हवा और फिर मूसलधार वृष्टि होने लगी।

कमला एकबार पानीमें डूब चुकी है—इसलिये हवाके झोंकेसे वह घबरा उठी। रमेशने आकर उसे धीरज दिया,—"स्टीमरमें कोई डर नहीं कमला। तुम निश्चिन्त होकर सो सकती हो, मैं बगल की कोठरीमें जाग रहा हूँ।"

आँधीके बापमें कितनी मजाल है, यह कहना कठिन है, लेकिन अन्धड़में क्या भय है, यह कमलासे छिपा नहीं—उसने चटपट दर्वाजे-के पास जा घबराहटके साथ आवाज दी,—"चाचाजी, तुम घरमें आकर बैठो।"

चक्रवर्त्तीने सङ्कोचके साथ कहा,—"अब तुम लोगोंके सोनेका समय हो गया, बेटी मैं अभी—"

उन्होंने कोठरीमें जाकर देखा, कि रमेश नहीं है—आश्चर्यमें आकर उन्होंने कहा,—"रमेशबाबू इस अन्धड़में कहाँ गये? उन्हें तो शाक चुरानेका अभ्यास है नहीं।"

'कौन, चाचा हैं क्या। मैं तो यहाँ बगलकी कोठरीमें हूँ"

पासकी कोठरीमें चक्रवर्तीने झाँककर देखा, कि रमेश बिछौनेपर अधलेटा हुआ किताब पढ़ रहा है।

चक्रवर्तीने कहा,—बहूजी अकेली मारे डरके सूखी जाती हैं। आप-की किताब तो आँधीसे डरती नहीं, उसे इस समय रख देनेमें भी कोई डर नहीं। आइये इस घरमें।"

कमला आवेगमें अपनेको भूल शीघ्रताके साथ चक्रवर्तीका हाथ पकड़कर कहने लगी,—"नहीं-नहीं चाचाजी ! नहीं।" आँधीके शोरमें कमलाकी यह आवाज रमेशके कान तक नहीं पहुंची, किन्तु चक्रवर्ती-विस्मृत होकर लौट आये।

रमेश किताब रखकर उस कमरेमें आया। उसने पूछा,—"क्या है, चक्रवर्ती चाचा, बात क्या है। शायद कमला आपको—"

कमला रमेशके मुँहकी ओर न देखकर चटपट बोल उठी,—"नहीं, नहीं; मैंने उन्हें सिर्फ कहानी कहनेको बुलाया है।"

पूछनेसे कमला यह बता न सकती, कि किसके प्रतिवादमें कमलाने "नहीं-नहीं" किया। उस 'नहीं' का मतलब यह न समझो कि मुझे डर दूर करनेकी जरूरत है—नहीं, कोई जरूरत नहीं। अगर समझो, कि मेरा सङ्ग देनेकी जरूरत है, तो नहीं, कोई जरूरत नहीं।

इसके बाद ही कमलाने कहा,—"चाचाजी, रात होती जा रही है। आप सोने जाइये; एकबार उमेशकी खबर लीजियेगा, शायद वह डरता होगा।"

दर्वाजेके पाससे आवाज आई,—"नहीं, मैं किसीको भी नहीं डरता।"

उमेश गुरमुटाया हुआ कमलाके दर्वाजेके पास बैठा है। कमलाका हृदय पिघल गया—उसने चटपट बाहर जाकर कहा,—"क्या रे उमेश, तू आँधी-पानीमें भींग क्यों रहा है। दरिद्री कहींका, जा चाचाजीके पास सो रह।"

कमलाके मुँहसे दरिद्री सम्बोधन सुन उमेश बहुत परितृप्त होकर चक्रवर्त्ती चाचाके साथ सोने चला गया।

रमेशने कहा,—"जबतक नींद न आये, तबतक मैं बैठकर कहानी कहूँ ?"

कमलाने कहा,—"नहीं, मुझे खूब नींद लगी है।"

रमेश कमलाके मनका भाव समझ गया। किन्तु उसने बात दोहराई नहीं। कमलाके अभिमानसे भरे चेहरेकी ओर देख वह धीरे-धीरे अपनी कोठरीमें चला गया।

कमलाके मनमें इतनी शान्ति नहीं थी, कि वह स्थिर होकर नींदके आसरे बिछौने पर पड़ी रह सके। तब भी वह जबर्दस्ती लेट रही। आँधीके वेगके साथ पानीकी कल-कलाहट धीरे-धीरे बढ़ रही थी। खलासियोंका हल्ला-गुल्ला सुनाई दे रहा था। बीच-बीचमें इञ्जनकी कोठरीमें सङ्केतका घण्टा बज उठता था। प्रबल हवाके झटकेके विरुद्ध जहाजको स्थिर रखनेके लिए लङ्गर गिराने पर भी इञ्जन धीरे-धीरे चल रहा था।

कमला बिछौना छोड़ कमरेके बाहर आकर खड़ी हो गई। क्षण भरके लिये दृष्टि बन्द हो गई है, किन्तु आँधीकी हवा चुटीले जानवरकी तरह चिल्लाकर दिगदिगन्तमें टकरा रही है। बादल रहनेपर भी शुक्ला चतुर्दशीका आकाश क्षीण प्रकाशमें अपनी अशान्त संहारमूर्त्तिको छिपे रूपमें प्रकट कर रहा है। किनारा साफ दिखाई नहीं देता, नदी भी धुँधली दिखाई देती है; किन्तु ऊपर और नीचे, दूर और समीप, दृश्य और अदृश्यमें एक मूढ़ उन्मत्तता है; एक अन्ध आन्दोलन मानो अद्भुत मूर्त्ति धारणकर यमराजके ऊँची सींगवाले भैंसेकी तरह बीच-बीचमें मस्तक झटकार रहा है।

इस पागल रात्रि, इस आकुल आकाशकी ओर देखकर कमलाकी छाती काँपने लगी; यह नहीं कहा जा सकता, कि भयसे या आनन्दसे। इस प्रलयके भीतर एक बाधाहीन शक्ति है, एक बन्धनहीन स्वाधीनता है, उसने मानो कमलाके हृदयमें एक सोई हुई सङ्गिनीको जगा दिया। इस विश्व-व्यापी विद्रोहके वेगने कमलाने चित्तको विचलित कर दिया। यह विद्रोह किसके विरुद्ध था। उसका उत्तर क्या इस तूफानके गर्जनमें

मिलेगा ? नहीं, वह कमलाके हृदयके वेगके समान ही अव्यक्त है। एक प्रकारके अनिर्दिष्ट, अमूर्त्त मिथ्या स्वप्नके अन्धकारके जालको काट-कर निकल आनेके लिये हो आकाश-पातालके इस मतवालेपनका राष-गाजत क्रन्दन है। पथहीन मैदानके प्रान्तसे यह हवा केवल 'नहीं-नहीं' चीख मारती हुई निशीथ-रात्रिमें दौड़ी जा रही है—उसमें केवल प्रचण्ड अस्वीकार है—काहेका अस्वीकार ? यह निश्चय नहीं कहा जा सकता—किन्तु नहीं, हर तरहसे नहीं-नहीं-नहीं-नहीं है।

———

३०

दूसरे दिन सवेरे आँधीका वेग कुछ कम हुआ, किन्तु बिलकुल ही रुका नहीं—कप्तान अभीतक यह ठीक न कर सका, कि लङ्गर उठाया जायगा या नहीं। वह चिन्ताके साथ आकाशकी ओर देख रहा है।

सवेरे ही चक्रवर्त्तीने रमेशकी खोजमें कमलाके बगलकी कोठरीमें प्रवेश किया। देखा, कि रमेश तब भी पड़े हुए हैं; चक्रवर्त्तीको देख वह चटपट उठ बैठा। इस कोठरीमें रमेशको सोया देख चक्रवर्त्तीने गई रातकी घटनाके साथ मन-ही-मन सब समझ लिया। उन्होंने पूछा,—"शायद कल रात इसी घरमें सो रहे।"

रमेशने इस प्रश्नके जवाबको उड़ाते हुए कहा,—"यह कैसा दुर्योग आरम्भ हुआ है; शायद कल रात आपको नींद नहीं आई।"

चक्रवर्त्तीने कहा,—"रमेश बाबू, मैं देखनेमें नासमझ जैसा हूँ, मेरी बातचीत भी वैसी ही है. फिर भी इतनी उम्रमें मुझे बहुत गहरी-गहरी चिन्ताएँ उठानी पड़ी हैं; उनमें कितनों हीकी मीमांसा भी मैंने की है—किन्तु आपको मैं सबसे दुरूह समझ रहा हूँ।"

क्षणभरके लिये रमेशका मुँह लाल हो उठा, इसके बाद अपनेको सँभाल उसने हँसके कहा,—"दुरूह होना भी कोई अपराध है चाचा। तेलगू भाषाका पहला पाठ भी दुरूह होता है, किन्तु तैलङ्गके बालकके आगे वह पानीकी तरह सरल है—जिसको न समझें, उसे चट-पट दोष न दे बैठें और जिस अक्षरको न समझें, उसपर लगातार आँख गड़ाये रहनेसे ही आप समझ जायँ गे, ऐसी आशा न रखें।"

बूढ़ेने कहा,—' मुझे माफ कीजियेगा रमेश बाबू। मेरे लिये जिसके समझनेका कोई लगाव नहीं, उसे समझनेकी चेष्टा करना ही धृष्टता है। किन्तु संसारमें दैवात् ऐसे-ऐसे लोग भी मिल जाते हैं, जिनकी आँखसे आँख मिलते ही सम्बन्ध स्थिर हो जाता है—इसका साक्षी, यह खड़ा हुआ कप्तान है, उससे पूछिये,—बहूजीके साथ उसका जो आत्मीय सम्बन्ध है, वह उसे अभी स्वीकार करना पड़ेगा—उसकी गर्दन पर चढ़के स्वीकार कराऊँगा, न स्वीकार करे, तो वह मुसलमान नहीं। इस हालत-में बीचमें तेलगू भाषाके आ जानेसे बड़ी कठिनाईमें पड़ना पड़ेगा। केवल क्रोध करनेसे काम न चलेगा, रमेश बाबू, जरा मेरी बात विचार कर देखिये।"

रमेशने कहा,—"मैं समझके देख रहा हूँ, इसीसे तो क्रोध नहीं कर रहा हूँ—किन्तु क्रोध करूँ या न करूँ, आप दुःख पायें या न पायें, तेलगू भाषा तेलगू ही रहेगी—प्रकृतिका ऐसा ही निष्ठुर नियम है।" यह कह रमेशने एक ठंडी साँस भरी।

इसी बीच रमेश विचार करने लगा, कि गाजीपुर जाना उचित है या नहीं। पहले वह सोच रहा था, कि अपरिचित स्थानमें रहनेके बदले वृद्धके साथका परिचय उसके काम आयगा। किन्तु अब वह सोचने लगा, कि परिचयमें असुविधा भी है। कमलाके साथ उसके सम्बन्धकी आलोचना और अनुसन्धानका विषय हो जानेपर वह

कमलाके लिये बहुत भयानक हो उठेगा इसलिये जहाँ सभी अपरिचित हैं, जहाँ पूछनेवाला कोई नहीं है, वहाँ ही रहना उचित है।

गाजीपुर पहुँचनेके एक दिन पहले रमेशने चक्रवर्त्तीसे कहा—"चाचा, अपनी प्राक्टिसके लिये मैं गाजीपुरको अनुकूल नहीं समझता, अभी मैंने काशी ही जानेका ठीक किया है।"

रमेशकी बातोंमें निःसंशयका स्वर सुन बूढ़ेने हँसकर कहा,—"बारबार तरह-तरहसे स्थिर करनेको स्थिर करना नहीं कहते—यह तो अस्थिर करना है। जो हो, इस समय काशी जाना ही आपका आखिरी निश्चय है?"

रमेशने संक्षेपमें कहा—'हाँ।'

वृद्ध कोई जवाब न दे चले गये और असबाब बाँधनेमें लग गये।

कमलाने आकर कहा,—'चाचा जी, क्या आज मुझसे आपका झगड़ा है।'

वृद्धने कहा,—'झगड़ा तो रोज दोनों समय होता है, किन्तु एक दिन भी तो मैं जीत नहीं पाता।"

कमला—आज तुम सवेरेसे ही भागे-भागे फिरते हो?"

चक्रवर्त्ती—तुम लोग तो बेटी, मुझसे भी बढ़कर भागनेकी चेष्टामें हो और मुझे भागनेका दोष देती हो?

कमला बात न समझकर देखने लगी। वृद्धने कहा—"क्या रमेश बाबूने अभी तुमसे नहीं कहा? तुम लोगोंका काशी जाना स्थिर हुआ है!"

यह सुन कमलाने हाँ-ना कुछ नहीं कहा। कुछ देर बाद कहा—"चाचाजी, तुमसे न बनेगा, लाओ तुम्हारा ट्रङ्क मैं सजा दूँ।"

काशी जानेके सम्बन्धमें कमलाकी इस उदासीनतासे चक्रवर्त्तीकी छातीमें एक गहरी चोट लगी। उन्होंने मन-ही-मन कहा—"अच्छा ही हुआ, मेरी जैसी उम्रमें यह नया जाल क्यों बिछे।"

इसी समय काशी जानेकी सलाह करनेके लिये रमेश कमलाके पास आये। उन्होंने कहा—"मैं तुम्हें ढूँढ़ रहा था।"

कमला चक्रवर्त्तीके कपड़े तहकर सजा रही थी। रमेशने कहा—"कमला इस बार हम लोग गाजीपुर नहीं जा सकते—मैंने ठीक किया है, कि काशीमें जाकर ही प्राक्टिस करूँगा। तुम्हारी क्या राय है?"

कमलाने चक्रवर्त्तीके ट्रङ्कसे बिना दृष्टि फेरे कहा—"नहीं, मैं गाजीपुर ही जाऊँगी। मैंने सब असबाब बाँध दिया है।"

कमलाके इस द्विविधाहीन उत्तरसे रमेश आश्चर्यमें आया—पूछा—"क्या तुम अकेली ही जाओगी?"

कमलाने चक्रवर्त्तीके मुँहकी ओर अपनी स्निग्ध दृष्टि उठाकर कहा—"क्यों, वहाँ चाचाजी तो हैं ही।"

कमलाकी इस बातपर चक्रवर्त्तीने सङ्कुचित हो कहा—"बेटी, अगर तुम चाचाके प्रति इतना पक्षपात दिखाओगी, तो शायद रमेश बाबू मुझे दोनों आँखोंसे देख भी न सकेंगे।"

इसके जवाबमें कमलाने इतना ही कहा—"मैं गाजीपुर जाऊँगी।"

कमलाकी आवाजसे यह जाहिर न हुआ, कि इसके बारेमें उसे किसीसे राय लेनेकी भी जरूरत है।

रमेशने कहा—चाचा, तब गाजीपुर ही ठीक है।"

आँधी-पानीके बाद उस दिनकी रातको साफ चाँदनी खिली है। रमेश डेकके पासकी कुरसीपर बैठ सोचने लगा—"इस तरह काम न चलेगा। धीरे-धीरे विद्रोही कमलाके कारण जीवनकी समस्या बहुत भारी हो जायगी। इस तरह पासमें रहकर दूरत्वकी रक्षा करना कठिन है। कमला ही मेरी स्त्री है—मैंने तो उसे स्त्री समझकर ही ग्रहण किया था। मंत्रपाठ नहीं हुआ, तो इसमें सङ्कोचकी कौनसी बात है। यमराजने उस दिन कमलाको स्त्रीके रूपमें मेरे हवाले कर उस निर्जन बालूके तटपर स्वयं

गठबन्धन कर दिया है—उनके जैसा पुरोहित इस संसारमें और कौन होगा ?"

हेमनलिनी और रमेशके बीच एक युद्धक्षेत्र तैयार है। बाधा-अपमान-अविश्वास दूरकर यदि रमेश विजयी हो सका, तभी वह शिर ऊँचाकर हेमनलिनीके सामने खड़ा हो सकेगा। उस युद्धकी याद आनेसे उसे भय होता है—जीतनेकी कोई आशा नहीं रह जाती। तब कैसे प्रमाणित करूँ ? प्रमाणित करनेसे सब लोगोंके सामने सब बातें खोलनेसे बहुत ही घृणित और कमलाके लिये तो ऐसा गहरा चोट होगा, कि उसके विचारको भी मनमें स्थान देना कठिन है।

इसलिये दुर्बलोंकी तरह अब दुविधामें न पड़ कमलाको स्त्री मान लेनेमें ही सब ओर भलाई है। हेमनलिनी तो रमेशसे घृणा करती है—यह घृणा ही उसे उपयुक्त सत्पात्रको मन अर्पण करनेमें अनुकूल होगा। यह सोच रमेशने एक ठण्डी साँस ले उधरकी आशाको जमीनमें मल दिया।

३१

रमेशने पूछा,—"क्यों रे, तू कहाँ चल रहा है ?"

उमेशने कहा,—"मैं माजीके साथ जाऊँगा।"

रमेश—"मैंने तो तेरे लिये काशी तकका टिकेट दिला दिया है। यह तो गाजीपुर घाट है; हम लोग काशी न जायेंगे।"

उमेश—मैं भी न जाऊँगा।

रमेशको यह आशा नहीं थी, कि उमेश उसके लिये चिरस्थायी बन्दोबस्तमें आ जायगा। किन्तु लड़केकी अटल दृढ़ता देख रमेश कुछ

स्तम्भित हुआ। उसने कमलासे पूछा,—"कमला, क्या उमेशको भी साथ लेना पड़ेगा ?"

कमलाने कहा,—"नहीं तो वह कहाँ जायगा ?"

रमेश—क्यों, काशीमें उसके सम्बन्धी हैं।

कमला—नहीं, उसने हमारे ही साथ चलनेको कहा है। देख उमेश, तू चाचाजीके साथ-साथ रहना। नहीं तो विदेशमें भीड़के कारण कहीं भूल जायगा।"

किस देशमें जाना होगा, और किसे साथमें लेना होगा, इन सब बातोंके फैसलेका भार कमलाने अपने ही ऊपर लिया। रमेशकी इच्छा और अनिच्छाका बन्धन पहले कमला नम्रभावसे स्वीकार करती थी, एकाएक कई दिनसे उसने उसे दूर कर दिया है।

इसलिये उमेश भी अपनी छोटीसी गठरी लेकर चला, इस बारेमें और अधिक बातचीत नहीं हुई।

शहर और अँगरेजोंके महल्लेके बीचके एक स्थानमें चाचाजीका एक छोटासा बँगला था। उसके पीछे आमका बगीचा, सामने पक्का कुआँ—सामनेकी ओर एक छोटी चहारदीवारी है—कुएँ के पानीसे सिंचकर गोबी और छीमीका खेत अपनी शोभा दे रहा है।

पहले दिन कमला और रमेश इसी बँगलेमें जाकर उतरे।

चाचा समाजमें प्रचार करते हैं, कि उनकी स्त्री हरिभाविनीका शरीर बहुत कमजोर है, किन्तु उनकी कमजोरीका कोई बाहरी लक्षण दिखाई नहीं देता। उनकी उम्र कम नहीं, किन्तु चेहरेपर कड़ाहट और सामर्थ्य है। सामनेके कुछ-कुछ बाल पके हैं किन्तु कचेका हिस्सा ही अधिक है। उनके लिये बुढ़ापेकी केवल डिग्री मिली है; किन्तु दखल अबतक नहीं मिला।

असल बात यह है, कि जब दोनों जवान थे, तब हरिभाविनीको मलेरियाने बड़े जोरोंसे ग्रासा। वायु-परिवर्त्तनके सिवा और कोई उपाय

-न देख चक्रवर्त्ती गाजीपुर स्कूलमें मास्टरी करते हुए यहीं बैठ गये।

मेहमानोंको बाहरी घरमें बैठाकर चक्रवर्त्तीने जनानखानेमें प्रवेशकर आवाज दी,—"सेज बहू।"

उस समय सेजबहू आँगनमें रामकलीसे गेहूँ छँटवा रही थीं। और छोटे-छोटे तरह-तरहके बर्तन और हाँडीमें कई प्रकारके अचारोंको धूपमें रख रही थीं।

वहाँ पहुँचते ही चक्रवर्त्तीने कहा,—"शायद अब ठण्डक पड़ रही है; शरीरपर कोई रैपर ओढ़ लिया होता।"

हरिभाविनी—तुम्हारी सब बातें निराली हैं, अभी ठण्डक है कहाँ—धूपमें पीठ सेंक रही है।

चक्रवर्त्ती—यह भी ठीक नहीं। छायामें कुछ पैसे तो लगते नहीं।

हरिभाविनी—अच्छा देखा जायगा। तुमने आनेमें इतनी देर क्यों की?

चक्रवर्त्ती—बहुतेरे कारण हैं—इस समय घरमें मेहमान मौजूद हैं। उनकी सेवाका बन्दोबन्त करना होगा।

यह कहकर चक्रवर्त्तीने आनेवालोंका परिचय दिया। चक्रवर्त्तीके यहाँ इस प्रकार मेहमानोंका आना-जाना होता ही रहता है; किन्तु स्त्री सहित मेहमानके लिये हरिभाविनी उतनी मुस्तैद नहीं थीं—उन्होंने कहा—"हे राम, तुम्हारे यहाँ जगह कहाँ है?"

चक्रवर्त्तीने कहा,—"पहले परिचय तो करो, इसके बाद घरकी बात पीछे होती रहेगी। मेरी शैल कहाँ है?"

हरिभाविनी—वह अपने लड़केको नहला रही है।

चक्रवर्त्ती चटपट कमलाको भीतर बुला लाये। कमला हरिभाविनीको प्रणामकर खड़ी हो गई; हरिभाविनीने अपने दाहिने हाथसे कमलाकी ठोड़ी छूकर उंगलियोंको चूम लिया और अपने पतिसे कहा,—"देखा, इसका चेहरा बहुत कुछ हमारे विधु जैसा है।"

विधु इनकी बड़ी लड़की है—कानपुरमें अपने पतिके घर रहती है। चक्रवर्त्ती मन-ही-मन हँसे; वे जानते थे, कि कमलाके साथ विधुका कोई मेल नहीं खाता, किन्तु हरिभाविनी रूप और गुणमें बाहरी लड़कियोंकी जीत कभी स्वीकार नहीं कर सकतीं। शैलजा उनके घरमें ही रहती है, उससे प्रत्यक्ष तुलना करनेसे हार न खाना पड़े, इसलिये जो मौजूद नहीं, उसीके साथ तुलना कर गृहिणीने जय-पताका अपने घरमें गाड़ दी।

हरिभाविनी—बहुत अच्छा हुआ, कि यह लोग आ गये हैं; किन्तु हमारे नये मकानकी मरम्मत समाप्त नहीं हुई—यहाँ हम लोग किसी तरह घुस-पैठकर बैठे हैं—इन्हें कष्ट होगा।

बाजारमें चक्रवर्त्तीके एक छोटे मकानकी मरम्मत हो रही है सही, किन्तु वह एक दूकान है—वहाँ रहनेकी कोई सुविधा नहीं, इरादा भी नहीं।

चक्रवर्त्तीने इस झूठका कोई प्रतिवाद न कर कुछ हँसके कहा,—"बेटी" यदि कष्टको हम कष्ट समझते, तो यहाँ तुम्हें न ले आते। (स्त्रीके प्रति) तुम बाहर न खड़ी हो, शरत्-कालकी धूप बहुत खराब होती है।'

यह कह चक्रवर्त्ती रमेशके पास बाहर चले गये।

हरिभाविनी विस्तारके साथ कमलाका परिचय लेने लगीं। तुम्हारे पति शायद वकील हैं? वे कितने दिनसे वकालत कर रहे हैं? कितना कमाते हैं? शायद अभीतक काम शुरू नहीं किया? तब कैसे चलता है? शायद तुम्हारे ससुरका कुछ धन है? तुम्हें नहीं मालूम? हे राम, तुम कैसी लड़की हो? ससुरालका हाल भी नहीं जानतीं? गृहस्थीके खर्चके लिये तुम्हारे पति तुम्हें कितना महीना देते हैं? जब सास नहीं हैं, तब गृहस्थीका भार तो तुम्हें अपने हाथमें ही लेना पड़ेगा? तुम बहुत छोटी नहीं हो—मेरा बड़ा दामाद जो कुछ कमाता है, सब विधुके

हाथमें गिन देता है इत्यादि दुःख-सुखकी सलाहसे उन्होंने थोड़ी ही देरमें कमलाको पुरानी बना लिया। हरिभाविनीके प्रश्नोंसे कमलाके हृदयमें भी अच्छी तरह उदित हो गया, कि रमेशकी अवस्था और इतिहासके बारेमें वह बहुत कम जानती है और उसके सम्बन्धका विचार करनेसे यह नासमझी कितनी असङ्गत है और लोकसमाजके लिये लज्जाकर भी है। उसने सोच कर देखा, कि आजतक रमेशके साथ अच्छी तरहसे किसी बातपर विचार करनेकी फुरसत ही उसे नहीं मिली—वह रमेशकी स्त्री होकर भी रमेशके बारेमें कुछ नहीं जानती। आज उसे अपने हकमें यह विचित्रता जान पड़ी और अपने इस अकर्त्तव्यपर उसे लज्जा भी जान पड़ी।

हरिभाविनीने फिर शुरू किया,—"बहू, जरा तुम्हारे हाथका कड़ा देखूँ ? इसका सोना तो बहुत अच्छा नहीं है। बापके घरसे कुछ गहने नहीं लाईं ? इसीसे क्या इस प्रकार शरीर नङ्गा रखा जाता है। शायद तुम्हारे पतिने तुम्हें कुछ भी नहीं दिया ? मेरा बड़ा दामाद तो विधुके लिये हर दो महीनेपर एक गहना गढ़ाता है ?"

ऐसे सवाल-जवाबमें शैलजा अपनी दो वर्षकी लड़कीका हाथ पकड़े आ पहुँची। शैलजा साँवली है, उसका मुँह छोटासा है, मट्ठी भरका शरीर, दानों आँखें चमकदार, ललाट चौड़ा है—चेहरेकी ओर देखनेसे स्थिरबुद्धि और शान्त परितृप्त भावकी जान पड़ती है।

शैलजाकी छोटीसी लड़कीने कमलाके सामने खड़ी हो उसे अच्छी तरह देखनेके बाद कहा, "मासी" यह नहीं, कि उसने विधुके धोखेमें कहा हो—एक विशेष उम्रकी चाहे जिस स्त्रीको देख उसे अगर वह खराब न जँची, तो वह उसे मासीके नामसे ही बुलाती है। कमलाने चटपट उसे गोदमें उठा लिया।

हरिभाविनीने शैलजाको कमलाका परिचय देते हुए कहा,—"इनके पति वकील हैं। नई वकालत करनेको बाहर निकले हैं। रातमें तुम्हारे

पितासे उनकी जान पहचान हो गई; वह इन लोगोंको गाजीपुर ले आये हैं।"

शैलजाने कमलाके मुँहकी ओर देखा, कमलाने भी शैलजाके मुँहकी ओर देखा—और इस देखा-देखीमें ही दोनों एक क्षणमें सखी बन गईं। हरिभाविनी मेहमानोंकी तैयारीमें चली गईं—शैलजाने कमलाका हाथ पकड़कर कहा,—"चलोजी, मेरी कोठरीमें चलो।"

थोड़ी ही देरमें दोनोंमें बड़े मेलके साथ बातचीत शुरू हुई। आँखसे देखनेपर यह सहज ही नहीं जान पड़ता कि शैलजासे कमलाकी उम्रमें फर्क है। शैलजामें कुछ छोटा-मोटा संक्षिप्त भाव है - कमला ठीक उसके विपरीत है—लम्बाई-चौड़ाई और भाव-भङ्गीमें वह अपनी उम्रका कुछ अंश बिता चुकी है। विवाहके बादसे उसके सिरपर ससुरालका कोई दाब न होनेसे अथवा और किसी कारणसे वह देखते-देखते बिना किसी संकोचके बढ़ गई थी। उसके चेहरेके भावमें एक प्रकारकी स्वाधीनता का तेज था। उसके सामने जो कुछ आता है, उसके बारेमें कमसे कम मनमें ही सही, वह बिना प्रश्न किये शान्त नहीं होती थी। "चुप रहो" 'जो कहा जाता है, वही किये चलो", 'बहू-बेटियोंकी ऐसी जिद शोभा नहीं देती" इस प्रकारकी बातें आजतक उसके सुननेमें नहीं आईं। इसीसे वह शिर ऊँचाकर उठती है—उसकी सरलतामें सबलता है।

शैलजाकी लड़कीने उन दोनोंका ध्यान अपनी ओर करनेकी चेष्टा की, किन्तु दोनों सखियोंमें जमकर बातें होने लगीं। इस बातचीतमें कमला अपनी दीनता सहज ही समझ सकी। शैलजाको कहनेके लिये बहुतेरी बातें हैं, किन्तु कमलाके कहनेको कुछ नहीं। कमलाके जीवनके चित्रपटमें उसके दाम्पत्यका जो एक चित्र अङ्कित हुआ है, वह पेन्सिल की एक क्षीण रेखामात्र है—वह चित्र सब जगहसे साफ नहीं है, उसपर आजकल कोई रङ्ग चढ़ा ही नहीं। कमलाने इतने दिनतक इस अभाव-

को समझनेका अवसर नहीं पाया—हृदयमें उसने अभावका अनुभव किया, कभी-कभी विद्रोहका भाव भी उपस्थित हुआ, किन्तु उसका कोई भाव उसके चेहरेपर प्रकट नहीं हुआ। मित्रताके आरम्भमें ही जब शैलजाने उससे पतिकी बात छेड़ी,—जिस सुरमें शैलजाके सब तार मिले-मिलाये तैयार हैं, उँगली रखते ही जो सुर चाहती वही बज उठते हैं, तब शैलजाने देखा, कि कमलाके हृदयसे उन सुरों का कोई झङ्कार भी नहीं होता—पतिके बारेमें वह क्या कहे, कहनेकी कोई बात नहीं थी। सुखके बोझसे भरी शैलजाकी नाव तेजीसे धारामें बह रही थी, किन्तु कमलाकी सूखी नाव बालूमें फँस अचल हो रही थी।

शैलजाके पति विपिन गाजीपुरके अफीम-आफिसमें काम करते हैं। चक्रवर्त्तीकी कुल दो लड़कियाँ हैं—बड़ी लड़की ससुराल गई है। छोटी-को प्राणके समान विदा न कर सकनेके कारण चक्रवर्त्तीने एक अपने वशका दामाद ढूँढ़ लिया और साहबोंसे सिफारिशकर उसे यहीं नौकरी दिला दी। विपिन इन्हीं लोगोंके घर रहता है।

बातों-बातोंमें शैल बोल उठी,—"तुम जरा बैठो जी, मैं अभी आती हूँ। कुछ ही देरमें कारण बताती हुई वह हँसके बोली,—'वह स्नान करके घरमें आये हैं—अब खा-पीके आफिस जायेंगे।"

कमलाने सरल विस्मयके साथ पूछा,—"तुम कैसे जान गईं, कि वे आये हैं?"

शैलजा—दिल्लगी न करो। जैसे सब जानती हैं वैसे ही मैं भी जान गई। तुम अपने पतिके पैरकी आवाज नहीं पहचानती?"

यह कह हँसकर कमलाकी ठोड़ीको जरासा हिलाकर वह आँचलमें बँधे चाबीके गुच्छेको पीठपर फेंक गोदमे लड़की लिये चली गई। कमला आजतक यह समझ ही न सकी, कि पैरके आवाजकी भाषा इतना सहज है। वह चुपचाप बैठ खिड़कीकी ओर निगाह किये यही सोचने लगी। खिड़कीके बाहर अमरूदका एक वृक्ष खूब फूला है, उन फूलोंकी परागमें मधुमक्खियाँ लोट-पोट हो रही हैं।

३२

एक खुली जगहमें गङ्गाके किनारे एक अलग मकान लेनेकी चेष्टा हो रही है। रमेशने सलाह की है, कि गाजीपुरकी अदालतमें कायदेसे वकालत करनेके लिये कुछ चीजें लेनेको उसे कलकत्ते जाना पड़ेगा। किन्तु कलकत्ते जानेकी उसकी हिम्मत नहीं होती। कलकत्तेकी एक खास गलीका चित्र मनमें आते ही रमेशकी छातीको मानो कोई दबा देता है। अभीतक वह उस जालसे बाहर नहीं निकला—दूसरी ओर शीघ्र ही कमलासे पति-पत्नीका भाव बनाये बिना भी काम नहीं चलता। इन्हीं दुबिधाओंमें कलकत्त जानेका दिन टलता ही चला गया।

कमला चक्रवर्त्तीके जनानखानेमें ही रहती है। वह बँगला बहुत छोटा होनेकी वजह रमेशको बाहरी घरमें ही रहना पड़ता है। कमलाके साथ मुलाकात होनेका उतना मौका नहीं मिलता।

इस लगातार विच्छेदके मामलेमें शैलजा कमलाके आगे केवल दुःख प्रकट किया करती थी। कमलाने कहा,—"काहेको जी, तुम इतनी हाय-हाय क्यों करती हो? ऐसी कौनसी भयानक दुर्घटना हो गई है।"

शैलजा—धत्, यही तो बात है। तुम्हारा मन पत्थरकी तरह कठोर है। इन सब बातोंसे मुझे छल न सकोगी। तुम्हारे मनमें जो हो रहा है, क्या उसे मैं समझती नहीं हूँ?

कमलाने पूछा,—"अच्छा जी, सच कहना, अगर दो दिन विपिन बाबू तुमसे मुलाकात न करें, तो क्या तब भी तुम इसी प्रकार—"

शैलजाने गर्वके साथ कहा,—"उनकी मजाल क्या, वो दो दिन मुलाकात न करें।"

यह कहकर शैलजा विपिन बाबूकी अधीरताका हाल कहने लगी। पहले पहल विवाहके बाद बालक विपिन बड़े-बूढ़ोंके व्यूहको भेदकर अपनी बालिका बहूके साथ मिलनेके लिये कितने प्रकारके कौशल करता

था; उसमें कभी खाली जाता, कभी पकड़ जाता था। दिनको मुलाकात होनेकी मनाहीका दुःख दूर करनेके लिये बिपिनसे दोपहरके भोजनके समय एक शीशेमें लोगोंके अनजानमें कैसे आँखके इशारे चलते थे, यह कहते-कहते पुरानी स्मृतिके आनन्दमें शैलजाका चेहरा मुस्कुराहटसे जगमगा उठा। इसके बाद जब आफिसमें जाना शुरू हुआ, तब दोनों-की वेदना और बिपिनका कभी-कभी आफिससे भागना, बहुत-सी बातें हुईं। इसके बाद एकबार ससुरके रोजगारके कारण कुछ दिनके लिये बिपिनको पटना जाना पड़ा, तब शैलजाने अपने पतिसे पूछा था,—"तुम पटने जाकर रह सकोगे?" उस समय बिपिनने बड़े अभि-मानके साथ कहा था,—"क्यों न रह सकूँगा? मजेमें रहूँगा।" उसकी इस हिम्मतसे शैलजाको अभिमान हुआ था—उसने बड़े दिलसे प्रतिज्ञा की थी, कि बिदाईके समय किसी प्रकारका दुःख प्रकट न करेगी; किन्तु न जाने कैसे वह प्रतिज्ञा आँखके आँसुओंके साथ बह गई। दूसरे दिन जब जानेकी सारी तैयारी हो गई, तब बिपिनके माथेमें दर्दके साथ ऐसी कौनसी बीमारी हुई, कि उसका जाना रुक गया; इसके बाद जब डाक्टर दवा दे गया, तब दवाकी शीशी चुपकेसे पनालेमें लुढ़का कैसे अपूर्व उपायसे बीमारी दूर की—यह सब कहते-कहते कब कितना दिन निकल जाता, इसका कोई खयाल शैलजाको होता नहीं था। फिर भी, ऐसे समय दूर या बाहर दर्वाजेपर किसीके शब्द होने न होनेपर भी शैलजा चौंक उठती थी। बिपिन बाबू आफिससे आये या नहीं—यह जाननेके लिये गपशप होते रहनेपर भी शैलजा उत्कण्ठित हृदयसे दर्वाजेकी ओर ही कान लगाये रहती थी।

ऐसा नहीं, कि कमलाके आगे यह सब बातें बिलकुल गूलरके फूलके समान थीं; कुछ-कुछ आभास उसे भी मिला है। पहले कई महीने रमेशके साथ प्रथम परिचयके रहस्यमें उसके मनमें मानों एक प्रकारकी रागिनी बज उठती थी। इसके बाद स्कूलसे छुटकारा पाकर कमला

जब रमेशके पास आई, तब भी कभी-कभी ऐसी लहरें अपूर्व सङ्गीत और अपूर्व नृत्यसे उसके हृदयपर आघात करती थीं—जिसका ठीक अर्थ वह आज शैलजाकी बातोंसे समझ सकी। किन्तु उसका यह सब छिपा-छिपाया था, इसमें धारावाहिकता नहीं। वह किसी परिणाम-तक पहुँच न सकी। शैलजा और विपिनमें जो एक प्रकारके आग्रहका खिंचाव है, वह रमेश और उसमें कहाँ हैं? इधर कई दिनसे इन लोगों की मुलाकात भी बन्द है। इससे उसके मनमें और भी एक प्रकारकी घबराहट उत्पन्न हुई है। रमेश भी उससे मिलनेके लिये बाहर बैठे-बैठे तरह-तरहके विचार किया करता है; यह उसके लिये किसी तरह भी विश्वासके योग्य नहीं।

इसी बीच जिस दिन रविवार पड़ा, उस दिन शैलजा कुछ मुश्किल-में पड़ी। अपनी नई सखीको बहुत देरके लिये अकेली छोड़नेमें उसे कुछ लज्जा जान पड़ने लगी, फिर भी आज छुट्टीका दिन बिलकुल ही व्यर्थ जाय, इतनी त्यागशीलता भी उसमें नहीं थी। इधर रमेश बाबूके साथ रहनेपर भी कमला जब मिलनेसे वंचित रही, तब छुट्टीके दिन अपने भाग्यका अभाग्य भोगनेमें उसे कुछ कष्ट भी जान पड़ा। आहा! यदि किसी तरह रमेशसे कमलाकी मुलाकात हो जाती!

इन सब बातोंमें बड़े-बूढ़ोंसे सलाह नहीं चलती—किन्तु चक्रवर्त्ती सलाहके लिये आसरा देखनेवाले नहीं। उन्होंने घरमें कह दिया, कि आज वे किसी विशेष कामसे शहरसे बाहर जा रहे हैं। रमेशको समझा गये, कि आज कोई बाहरी आदमी उनके मकानमें जानेवाला नहीं है। वे सदर दर्वाजा बन्द किये जाते हैं। यह बात उन्होंने अपनी कन्यासे भी कह दी—वे अच्छी तरह जानते थे, कि किस बातका क्या अर्थ है, उसे शैलजा समझ जायगी।

स्नानके बाद शैलजाने कमलासे कहा—"आओजी, तुम्हारे बाल सुखा दूँ।"

कमलाने कहा – "क्यों, इतनी जल्दी काहेकी है ?"

शैलजा—यह बात बादको होती रहेगी—पहले तुम्हारी चोटी कर दूँ—यह कह वह कमलाका माथा लेकर बैठ गई। आज काम बहुत है – इसलिये चोटी करना एक बड़ा काम हो गया।

इसके बाद कपड़ेके बारेमें दोनोंमें खूब बहस हुई। शैलजा उसे रङ्गीन साड़ी पहनाना चाहती है, कमलाको उसके पहननेका कोई कारण दिखाई नहीं दिया। अन्तमें शैलजाको सन्तुष्ट करनेके लिये उसे पहनना ही पड़ा।

दोपहरमें भोजनके बाद शैलजा अपने पतिके कानमें धीरेसे कुछ कहकर थोड़ी देरके लिये छुट्टी ले आई। इसके बाद वह कमलाको बाहर की कोठरीमें भेजनेके लिये तङ्ग करने लगी।

इससे पहले कमला रमेशके पास कितनी ही बार निःसङ्कोच गई है। इस बातके जाननेका उसे कभी मौका ही नहीं मिला, कि इसके बारेमें समाजमें कुछ लज्जा प्रकट करनेका विधान है। परिचयके आरम्भमें ही रमेशने उसका सङ्कोच तोड़ दिया था। निर्लज्जताके बहाने धिक्कार देनेवाली कोई सङ्गिनी भी नहीं थी।

किन्तु आज शैलजाका अनुरोध पालन करना उसके लिये कठिन जान पड़ा। पतिके पास शैलजा जिस अधिकारसे जाती है, उसे वह समझ गई है—कमला उस अधिकारको जब समझती ही नहीं, तब दीनभावसे आज वह रमेशके पास कैसे जा सकती है ?

कमला जब किसी तरहसे राजी नहीं हुई, तब शैल समझी, कि शायद उसने रमेशसे मान ठाना है। मान करनेकी बात भी है। कई दिन बीत गये, किन्तु रमेशने किसी बहाने मुलाकातकी भी चेष्टा नहीं की।

उस समय मकानकी मालकिन भोजनके उपरान्त घरका दर्वाजा

बन्दकर सो रही थीं। शैलजाने विपिनके पास जाकर कहा—"आज तुम रमेश बाबूको कमलाके नामसे भीतर बुला लाओ। पिताजी कुछ न कहेंगे, माको कुछ मालूम ही न होगा।" विपिन जैसे मुँहचोर आदमीके लिये दूतका काम किसी तरह भी रुचिकर नहीं; फिर भी छुट्टीके दिन इस अनुरोधको वह किसी तरह भी टाल न सका।

उस समय रमेश बाहरी बैठकमें जाजिमके ऊपर चित लेट एक पैरके घुटनेपर एक पैर रख पायनियर पढ़ रहा था। पढ़ाईका हिस्सा समाप्तकर जब वह बेकाम विज्ञापनोंकी ओर ध्यान देने जा रहा था, उस समय विपिनको कमरेमें आते देखकर प्रसन्न हो उठा। सङ्गीके बहाने विपिन प्रथमश्रेणीका आदमी था, फिर भी, विदेशमें दोपहरके समय रमेशने उसका आना बहुत अच्छा समझा और बोल उठा—आइये विपिन बाबू, आइये!"

विपिनने बिना बैठे ही जरा माथा खुजलाते हुए कहा—"आपको जरा वह भीतर बुला रही हैं।।"

रमेशने पूछा—'कौन, कमला?"

विपिनने कहा—'हाँ।'

रमेश कुछ आश्चर्यमें आया। रमेशने पहले ही ठीककर लिया है, कि कमलाको वह स्त्रीके रूपमें मानेगा; किन्तु उसका दुविधामें पड़ा मन कई दिनसे मौका पाकर विश्राम कर रहा है। कल्पनामें कमलाको गृहिणीके पदपर अभिषिक्तकर वह मनको भावी सुखोंके धीरजसे उत्तेजित भी कर चुका है—किन्तु पहला आरम्भ ही कठिन है। कुछ दिनसे वह लगातार कमलासे दूर-दूर रहनेका अभ्यस्त था, एकाएक एक दिनमें वह कैसे उसे तोड़ दे, यह उसकी समझमें नहीं आया इसीसे किरायेका मकान लेनेके लिये वह जल्दी नहीं कर रहा था।

कमलाका बुलाना सुनकर रमेशने मनमें सोचा, कि निश्चय कोई विशेष प्रयोजन होगा। जरूरकी बुलाहट होनेपर भी उसके मनमें

एक लहर पैदा हो गई। पायनियर रखकर जब वह विपिनके साथ भीतर गया, तब मधुकर-गुञ्जरित कार्तिकके आलस्ययुक्त दोपहरने अभिसारका आभास देते हुए उसके चित्तको कुछ चञ्चल कर दिया।

विपिन दूर होसे कोठरी दिखाकर चला गया। कमला समझ रही थी, कि शैलजा उसकी कोठरीसे निकलकर विपिनके पास चली गई है। इसलिये वह खुले दर्वाजेकी चौखटपर बैठ सामनेके बगीचेकी ओर देख रही थी। शैलने न जाने कैसे कमलाके मनमें और बाहर प्रेमका स्तर बाँध दिया था। हलकी गर्म वहासे जैसे बाहरी वृक्ष मरमर शब्दसे काँप रहे थे, वैसे ही कमलाके हृदयके भीतरसे रह-रहकर एक गहरी साँस निकलकर व्यक्त वेदनासे एक अपूर्व कँपकँपाहट पैदा कर रही थी।

ऐसे समय रमेशने जब भीतर पहुँच पीछेसे आवाज दी, "-कमला", तब वह चौंककर खड़ी हो गई। उसके हृदयमें खून तरङ्गें मारने लगा; जिस कमलाने इससे पहले कभी रमेशके आगे विशेष लज्जाका अनुभव नहीं किया, वह आज अच्छी तरह आँखें उठाकर देख भी न सकी। उसकी कनपटी लाल हो गई।

आजकी सजावट और भाव-आभासमें रमेशने कमलाकी नई मूर्त्ति देखी। एकाएक कमलाके इस अभासने उसे आश्चर्यमें डाल दिया। उसने धीरे-धीरे कमलाके पास आकर क्षणभर खड़े रहनेके बाद मीठे स्वरमें कहा,—"कमला, तुमने मुझे बुलाया है?"

कमला चौंककर अनावश्यक उत्तेजनाके साथ बोल उठी,—"नहीं-नहीं-नहीं; मैं क्यों बुलाने लगी।"

रमेशने कहा—बुलानेमें भी क्या, दोष है कमला।"

कमला दूनी प्रबलताके साथ बोली,—"नहीं, मैंने नहीं बुलाया।"

रमेशने कहा,—"अच्छी बात है, मैं तुम्हारे बिना बुलाये ही आया हूँ। इसलिये क्या अनादर करके लौटा दोगी?"

कमला—तुम्हारा आना जानकर लोग नाराज होंगे—तुम जाओ। मैंने तुम्हें नहीं बुलाया।

रमेशने कमलाका हाथ पकड़कर कहा,—"अच्छा, तुम मेरे कमरेमें चलो,—वहाँ बाहरका कोई आदमी नहीं है।"

कमलाने काँपकर शीघ्रताके साथ रमेशसे हाथ छुड़ा बगलकी कोठरीमें जाकर दर्वाजा बन्द कर लिया।

रमेश समझ गया, कि यह सब मकानकी किसी स्त्रीकी करामात है—यह समझ वह प्रसन्न चित्त बाहर चला गया। चित लेटकर पायनियरके विज्ञापनके अंशपर वह दृष्टि दौड़ाने लगा। किन्तु मन न बहला। उसके हृदयके आकाशमें रङ्ग-बरङ्गे भावके बादल उठ-उठकर मँडराने लगे।

शैलने बन्द दर्वाजे पर चोट दी—किसीने खोला नहीं। तब वह दर्वाजेकी झिलमिलीसे हाथ डाल सिटकिनी खोल दी। घरमें जाकर देखा, कि कमला जमीनमें पेटके बल लेटकर दोनों हाथोंके भीतर मुँह छिपाकर रो रही है।

शैल बड़े आश्चर्यमें आई। ऐसी कौनसी घटना हो गई, जिससे कमलाके हृदयमें इतनी चोट पहुँची। वह चटपट उसके पास बैठ उसके कानके पास मुँह लगाकर मीठे स्वरमें बोली,—"काहेको जी, क्या हुआ क्या—रोती क्यों हो?"

कमलाने कहा,—"तुम क्यों उन्हें बुला लाई। यह बहुत बेजा बात है।"

कमलाके इस अकस्मात् आवेगकी प्रबलताको उसका और दूसरोंका समझना कठिन है। किसीको यह खबर नहीं, कि कितने दिनसे गुप्त वेदना उसके हृदयमें संचित है।

कमला आज कल्पनाके लोकमें अधिकार कर बैठी थी। रमेश

यदि सहजमें ही उस लोकमें पहुँच जाता, तो सुखकी ही बात होती। किन्तु उसे बुलवाकर सब खाकमें मिला दिया गया। कमलाकी छुट्टीके समय स्कूलमें उसे कैदकर रखनेकी चेष्टा, स्टीमरमें रमेशकी उदासीनता, यह सभी उसके मनको मथने लगा। पासमें आनेसे ही आना हो गया, या बुलानेसे ही आना हो गया, यह बात नहीं – असल बात क्या है, इसे गाजीपुर आनेके बाद ही बहुत सहजमें वह साफ-साफ समझ गई।

किन्तु शैलका इन सब बातोंको समझना कठिन है। वह इसकी कल्पना भी कर न सकी, कि कमला और रमेशके बीच कौनसी बाधा हो सकती है। उसने बड़े प्यारसे कमलाके शिरको अपनी गोदमें ले पूछा—"अच्छा जी, रमेशबाबूने क्या तुम्हें कोई कड़ा वचन कहा है? शायद वह उनको बुलाने गये थे, इससे नाराज हुए हों। तुमने बता क्यों नहीं दिया, कि यह सब मेरी कार्रवाई है?"

कमलाने कहा,—"नहीं-नहीं, उन्होंने कुछ नहीं कहा। किन्तु तुमने उन्हें बुलवाया क्यों?"

शैलने दुःखी होकर कहा,—अच्छा जी, कुसूर हुआ, माफ करो।"

कमलाने चटपट उठ शैलका गला पकड़कर कहा,—"जाओ जी, तुम जाओ। नहीं तो विपिन बाबू नाराज होंगे।"

बाहर अकेली कोठरीमें रमेशने पायनयिरपर नाहक दृष्टि दौड़ाते-दौड़ाते झल्लाकर उसे एक ओर फेंक दिया। इसके बाद बैठकर उसने आप ही आप कहा,—"नहीं, अब नहीं। कल ही कलकत्ते जाकर तैयार हो लौट आऊँगा। कमलाको अपनी स्त्री मानकर ग्रहण करनेमें जितनी देर हो रही है, उतना ही मैं बेजा कर रहा हूँ।"

रमेशकी कर्त्तव्य बुद्धि आज एकाएक जागकर सब दुविधा और संशयको एक साँसमें लाँघ गयी।

३३

रमेशने ठीक किया था, कि वह कलकत्तेमें केवल अपना कामकर लौट आयेगा। कोलूटोलाकी उस गलीके किनारे भी न जायगा।

रमेश दर्जीपाड़ावाले मकानमें ठहरा। दिनका समय बहुत सहजमें कामकाजमें बीत गया। बाकी समय बीत नहीं रहा है। रमेश कलकत्तेमें जिस दलसे मिलता-जुलता था, उससे इस बार आनेपर मिला भी नहीं। इस भयसे, कि कहीं राहमें किसीसे मुलाकात न हो, वह बहुत सावधान रहा।

किन्तु, रमेशने कलकत्तेमें आते ही एक परिवर्त्तनका अनुभव किया। जिस निर्जन अवकाशमें, जिस निर्मल शान्तिकी लपेटमें कमला अपने नव-यौवनका प्रथम आविर्भाव ले रमेशके आगे रमणीय रूपमें दिखाई दी थी, कलकत्ते आनेपर वह मोह बहुत कुछ दूर हो गया। दर्जीपाड़ाके मकानमें आकर रमेशने कमलाको कल्पनाक्षेत्रमें लाकर प्रेमकी मोहक दृष्टिसे देखनेकी चेष्टा की—किन्तु यहाँ उसके मनने किसी तरहका इशारा नहीं दिया—आज कमला उसके आगे कच्चे उम्रकी अशिक्षिता बालिकाके रूपमें दिखाई देने लगी।

जोरका प्रयोग जितनी अतिरिक्तताके साथ किया जाता है, उतना ही जोर घटता जाता है। यह प्रतिज्ञा करते हुए, कि हेमनलिनीको वह अब किसी तरह भी मनमें आने न देगा, हेमनलिनीकी बात सारी रात उसके मनमें जागती रह गई। भूलनेका कठिन सङ्कल्प ही स्मरण रखनेका प्रबल उपाय हो उठा।

रमेशको यदि सचमुच जल्दी होती, तो वह बहुत पहले ही कलकत्ते-का काम समाप्तकर लौट जाता। किन्तु मामूली काम खतम होते-होते भी बढ़ता ही गया। अन्तमें सब काम समाप्त हो गया।

कल रमेश पहले किसी कामसे इलाहाबाद जाकर, तब गाजीपुर लौटेगा। इतने दिनसे वह धीरज धरे था, किन्तु उस धैर्यका कोई

पुरस्कार नहीं। किन्तु बिदा होनेसे पहले छिपकर एकबार कोलूटोलाकी खबर लेनेमें हर्ज क्या है ?

आज कोलूटोलाकी उसी गलीमें जाना स्थिरकर वह एक चिट्ठी लिखने बैठा। उसमें उसने कमलाके साथ अपना सम्बन्ध होना शुरूसे आखीरतक लिख दिया। यह भी प्रकट कर दिया, कि इस बार गाजीपुर लौटकर वह लाचार हो अभागिनी कमलाको अपनी विवाहिता स्त्रीके रूपमें ग्रहण करेगा। इस प्रकार हेमनलिनीसे अपना हर तरहका विच्छेद होनेसे पहले सच्ची घटनाको पूरी तरहसे पत्र द्वारा प्रकट कर वह बिदा हो जायगा।

चिट्ठी लिखकर उसने लिफाफेमें बन्द कर दिया, किन्तु ऊपर किसीका नाम नहीं लिखा, भीतर भी किसीके नामका सम्बोधन नहीं था। अन्नदाबाबूके नौकर रमेशको बहुत मानते थे—क्योंकि रमेश हेमनलिनीके सम्बन्धी, मुलाकाती, सभीको एक विशेष ममताके साथ देखता था। इसलिये उस मकानके नौकर-चाकर रमेशसे अनेक अवसरोंपर कपड़े-लत्ते और ईनाम पाया करते थे। रमेशने स्थिर किया था, कि वह एकबार रातके अँधेरेमें कोलूटोलाके मकानमें जाकर एकबार दूरसे हेमनलिनीको देख आयेगा और किसी नौकरसे यह चिट्ठी छिपे-छिपे उसके हाथमें पहुँचवा वह सदाके लिये उसके पहलेके बन्धनको तोड़कर चला जायगा।

सन्ध्याके समय रमेशने चिट्ठीको हाथमें ले चिरपरिचित गलीके भीतर काँपती छाती और काँपते पैरोंसे प्रवेश किया। दर्वाजेके पास आकर उसने देखा, कि दर्वाजा बन्द है, ऊपरकी ओर देखा सब खिड़कियाँ बन्द हैं, मकानमें सन्नाटा और अँधेरा है।

तब भी रमेशने दर्वाजेपर थपकी दी। दो-चार बार थपकी देनेपर भीतरसे एक बैरा दर्वाजा खोलकर बाहर आया। रमेशने पूछा,—"कौन है, सुक्खन !"

बैराने कहा,—"हाँ, बाबू।"

रमेश—बाबू कहाँ गये हैं ?

बैरा – दीदीको लेकर पश्चिम हवा खाने गये हैं।

रमेश – कहाँ गये हैं ?

बैरा—यह मैं नहीं कह सकता।

रमेश—साथमें कौन-कौन गया है ?

बैरा—नलिन बाबू साथमें हैं।

रमेश – यह नलिनबाबू कौन हैं ?

बैरा – यह मैं नहीं जानता।

रमेश पूछकर समझ गया, कि नलिनबाबू कोई युवापुरुष हैं, कुछ दिनसे इस घरमें आते-जाते हैं। यद्यपि रमेश हेमनलिनीकी आशाका त्याग करके ही जा रहा था, तथापि नलिनबाबूके प्रति उसके मनमें सद्भाव नहीं उत्पन्न हुआ।

रमेश – तेरी दीदीका शरीर कैसा है ?

बैराने कहा,—"उनका शरीर तो अच्छा है।"

सुक्खन बैरा समझा था, कि इस समाचारसे रमेशबाबू निश्चिन्त और सुखी होंगे। अन्तर्यामी ही जानते हैं, सुक्खन बैराने गलत गमझा।

रमेश—मैं जरा ऊपरके घरमें जाना चाहता हूँ।"

बैरा धुँआ फेंकता हुआ किरासनका डब्बू लेकर रमेशको ऊपर ले गया। रमेश भूतकी तरह हर कोठरीमें एक बार घूम आया। एक कुरसी चुनकर उसपर बैठ गया। देखा, कि चीज-वस्तु, घरकी सजावट, सब पहले हीके समान है, बीचमें यह नलिनबाबू कहाँसे कूद पड़े। संसारमें किसीके अभावसे अधिक दिनतक शून्यता नहीं रहती। जिस खिड़कीमें एकदिन हेमनलिनीके पास खड़े हो शान्त बरसातके श्रावणके सूर्यास्तकी आभामें दोनों हृदयोंका मिलन मण्डित हुआ था,—उस खिड़कीमें क्या

अब सूर्यकी आभा नहीं आती ? यदि उस खिड़कीके पास और कोई युगल मूर्तिकी रचना करना चाहे, तो क्या पहलेका इतिहास बाधा देकर खड़ा होगा ? चुपचाप उँगली उठाकर उन दोनोंको दूर हटा देगा ? दुःखित अभिमानसे रमेशका हृदय फूल आया।

दूसरे दिन रमेश इलाहाबाद न जाकर सीधे गाजीपुर चला गया।

३४

कलकत्तेमें रमेश प्रायः महीनेभर बिताकर आया है। यह एक महीना कमलाके लिये कम नहीं है। कमलाके जीवनमें एक परिणतिका स्रोत एकाएक बड़ी तेजीसे बह रहा है। ऊषाकी आभा जैसे देखते-देखते सवेरेकी धूपमें खिल उठती है,—वैसे ही कमलाकी नारीप्रकृति थोड़े दिनमें ही निद्रासे जागरणमें सचेत हो उठ है। शैलजासे यदि उसका घनिष्ठ परिचय न होता, शैलजाके जीवनके प्रेमके प्रकाशकी छटा और उत्ताप यदि उसके हृदयपर न पड़ता, तो न जाने कितने दिन उसका आसरा देखना पड़ता।

इस बीच रमेशके आनेमें देर देख शैलजाके विशेष अनुरोधसे चाचाने कमलाके रहनेके लिये गङ्गाके किनारे एक बंगला ठीक किया है। थोड़ा थोड़ा असबाब संग्रहकर मकान रहने योग्य बनानेके लिये तैयारी हो रही है और नई गृहस्थीके लिये जरूरतके मुताबिक नौकर-नौकरानियाँ भी ठीक कर ली गई हैं।

बहुत दिन देर करके रमेश जब गाजीपुर आया, तब चाचाके मकानमें पड़े रहनेकी कोई जरूरत न रही। एक दिन बाद कमलाने अपनी नई गृहस्थीमें प्रवेश किया।

बंगलेके चारो ओर बाग लगाने लायक जमीन काफी है। दो लाइन बड़े-बड़े शीशमकी कतारके बीच छायादार रास्ता है। जाड़ेकी संकरी गङ्गाके हट जानेसे गङ्गा और बंगलाके बीच एक नीची रेती निकल आई है—उस रेतीमें खेतिहरोंने जगह-जगह गेहूँ बो रखे हैं। बीच-बीच-में कहीं तरबूज और खरबूजा लगाये जा रहे हैं। मकानकी दाहिनी ओर गङ्गाकी तरफ एक बहुत बड़ा नीमका पेड़ है जिसके नीचे चौतरा बँधा है।

बहुत दिनतक किरायेदारके अभावसे मकान और जमीन अनादरकी हालतमें पड़ी रहनेकी वजह बागमें फूल-पौदे कुछ भी नहीं थे और मकान भी गन्दा हो रहा था। किन्तु कमलाको यह सब अच्छा जान पड़ा। गृहिणीका पद पानेकी आशासे उसकी दृष्टिमें सभी सुन्दर जान पड़ा। उसने मन ही-मन सब ठीक कर लिया, कि कौनसी कोठरी किस काम आयेगी और किस जमीनमें कौनसा पौदा लगाया जायगा। चाचा-से सलाह ले कमलाने सारी जमीन बो देनेकी व्यवस्था की। खुद खड़ी होकर रसोई घरमें चूल्हा बनवा लिया और उसके बगलमें भण्डार घर आदि जहाँ जैसा परिवर्त्तन आवश्यक था, सब ठीक कर डाला। सारे दिन धोना-धाना झाड़ना-बोहारना आदि कामोंका अन्त नहीं। चारो ओर कमलाका ममत्व फैलने लगा।

घरके कामोंमें रमणीका सौन्दर्य जैसा विचित्र है, जैसा मधुर है, वैसा और किसीका नहीं। रमेशने आज कमलाको उसी काममें लगी देखा—उसने मानों पक्षीको पिंजड़ेसे निकल कर आकाशमें उड़ते देखा। उसके प्रसन्न मुख और उसकी निपुण चतुरताने रमेशके मनमें एक नया विस्मय और बिखेर दिया।

इतने दिन रमेशने कमलाको अपनी जगह नहीं देखा—आज उसे जब उसने अपनी नई गृहस्थीके शिखरपर देखा तो सौन्दर्यके साथ उसे उसकी महिमा भी दिखाई दी।

कमलाके पास आकर रमेशने कहा,—"कमला, यह क्या कर रही हो। थक जाओगी।"

कमला अपने काममें लगी हुई जरा रुककर रमेशकी ओर देखा अपने मधुर मुखसे मुस्कराई, उसने कहा,—"नहीं; मैं न थकूँगी।"

रमेश उसका मतलब समझने आया था। इसे वह पुरस्कार स्वरूप समझ फिर अपने काममें लग गई।

मुग्ध रमेशने बहानेसे फिर उसके पास जाकर कहा,—"तुम कुछ खा चुकी हो कमला?"

कमलाने कहा,—"अच्छी तरह, खाया नहीं तो क्या भूखी हूँ? कभीकी खा चुकी।"

रमेश यह जानता था, फिर भी इस प्रश्नके बहाने कमलाका कुछ आदर किये बिना न रहा—कमला भी रमेशके इस प्रश्नसे खुश हुई।

रमेशने फिर बातका सिलसिला जारी रखनेके लिये कहा,—"कमला, तुम अपने हाथसे कितना काम करोगी—मुझे भी लगा लो न?"

कर्मिष्ठ आदमीमें यही एक दोष होता है, कि दूसरेके कामपर उसे अधिक विश्वास नहीं होता। उन्हें यह भय होता है, कि जिस कामको हम स्वयं न करेंगे, उस कामको दूसरा करके कहीं बिगाड़ न दे। कमलाने हँसकर कहा,—"नहीं, यह सब काम तुम लोगोंका नहीं है।"

रमेशने कहा,—"पुरुष बहुत सहनशील होते हैं, इसलिये मर्दोंके लिये तुम लोगोंकी इस अवज्ञाको हमलोग बरदाश्त करते हैं, विद्रोह नहीं करते—तुम्हारी तरह यदि मैं भी स्त्री होता, तो खूब झगड़ा करता। अच्छा, चाचाको तो तुम काममें लगा देती हो—क्या मैं उनसे निकम्मा हूं?"

कमलाने कहा,—"यह मैं नहीं जानती, किन्तु रसोई घरमें झाड़ू देनेके खयालसे भी मुझे हँसी आती है। तुम यहाँसे हटो—अब बहुत धूल उड़ेगी।"

रमेशने कमलासे बातका सिलसिला जारी रखनेके लिये कहा,—"धूल तो किसीका विचार करती नहीं, धूल जिस आँखसे मुझे देखती है, उसी आँखसे तुम्हें भी देखती है।

कमला—मेरा काम है, इसलिये मैं धूल सहती हूँ, तुम्हारा काम नहीं, तब तुम क्यों बरदाश्त करोगे?

रमेशने नौकरोंके कानमें आवाज न पहुँचनेके खयालसे धीरे-से कहा,—"काम हो या न हो, तुम जो तकलीफ सहोगी, उसका कुछ हिस्सा मैं लूँगा।"

कमलाकी कनपटी जरा लाल हो गई—रमेशकी बातका कोई जवाब न दे उसने जरा हटकर कहा,—"उमेश, यहाँ और एक घड़ा पानी छोड़ दे—देखता नहीं, कितना कीचड़ जमा है। झाड़ू मेरे हाथमें दे तो सही।" यह कहती झाड़ू लेकर वह सफाईमें लग गई।

रमेशने कमलाको झाड़ू देते देख कुछ व्यस्त होकर कहा,—"आहा कमला, यह क्या कर रही हो!"

इस समय पीछेसे आवाज आई;—"क्या है रमेश बाबू, यहाँ बेकामका कौन-सा काम हो रहा है। अँग्रेजी पढ़कर आप लोग मुँहसे साम्यका विचार प्रकट किया करते हैं; झाड़ू देनेका काम अगर इतना घृणित जान पड़ता है, तब नौकरके हाथमें ही क्यों झाड़ू देते हैं। मैं तो मूर्ख हूँ, अगर आप मुझसे पूछते हैं, तो मैं इन सती माईकी हाथमें झाड़ू की प्रत्येक सींकको सूर्यके किरणकी तरह उज्ज्वल देखता हूँ। बेटी, तुम्हारा जङ्गल मैं एक तरहसे समाप्त कर आया, अब जरा दिखा दो, कि तरकारी कहाँ बोओगी।"

कमलाने कहा,—"चाचाजी, जरा सब्र कीजिये, मेरी यह कोठरी साफ हो ही गई है।"

यह कह कमला घरकी सफाई कर कमरमें लिपटे अंचलसे माथा ढककर बाहर चाचाके साथ तरकारीके खेतके बारेमें सलाह करने लगी।

इसी तरह देखते-देखते दिन समाप्त हो गया, किन्तु घरकी सफाई अभीतक ठीक प्रकारसे नहीं हुई। बँगला बहुत दिनसे व्यवहारमें नहीं आता था, बन्द था, अब यह देखनेमें आया, कि और दो-चार दिन सफाई न होने और खिड़की-दर्वाजे खुला न रखनेसे मकान रहने लायक न होगा।

लाचार आज सन्ध्याके बाद चाचाके घरमें ही आश्रय लेना पड़ा। आज इससे रमेशका मन कुछ दब गया। आज वह दिनभर यही कल्पना करता रहा, कि उसके अपने एकान्तके कमरेमें शामको चिराग जलेगा और कमलाकी सलज्ज मुस्कुराहटके सामने रमेश अपने परिपूर्ण हृदयको अर्पण कर देगा। किन्तु और भी दो-चार दिन देर देख रमेश अपने अदालत-सम्बन्धी कामसे इलाहाबाद चला गया।

३५

दूसरे दिन कमलाके नये मकानमें शैलका चिउड़ेकी खिचड़ीका निमन्त्रण हुआ। विपिनके भोजनके बाद आफिस जानेपर शैल निमन्त्रण खाने गई। कमलाके अनुरोधसे चाचाने सोमवारको स्कूल छोड़ दिया। दोनोंने मिलकर नीमके पेड़के नीचे रसोई चढ़ा दी, रमेश सहायता देनेमें व्यस्त रहा।

रसोई और भोजन हो जानेपर चाचा घरमें जा दोपहरकी नींद लेने लगे और दोनों सखियाँ नीमके पेड़ तले बैठ अपनी सदाकी बात

चीतमें लग गईं। इस बातचीतमें मिलकर कमलाकी दृष्टिमें वह नदी-का किनारा, वह जाड़ेकी धूप और पेड़की छाया बहुत मनोहर हो पड़ी। इस मेघशून्य नीले आकाशमें जितनी ऊँचाई पर रेखाके समान चील्ह मँडरा रही है, कमलाके हृदयका उद्देश्य और आकांक्षा उतनी ही ऊँचाईपर उड़ने लगी।

सन्ध्या होनेसे पहले ही शैल घबरा उठी। उसके पतिके आफिससे आनेका समय है। कमलाने कहा,—"क्या एक दिन भी तुम्हारा नियम टूटने वाला नहीं।"

शैलने इस बातका कोई जवाब न दे जरा हँस कमलाकी ठोड़ी पकड़ कर हिला दिया—इसके बाद उसने बँगलेमें जाकर अपने पिताको जगाकर कहा,—"पिताजी, मैं घर जाती हूँ।"

कमलाकी ओर देखकर चाचाने कहा,—"बेटी, तुम भी चलो।"

कमलाने कहा —"नहीं, मेरा कुछ काम बाकी है, मैं शामके बाद आऊँगी।"

चाचा अपने पुराने नौकर और उमेशको कमलाके पास छोड़ शैल-को घर पहुँचाने चले गये। वहाँ उन्हें कुछ काम था, इसलिये कहा,—"मुझे लौटनेमें कुछ देर न होगी।"

कमलाने जब अपने घरकी सफाई समाप्त की, उस समय सूर्य अस्त हुए न थे। वह शिरसे शरीरतक एक रैपर ओढ़ नीमके पेड़के नीचे बैठ गई। दूर उस पार जहाँ दो-तीन बड़ी-बड़ी नावें अपने मस्तूल-की सुनहरी धूपमें काले पाल ताने खड़ी थीं, उसके पीछे ऊँचे ढूहेके पीछे सूर्य अस्त हो गये।

ऐसे समय उमेश एक बहानेसे सामने आ खड़ा हुआ। कहने लगा,—"माँजी, बहुत देरसे तुमने पान नहीं खाया—उस मकानसे आनेके समय मैं पान ले आया हूँ।" यह कहकर उसने कागजमें लपेटे कई बीड़े पान कमलाके हाथमें दिये।

तब कमलाको होश आया, कि शाम हो गई है। वह चटपट उठी। उमेशने कहा,--"चक्रवर्ती बाबूने गाड़ी भेज दी है।"

कमला गाड़ीपर सवार होनेसे पहले एकबार बँगलेकी सब कोठरियोंके देखनेके लिये भीतर गई।

बड़े कमरेमें जाड़ेके दिनमें आग जलानेके लिये एक अतिशदान बना हुआ था। उसीसे सटे ताकपर किरासिनकी रोशनी जल रही थी। उसी ताकपर पानकी पुड़िया रख वह कुछ और देखने जा रही थी। इसी समय एकाएक कागजमें लिपटा रमेशके हाथसे अपना नाम लिखा एक कागज उसे दिखाई दिया।

उमेशसे कमलाने पूछा,—"यह कागज तुमने कहाँ पाया?"

उमेशने कहा,—"बाबूके कमरेके कोनेमें पड़ा था, झाड़ू देनेके समय उठा लाया।"

कमला उस कागजको खोलकर पढ़ने लगी।

हेमनलिनीको उस दिन रमेशने विस्तारके साथ जो चिट्ठी लिखी थी, यह वही चिट्ठी है। शिथिल स्वभाव रमेशसे वह कब गिर गई, इसकी उसे कोई खबर नहीं।

कमलाने चिट्ठी समाप्त किया। उमेशने कहा,—"माँजी, इस तरह चुपचाप खड़ी क्यों हो! रात हो रही है।"

मकान सन्नाटा था। कमलाके मुँहकी ओर देख उमेश डरा। कहने लगा,—"माँजी, मेरी बात सुन रही हो? घर चलो, रात हो गई।"

कुछ देर बाद चाचाके नौकरने आकर कहा,—"माँजी, गाड़ी बहुत देरसे खड़ी है। चलिये, हमलोग चलें।"

३६

शैलजाने पूछा,--"ऐंजी, आज तुम्हारी तबीयत कैसी है? क्या शिर दर्द है?

कमलाने कहा,—"नहीं तो, चाचाजी दिखाई नहीं देते, कहाँ गये?"

शैलने कहा,—"स्कूलमें बड़े दिनकी छुट्टी है—दादीको देखनेके लिये मांने उन्हें इलाहाबाद भेज दिया है। कुछ दिनसे दादीकी तबीयत अच्छी नहीं है।"

कमलाने पूछा,—"वह कब आयेंगे?"

शैल—उनके आनेमें करीब एक सप्ताहकी देर होगी। तुम अपने बँगलेकी सजावटके लिये दिनभर मेहनत करती हो, तुम्हारी तबीयत बहुत सुस्त दिखाई देती है। आज जल्दी खा-पीकर सो रहो।

अगर शैलसे कमला सब बातें कह सकती, तो उसकी तबीयत हलकी होती—किन्तु कहने लायक बात नहीं है। "जिसे अबतक मैं अपना पति समझती थी वह मेरा पति नहीं है।" इस बातको वह किससे कहे। शैलसे तो किसी तरह भी कह नहीं सकती।

कमला अपने सोनेकी कोठरीका दरवाजा बन्दकर चिरागकी रोशनी-में एकबार रमेशकी वही चिट्ठी लेकर बैठी। चिट्ठी जिसके उद्देश्यसे लिखी गई है, उसका न नाम है और न पता। किन्तु वह स्त्री है, रमेशसे उसके विवाहका प्रस्ताव हुआ था और कमलाके कारण ही उसका सम्बन्ध टूट गया; चिट्ठीसे यह बातें साफ समझमें आ जाती हैं। जिसको चिट्ठी लिखी गई है, रमेश उसीसे प्रेम करता और उसे अपना हृदय दे चुका है। दैवी घटनावश न जाने कहाँसे कमला जाकर उसकी गर्दनपर सवार हो गई; इस अनाथके प्रति दयाकर अपने प्रेमके बन्धनको वह लाचार तोड़कर सदाके लिये उससे अलग होनेको तैयार है—यह बात भी चिट्ठीसे प्रकट होती है।

उस नदीकी रेतीमें रमेशकी पहली मुलाकातसे लेकर गाजीपुर आने तककी सब घटनाओंकी याद कमलाके मन-ही-मन जाग उठी—जो छिपा था, वह आज स्पष्ट हो गया।

रमेश सदासे उसे पराई स्त्री समझता है और सोच-सोचकर घबराता है, कि उसे लेकर वह क्या करे, इधर कमला निश्चिन्त मनसे उसे पति समझ बिना किसी सङ्कोचके उसके साथ चिर-स्थायी गृहस्थी बसाने चली है; उसकी लज्जा कमलाको बारबार गर्म सूजेकी तरह छेदने लगी। रोज-रोजकी विचित्र घटनाओंको यादकर वह मारे लज्जाके मानो जमीनमें धँसी जा रही है। यह लज्जा उसके जीवनके साथ मिलकर एक हो गई—इससे किसी तरह भी उसका उद्धार नहीं।

बन्द दर्वाजेको खोल कमला खिड़की राहसे बाहर निकल गई। अँधेरी जाड़ेकी रात काला आकाश काले पत्थरके तरह ठण्डा है; तारे साफ चमक रहे हैं।

सामने नाटे-नाटे कलमी आमोंकी छाया जमीनके अन्धकारको और बढ़ा रही है। कमला किसी तरह कुछ भी सोच समझ नहीं सकी। वह ठण्डी घासपर बैठ गई और लकड़ीकी मूर्तिकी तरह काठ हो रही—लेकिन उसकी आँखोंसे एक बूँद भी आँसू न निकला।

नहीं कहा जा सकता, कि इस तरह वह कब तक बैठी रहती—किन्तु कड़ी ठण्डकने उसकी छाती हिला दी—उसका सारा शरीर थर-थर काँपने लगा। बहुत रातको कृष्णपक्षके चन्द्रोदयने जब सन्नाटे ताड़ोंके बगीचेके अन्धकारके एक टुकड़े हिस्सेको काट दिया, तब कमलाने धीरे-धीरे कोठरीमें जाकर दर्वाजा बन्द कर लिया।

सवेरे कमलाने आँख खुलते ही देखा, कि शैल उसकी चरपाईके पास खड़ी है। बहुत दिन चढ़ा समझकर लज्जित कमला चटपट बिछौने पर उठ बैठी।

शैलने कहा,—'नहीं जी, तुम उठो नहीं, थोड़ा और सो लो—निश्चय तुम्हारी तबीयत अच्छी नहीं है। तुम्हारा मुँह बहुत सूखा-सूखा दिखाई दे रहा है। आँखके नीचे काला पड़ गया है। क्या हुआ है जी, मुझसे कहो न।" यह कह कमलाके पास बैठकर शैलजाने उसके गलेमें अपनी बाँह डाल दी।

कमलाकी छाती फूलने लगी—उसके आँसू रोके नहीं रुकते थे। शैलके कन्धेपर शिर झुकाते ही उसकी रुलाई फूट पड़ी। शैलने कुछ न कहकर उसे अपने दोनों हाथोंसे लिपटा लिया।

कुछ देर बाद कमला एकाएक शैलजाके हाथोंसे निकलकर उठ खड़ी हुई—आँख पोंछकर जोरसे हँसने लगी। शैलने कहा—"रहने दो, रहने दो, अब हँसनेकी जरूरत नहीं। मैंने बहुतेरी लड़कियाँ देखी, तुम्हारी जैसी दब्बू लडकी मैंने नहीं देखी। किन्तु तुम समझती हो, कि मुझसे सब छिपा लोगी—मुझे ऐसी बेवकूफ न समझना। तो फिर कहूं? रमेशने इलाहाबाद जानेके बादसे तुम्हें कोई चिट्ठी नहीं लिखी; इसीपर तुम चिढ़ी हो--मान कर बैठी हो। किन्तु तुम्हे भी समझना चाहिये, कि वह वहाँ कामसे गये हैं, दो दिनमें आवेंगे ही—इस बीच उन्हें कुछ समय नहीं मिला, इससे तुम इतनी खफा हो गई हो। छिः! किन्तु मैं यह भी मानती हूँ जा, तुम्हें तो आज मैं इतना उपदेश दे रही हूँ—मैं होती, तो मैं भी ऐसा ही कर बैठती। ऐसी झूठमूठकी रुलाई लड़कियोंको बहुत रोनी पड़ती है। फिर जब यह रुलाई दूर होगी और हँसी आ जायगी, तब कुछ भी याद न रहेगा"—यह कहती हुई कमलाको छातीके पास खींच शैलने कहा,—"आज तुम सोच रही हो, कि रमेश बाबूको कभी माफ न करोगी, क्यों यही न? अच्छा सच कहो—"

कमलाने कहा,—"हाँ, सच कहती हूं।"

शैलने कमलाके गालपर प्यारका थप्पड़ लगाकर कहा,—"धत्! यह बात है। अच्छा मैं भी देखूँगी—बाजी लगा लो।"

कमलासे बातचीत होनेके बाद ही शैलने इलाहाबादमें अपने बाप-को चिट्ठी लिखी। उसमें लिख दिया,—"कमला रमेशबाबूकी कोई चिट्ठी-पत्री न पानेके कारण चिन्तित है। एक तो बेचारी नई-नई विदेश आई है, उसपर रमेश बाबू उसे जबतब अकेली छोड़ जाते हैं और चिट्ठी भी नहीं लिखते; इससे उसको जितना कष्ट है, उसे जरा समझके देखो। क्या उनका इलाहाबादका काम खतम न होगा। काम सभी-को होता है, किन्तु क्या कामके कारण दो लाइन चिट्ठी लिखनेकी भी फुरसत नहीं मिलती।"

चाचाने रमेशसे मुलाकात कर अपनी कन्याकी चिट्ठीका विशेष अंश सुनाकर उन्हें धिक्कारा।

कमलाकी ओर रमेशका मन पूरी तरहसे आकृष्ट हो गया था, यह सही है, किन्तु आकृष्ट होनेके कारण ही उसकी दुविधा और बढ़ गई। इसी दुविधामें पड़कर रमेश इलाहाबादसे लौट नहीं रहा है। इसी बीच उसने चाचासे शैलकी चिट्ठीका हाल सुना।

चिट्ठीसे वह अच्छी तरह समझ गया, कि कमला रमेशके लिये विशेष उद्वेग प्रकट कर रही है—वह स्वयं लज्जाके मारे लिख नहीं सकी।

इससे रमेशकी दुविधाकी दो शाखाएँ देखते-देखते एक होकर मिल गईं। अब अकेले रमेशके सुख-दुःखकी बात तो है नहीं, कमला भी रमेशसे प्रेम करती है। विधाताने नदीकी रेतीमें दोनोंको मिलाया ही नहीं, दोनोंका मन भी एक कर दिया है।

यह सोचकर रमेश जरा भी देर न कर कमलाको एक चिट्ठी लिखने बैठ गया। लिखा "प्रियतमासु"—

कमला, तुम्हारा जो यह सम्बोधन किया, उसे चिट्ठी लिखनेकी एक प्रचलित पद्धति न समझना। यदि मैं तुम्हें संसारमें सबसे अधिक प्रिय न समझता, तो कभी भी प्रियतमाके नामसे सम्भाषण न करता। यदि तुम्हारे मनमें कभी कोई सन्देह हुआ हो, यदि मैंने कभी तुम्हारे कोमल हृदयको दुखाया हो, तो आज मैं सच्चे रूपमें तुम्हें जो प्रियतमा कह रहा हूँ, उससे तुम्हारा सब संशय और सब वेदनाएँ धुल जायेंगी। इससे बढ़कर और तुम्हें विस्तारके साथ क्या लिखूं अबतक मेरे कितने ही आचरण तुम्हारे लिये निश्चय दुःखदायी हुए होंगे, उससे यदि तुम मन ही-मन मेरे विरुद्ध अभियोग लगाओ, तो मैं प्रतिवादी होकर तुम्हारी बातको कभी न काटूंगा—मैं केवल इतना ही कहूँगा, कि आजसे तुम मेरी प्रियतमा हो। तुमसे बढ़कर प्रिय मेरे लिये और कोई नहीं। इन सबसे भी यदि मेरे अपराधका, सब असङ्गत आचरणोंका आखिरी जवाब न मिले तो फिर किसी तरह कुछ हो नहीं सकता।

'अतएव कमला, आज तुम्हें प्रियतमा सम्बोधन कर मैं अपने दोनोंके बीचके अतीतके संशयको दूर करता हूँ, यह प्रियतमा सम्बोधन कर मैं अपने दोनोंके प्रेमको भविष्यत्के लिये आरम्भ करता हूँ। तुमसे मेरी बहुत-बहुत बिनती है, कि तुम आजसे मेरे प्रियतमा शब्द पर पूर्ण विश्वास करो। अगर इसे तुम ठीक समझ कर अपने मनमें ग्रहण करो, तो कोई संशय न रख और कुछ पूछनेकी आवश्यकता न होगी।

"इसके बाद, मुझे इस बातके पूछनेका साहस नहीं होता, कि मैंने तुम्हारा प्रेम पाया है या नहीं मैं यह पूछूँगा भी नहीं। मेरे इस अनुच्चारित प्रश्नका अनुकूल उत्तर एक दिन तुम्हारे हृदयसे मेरे हृदयमें निःशब्द पहुँच जायगा; इसमें मैं जरा भी सन्देह नहीं करता। यह मैं अपने प्रेमके भरोसे कह रहा हूँ—मैं योग्यता पाकर अहंकार नहीं करता, किन्तु मेरी साधना क्यों न सार्थक होगी।

"मैं अच्छी तरह समझता हूँ, कि मैं जो लिखता हूँ, सहज क्यों नहीं हो रहा है—वह पढ़नेमें रचनाके समान जान पड़ता है—इच्छा होती है, कि इस चिट्ठीको फाड़कर फेंक दूँ। किन्तु जो चिट्ठी मनके मुताबिक होगी, उसका अभी लिखा जाना सम्भव नहीं। क्योंकि चिट्ठी दो आदमियोंकी चीज है—केवल एक ओरसे चिट्ठी लिखी जाती है. तो उस चिट्ठीमें ठीक तरहसे सब बातें नहीं लिखी जा सकतीं—तुम्हारे और हमारे जिस दिन मनकी पहचान बाकी न रहेगी, उसी दिन चिट्ठीके मुताबिक चिट्ठी लिख सकूँगा। आमने-सामने दो दर्वाजोंके खुले रहने पर ही उसमें बिना बाधाके हवा आती-जाती है। कमला, प्रियतमा, मैं तुम्हारे हृदयको कब पूरी तहरसे खोल सकूँगा ?

'इन सब बातोंकी मीमांसा धीरे-धीरे क्रम-क्रमसे होगी—व्यस्त होनेसे कोई फल नहीं। जिस दिन तुम्हें मेरी यह चिट्ठी मिलेगी, उसके दूसरे दिन सवेरे ही मैं गाजीपुर पहुँच जाऊँगा। तुमसे मेरा इतना ही अनुरोध है, कि गाजीपुर पहुँचने पर मैं अपने बँगलेमें ही तुम्हें देख पाऊँ। बहुत दिन घर-छोड़ आकी तरह बीते,—अब मुझे धीरज नहीं है—अब इस बार मैं अपने घरमें प्रवेश करूँगा—हृदयलक्ष्मीको गृह-लक्ष्मीके रूपमें देखूँगा। उसी समय दूसरी बार हमलोगोंकी शुभदृष्टि होगी। हमलोगोंकी वह प्रथम बारकी शुभदृष्टि तुम्हें याद है ? वही, चाँदनी रातमें, उस नदीके किनारे, सन्नाटी रेतीमें ? वहाँ छत नहीं थी, दीवार नहीं थी, पिता-माता भाई या आत्मीय पड़ोसियोंका कोई सम्बन्ध नहीं था—यह घरसे एक दम बाहरकी बात है। मानो वह स्वप्न था, वह कुछ भी नहीं था। इसीलिये और एक दिन स्निग्ध और निर्मल प्रातःकालकी रोशनीमें घरके भीतर, सचमुच उस शुभदृष्टिको सम्पूर्ण कर लेनेकी अपेक्षा है। पुण्य पौष महीनेकी प्रातःकालमें अपने घरमें तुम्हारी सरल और सहास्य मूर्तिको चिर जीवनकी तरह

अपने हृदयमें अङ्कित कर लूँगा; उसके लिये मैं आग्रहसे परिपूर्ण हूँ। प्रियतमे, मैं तुम्हारे हृदयके द्वारका अतिथि हूँ—मुझे लौटाना नहीं।

प्रसादभिक्षु—रमेश।"

———

३७

शैलने मुरझाई हुई कमलाको कुछ उत्साहित करनेके लिये कहा,—"आज अपने बँगले न जाओगी?"

कमलाने कहा,—"नहीं अब जरूरत नहीं।"

शैल—तुम्हारे घर की सजावट पूरी हो गई?

कमला—हाँ जी, पूरी हो गई।

कुछ देर बाद फिर शैलने आकर कहा,—"तुम्हें एक चीज दूँ, तो बोलो क्या दोगी?"

कमला—"मेरे पास क्या है दीदी?"

शैल—क्या कुछ भी नहीं?

कमला—कुछ नहीं।

शैलने कमलाके शिरमें ठुमकी देकर कहा,—"धत्, जो कुछ था भी, जान पड़ता है कि वह सब तुमने किसी एकको अर्पण कर दिया है। देखो, यह क्या है।" कहते हुए शैलने आँचलके भीतरसे एक चिट्ठी निकाली।

लिफाफे पर रमेशकी लिखावट देख कमलाका मुँह उसी समय पीला पड़ गया—उसने जरा मुँह फेर लिया।

शैलने कहा,—वाह जी, अब मान करनेसे काम न चलेगा; बहुत हो गया। इधर चिट्ठी लूट लेनेके लिये भीतरसे मन छटपटा रहा

है—मुँह खोलकर तुम्हारे बिना माँगे मैं न दूँगी—कभी न दूँगी—देखूँ कबतक तुम्हारी जिद रहती है।"

इसी समय उमा साबुनके एक बक्समें डोरी बाँध खींचती हुई आकर बोली,—"मासी ग-ग।"

कमला चटपट उसको गोदमें उठा बारबार चूमती हुई सोनेकी कोठरीमें चली गई। उमा अपनी गाड़ी चलानेमें बाधा पड़नेकी वजह चीखने लगी—किन्तु कमलाने किसी तरह नहीं छोड़ा—उसे कोठरीमें ले जाकर तरह-तरहकी बकवादसे उसका मनोरञ्जन करनेकी चेष्टा करने लगी।

शैलने आकर कहा,—"मैं हारी—तुम्हारी जीत हुई—मैं ऐसा न कर सकती। तुम धन्य हो। यह लो चिट्ठी, मैं क्यों नाहक अभिशाप लूँ।"

यह कह वह बिछौने पर चिट्ठी फेंक उमाको उसकी गोदसे छुड़ा कर ले गई।

लिफाफेको जरा इधर-उधर देख कमलाने चिट्ठी खोली—पहली दो-चार लाइनोंपर दृष्टि पड़ते ही उसका चेहरा लाल हो उठा। मारे लज्जाके उसने चिट्ठी फेंक दी। पहले धक्केकी प्रबल वितृष्णाके आवेगको संभाल फिर चिट्ठीको जमीनसे उठाकर पढ़ा। नहीं मालूम, कि सारी बातें वह समझी या नहीं, किन्तु उसके मनमें ऐसा जान पड़ा, मानो वह हाथमें कुछ कीचड़ लिये हुई है। उसने फिर चिट्ठी फेंक दी। जो आदमी उसका पति नहीं, उसीके साथ गृहस्थी चलानी होगी, इसीसे यह अभिमान है। रमेशने जान-बूझकर इतने दिन बाद उसका अपमान किया। गाजीपुर आनेपर रमेशकी ओर कमलाने जो अपना हृदय बढ़ा दिया था, वह रमेश समझ कर या अपना पति समझ कर। रमेशने ऐसा ही लक्ष्य किया था, इसीसे अनाथके प्रति दयाकर उसने आज यह प्रेमपत्र लिखा है। भ्रमसे उसने रमेशके आगे जो प्रकट किया था, उसे आज कमला कैसे लौटा ले—किस तरह! इतनी

लज्जा और इतनी घृणा कमलामें क्यों हुई। उसने जन्म पाकर किसका क्या अपराध किया है। अब घरके नामसे मानो कोई भयानक जानवर कमलाको खा जानेके लिये आ रहा है—इससे कमला कैसे रक्षा पाये। दो दिन पहले कमलाने स्वप्नमें भी यह कल्पना नहीं की थी, कि रमेश उसके लिये इतनी बड़ी विभीषिका बन जायगा।

इसी समय दर्वाजेके पास आकर उमेश खाँसा। कमलाकी ओरसे कोई इशारा न पाकर उसने कहा,—"माँजी, आज सिधुबाबूके यहाँ लड़कीके विवाहमें कलकत्तेसे एक रासधारियोंका दल आया है।"

कमलाने कहा—"ठीक तो है उमेश, तू जाकर रास देख।"

उमेश—क्यों कल सवेरेके लिये फूल तोड़कर लाना है?

कमला—नहीं-नहीं, कोई जरूरत नहीं।

उमेश चला जा रहा था, तब कमलाने एकाएक उसे आवाज दी; कहा,—"अरे उमेश, तू रास देखने जा रहा है? यह पाँच रुपये ले।"

उमेश आश्चर्यमें आया। रास देखनेमें पाँच रुपयेकी क्या जरूरत, यह वह समझ न सका। उसने पूछा,—"माँजी, क्या शहरसे तुम्हारे लिये कुछ ले आना है?"

कमला—नहीं-नहीं, मुझे कुछ न चाहिये। तू अपने पास रख, तेरे काम आयेगा।

बेवकूफ उमेश जानेको तैयार हुआ, तब कमलाने फिर उसे बुलाकर कहा,—"उमेश, तू इसी कपड़ेसे रास देखने जायगा—तुझे लोग क्या कहेंगे।"

उमेशको इस बातका खयाल भी न था, कि लोग उमेशकी सजावट पर विशेष ध्यान देंगे उसमें त्रुटि होनेसे आलोचना करेंगे। इसलिये धोतीकी सफेदी और दुपट्टेके अभावकी ओर उसका ध्यान भी नहीं था। कमलाका प्रश्न सुन उमेश कुछ न बोल सिर्फ हँस दिया।

कमलाने अपनी जोड़ा धोती उमेशके आगे फेंककर कहा,—"यह ले, पहन ले।"

धोतीका चौड़ा किनारा देख उमेश बहुत प्रसन्न हो उठा। उसने कमलाके पैरोंपर गिरके प्रणाम किया और हँसी रोकनेकी वृथा चेष्टासे मुँह बनाता चला गया। उमेशके चले जानेपर कमला आँखके आँसू पोंछ खिड़कीके पास चुपचाप खड़ी हो गई।

शैलने कोठरीमें आकर कहा,—"कमला, मुझे अपनी चिट्ठी न दिखायेगी?"

कमलाके आगे शैलने कोई बात छिपाई नहीं थी—इसीसे शैलने इतने दिन बाद मौका पाकर यह बात कही।

कमलाने कहा,—वह पड़ी है दीदी, देखो न।" कहकर उसने जमीनपर पड़ी चिट्ठीकी ओर इशारा किया। शैलने आश्चर्यमें आकर सोचा, "वाह रे, अभीतक क्रोध नहीं गया।" जमीनसे चिट्ठी उठाकर शैल सब पढ़ गई। चिट्ठी में प्रेमकी बातें बहुत हैं सही, फिर भी यह किस ढङ्गकी चिट्ठी। आदमी अपनी स्त्रीको ऐसी ही चिट्ठी लिखता है! यह न जाने कैसी लिखावट है। शैलने पूछा,—"अच्छा, क्या तुम्हारे पति उपन्यास लिखते हैं।"

"पति" शब्द सुनते ही क्षणभरमें कमलाका शरीर और मन सङ्कुचित हो गया। उसने कहा,—"मालूम नहीं।"

शैलने कहा,—"तब तुम आज बँगलेमें ही रहोगी?"

कमलाने शिर हिलाकर प्रकट किया, कि हाँ।

शैलने कहा,—"मैं भी आज शामतक तुम्हारे साथ रह सकती, किन्तु जानती हो जी, आज नरसिंह बाबूकी बहू आयेंगी। बल्कि माँ तुम्हारे साथ चली जायेंगी।"

कमलाने व्याकुलताके साथ कहा,—"नहीं-नहीं, माँ जाकर क्या करेंगी। वहाँ नौकर तो हैं ही।"

शैलने हँसकर कहा,—"और तुम्हारा वाहन उमेश भी है; तुम्हें डर काहेका ?"

उस समय उमा कहींसे एक पेन्सिल पाकर दीवारमें जहाँ-तहाँ घिसने लगी और चिल्ला-चिल्लाकर अनजान भाषामें न जाने क्या बक रही थी। वह अपनी समझमें पढ़ रही थी। शैल उसकी इस साहित्य-रचनासे उसे जबर्दस्ती खींच लाई—वह जोरसे चीखकर आपत्ति मचाने लगी। कमलाने कहा,—"तुझे एक बढ़िया चीज दूँगा, आओ।"

यह कह उसने उसे उठा कोठरीमें ले जाकर बिछौनेपर पटककर खूब खेलाया। जब उसने "बढ़िया चीज" माँगी, तब कमलाने अपना वाक्स खोल एक जोड़ा सोनेका ब्रेसलेट निकाला। यह दुर्लभ खिलौना पाकर उमा बहुत खुश हुई। मासीने उसके हाथमें पहना दिया, वह झगमग करती हुई ढीला गहना सँभालनेके लिये दोनों हाथ उठाये बड़े गर्वसे अपनी माँको दिखाने आई। माने व्याकुलताके साथ उसे लौटानेके खयालसे ब्रेसलेट उतार लिया—कहा,—"कमल, यह तुम्हारी कैसी बुद्धि है ? ऐसी चीजें उसके हाथमें क्यों देती हो ?"

इस दुर्व्यवहारसे उमा बहुत जोरसे चीख उठी। कमलाने पास आकर कहा,—"दीदी, यह ब्रेसलेटका जोड़ा मैंने उसको दिया है।"

शैलने चकित होकर कहा,—"तुम पागल हो क्या ?"

कमलाने कहा,—"तुम्हें मेरे माथेकी कसम दीदी, यह ब्रेसलेटका जोड़ा तुम मुझे लौटा न सकोगी। इसको तोड़वाकर उमियाको हार बनवा देना।

शैलने कहा,—"सच कहती हूँ, तुम्हारे जैसी पागल लड़की मैंने नहीं देखा।"

यह कहकर वह कमलाके गलेसे लिपट गई। कमलाने कहा,—"आज तुम्हारे घरसे तो मैं चली दीदी—बड़े सुखसे रही—ऐसा सुख

मैंने अपने जीवनमें कभी नहीं पाया।" यह कहते-कहते उसकी आँखोंसे झर-झर आँसू गिरने लगे।

शैलने भी अपने उमड़ते हुए आँसूको रोककर कहा,—"यह तुम्हारी आदत है कमल, मानो बहुत दूर जा रही हो। तुम जैसे सुखमें रहीं, उसे मैं खूब समझती हूँ—अब तुम्हारी सब बाधाएँ दूर हुईं, सुखसे अपने घरमें अकेली राज्य करो—कभी-कभी हम लोगोंके आनेपर खयाल रखना।"

कमलाने इसके जवाबमें हाँ-ना कुछ नहीं कहा।

बँगलेमें जाकर कमलाने देखा, कि उमेश आ गया है। तू कहाँ, रास देखने न जायगा?"

उमेशने कहा,—"तुम जो आज यहाँ रहोगी,—मैं—"

कमला—अच्छा-अच्छा, तुझे इसमें काहेकी चिन्ता है। तू रास देखने जा— यहाँ बिपण है न। जा, देर न कर।

उमेश—अभी रासमें बहुत देर है।

कमला—होने दे, विवाहके घरमें खूब धूमधाम होता रहता है, अच्छी तरह देखके आना, जा।

इस बारेमें उमेशको अधिक उत्साहित करनेकी जरूरत नहीं थी। उसे जानेपर तैयार देख कमलाने बुलाकर कहा,—"चाचाजीके आने पर तू—"

इतना ही कहकर चुप हो गई, आगे कुछ कह न सकी। उमेश उसके मुँहकी ओर देखता ही रह गया। कमलाने कुछ देर सोचकर कहा,—"याद रखना, चाचाजी तेरा प्यार करते हैं—तुझे जब जिस चीजकी जरूरत पड़े, मेरा प्रणाम कहकर तू उनसे माँग लेना, वह देंगे—उनसे मेरा प्रणाम कहना न भूलना—समझा?"

उमेश इस सिखावनका कोई अर्थ न समझकर 'अच्छा" कह वहांसे चला गया।

शामको बिशुनने पूछा,—"माँजी, कहाँ जा रही हैं ?"

कमलाने कहा,—"गङ्गा स्नान करने जा रही हूँ।"

बिशुनने कहा,—"मैं साथ चलूँ ?"

कमलाने कहा,—"नहीं, तू घरका खयाल रख।" यह कहती हुई वह उसके हाथमें अनायास ही एक रुपया देकर चली गई।

———

३८

एक दिन शामको हेमनलिनीके साथ एकान्तमें चाय पीनेकी आशासे अन्नदाबाबू उसे ढूँढ़नेके लिये दो मञ्जिल पर गये। दो-मञ्जिलेके बैठनेके कमरेमें उसे नहीं पाया, सोनेकी कोठरीमें भी वह नहीं। बैरासे पूछनेपर मालूम हुआ, कि वह कहीं बाहर नहीं गई। तब बहुत हैरानीमें पड़ अन्नदाबाबू ऊपरी छतपर गये।

उस समय कलकत्ता शहरके अनेक आकार और आयतनके विस्तृत छतोंपर हेमन्तकी धूप मलिन पड़ रही है—दिनके अन्तकी हलकी हवा इच्छानुसार घूम-फिर रही है। हेमनलिनी छतकी मुँडेरके पास बैठी है।

अन्नदाबाबू कब उसके पीछे आकर खड़े हो गये, इसकी उसे खबर भी नहीं। आखिर जब धीरे-धीरे अन्नदाबाबूने उसके पास आकर उसके कन्धेपर हाथ रखा, तब वह चौंक उठी और इसके बाद ही कसके चेहरेपर लाली दौड़ गई। हेमनलिनीके चटपट उठनेसे पहले ही अन्नदाबाबू उसके पास बैठ गये। थोड़ी देर ठहर उन्होंने ठण्डी साँस लेकर कहा,—"हेम, इस समय यदि तेरी माँ होती! मैं तेरे किसी काम न आया।"

बूढ़ेके मुँहसे ऐसे करुण वचन सुन हेमनलिनी मानो एक गहरी मूर्छासे एकाएक जाग उठी। उसने एकबार अपने बापके मुँहकी ओर देखा। उस चेहरेपर कितना स्नेह, कैसी करुणा, कैसी वेदना है। इन कई दिनोंमें उनके चेहरमें कुछ परिवर्तन हो गया है। संसारमें हेमनलिनीके नाते जैसा अन्धड़ उठा है, उसका सारा वेग अपने ऊपर लेकर वृद्ध अकेला जूझ रहा है—वह कन्याके घायल हृदयके पास बराबर आते हैं—धीरज देनेकी सब चेष्टाओंको व्यर्थ हुई देख आज हेमनलिनीकी माँ उन्हें याद आई है और उनके अपने अक्षम स्नेहके भीतरसे ठण्डी साँस उथल रही है—एकाएक हेमनलिनीके आगे आज यह सब बज्रकी चमकके समान जान पड़ा। धिक्कारके आघातने उसे अपने शोकके घेरेसे एक मुहूर्त्तमें बाहर निकाल दिया। जो पृथिवी उसके आगे छायाकी तरह विलीन हो गई थी, वह अब सत्य होकर प्रकट हो पड़ी। एकाएक एक क्षणमें हेमनलिनीके मनमें बहुत लज्जा आ गई। जिस यादमें वह एकदम डूबी बैठी थी, उसको जबर्दस्ती अपनी चारो ओर झटकार-फटकार उसने अपनेको मुक्त किया। उसने पूछा,—"पिताजी, अब तुम्हारी तबीयत कैसी है?'

तबीयत! तबीयत ही तो आलोच्य विषय है; उसे अन्नदा कई दिनसे एकदम भूल गये थे। उन्होंने कहा,—"मेरी तबीयत! मेरी तबीयत तो बहुत अच्छी है, बेटी! इस समय मेरा चेहरा जैसा हो गया है वह तुम्हारी तबीयतकी चिन्तामें है। हमलोगोंका शरीर न जाने कबसे टिका हुआ है; हमलोगोंको सहज ही कुछ नहीं होता। तुम लोग अभी उसदिनकी हो, भय होता है, कि कहीं चोट न दे बैठे।" यह कह वह धीरे-धीरे उसकी पीठपर हाथ फेरने लगे।

हेमनलिनीने पूछा,—"अच्छा पिताजी, माता जब मरी, तो मैं कितनी बड़ी थी?"

अन्नदा—उस समय तू तीन वर्षकी बच्ची थी, कुछ-कुछ बोलने लगी

थी। मुझे अच्छी तरह याद है, तूने पूछा था कि 'माँ कहाँ गई ?' मैंने कहा था, कि तेरी माँ अपने बापके यहाँ गई है। तेरे पैदा होनेसे पहले ही तेरी माँके पिताकी मृत्यु हो चुकी थी, तूने उन्हें देखा भी नहीं। मेरी बात सुन कुछ न समझ सकनेके कारण तू मेरा मुँह देखने लगी थी। कुछ देर बाद तू मेरा हाथ पकड़े अपनी माँकी सूनी कोठरीमें ले जानेके लिये खींचने लगे। तुझे विश्वास था, उस शून्यतामें मैं तुझे उसका कोई पता बता सकूँगा। तू समझती थी कि तेरे पितामें बड़ी शक्ति है, उस समय तेरे मनमें यह बात आ ही नहीं सकती थी, कि जो असल बात है, उसमें तेरे पिता बच्चोंके समान अनजान और अक्षम हैं। आज भी यही बात याद आती है, कि मनुष्य कितना अक्षम है—ईश्वरने आपके मनमें स्नेह दिया है, किन्तु क्षमता बहुत कम ही है।

यह कहते हुए उन्होंने हेमनलिनीके माथेपर अपना दाहना हाथ फेरा।

हेमनलिनी अपने पिताके कल्याणवर्षी काँपते हुए हाथको अपने एक हाथसे पकड़ दूसरे हाथसे सुहलाने लगी। उसने कहा,—"माताकी मुझे बहुत थोड़ी-सी याद है। मुझे याद है, कि दोपहरके समय वह बिछौनेपर लेट किताब पढ़ा करती थीं, मुझे यह बिलकुल ही अच्छा न लगता था, मैं उनसे किताब छीननेकी चेष्टा किया करती थी।"

उस समय ऐसी ही पुरानी बातें उठीं। माँ कैसी थी, क्या किया करती थी, उस समय क्या होता था; ऐसी ही बातचीतमें सूर्य अस्त हो गये और आकाश मलिन तांबेके रङ्ग जैसा हो गया। कलकत्तेमें चारो ओर कामका कोलाहल हो रहा है, ऐसे ही समय एक गलीके मकानकी छतके एक कोनेमें यह वृद्ध और नवयुवती मिलकर पिता और कन्याके स्निग्ध सम्बन्धको सन्ध्याके आकाशकी मलिन छायामें आँसूसे तर माधुरीमें परिणत कर रहे हैं।

इसी समय सीढ़ीपर योगेन्द्रके पैरकी आवाज सुननेसे दोनोंकी बातचीत रुक गई और चौंककर दोनों ही खड़े हो गये। योगेन्द्रने आते ही दोनोंकी ओर तेज निगाहसे देखकर कहा,—"आजकल इसी छतपर हेमकी सभा बैठती है ?"

योगेन्द्र अधीर हो गया था। घरमें जो दिनरात एक शोककी कालिमा छाई रहती थी, उसने उसे प्रायः घर-छोड़ूआ सा बना दिया। फिर भी इष्ट-मित्रोंके घर जानेसे हेमनलिनीके विवाहके विषयमें हर तरहकी जवाबदेहीमें पड़ना पड़ता था, इससे कहीं जाना भी मुश्किल था। वह केवल यही कहा करता,—"हेमनलिनी बहुत बढ़-चढ़ गई है। लड़कियोंको अँग्रेजी उपन्यास पढ़ानेसे यही दुर्गति होती है। हेम, सोचती है, कि जब रमेशने उसे परित्याग किया है। तब उसे भी अपना हृदय तोड़ डालना चाहिये; इसीसे आजकल बड़ी तैयारीके साथ वह हृदय तोड़ रही है। उपन्यास पढ़कर कितनी लड़कियोंके भाग्यमें प्रेमकी निराशा सहनेका ऐसा अच्छा सुयोग मिलता है !"

योगेन्द्रके कड़े वचनोंसे कन्याको बचानेके लिये अन्नदाबाबू बोल उठे,—"मैं हेमके साथ कुछ बातचीत कर रहा था। मानो वे ही बातचीतके लिये हेमको ले आये थे।

योगेन्द्रने कहा,—"तो क्या चायके टेबिलपर बातचीत नहीं हो सकती ? पिताजी, तुम केवल हेमको पागल बना देनेकी चेष्टा कर रहे हो। इस तरह तो मकानमें रहना भी कठिन है।"

चौंककर हेमनलिनीने पूछा,—"पिताजी, अभीतक तुमने चाय नहीं पी ?"

योगेन्द्र—चाय कुछ कविकी कल्पना तो है नहीं, जो सन्ध्या समयके आकाशकी सूर्यास्तकी आभासे टपक पड़ेगी। छतके कोनेमें बैठनेसे चायका प्याला न भरेगा, क्या यह भी समझाना पड़ेगा ?

अन्नदा हेमनलिनीकी लज्जा दूर करनेके लिये जल्दीसे बोल उठे,—"मेरी इच्छा है, कि आज मैं चाय न पीऊँगा।"

योगेन्द्र—क्यों पिताजी, क्या तुम सब लोग तपस्वी ही हो जाओगे। तब मेरी क्या दशा होगी। वायु-आहार मुझसे हो न सकेगा।

अन्नदा—नहीं नहीं, तपस्याकी बात नहीं हो रही है। कल रात मुझे अच्छी नींद नहीं आई; उसीसे विचार कर रहा था, कि आज चाय न पीकर देखूँ कैसी तबीयत रहती है।

वास्तवमें हेमनलिनीसे बात करनेके समय भरे हुए चायके प्यालेकी ध्यान मूर्तिने अनेक बार अन्नदाबाबूको लुभाया है, किन्तु आज वे उठ नहीं सके। बहुत दिन बाद आज हेमनलिनी उनसे अच्छी तरह बात-चीत करती है, उस एकान्त छतपर दोनोंमें खूब बातचीत हुई है; ऐसे गहरे भावसे और कभी बातें नहीं हुईं। इस बातचीतके एक जगहसे दूसरी जगह खींच ले जानेमें ठीक न होगा—हटानेकी चेष्टा करनेसे ही डरी हुई हरिणीकी तरह वह भागेगी। इसीलिये आज अन्नदाबाबूने चायके प्यालेकी दुलाहटकी भी उपेक्षा की है।

हेमनलिनीको इस बातका विश्वास नहीं हुआ, कि अन्नदाबाबू चाय पीना बन्दकर अनिद्राकी चिकित्सा कर रहे हैं। उसने कहा—"चलो पिताजी, चाय पीयोगे।" उसी समय अन्नदाबाबू अनिद्राकी आशङ्काको भूल चायके टेबिलकी ओर लपके।

चाय पीनेकी कोठरीमें पहुँचते ही अन्नदाबाबूने देखा, कि वहाँ अक्षय बैठा हुआ है। उनका मन कुछ हिचक उठा। उसके मनमें आया, कि हेमनलिनीका मन आज कुछ अच्छा हुआ है, किन्तु अक्षयको देखते ही वह फिर विकल हो उठेगी—फिर भी कोई उपाय नहीं। क्षणभरमें ही हेमनलिनी भी कमरेमें आई। अक्षय उसे देखते ही उठ खड़ा हुआ और बोला,—"तब योगेन्द्र, मैं जाता हूँ।"

हेमनलिनीने कहा,—"क्यों अक्षय बाबू, क्या आपको कोई काम है? एक प्याला चाय पीते जाइये।"

हेमनलिनीकी इस अभ्यर्थनासे घरके सभी लोग आश्चर्यमें आये। अक्षयने फिर बैठकर कहा,—"आपके न रहते मैं दो प्याले चाय पी चुका हूँ। दबावमें पड़नेसे और भी दो प्याले पी सकता हूँ, यह कैसे कहूँ।"

हेमनलिनीने हँसकर कहा,—"चायके प्यालेके लिये तो आपसे कभी जिद नहीं की गई।"

अक्षयने कहा,—"नहीं, अच्छी चीजको तो मैं कभी लौटा ही नहीं सकता; विधाताने मुझे इतनी बुद्धि दी है।"

योगेन्द्रने कहा,—इस बातको यादकर किसी दिन अच्छी चीज तुम्हें न लौटा दे। मैं यही आशीर्वाद करता हूँ।

बहुत दिन बाद अन्नदाबाबूके टेबिलपर इस तरह सहजमें ही बातचीत जम उठी। हमेशा हेमनलिनी शान्तभावसे हँसती थी, आज उसके हँसनेकी आवाज बीच-बीचमें बात-चीतसे भी ऊँची जाने लगी। उसने हंसीमें अन्नदाबाबूसे कहा,—"पिताजी, जरा अक्षयबाबूकी बातें देखिये—कई दिनसे तुम्हारी गोली न खाकर भी ये अच्छे हैं। अगर उसपर कुछ भी कृतज्ञता होती, तो अबतक माथा धर लेता।"

योगेन्द्र—इसीको कहते हैं हरामीकी गोली।

अन्नदाबाबू खूब प्रसन्न होकर हँसने लगे। बहुत दिन बाद आज फिर उनकी गोलियोंके डब्बेपर आत्मीय लोगोंका कटाक्ष चला है; इसे वह पारिवारिक स्वास्थ्यका लक्षण समझे थे, उनके मनसे एक भाव दूर हो गया।

उन्होंने कहा,—"शायद इसीको विश्वासमें हस्तक्षेप करना कहते हैं! मेरी गोली खानेवालोंमें सिर्फ एक अक्षय है, उसे भी तुम लोग भड़काना चाहते हो।"

अक्षयने कहा,—"इसका कोई भय नहीं अन्नदाबाबू, अक्षयको बहकाना जरा कठिन है।"

योगेन्द्र—नकली रुपयेकी तरह—तोड़ाने जानेसे पुलिस केसकी सम्भावना है।

इस तरहके हँसी-मजाकसे अन्नदाबाबूके चायके टेबिलका भूत मानो बहुत दिनके बाद उतर गया।

आज चायके टेबिलकी सभा जल्दी न उखड़ती—किन्तु आज हेमनलिनीने ठीक समय से चोटी नहीं की थी, इसलिये चली गई—तब अक्षयको भी एक कामकी याद आई - वह भी चला गया।

योगेन्द्रने कहा,—"पिताजी, अब देर करनेकी जरूरत नहीं—हेमनलिनीके विवाहका ठीक कर डालो।"

अन्नदाबाबू हैरान होकर उसके मुँहकी ओर देखते रह गये। योगेन्द्रने कहा,—"रमेशके साथ विवाह सम्बन्ध टूट जानेसे समाजमें बहुत कानाफूसी चल रही है—इसलिये मैं कहाँतक लोगोंसे अकेला झगड़ता रहूँगा। अगर सब बातें खोलकर कहने लायक होतीं, तो झगड़ा करनेमें मुझे आपत्ति न होती। किन्तु हेमके कारण मुँह खोलकर मैं कुछ कह नहीं सकता। नाहक बात-बतङ्गड़ करना पड़ता है। अभी उस दिन अखिलको धमकाना पड़ा। सुनता हूं, कि उसके मनमें जो आता है, वही बका करता है। अगर शीघ्र हेमका विवाह हो जाय, तो यह सब बातें खतम हो जाय और मुझे भी आस्तीन खिसकाते हुए लोगोंको धमकाते न फिरना पड़े। मेरी बात मानो, अब देर न करो।"

अन्नदा—विवाह किसके साथ होगा योगेन्द्र?

योगेन्द्र—एक ही आदमी तो है। जो मामला हो गया है, और जिसके बारेमें बातें उठ रही हैं. उससे पात्रका मिलना मुश्किल है। केवल बेचारा अक्षय रह गया है—उसे कोई किसी तरह भी बिगाड़

नहीं सकता। उसे गोली खिलाना चाहो, तो गोली खायगा—विवाह करना चाहो, तो विवाह करेगा।

अन्नदा—पागल हुए हो योगेन्द्र ? अक्षयसे हेम विवाह न करेगी।

योगेन्द्र—अगर तुम बीचमें न पड़ो, तो मैं उसे राजी कर ले सकता हूँ।

अन्नदाने घबराकर कहा,—"नहीं योगेन्द्र, नहीं; तुम हेमको नहीं पहचानते। तुम उसे भय दिखाकर कष्ट पहुँचाकर हैरान कर डालोगे। अब उसे कुछ दिन आरामसे रहने दो—उस बेचारीने बहुत कष्ट पाया है, विवाहके लिये अभी बहुत समय है।"

योगेन्द्रने कहा,—"मैं उसे जरा भी कष्ट न दूँगा। जहाँतक सावधानी और मिठाससे काम होगा, उसमें त्रुटि न होगी। तुम क्या समझते हो, क्या मैं जगड़ा किये बिना कोई बात कर नहीं सकता ?"

योगेन्द्र अधीर प्रकृतिका आदमी है। उस दिन चोटी करके शामको सामने आते ही योगेन्द्रने उससे कहा,—"हेम, तुमसे कुछ बात करना है।"

बात करना है, सुनते ही हेमका हृदय काँपा। योगेन्द्रके साथ-साथ वह बैठकके कमरेमें आकर बैठ गई। योगेन्द्रने कहा,—"हेम, पिताजीकी तबीयत कैसी खराब होती जाती है, यह तो तुम भी देखती हो हो ?"

हेमनलिनीके चेहरेपर कुछ उद्वेग छा गया, उसने कुछ न कहा।

योगेन्द्र—मेरा कहना है, कि इसका कोई उपाय न करनेसे वह बदतर बीमार हो जायेंगे।

हेमनलिनी समझ गई, कि उसके पिताकी अवस्थताका अपराध उसको ही लग रहा है। वह शिर नीचाकर उदास मुँहसे धोतीका किनारा खींचने लगी।

योगेन्द्रने कहा,—"जो होना था, वह हो चुका, उसके बारेमें जहाँ तक बात बढ़ेगी, वहाँतक लज्जाकी बात है। अब अगर पिताजीको तन्दुरुस्त किया चाहती हो, तो जहाँतक शीघ्र हो सके, इन सब अप्रिय बातोंको काट फेंकना चाहिये।"

यह कह जवाबके आसरेमें योगेन्द्र हेमनलिनीके मुँहकी ओर चुपचाप देखता रहा।

हेमने सलज्ज भावसे कहा,—'ऐसी सम्भावना तो नहीं है, कि मैं इन सब बातोंके लिये पिताजीको कुछ विरक्त करूँ।"

योगेन्द्र—मैं जानता हूं, कि तुम ऐसा न करोगी। किन्तु इससे दूसरोंका मुँह तो नहीं बन्द किया जा सकता।

हेमने कहा,—"तब बताओ, मैं क्या कर सकती हूँ?"

योगेन्द्र चारो ओर जो तरह-तरहकी बातें हो रही हैं, उसे रोकनेका एक ही उपाय है।

योगेन्द्रने जिस उपायको मन ही मन ठहराया है, उसे समझकर हेमनलिनी जल्दीसे बोल उठी,—"ऐसे समय पिताजीको लेकर पश्चिम घूमने चले जाना ठीक न होगा? दो-चार महीने घूम आनेसे सब झगड़ा आप ही मिट जायगा।"

योगेन्द्रने कहा,—"उससे भी काम पूरा न होगा। तुम्हारे मनमें कोई क्षोभ नहीं, जबतक पिताजी इस बातको अच्छी तरह समझ न पायेंगे, तबतक उनके मनपर पत्थर चँपा रहेगा—तबतक वे कभी अच्छे न रह सकेंगे।"

देखते-देखते हेमनलिनीकी दोनों आँखोंमें आँसू भर आये। इसने चटपट आँसू पोंछ डाले—कहा,—"तब कहो, मुझे क्या करना चाहिये।"

योगेन्द्रने कहा,—"मैं जानता हूँ, कि तुम्हारे कानमें यह बातें कठोर

सुनाई देंगी ; किन्तु अगर सब ओरसे मङ्गल चाहती हो, तो तुम्हें जरा भी देर न कर विवाह कर लेना चाहिये।"

हेमनलिनी चुपचाप बैठी रही। योगेन्द्र धीरज न रख सकनेकी वजह बोल उठा,—"हेम, तुमलोग कल्पना द्वारा छोटी बातको बड़ी बना डालना पसन्द करती हो। तुम्हारे विवाहके सम्बन्धमें जो बखेड़ा खड़ा हो गया है, ऐसा कितनी ही लड़कियोंके लिये होता ही है—फिर बिगड़-बनकर साफ हो जाता है—नहीं तो घरमें बातों ही बातमें उपन्यास बनते रहनेसे काम नहीं चलता। जीवन भर सन्यासिनी बनकर छतपर बैठ आकाशकी ओर ताकते रहने, उस निकम्मे झूठेकी याद-में उसे हृदयमें बैठाकर पूजा करने संसारके आगे ऐसे काव्यकी रचना करनेमें तुम लोगोंको लज्जा नहीं—किन्तु हम लोग मारे लज्जाके मरे जाते हैं। इसलिये भले गृहस्थ आदमीसे बादाकर दरिद्री काव्यको जहाँतक हो सके, समाप्त कर दो।'

हेमनलिनी अच्छी तरह समझती है, कि समाजकी आँखोंके सामने काव्य बना डालनेमें कितनी लज्जा है। इसलिये योगेन्द्रके कटु वचनने उसके हृदयपर छुरी भोंकने जैसा काम किया। उसने कहा,—दादा, क्या मैं कह रही हूँ विवाह न करके सन्यासिनी बनी रहूँगी ?"

योगेन्द्रने कहा —"अगर ऐसा नहीं करना चाहतीं, तो विवाह करो। फिर भी यदि तुम कहो, कि स्वर्गराज्यके इन्द्रदेवके न मिलनेसे तुम्हारे पसन्द ही न आयेगा, तब तो संन्यासिनी व्रत ग्रहण करनेहीके समान हैं। संसारमें मनके मुताबिक कितनी चीजें मिला करती हैं ?—जो मिलता है, उसे ही मनको अपने अनुसार बना लेना पड़ता है। मैं तो कहूंगा, कि यही मनुष्यका यथार्थ महत्व है।"

हेमनलिनीने मर्माहत होकर कहा,—"दादा, तुम मुझे इस तरह कोंच-कोंचकर क्यों बातें सुना रहे हो। मैंने कभी तुम्हारी पसन्दके ऊपर कोई बात कही है ?"

योगेन्द्रने कहा,—'सही है, कि तुमने कुछ नहीं कहा - किन्तु अकारण अन्याय रूपमें तुमने अपने किसी-किसी मित्रपर साफ विद्वेष प्रकट करनेमें कोई सङ्कोच नहीं किया है। किन्तु यह तुम्हें स्वीकार करना ही पड़ेगा, कि इस जीवनमें जितने लोगोंसे तुम्हारी जान पहचान हुई है, उनमें एक ही आदमी दिखाई दिया है—जिसने सुख-दुःख और मान-अपमानमें तुम्हारी ओरसे हृदयको स्थिर रखा है। इसलिये मैं उस पर मन ही मन बहुत श्रद्धा करता हूं। तुम्हें सुखी रखनेके लिये जो अपना जीवन दे सकता है, अगर तुम ऐसा पति चाहती हो, तो उसे कहीं ढूंढ़ने जानेकी जरूरत नहीं। और यदि तुम काव्यकी रचना करना चाहती हो, तो—

हेमनलिनीने उठ-खड़ी होकर,—"ऐसी बात तुम मुझसे न कहो। पिताजी मुझे जैसी आज्ञा देंगे, जिससे विवाह करनेको कहेंगे, मैं उसकी आज्ञाका पालन करूँगी। अगर न करूँ तो तुम काव्यका ताना देना।"

योगेन्द्रने उसी समय नरम होकर कहा,—"हेम, नाराज न हो बहन। तुम जानती हो, कि मेरा मन बिगड़ जानेसे माथा ठीक नहीं रहता—जब जो मुँहमें आता है, वही कह देता हूँ। मैंने क्या बचपनसे तुम्हें देखा नहीं—मैं क्या नहीं जानता, की लज्जा तुम्हारा स्वाभाविक गुण है और तुम पिताजीको बहुत मानती हो?"

यह कहता हुआ योगेन्द्र अन्नदाबाबूके कमरेमें चला गया। योगेन्द्र अपनी बहनको न जाने किस प्रकार उत्पीड़ित कर रहा है—यही सोचकर अन्नदाबाबू अपने कमरेमें विचलित हो बैठे हुए थे। भाई-बहनकी बातचीतमें दखल देनेके लिये बार-बार वे उठनेकी चेष्टा करते थे, इसी समय योगेन्द्र आ पहुँचा—अन्नदा उसके मुँहकी ओर देखने लगे।

योगेन्द्रने कहा,—पिताजी, हेम विवाह करनेको राजी हो गई है। तुम समझते होगे कि मैंने जिद करके उसे राजी किया है,—किन्तु यह

बात नहीं है। अब अगर तुम उसे मुँह खोलकर कहोगे, तो वह अक्षयसे विवाह करनेपर आपत्ति न करेगी।"

योगेन्द्र—तुम न कहोगे, तो वह खुद जाकर कहेगी, कि मैं अक्षयसे विवाह करूँगी? अच्छा, अगर तुम अपने मुँहसे कहनेमें सङ्कोच करते हो, तो मुझे आज्ञा दो; मैं तुम्हारा आदेश उसमे प्रकट कर दूँगा।

अन्नदाने घबराकर कहा,—"नहीं नहीं, मुझे जो कहना है, वह मैं आप ही कहूँगा। किन्तु इतनी जल्दीकी जरूरत क्या है। मेरी रायमें और कुछ दिन बीतने देना चाहिये।"

योगेन्द्रने कहा,—"नहीं पिताजी, देर करनेसे बहुतेरे विघ्न हो सकते हैं—इस तरह अधिक दिनतक बीतना बेकार है।"

योगेन्द्रकी जिदके आगे किसीको बोलनेकी मजाल नहीं—वह जो जिदकर बैठता है, उसे बिना किये नहीं मानता। अन्नदा भी मन ही मन उससे डरते हैं। कमसे कम बात हटानेके खयालसे उन्होंने कहा,—"अच्छा मैं कहूँगा।"

योगेन्द्रने कहा,—"पिताजी, आज ही कहनेका उपयुक्त समय है। वह तुम्हारे आदेशके लिये आसरेमें बैठी है। आज ही जो कुछ हो, समाप्त कर दो।"

अन्नदा बैठे-बैठे सोचने लगे। योगेन्द्रने कहा,—"पिताजी, तुम्हारे विचार करनेसे काम न चलेगा—जरा हेमके पास चलो।"

अन्नदाने कहा,—"योगेन्द्र, तुम ठहरो, मैं अकेला ही उसके पास जाऊँगा।"

योगेन्द्रने कहा,—"अच्छा, मैं यहीं बैठा रहता हूं।

अन्नदाने कमरेमें जाकर देखा—अन्धकार है। चटपट एक काउचसे उन्हें किसीके उठनेकी आहट मिली और इसके बाद ही रुलाईसे भरभराती हुई आवाज आई,—"पिताजी, रोशनी बुझ गई है—बैरासे जलानेको कहूँ।"

रोशनी बुझनेका कारण अन्नदा बाबू अच्छी तरह समझ गये—उन्होंने कहा,—'रहने दो बेटी, रोशनीकी जरूरत क्या है' यह कहते हाथसे टटोलते हुए वे हेमनलिनीके पास आकर बैठ गये।

हेमने कहा,—"पिताजी, तुम अपने शरीरका खयाल नहीं करते हो।"

अन्नदाने कहा,—इसका विशेष कारण है बेटी,—शरीर अच्छा है, यह जानकर ही कोई चेष्टा नहीं कर रहा हूं। जरा तुम अपने शरीरकी ओर ध्यान दो, हेम!"

हेमनलिनी दुःखी होकर बोल उठी,—"तुम सभी लोग एक ही बात कहते हो—यह बहुत अन्याय है पिताजी! मैं तो ठीक साधारण मनुष्यों जैसी हूँ—मुझे तुमने कब अपने शरीरका खयाल करते नहीं देखा। यदि तुम लोगोंके मनमें हो, कि शरीरके लिये कुछ करनेकी जरूरत है, तो मुझसे कहते क्यों नहीं। मैंने कभी तुम्हारी बातपर नहीं किया है पिताजी?" उसके यह आखिरी शब्द रुलाईसे भरे हुए सुनाई दिये।"

अन्नदा बाबूने व्यस्त और व्याकुल होकर कहा,—"कभी नहीं बेटी। तुम्हें कभी कुछ कहना भी नहीं पड़ा—तुम मेरी बेटी हो न—इसीसे तुम मेरे हृदयकी बात जानती हो—तुम मेरी इच्छा समझकर काम करती हो। मेरे एकान्त मनका आशीर्वाद यदि व्यर्थ न हो, तो ईश्वर तुम्हें सदा सुखी रखेंगे।"

हेमने कहा,—"पिताजी, क्या तुम मुझे अपने पास न रहने दोगे?

अन्नदा—क्यों न रखूँगा बेटी।

हेम—कमसे कम जबतक दादाकी दुल्हन न आये, तबतक तो रहने दो। मेरे न रहनेसे तुम्हारा खयाल कौन करेगा।

अन्नदा—मेरा खयाल, यह बात न कहो बेटी। मुझे अपनेको

देखनेके लिये तुम लोगोंके साथ लगकर रहना पड़ेगा, मेरा मूल्य ही क्या है !

हेमने कहा,—"पिताजी, कमरेमें बहुत अन्धकार है—रोशनी ले आऊँ।" कहकर उसने बगलकी कोठरीसे एक लालटेन लाकर रख दी। फिर कहा,—'कई दिनसे शामके वक्त बखेड़े उठनेसे तुम्हें अखबार नहीं नहीं सुनाया गया। सुनाऊँ ?'

अन्नदाने उठकर कहा,—"अच्छा, जरा बैठो बेटी, मैं अभी आकर सुनता हूं।" कहते हुए वे योगेन्द्रके पास चले गये। मनमें सोचे थे, कि कह दूँगा—आज बातचीत नहीं हो सकी, फिर कभी होगी। किन्तु जैसे ही योगेन्द्रने पूछा,—"क्या हुआ पिताजी, विवाहके लिये कहा ?' वैसे ही वे चटपट बोल उठे,—"हाँ कह दिया।" उन्हें भय था, कि कहीं योगेन्द्र खुद पहुँचकर उसे तङ्ग न करे।

योगेन्द्रने कहा,—"वह जरूर राजी हो गयी होगी ?"

अन्नदा—हाँ, एक प्रकारसे राजी ही है।

योगेन्द्रने कहा,—"तब मैं अक्षयसे कह आऊँ ?"

अन्नदाने घबराकर कहा,—नहीं-नहीं, अक्षयसे अभी कुछ न कहो। समझते हो योगेन्द्र, इतनी जल्दबाजी करनेसे सब बिगड़ जा सकता है। अभी किसीसे कुछ कहनेकी जरूरत नहीं—बल्कि हो सके, तो एक बार हमलोग पश्चिम हवा-पानी बदल आयें, इसके बाद सब ठीक होगा।"

योगेन्द्र इस बातका कोई जवाब न दे चला गया। वह कन्धेपर चद्दर रख सीधे अक्षयके घर पहुँचा। अक्षय उस समय एक अँग्रेजी महाजनी सिहाबकी पुस्तक ले बुककीपिंग सीख रहा था। योगेन्द्रने उसके अपने बही-बस्ता हटाकर कहा,—"यह सब काम फिर करना, अब अपने विवाहका दिन ठीक करो।"

अक्षयने कहा,—"यह क्या कह रहे हो ?'

३९

दूसरे दिन सवेरे जब हेमनलिनी उठकर और तैयार होकर बाहर आई, तब उसने देखा, कि अन्नदाबाबू अपने सोनेकी कोठरीमें खिड़कीके पास कनवासकी कुरसी खींचकर बैठे हैं। इस कमरेमें अधिक असबाब नहीं हैं। एक चरपाई है और एक कोनेमें एक आलमारी है—एक दीवारमें अन्नदाबाबूकी परलोक-निवासिनी स्त्री की तसवीर लटक रही है—और उसके सामनेकी दीवारमें उनकी पत्नीका अपने हाथसे बनाया पशमका टुकड़ा टँगा है, जिसपर उन्होंने अपने हाथसे बेल-बूटे बनाये थे। स्त्रीकी जीवित दशामें उस आलमारीमें जो टुकड़े वगैरः पड़े थे,वह सब आज भी ज्योंके त्यों हैं।

पिताके पीछे खड़ी हो पक्के बाल निकालनेके बहाने कोमल उँगलियोंको फेरते हुए हेमने कहा,—'पिताजी, चलो आज सवेरे-ही-सवेरे चाय पीलें। इसके बाद घरमें बैठकर तुम्हारी वह पुरानी बातें सुनूँगी—वह सब बातें मुझे इतनी अच्छी लगती है, कि क्या कहूँ।'

हेमनलिनीके सम्बन्धमें अन्नदाबाबूकी सूझ आजकल इतनी तेज हो गई है, कि उसके चाय-पीनेको जल्दीके मतलबको समझनेमें उन्हें जरा भी देर न हुई। कुछ देर बाद ही अक्षय आकर बैठेगा—उसीका साथ बचानेके लिये शीघ्रतासे चाय पीकर वह अपने पिताकी एकान्त कोठरीमें बैठना चाहती है, इस बातको वह उसी समय समझ गये। इस बातसे उनके मनमें बहुत चोट पहुँची कि व्याधके भयसे डरी हुई हरिणीकी तरह उनकी लड़की सदा डरती रहती है।

उन्होंने नीचे जाकर देखा, कि नौकरने अभीतक चायका पानी नहीं तैयार किया है। उसपर वे एकाएक नाराज हो उठे--उसने समझानेकी चेष्टा की, कि आज समयसे पहले ही आप चाय माँग बैठे हैं। वह यही बड़बड़ाकर रह गये, कि सब नौकर आजकल बाबू बन गये हैं; उनको जगानेके लिये और एक नौकर रखनेकी जरूरत पड़ेगी।

नौकरने जल्दीसे चायका पानी हाजिर किया। अन्नदाबाबू अन्य दिनों बातें करते-करते धीरे--सुस्ताके-आरामसे चायके रसका उपभोग करते थे, आज वैसा न कर शीघ्रताके साथ प्याला खाली करने लगे। हेमनलिनीने कुछ आश्चर्यमें आकर कहा,--'पिताजी आज क्या तुम्हें कहीं बाहर जानेकी जल्दी है?'

अन्नदाबाबूने कहा,--"कहीं नहीं, कहीं नहीं। जाड़ेके दिनमें गर्म चाय घूँट-घूँट भर पी लेनेसे शरीरमें गर्मी आती और शरीर हलका पड़ जाता है।'

किन्तु अन्नदाबाबूका शरीर गर्मानेसे पहले ही योगेन्द्रने अक्षयके साथ घरमें प्रवेश किया। आज अक्षयके पहनावेमें कुछ विशेष चमक थी हाथमें चाँदीके मूठकी छड़ी--छातीपर घड़ीका चेन लटकता हुआ--बाएँ हाथमें बादामी रङ्गके कागजमें लिपटी किताब थी। अन्य दिनों अक्षय टेबिलके जिस हिस्सेमें बैठता था, वहाँ न बैठ आज उसने हेमनलिनीके पास कुरसी खींच ली और हँसके कहा,--"आप लोगोंकी घड़ी आज तेज चल रही है।'

हेमनलिनीने अक्षयके मुँहकी ओर नहीं देखा, उसने उसकी बातका जवाब भी नहीं दिया। अन्नदाबाबूने कहा,--"हेम, चलो बेटी ऊपर। जरा मेरे गर्म कपड़ोंको धूपमें डाल दो।" योगेन्द्रने, कहा,--"पिताजी, धूप कहीं भागी नहीं जा रही है--इतनी जल्दी

काहेकी है। हेम, अक्षयके प्यालेमें चाय डाल दो। मुझे भी चायकी जरूरत है।—किन्तु अतिथिको पहले दो।"

अक्षयने हँसकर हेमनलिनीसे कहा,—"कर्त्तव्यकी खातिरसे कहीं इतना बड़ा आत्मत्याग देखा है? जैसे द्वितीय सर फिलिप सिडनी।"

हेमनलिनीने अक्षयकी बातपर कुछ भी ध्यान न दे, दो प्याले चाय तैयारकर एक योगेन्द्रको और दूसरा प्याला अक्षयकी ओर धीरेसे खिसका दिया और अन्नदाबाबूके मुँहकी ओर देखा। अन्नदाबाबूने कहा,—"धूप चढ़ आनेसे तकलीफ होगी—चलो, अब चलो।"

योगेन्द्रने कहा,—आज कपड़ा धूपमें न डालो। अक्षय आये हैं।"

अन्नदा एकाएक चिढ़कर बोल उठे,—"तुम लोगोंकी हर बातमें जबर्दस्ती है। तुम लोग केवल जिदकर दूसरेको मर्मान्तिक कष्ट देते हुए भी अपनी इच्छा पूरी करना चाहते हो। मैंने बहुत दिन चुपचाप सह लिया, किन्तु अब इस तरह न चलेगा। बेटी हेम, कलसे ऊपरकी कोठरीमें हम तुम बैठकर चाय पियेंगे।"

यह कहते हेमको साथ ले अन्नदाबाबू ऊपर चलनेको तैयार हुए; तब हेमने शान्त स्वरमें कहा,—"पिताजी, जरा बैठो। आज तुम अच्छी तरह चाय पी नहीं सके। अक्षयबाबू, क्या मैं पूछ सकती हूँ, कि इस कागजमें लिपटा हुआ यह कौनसा रहस्य है?"

अक्षयने कहा—"केवल पूछना क्या आप रहस्यको खोल भी सकती हैं।" यह कह उसने कागजके बण्डलको हेमनलिनीके आगे खिसका दिया।

हेमने खोलकर देखा, कि जिल्द बँधी टेनिसन है। एकाएक चौंक पड़नेसे उसका मुँह पीला पड़ गया। ठीक यही टेनिसन, ऐसी ही जिल्द

एक बार उसे पहले उपहारमें मिल चुकी है--वह किताब आज भी उसकी सोनेकी कोठरीमें दराजके भीतर छिपाकर बड़े आदरके साथ रखी हुई है।

योगेन्द्रने कुछ हँसकर कहा,—"रहस्य अभी पूरी तरह नहीं खुला।" यह कहते हुए उसने किताबके पहले पन्नेको खोल उसके हाथामें दे दिया। उस पेजमें लिखा था,--श्रीमती हेमनलिनीको अक्षयकी श्रद्धाका उपहार।

उसीसमय हेमके हाथसे वह किताब जमीन पर गिर गई और उसकी ओर बिना देखे ही उसने कहा,—"पिताजी, चलो।"

दोनों कोठरीसे बाहर निकल गये। योगेन्द्रकी दोनों आँखें आगकी तरह जलने लगीं। उसने कहा,--"नहीं, अब मैं यहाँ रह नहीं सकता मैं कहीं-न-कहीं स्कूल मास्टरी खोज यहाँसे चला जाऊँगा।"

अक्षयने,—"भाई तुम नाहक क्रोध करते हो। मैंने तो पहले ही कह दिया था, कि तुम गलत समझे हो। तुम्हारे बार-बार धीरज देने पर ही मैं विचलित हुआ था. लेकिन मैं निश्चय कहे देता हूँ, कि मेरे प्रति हेमनलिनीका मन कभी भी अनुकूल न होगा। इसलिये यह आशा छोड़ दो। किन्तु असल बात यह है कि तुम लोगोंको ऐसी चेष्टा करनी चाहिये, जिससे वह रमेशको भूल जाय।"

योगेन्द्रने कहा,-"तुमने कर्त्तव्य तो बताया, लेकिन उपाय क्या है?"

अक्षयने कहा,—शायद मेरे अतिरिक्त इस संसारमें कोई युवक है ही नहीं। मैं देखता हूँ, कि यदि तुम अपनी बहन होते, तो मेरे इस नामको मिटानेके लिए पितृपुरुषोंको हताश हो दिन न गिनना पड़ता। अब जैसे हो, एक अच्छा पात्र ढूँढ़ो- जिसको ओर देखते ही कपड़ेको धूपमें सुखानेकी प्रबल इच्छा न हो।

योगेन्द्र--पात्र फर्माइश देनेसे तो मिलेगा नहीं।

अक्षय--तुम बिलकुल ही हिम्मत छोड़कर क्यों बैठे जाते हो?

पात्रका पता मैं दे सकता हूँ लेकिन जल्दी करनेसे सब मामला बिगड़ जायगा। पहले ही विवाहका प्रस्ताव कर दोनों पक्षको सङ्कित करनेसे काम न चलेगा। धीरे-धीरे मेल मिलाप जमने दो, इसके बाद समय देखकर दिन ठीक करना।

योगेन्द्र—रास्ता तो अच्छा है, किन्तु जरा सुनूँ तो कि पात्र कौन है।

अक्षय—तुम उसे अच्छी तरह नहीं जानते, फिर भी तुमने देखा है; वही नलिनाक्ष डाक्टर।

योगेन्द्र—नलिनाक्ष ?

अक्षय—चौंकते क्यों हो। उसके बारेमें ब्रह्म-समाजमें झमेला मचा है, तो मचने दो। क्या इसके लिये ऐसे पात्रको छोड़ दोगे ?

योगेन्द्र—यदि मेरे हाथ खींच लेनेसे पात्र हाथसे न निकल जाय, तब चिन्ता किस बातकी है। किन्तु नलिनाक्ष विवाह करनेपर राजी होगा ?

अक्षय—मैं यह नहीं कह सकता, कि आज ही राजी हो जायगा—किन्तु समयसे क्या नहीं हो सकता। योगेन्द्र, मेरी बात मानो। कल नलिनाक्षका व्याख्यान है उस व्याख्यानमें हेमनलिनीको ले जाओ। उसमें बालनेकी अच्छी क्षमता है। स्त्रियोंके मनको आकर्षित करनेके लिये उसमें कम क्षमता नहीं है। हाय, अबोध अबलाएँ यह बात नहीं समझतीं, कि वक्ता पतिसे श्रोता पति अच्छा होता है।

योगेन्द्र—किन्तु नलिनाक्षका इतिहास क्या है, अच्छी तरह कहो, मैं सुनना चाहता हूं।

अक्षय—देखो योगेन्द्र, अगर इतिहासमें कुछ खराबी निकले, तो उससे घबरा न जाना। थोड़ीसी खराबीको दूर करनेसे दुर्लभ भी सुलभ हो जाता है—मैं तो उसे लाभ समझता हूँ।

अक्षयने नलिनाक्षका जो इतिहास कहा, वह संक्षेपमें इस प्रकार है।

नलिनाक्षके पिता राजवल्लभ फरीदपुर जिलेमें एक छोटे-मोटे जमींदार थे। उन्होंने अपनी तीस वर्षकी उम्रमें ब्रह्मधर्मकी दीक्षा ली। किन्तु उनकी स्त्रीने किसी तरह भी पतिका धर्म ग्रहण नहीं किया और आचार-विचारमें वह बहुत सावधानीके साथ अपने पतिके साथ अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षा करती हुई चलने लगीं--उनका यह वर्ताव राजवल्लभके लिये सुखकर नहीं हुआ। उनके लड़के नलिनाक्षने धर्म प्रचारके उत्साहसे और वक्तृताकी शक्तिसे उपयुक्त उम्रमें ब्रह्मसमाज में प्रतिष्ठा प्राप्त किया। उन्होंने सरकारी डाक्टरीके काममें बङ्गालके अनेक स्थानोंमें रहकर चरित्रकी निर्मलता, चिकित्साकी निपुणता और सत्कार्यके उद्योगसे सर्वत्र यश प्राप्त किया।

इसी समय एक विचित्र घटना हो गई। बुढ़ापेमें राजवल्लभ एक विधवासे विवाह करनेके लिये उन्मत्त हो उठे। कोई उन्हें समझा न सका। राजवल्लभ कहने लगे, कि मेरी वर्त्तमान स्त्री मेरी सच्ची सहधर्मिणी नहीं है--जिससे धर्म, मत, व्यवहार और हृदयका मेल हो चुका है, उसे स्त्रीके रूपमें ग्रहण न करनेसे पाप होगा। यह कह राजवल्लभने सर्वसाधारणके धिक्कारनेपर भी उस विधवासे हिन्दू मतानुसार विवाह कर लिया।

इसके बाद नलिनाक्षकी माँ जब घर छोड़कर काशी जानेको तैयार हुई, तब नलिनाक्षने रङ्गपुरसे डाक्टरी छोड़ माँके पास आकर कहा,—"माँ, मैं भी तुम्हारे साथ काशी चलूँगा।"

मांने रोकर कहा,—"मेरे साथ रहनेसे तो तुम्हें कुछ भी न मिलेगा, नाहक क्यों कष्ट सहोगे।"

नलिनाक्षने कहा,--"तुम्हारे साथ मेरा किसी बातमें अलगावा न होगा।"

नलिनाक्ष पिता द्वारा परित्यक्त और अपमानित माताको सुखी करनेके लिये दृढ़सङ्कल्प हुआ। वह उनके साथ काशी गया। माँने कहा, "बेटा, क्या घरमें बहू न आयेगी।"

नलिनाक्ष बड़े सङ्कटमें पड़ा। उसने कहा,—"काम ही क्या है? मैं अच्छी तरह हूँ।"

मांने सोचा, कि नलिनने बहुत कुछ त्याग किया है, किन्तु फिर भी ब्राह्म परिवारके अलावा विवाह करनेको तैयार नहीं है। उन्होंने दुःखित होकर कहा,—"बच्चे, तुम मेरे लिए सदा संन्यासी बने रहोगे। यह किसी तरह भी नहीं हो सकता। तेरी जहाँ इच्छा हो, वहाँ विवाह कर, मैं कोई एतराज न करूँगी।"

नलिनने दो-एक दिन विचारकर कहा,—"तुम जैसी चाहो, मैं वैसी ही बहू लाकर तुम्हारी दासी बना दूँगा। तुम्हारे साथ किसी विषयमें कुछ भी अनमेल न होगा। जिससे तुम्हें दुःख हो, वैसी लड़की मैं घरमें न ले आऊँगा।"

यह कहकर नलिन बङ्गाल चला आया। इसके बाद बीचके इतिहासमें कुछ विच्छेद है। कोई कहता है, कि चुपकेसे एक गाँवमें जा उसने किसी अनाथसे विवाह किया और विवाहके बाद ही उसका स्त्री-वियोग हो गया। कोई उसपर सन्देह प्रकाश करता है। किन्तु मेरा (अक्षय) मत है, कि विवाह करनेके समय वह इनकार कर गया।

जो हो, अक्षयकी रायमें नलिनाक्ष जिसे पसन्द करे, उसीसे विवाह कर सकता है, उसकी मां किसी तरहकी आपत्ति न कर खुश होगी। हेमनलिनी जैसी लड़की नलिनाक्षको कहाँ मिलेगी। और चाहे कुछ हो, हेमका जैसा मधुर स्वभाव है, उससे वह अपनी सासपर बहुत ही भक्ति और श्रद्धा करेगी; किसी तरह भी उन्हें कष्ट न होने देगी, इसमें जरा भी सन्देह नहीं। नलिनाक्ष दो दिन हेमको अच्छी तरह देखते ही

समझ जायगा। अतएव अक्षयकी सलाह है, कि किसी तरह दोनोंका परिचय करा देना चाहिये।

४०

अक्षयके जाते ही योगेन्द्र दो-मंजिलमें चला गया। देखा कि ऊपर बैठनेके कमरेमें हेमनलिनीको पास बैठाकर अन्नदाबाबू बातचीत कर रहे हैं! योगेन्द्रको देखकर अन्नदा कुछ लज्जित हुए। आज चायके टेबिलपर उनका स्वाभाविक शान्तभाव नष्ट होकर कुछ क्रोध आ गया था; इसके लिये उनके मनमें कुछ क्षोभ था। इसीसे उन्होंने चटपट आदरके स्वरमें कहा,—आओ योगेन्द्र, बैठो।"

योगेन्द्रने कहा,—"पिताजी, आजकल तुमने कहीं बाहर आना-जाना बिलकुल बन्द कर दिया है। दोनों आदमियों का दिनरात घरमें बैठे रहना क्या अच्छा है?"

अन्नदाने कहा,—"तब सुनो। मैंने तो सदासे इसी तरह कोनेमें बैठकर बिताया है। हेमको कहीं बाहर ले जानेमें माथा पच्ची करनी होगी।"

हेमने कहा,—"मुझे क्यों दोष देते हो पिताजी। तुम मुझे कहाँ ले चलना चाहते हो, चलो।"

हेमनलिनी अपने स्वभावके विरुद्ध होनेपर भी जबर्दस्ती प्रमाणित करना चाहती है, कि वह मनमें शोक छिपाकर घरकी मट्टी खोदकर पड़ी नहीं है। उसकी चारों ओर जहाँ जो कुछ हो रहा है, उन सबमें मानो उसकी उत्सुकता सजीव ही है।

योगेन्द्रने कहा,—"पिताजी, कल एक मीटिङ्ग है, वहाँ हेमको भी ले चलो।"

अन्नदाबाबू जानते थे, कि मीटिङ्गकी भीड़में घुसनेसे हेमनलिनी हमेशासे अनिच्छा और सङ्कोच करती है—इसीसे इन्होंने कुछ न कह एकबार हेमके मुँहकी ओर देखा।

हेमने उसी समय अस्वाभाविक उत्साह प्रकट कर कहा,—"मीटिङ्ग, वहाँ कौन व्याख्यान देगा दादा ?"

योगेन्द्र—डाक्टर नलिनाक्ष।

अन्नदा—नलिनाक्ष।

योगेन्द्र—बोलनेमें बहुत तेज हैं। इसके अतिरिक्त उनका इतिहास सुननेसे आश्चर्यमें आना पड़ता है। ऐसा त्यागस्वीकार, ऐसी दृढ़ता ! ऐसा आदमी होना दुर्लभ है।

इससे दो घण्टे पहले एक अफवाहके अतिरिक्त नलिनाक्षके सम्बधमें योगेन्द्र कुछ भी जानता न था।

हेमने बड़े आग्रहके साथ कहा,—'अच्छी बात तो है पिताजी, चलो न; उनका व्याख्यान सुनना चाहिये।"

हेमनलिनीके इस उत्साहपर अन्नदाबाबूने बिलकुल विश्वास नहीं किया। फिर भी वह मन ही मन कुछ खुश हुए। उन्होंने सोचा, हेम अगर जबर्दस्ती भी इस प्रकारके मेल मिलापमें जाना चाहे, तो शीघ्र ही उसका मन बदल जायगा। मनुष्यका सहवास ही मनुष्यके हकमें हर तरहसे मनोविकार दूर करनेकी प्रधान दवा है। उन्होंने कहा,—"अच्छी बात तो है योगेन्द्र, कल ठीक समयसे हम लोगोंको मीटिङ्गमें ले चलना। किन्तु जरा कहो तो, नलिनाक्षके सम्बन्धमें तुम क्या जानते हो। बहुततेरे लोग तो तरह-तरहकी बातें कहते हैं।"

पहले योगेन्द्रने उन लोगोंको खूब गाली दी, जो अनेक लोग अनेक बातें कहा करते हैं। उसने कहा,—"धर्मके नामसे जो लोग ढोंग करते हैं, कि पराई बात और पराये अविचारपर परनिन्दा करनेके लिये

भगवान्‌के दस्तखती दलीलको लेकर उन्होंने जन्म लिया है—धर्म-व्यवसायियोंके समान सङ्कीर्ण-चित्त और विश्व-निन्दक संसारमें और कोई नहीं।" यह कहते-कहते योगेन्द्र बहुत उत्तेजित हो उठा।

अन्नदा योगेन्द्रको ठण्डा करनेके लिये बारबार कहने लगे,—'ठीक है, यह बात ठीक है। केवल परायेके दोषोंकी आलोचना करनेसे मन छोटा हो जाता है स्वभाव सन्दिग्ध हो जाता और हृदयमें सरसता रह नहीं जाती।"

योगेन्द्रने कहा,—"पिताजी, क्या तुम मुझे लक्ष्यकर ऐसा कह रहे हो? किन्तु मेरा स्वभाव धार्मिकों जैसा नहीं है—मैं बुरा कहना भी जानता हूँ, अच्छा कहना भी जानता हूँ और मुँहपर साफ कहके हाथो-हाथ फैसला कर देता हूँ।"

अन्नदाने घबराकर कहा—"योगेन्द्र, तुम पागल हो गये हो? मैं तुम्हें लक्ष्यकर क्यों कहूँ? क्या मैं तुम्हें नहीं पहचानता?"

तब बड़ी-बड़ी प्रशंसाओंसे परिपूर्णकर योगेन्द्रने नलिनाक्षका वृत्तान्त कह सुनाया, उसने कहा,—"माताको सुखी करनेके लिये नलिनाक्ष अपने आचारमें संयत हो काशीवास करता है; इसीलिये पिताजी, जिसे तुम अनेक लोग कहते हो वह सब अनेक तरहकी बातें उड़ाते हैं। किन्तु मैं तो इसमें नलिनाक्षकी तारीफ ही करूँगा। हेम, तुम्हारी क्या राय है?"

हेमनलिनीने कहा,—"मैं भी ऐसा ही कहती हूं।"

योगेन्द्रने कहा,—'हेम अच्छा ही कहेगी, यह बात मैं निश्चयरूपसे जानता था। पिताजीको सुखी करनेके लिये हेम कुछ त्याग स्वीकार करनेका उपलक्ष्य ढूँढ़ती रहती है—इसे मैं अच्छी तरह समझता हूँ।"

अन्नदाने स्नेहभरी कोमल हँसी हँसकर हेमके मुँहकी ओर देखा—हेमनलिनीने लज्जासे शिर झुका लिया।

———

४१

सभा भङ्ग होनेके बाद जब अन्नदा हेमनलिनीको लेकर घर लौटे, उस समय सन्ध्या हुई नहीं थी। चाय पीने बैठनेपर अन्नदाबाबूने कहा,—"आज बड़ा आनन्द आया।" इससे अधिक वह और कुछ न बोले—उनके मनके भीतर भावकी एक धारा बह रही थी।

आज चाय पीनेके बाद ही हेमनलिनी धीरे-धीरे ऊपर चली गई; अन्नदाबाबूको इसका खयाल भी नहीं हुआ।

आज सभास्थलमें नलिनाक्ष, जिसने वक्तृता दी थी; देखनेमें विचित्र युवक और सुकुमार हैं जवानीमें भी उनके बचपनकी लावण्यता-ने उनके मुखश्रीको परित्याग नहीं किया है; फिर भी उनकी अन्तरात्मा-से मानों एक प्रकारकी ध्यान-परताका गाम्भीर्य उनकी चारो ओर बिखर रहा है।

उनकी वक्तृताका विषय "क्षति" था। उन्होंने कहा था, कि संसारमें जो आदमी कुछ खोता नहीं, यह पाता भी नहीं। इसी प्रकार जो हमारे हाथसे आता है, उसे भी हमलोग पूरी तरहसे प्राप्त नहीं करते। जब त्याग द्वारा हम उसे पाते हैं. तब यथार्थमें वह हमारे हृदयका धन बन जाता है। जो प्रकृत सम्पद है, उसके सामनेसे हट जानेपर जो मनुष्य उसे खो बैठता है, वह अभागा है; बल्कि उसका त्यागकर उसे अधिक-रूपमें पानेकी क्षमता ही मनुष्यके चित्तमें होती है। मेरा जो जाता है, उसके सम्बन्धमें यदि हम झुककर हाथ जोड़कर यह कह सकें कि "हमने दिया, यह हमारे त्यागका दान है, हमारे दुःखका दान है, हमारे आँसुओंका दान है",—तब छोटा बड़ा हो उठा है, अनित्य-नित्य हो जाता है और जो हमारे व्यवहारकी सामग्री मात्र था, वह पूजाका उपकरण बनकर हमारे अन्तःकरणके देव-मन्दिरके रत्न भाण्डार-को चिरसञ्चित बना देता है।

यह सब शब्द आज हेमनलिनीके हृदयमें मिलकर बजने लगे। छतके ऊपर जगमगाते तारोंवाले आकाशके नीचे आज वह चुपचाप बैठी हुई है। उसका मन आज परिपूर्ण है—सारा आकाश, सारा संसार आज उसके लिये परिपूर्ण है।

व्याख्यानकी सभासे लौटनेके समय योगेन्द्रने कहा,—"अक्षय, तुमने अच्छे पात्रको ढूँढ निकाला। यह तो संन्यासी है। इसकी आधी बातें तो मेरी समझमें आई ही नहीं।"

अक्षयने कहा,—"रोगीकी हालत देखकर दवाकी व्यवस्था करनी चाहिये। हेमनलिनी रमेशके ध्यानमें डूबी हुई है—उस ध्यानको बिना संन्यासीके हमलोगों जैसे सहज आदमी तोड़ नहीं सकते। जब वक्तृता हो रही थी, उस समय तुमने हेमके मुँहकी ओर लक्ष्य करके नहीं देखा।'

योगेन्द्र—देखा था। यह समझमें आ गया, कि उसे अच्छा लग रहा है। किन्तु वक्तृता अच्छी जान पड़नेसे ही वक्ताके गलेमें वरमाला पहनाना तो सहज नहीं इसका कोई लक्षण भी दिखाई नहीं देता।

अक्षय—वही वक्तृता हमलोगोंमेंसे किसीके मुँहसे सुननेसे अच्छी जान पड़ती! तुम नहीं समझते योगेन्द्र, तपस्वियोंके लिये औरतोंमें एक विशेष आकर्षण है। सन्यासीके लिये उमाने तपस्या की थी, कालिदास इसे अपने काव्यमें लिख गये हैं। मैं तुमसे ठीक कह रहा हूँ; अगर तुम और किसी पात्रको खड़ा करोगे, तो हेमनलिनी रमेशके साथ मन ही मन उसकी आलोचना करेगी—उसकी तुलनामें कोई ठहर न सकेगा। नलिनाक्ष साधारण आदमियों जैसा नहीं है—इसकी तुलनाके लिये मनमें कोई भाव उठ नहीं सकता। और किसी युवकको सामने लानेसे ही हेमनलिनी तुम्हारे उद्देश्यको साफ समझ जायगी और साथ ही साथ उसका हृदय विद्रोही हो उठेगा। किन्तु नलिनाक्षको यदि

किसी कौशलसे यहाँ ला सको तो हेमके मनमें किसी तरहका सन्देह न होगा। इसके बाद धीरे-धीरे श्रद्धासे माल्यदानतक किसी प्रकार चलाये चलना कठिन न होगा।

योगेन्द्र—यह कौशल मुझसे ठीक तरहसे न होगा—कह देना ही मेरे लिये सहज है। किन्तु तुम जो कहा, यह पात्र मेरे पसन्द नहीं है।

अक्षय—देखो योगेन्द्र, तुम अपनी जिदसे सब मट्टी न करो। सब सुविधाएँ एक साथ नहीं मिलती। चाहे जैसे हो, रमेशकी चिन्ता-को हेमनलिनीके मनसे न हटा सकना मुझे उमीद नहीं जान पड़ता! साथ ही यह न समझना, कि तुम अपने बलसे सब ठीक कर लोगे। अगर मेरी सलाहके साथ ठीक तरहसे चलोगे, तो तुम्हारी कुछ भलाई हो सकती है।

योगेन्द्र—असल बात यह है, कि नलिनाक्ष हम लोगोंकी समझसे बाहरका आदमी है। ऐसे आदमीके साथ लेनेमें मुझे भय जान पड़ता है। एक दोषसे छुटकारा पाकर दूसरे दोषमें फँस जाना पड़ेगा।

अक्षय—भाई, तुम अपने ही दोषसे फँसे हो—इसीसे आज सेंदुरिया मेघ देखकर आतङ्क जान पड़ता है। रमेशके बारेमें तुम लोग शुरूसे आखीरतक अन्धे थे। सोचा, कि ऐसा लड़का और है ही नहीं—रमेश जानता ही नहीं, छल किसे कहते हैं—दर्शनशास्त्रमें रमेशको दूसरा शङ्कराचार्य ही कहना चाहिये, और साहित्यमें वह स्वयं सरस्वतीकी उन्नसवीं शताब्दीका पुरुष है। रमेश मुझे पहले ही पसन्द नहीं आया—ऐसे ऊँचे आदर्शके आदमियोंको हमने अपनी इस उम्रमें बहुत देखे हैं। किन्तु मुझे कुछ कहनेकी क्षमता नहीं थी—तुम लोग तो जानत हो, कि मेरे जैसे आरोग्य और अभाजन केवल महात्मा

लोगोंसे कुढ़ना ही जानता है, हमारे लोगोंमें और कोई क्षमता नहीं। जो हो, इतने दिन बाद तुम समझ गये हो, कि दूसरे ही महात्माओंकी भक्ति करना ठीक है, किन्तु साथ ही अपनी बहनका विवाह ठीक करना आफतसे खाली नहीं। किन्तु उनके काँटा कांटेसे ही निकलता है। जब यही एकमात्र उपाय है, तब नाहक इधर उधर करना ठीक नहीं।

योगेन्द्र—देखो अक्षय, तुम्हारे हजार कहनेपर भी मैं इस बातका विश्वास न करूँगा, कि तुमने हम लोगोंसे पहले रमेशको पहचान लिया था। उस समय तुम मारे कुढ़नके रमेशको देख नहीं सकते थे—तब मैं यह कैसे मानू, कि यह तुम्हारी साधारण बुद्धिका परिचय है। जो हो, कला-कौशलसे अगर जरूरत देखो, तुम लोग कहो, मुझसे यह काम न होगा। सबसे बड़ी बात तो यह है, कि नलिनाक्ष मुझे पसन्द नहीं।

योगेन्द्र और अक्षय अन्नदाके चाय पीनेके कमरेमें आये, तब देखा, कि हेमनलिनी दूसरे दर्वाजेसे बाहर निकली जा रही है। अक्षय समझ गया, कि हेमनलिनीने इन लोगोंको खिड़कीसे आते देख लिया था। तब वह जरा मुस्कराकर अन्नदा बाबूके पास बैठ गया। अपने हाथ चायका प्याला भरकर उसने कहा,—"नलिनाक्ष बाबू जो कहते हैं, वह हृदयसे कहते हैं; इसीलिये उनकी बातें सीधे हृदयको स्पर्श करती हैं।"

अन्नदाबाबूने कहा,—"आदमीमें क्षमता है।"

अक्षयने कहा,—"केवल क्षमता ही नहीं, ऐसा साधुचरित्र आदमी दिखाई नहीं देता।"

योगेन्द्र किसी और ध्यानमें था, फिर भी उससे रहा न गया, वह बोल बैठा,—"आह, साधुचरित्रका नाम न लो। साधुओंके सङ्गसे भगवान् हमलोगोंको बचायें।"

योगेन्द्रने कल इसी नलिनाक्षकी साधुताकी प्रशंसा की थी—जो नलिनाक्षके विरुद्ध बातें करते हैं, उन्हें निन्दक कहकर गाली दी थी।

अन्नदाने कहा,—"छिः, योगेन्द्र, ऐसी बात न कहो। बाहरसे जो लोग अच्छे जान पड़ते हैं, उनका हृदय भी अच्छा होता है; इस बात-पर विश्वासकर बल्कि मैं ठगे जानेको तैयार हूँ, फिर भी अपनी छोटी बुद्धिके गौरवके लिये किसीकी साधुतापर सन्देह करनेको तैयार नहीं हूं। नलिनाक्षबाबूने जो सब बातें कही हैं, वह सब पराये मुँहकी बातें नहीं हैं उन्होंने अपनी आध्यात्मिक जानकारीसे जो प्रकट किया है, वह मेरे लिये आज नया लाभ जान पड़ा। जो आदमी कपटी है, उसके पास सच्ची चीज कहाँसे मिलेगी। जैसे सोना बनाया नहीं जा सकता, वैसे ही सब बातें भी बताई नहीं जा सकतीं। मेरी इच्छा है, कि मैं स्वयं जाकर नलिनाक्ष बाबूको साधुवाद दे आऊँ।"

अक्षयने कहा,—"मुझे भय होता है, कि इसका शरीर चलेगा या नहीं।"

अन्नदाबाबूने व्यस्त होकर पूछा,—"क्यों, क्या उसका शरीर अच्छा नहीं है?"

अक्षय—अच्छे खराबकी बात नहीं—वह दिन-रात अपनी साधना और शास्त्रकी आलोचनामें ही लगा रहता है; शरीरकी ओर तो उसका ध्यान ही नहीं है।

अन्नदाने कहा,—"यह बहुत खराब बात है। शरीरको नष्ट करनेका अधिकार हम लोगोंको नहीं है—क्योंकि शरीर हम लोगोंका बनाया नहीं है। अगर मैं उसे अपने पास पाता, तो निश्चय थोड़े दिनमें ही मैं उसके स्वास्थ्यकी व्यवस्थाकर देता। असलमें स्वस्थ्यरक्षाके कुछ थोड़ेसे नियम हैं,—उनमें पहला है—"

योगेन्द्रने अधीर होकर कहा,—"पिताजो, वृथा क्यों चिन्ताकर मर रहे हो। नलिनाक्ष बाबूका शरीर तो अच्छा दिखाई देता है—उसे देखकर आज मुझे अच्छी तरह मालूम हो गया, कि साधुता भी स्वास्थ्यकर है। मेरा मन स्वयं चाहता है, कि जरा मैं भी चेष्टा करके देखूँ।"

अन्नदाने कहा,—"नहीं योगेन्द्र, अक्षय जो कहते हैं, वह हो भी सकता है। हमारे देशमें बड़े-बड़े लोग प्रायः थोड़ी उम्रमें ही मर जाते हैं। वह अपने शरीरकी उपेक्षाकर देशका नुकसान करते हैं। यह किसी तरहसे होने देना न चाहिये। योगेन्द्र, तुम नलिनाक्षबाबूको जैसा समझते हो, वह नहीं है; उसमें असल चीज है। उसे अभीसे सावधान कर देना चाहिये।"

अक्षय—मैं उसे आपके पास लाकर उपस्थित करूँगा, अगर आप उसे अच्छी तरह समझा सकें, तो अच्छा ही है। मुझे याद है, कि आपने जो सीकड़का रस मुझे परीक्षाके समय दिया था, वह बहुत बलकारक है। जो लोग सदा मानसिक मेहनत करते हैं उनके लिये दूसरा कोई महौषध नहीं। अगर आप एक बार नलिनाक्ष बाबूको—

योगेन्द्रने एकाएक कुरसीसे उठकर कहा,—"अह, अक्षय, तुम भी हद करते हो, इतनी बढ़ाचढ़ी। मैं जाता हूँ।"

———

४२

पहले जब उनका शरीर अच्छा था, तब अन्नदाबाबू डाक्टरी और आयुर्वेदिक तरह-तरहकी दवाइयोंका सेवन किया करते थे—अब उन्हें दवा खानेका भी उत्साह नहीं और आजकल अपने स्वास्थ्यकी शिकायत भी नहीं करते, बल्कि तबीयत छिपानेकी ही चेष्टा करते हैं।

आज जब वे कुसमय आराम कुरसीपर सो रहे थे, उस समय सीढ़ीपर किसीके पैरकी आवाज सुन हेमनलिनी अपनी गोदसे सिलाई-का सामान उतार अपने दादाको सावधान करनेके लिये उनके दर्वाजे पर गई। उसने जाकर देखा, कि उसके दादाके साथ साथ नलिनाक्ष बाबू भी आ रहे हैं। वह शीघ्रतासे दूसरे कमरेमें जाने लगी, इसी समय योगेन्द्रने आवाज दी,—'हेम, नलिनाक्ष बाबू आये हैं, आओ, इनके साथ तुम्हारा परिचय करा दूँ।"

हेम ठिठकके खड़ी हो गई और नलिनाक्षके आते ही उसने उनके मुँहकी ओर न देख नमस्कार किया। अन्नदाबाबूने जागकर आवाज दी,—"हेम"। हेमने उनके पास मीठे स्वरमें कहा,—"नलिनबाबू आये हैं।"

योगेन्द्रके साथ नलिनाक्षको देख अन्नदाबाबने चटपट उठ नलिनाक्षकी अभ्यर्थना की। कहा,—"आज मेरा बड़ा सौभाग्य है, जो आप मेरे घर आये। हेम, कहाँ जा रही हो बेटी, यहीं बैठो। नलिन-बाबू यह मेरी कन्या हेम है, हम दोनों ही उस दिन आपकी वक्तृता सुनने जाकर बहुत आनन्द प्राप्त कर आये हैं। आपने जो एक बात कही थी,—कि हमलोग जो पाते हैं, उसे कभी नहीं खोते; जो यथार्थमें नहीं पाते, वही खोते हैं—इसका अर्थ बड़ा ही गम्भीर है; क्यों बेटी? वास्तवमें किसी चीजको, हम अपना बना लेते हैं और किसीको नहीं बना सकते इसकी परीक्षा तभी होती है, जब वह हमारे हाथसे निकल जाती है। नलिनाक्षबाबू, आपसे हमलोगोंका एक अनुरोध है। वह यह, कि कभी-कभी आकर आप यदि हमलोगोंके साथ आलोचना कर जाँय, तो हमलोगोंका बड़ा उपकार हो। हमलोग कहीं बाहर नहीं आते-जाते। आप जब आयेंगे, तब मुझे और मेरी लड़कीको घर ही पायगे।"

नलिनाक्षने लज्जित हेमनलिनीके मुँहकी ओर एकबार देखकर

कहा,—"मैं वक्तृता-सभामें बड़ी-बड़ी बातें कह आया, इससे आप लोग मुझे बहुत गम्भीर आदमी न समझियेगा। उस दिन छात्रोंने बहुत तङ्ग किया, इससे मैं वक्तृता देने गया था, अनुरोध न माननेकी ताकत मुझमें नहीं है—किन्तु इस तरह व्याख्यान दे आया हूँ, जिससे दूसरी बार उन लोगोंके अनुरोध करनेकी आशङ्का नहीं है—छात्रोंका साफ कहना है, कि वक्तृताका बारह आना हमलोगोंकी समझमें नहीं आया। योगेन्द्रबाबू, आप भी तो उस दिन उपस्थित थे, आपने जब घबराकर घड़ीकी ओर देखा, उससे यह न समझें कि मेरा हृदय भी कुछ विचलित नहीं हुआ था।"

योगेन्द्रने कहा,—"मैं अच्छी तरह समझ नहीं सका, यह मेरी बुद्धिका दोष हो सकता है, इसके लिये आप नाराज न होइयेगा।"

अन्नदा—योगेन्द्र, सब बातोंके समझनेके लिये उम्र होना चाहिये।

नलिनाक्ष—सब बातोंके समझनेके लिये सब समय जरूरत भी तो नहीं होती।

अन्नदा—किन्तु नलिनबाबू, आपसे मुझे एक बात कहना है। ईश्वरने आप लोगोंको काम करा लेनेके लिये ही संसारमें भेजा है, इसलिये आप अपने शरीरसे लापरवाही न करें। जो लोग दाता हैं, उन्हें यह बात सदा याद रखना चाहिये कि, मूलधन नष्ट न होने पाये, नहीं तो दान करनेकी शक्ति चली जायगी।

नलिनाक्ष—आपको यदि कभी मुझे अच्छी तरह पहचाननेका अवसर मिलेगा, तो आप समझ जायंगे, कि मैं संसारसे कभी किसी तरहकी लापरवाही नहीं करता। संसारमें मैं बिलकुल भिक्षुककी तरह आया था, बड़े कष्टसे अनेक लोगोंकी अनुकूलतासे धीरे-धीरे यह शरीर तैयार हुआ है। मेरे लिये यह नवाबी शोभा नहीं देती, कि मैं सबसे लापरवाही कर सब नष्ट कर दूँ। जो बना नहीं सकता, उसे बिगाड़नेका भी कोई अधिकार नहीं।

अन्नदा—बहुत ठीक बात कर रहे हैं। आपने बहुत कुछ ऐसी ही बातें उस दिनके प्रबन्धमें भी कही थीं।

योगेन्द्र—आप लोग बैठिये, मैं जरा कामसे जाता हूँ।

नलिनाक्ष—योगेन्द्रबाबू, मुझे आप माफ कीजियेगा। निश्चय समझिये, कि किसीका हर्ज करानेका मेरा स्वभाव नहीं। आज दिन मैं भी अब चला। चलिये, कुछ दूर रास्तेमें हमारा आपका साथ रहेगा।

योगेन्द्र—नहीं-नहीं, आप बैठिये। मेरा खयाल न करिये। मैं कहीं भी कुछ देरतक चुप बैठा रह नहीं सकता।

अन्नदा—नलिनाक्षबाबू, योगेन्द्रके लिये आप उतावले न हों। योगेन्द्र इसी तरह अपने मन आता है, अपने मन जाता है; इसे पकड़ रखना कठिन है।

योगेन्द्रके चले जानेपर अन्नदाबाबूने पूछा,—"नलिनबाबू, आजकल आप कहाँ रहते हैं।"

नलिनाक्षने हँसकर कहा,—"मैं खास एक ही जगह रहता हूँ, यह कह नहीं सकता। मेरे जान-पहचानके बहुत लोग हैं, वे मुझे खींच-तान कर घुमाते फिरते हैं। मुझे यह बुरा नहीं जान पड़ता—किन्तु मनुष्यको कहीं चुपचाप रहना भी जरूरी है। इसीसे योगेन्द्रबाबूने आप लोगोंके बगलके मकानमें ही मेरे लिये जगह कर दी है। यह गली बहुत एकान्त है।"

इस समाचारसे अन्नदाबाबूने बहुत आनन्द प्रकट किया, किन्तु अगर वह देखते, तो देख सकते थे, कि यह बात सुनते ही हेमनलिनीका मुँह क्षणभरके लिये विवर्ण हो गया। इसी बगलके मकानमें रमेश रहता था।

इसी समय चाय तैयार होनेकी खबर पाकर सब लोग चाय पीनेके

लिये नीचेके कमरेमें चले आये। अन्नदाबाबूने कहा,—"बेटी हेम, नलिनबाबूको एक प्याला चाय दो न।"

नलिनाक्ष ने कहा,—"नहीं अन्नदाबाबू मैं चाय न पीऊँगा।"

अन्नदा—यह कैसी बात नलिनबाबू, एक प्याला चाय—नहीं तो कुछ मिठाई सही।

नलिनाक्ष—मुझे माफ कीजिये।

अन्नदा—आप डाक्टर हैं, आपसे और क्या कहूँ। मध्याह्न भोजनके तीन-चार घण्टे बाद चायके बहाने थोड़ा गर्म पानी पीना हाजमेके लिये बहुत उपकारी है। अगर अभ्यास न हो, तो आपके लिये खूब पतली चाय बनवा दूँ।

नलिनाक्ष आश्चर्यके साथ हेमनलिनीके मुँहकी ओर देखकर यह समझ गये, कि हेमनलिनी नलिनाक्षके चाय न पीनेके सङ्कोचपर कुछ अन्दाज लगा रही है और मन-ही-मन इसी बातपर गौर कर रही है। उसी समय हेमनलिनीकी ओर देखकर नलिनाक्षने कहा,—"आप जो सोच रही हैं, वह बिलकुल सही नहीं है। आप यह न समझियेगा, कि कि आपके इस चायके टेबिलसे मैं घृणा करता हूं। पहले मैंने बहुत चाय पिया है—चायकी खुशबूसे अब भी मेरा मन चलता है। आप लोगोंको चाय पीते देख मुझे आनन्द आता है। किन्तु आप लोगोंको शायद मालूम नहीं, कि मेरी माँ बहुत आचार-विचारकी हैं—सिवा मेरे यथार्थमें उनके और कोई नहीं है—उस माँके सामने मैं सङ्कुचित होकर जा न सकूँगा। इसीसे मैं चाय नहीं पीता। किन्तु आप लोगोंका चाय पीनेमें जो सुख मिलता है, मुझे उससे सन्ताष हो जाता है। आप लोगोंके आतिथ्यसे मैं बञ्चित नहीं।"

इससे पहले नलिनाक्षकी बातचीतमे हेमनलिनीके मनमें कुछ ठेस लगी थी। वह समझ रही थी, कि नलिनाक्ष अपनेको उन लोगोंके आगे अच्छी तरह प्रकट नहीं कर रहा है। वह केवल अधिक बातें

कह अपनेको छिपाये रहनेकी चेष्टा कर रहा है। हेमनलिनी नहीं जानती थी कि प्रथम परिचयमें नलिनाक्ष सङ्कोचके भावको हटा न सकेगा। इसलिये नये लोगोंके सामने अनेक समय वह अपने स्वाभावके विरुद्ध दबर्दस्ती छिपा रखता है। अपनी बनावटी बात करनेमें भी वह उसमें कुछ बेसुरापन पैदा कर देता है। यह उसे खुद भी खटकता है। इसीसे आज योगेन्द्र जब अधीर होकर उठ गया, तब नलिनाक्ष अपने मनमें धिक्कारका अनुभव कर उसके साथ जानेको तैयार हो गया था।

किन्तु नलिनाक्षने जब अपनी माँकी बात कही, तब हेमनलिनी श्रद्धाकी दृष्टिसे उसकी ओर बिना देखे रह न सकी और माताकी बात कहनेके समय नलिनाक्षके मुँहपर जो सरल भक्तिका गाम्भीर्य प्रकट हुआ, उसे देख हेमनलिनीका मन आर्द्र हो उठा। उसकी इच्छा हुई, कि नलिनाक्षकी माताके सम्बन्धमें उससे कुछ बातचीत करे, किन्तु सङ्कोचसे वह ऐसा कर न सकी।

अन्नदाबाबूने व्यस्त हो कहा,—"बहुत अच्छे! अगर मैं पहले जानता, तो कभी आपसे चाय पीनेका अनुरोध न करता। माफ कीजियेगा।"

नलिनाक्षने जरा हँसकर कहा—"चाय न ले सकनेकी वजह आप लोगोंके अनुरोधसे क्यों वंचित होऊँ।"

नलिनाक्षके चले जानेपर हेमनलिनी अपने पिताको साथ लेकर दो-मंजिलेपर चली गई। वहाँ वह किसी बँगला मासिक पत्रसे प्रबन्ध चुनकर उन्हें सुनाने लगी। सुनते-सुनते अन्नदाबाबू शीघ्र ही सो गये। कुछ दिनसे अन्नदाबाबूके शरीरमें ऐसी सुस्तीका लक्षण नित्य ही दिखाई देता है।

———

४३

कई दिनमें ही नलिनाक्षसे अन्नदाबाबूके घरानेका परिचय घनिष्ठ हो गया। पहले हेमनलिनी समझी थी, कि नलिनाक्ष जैसे आदमीसे केवल बड़े बड़े आध्यामिक विषयोंमें ही उपदेश मिला करेगा—वह यह सोच भी न सकी, कि ऐसे आदमीसे साधारण विषयमें साधारण आदमियोंके समान ही बातचीत हो सकती है। इसलिये सभी हँसी मजाककी बातोंसे नलिनाक्ष कुछ अलग था।

एक दिन अन्नदाबाबू और हेमनलिनीके साथ नलिनाक्षकी बातचीत चल रही थी, इसी समय योगेन्द्रने कुछ उत्तेजित भावसे आकर कहा,—"सुना पिताजी, आजकल हमलोगोंको समाजके लोग नलिनाक्षबाबूका चेला कहने लग गये हैं, इसीपर अभी-अभी परेशके साथ मेरा खूब झगड़ा हो गया है।"

अन्नदाबाबूने हँसकर कहा,—"मुझे तो लज्जाकी कोई बात दिखाई नहीं देती। जहाँ सभी गुरु हैं, कोई चेला नहीं; उस दलमें मिलते मुझे लज्जा जान पड़ती है—वहाँ शिक्षा देनेकी होड़से शिक्षा पानेका अवसर ही नहीं मिलता।"

नलिनाक्ष—अन्नदाबाबू, मैं भी आपके दलमें हूँ—हमलोगोंका चेला दल है। जहाँ हमलोगोंको कुछ शिक्षा मिलनेकी सम्भावना है, वहाँ ही हमलोग पहुँचनेको तैयार हैं।

योगेन्द्रने अधीर होकर कहा,—'नहीं-नहीं, यह बात अच्छी नहीं। नलिनबाबू कोई भी आपका मित्र या आत्मीय हो न सकेगा। जो आपके पास आयेंगे, वही चेलाके नामसे विख्यात हो जायेंगे, ऐसी बदनामी हँसीमें उड़ाने लायक नहीं। आप जो करते हों, उसे छोड़ दीजिये।"

नलिनाक्ष—"मैं क्या करता हूँ, कहिये।"

योगेन्द्र—वही जो सुना है—आप प्राणायाम करते हैं, सवेरे सूर्यकी ओर ताकते रहते हैं, खाने-पीनेमें तरहके आचार-विचार करते हैं, इससे देशके आदमियोंमें आप बेपानी हो पड़े हैं।

योगेन्द्रकी इस रूखी बातसे व्यस्थित हो, हेमनलिनीने शिर नीचा कर लिया। नलिनाक्षने हँसकर कहा,—"योगेन्द्रबाबू, दश आदमियोंमें बेपानी होना दोषकी बात है। किन्तु तलवार और आदमी, क्या सभी पानीदार होते हैं। तलवारके जिस अंशपर पानी होना चाहिये, उसमें सब तलवार एक समान पानीदार हैं;—बाहरी मूठपर कारीगरकी इच्छा और निपुणताके अनुसार तरह-तरहकी कारीगरी होती है। मनुष्यमें भी देशके पानीके साथ बाहर विशेष कारीगरी है; क्या उसे भी आप लोग बेदखल कर लेना चाहते हैं। फिर, मेरे लिये यह भी आश्चर्यकी बात है, कि मैं सबकी निगाहोंसे बचकर जो अनुष्ठान किया करता हूँ, उसे लोग कैसे देख लेते हैं, और उसपर आलोचना क्यों करते हैं।"

योगेन्द्र—आप नहीं जानते, जो संसारकी उन्नतिका भार अपने कन्धेपर लादे हुए हैं, वह यह खोज-खबर रखनेमें अपना कर्त्तव्य समझते हैं, कि किसके घर क्या हो रहा है। जो खबर नहीं मिलती, उसे पूरी कर लेनेकी शक्ति भी उनमें है। नहीं तो संसारमें संशोधनका काम कैसे चले। इसके अतिरिक्त नलिनबाबू, जिस कामको चार आदमी नहीं करते, वह काम निगाह बचाकर करनेसे भी लोगोंकी निगाहमें पड़ जाता है—जो सभी करते हैं, उसे कोई देखता भी नहीं। देखिये न, आप छतपर बैठकर जो सब काम करते हैं, वह हमारी हेमकी निगाहमें भी पड़ चुका है—हेम पिताजीसे सब कह रही थी—फिर भी हेमने आपके संशोधनका भार तो लिया नहीं है।

हेमनलिनीका मुँह लाल हो उठा। वह घबराकर कुछ कहना चाहती थी, इस बीच नलिनाक्षने कहा,—"आप जरा भी लज्जित

न हों, छतपर टहलनेके समय सवेरे-शाम यदि आप मेरे नित्यके कर्म-को देखती हैं, तो इसके लिये कौन आपको दोषी कह सकता है। आप-की दो आँखें होनेके कारण आप लज्जित न हों; यह दोष हमलोगोंमें भी है।"

अन्नदा—इसके अलावा हेमने आपके नित्यकर्मके सम्बन्धमें मेरे आगे किसी तरहकी आपत्ति प्रकट नहीं की। वह श्रद्धापूर्वक आपकी साधना प्रणालीके सम्बन्धमें मुझसे पूछती थी।

योगेन्द्र—किन्तु मैं यह सब कुछ समझता नहीं। हमलोग साधारण संसारमें सहज भावसे जिस प्रकार चले चल रहे हैं, उसमें कोई विशेष असुविधा दिखाई नहीं देती—मुझे यह विश्वास नहीं, कि छिप कर अद्भुत काम करनेसे कुछ विशेष लाभ होता है—बल्कि उससे मनका सामञ्जस्य नष्ट होता और मनुष्य एक तरफा हो जाता है। किन्तु आप मेरी बातसे नाराज न होइयेगा—मैं बिलकुल ही साधारण आदमी हूँ। संसारमें मैं बहुत ही मध्यके स्थानमें रहता हूँ; जो किसी प्रकारके ऊँचे सिंहासनपर चढ़के बैठते हैं, उनकी ओर ढेले न फेंकनेके सिवा और कोई सम्भावना नहीं। मेरे जैसे असंख्य आदमी हैं, अतएव यदि आप सबको छोड़ किसी विचित्र लोककी ओर यात्रा कर रहे हैं, तो आपको असंख्य ढेले सहने पड़ेंगे।

नलिनाक्ष—ढेले भी कई प्रकारके होते हैं। कोई लग जाता है और कोई निशान बनाता चला जाता है। अगर कोई कहे, कि यह आदमी पागलपन करता है, लड़कपन करता है, तो उससे कोई हर्ज नहीं—किन्तु जब लोग कहते हैं, कि साधुगरी-साधकगरी करता है, गुरु बनकर चेला संग्रह करनेकी चेष्टामें है, तब इस बातको हँसीमें उड़ानेके लिये जितनी हँसीकी जरूरत है, उस परिणामसे हँसी भी नहीं आती।

योगेन्द्र—किन्तु मैं फिर कहता हूँ। मुझपर नाराज न होइयेगा नलिनबाबू, आप छतपर जो मनमें आये करें, मैं उस पर आपत्ति

करने वाला कौन। मेरा कहना केवल इतना ही है, कि साधारण सीमामें अपनेको बाँध रखनेमें फिर कोई बात रह नहीं जाती। जिस तरह सब लोग चले चलते हैं वैसे ही मेरा भी चले चलना यथेष्ट है उससे अधिक चलनेसे ही लोगोंकी भीड़ जमा हो जाती है। वे गाली दें या भक्ति करें, उससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं—किन्तु, क्या इतनी भीड़में जीवन आरामसे व्यतीत किया जा सकता है ?

नलिनाक्ष—योगेन्द्रबाबू, आप जाते कहाँ हैं। मुझे अपनी छतसे एक दम सर्वसाधारणके जमीनपर एकाएक उतारकर अब आपके भागनेसे काम न चलेगा।

योगेन्द्र—आज मेरे लिये यहीं तक यथेष्ट है—अब बस। जरा नींद जान पड़ती है।

योगेन्द्रके चले जानेपर हेमनलिनी शिर झुकाकर टेबिलपर ढके कपड़ेकी झालरसे छेड़-छाड़ करने लगी। उस समय यदि कोई देखता, तो उसे उसकी आँखोंके किनारे कुछ गीला-गीलासा दिखाई देता।

हेमनलिनी नित्य नलिनाक्षसे बातें करते-करते अपने हृदयकी दीनताको देख सकी है और नलिनाक्षकी राहपर चलनेके लिये व्याकुल भावसे व्यग्र हो उठी है। बहुत ही दुःखके समय जब उसे भीतर-बाहर किसी तरहका अवलम्बन खोजे नहीं मिल रहा था, उस समय नलिनाक्षने उसके सामने संसारको एक नये रूपमें खोल दिया। ब्रह्मचारिणीकी तरह किसी नियमके पालनके लिये उसका मन कुछ दिनसे उत्सुक था—क्योंकि नियम मनका एक दृढ़ अवलम्बन है—केवल इतना ही नहीं, शोक केवल मनके भावके आकारमें टिक नहीं सकता, वह बाहर भी किसी कठोर साधनामें अपनेको सत्य बनानेकी चेष्टा करता है। यहाँ तक हेमनलिनी वैसा कुछ कर न सकी—लोगोंकी निगाह पड़नेके सङ्कोचसे वह बहुत छिपकर अपने मनके भीतर ही उसे

पालती आई है। नलिनाक्षकी साधनप्रणालीका अनुसरण कर आज जब उसने शुद्ध आचार और निरामिष आहार ग्रहण किया, तब उसके मनको बहुत ही तृप्ति मिली। अपने सोनेके कमरेकी जमीनसे चटाई और दरी हटाकर उसने बिछौनेकी एक ओर पर्दका आड़ कर दिया—उस कोठरीमें उसने और कोई चीज रहने नहीं दी। उस जमीनको नित्य हेमनलिनी अपने हाथसे पानीसे धोती थी एक रकाबीमें कुछ फूल रखती; स्नानके बाद सफेद कपड़ा पहन उसी जमीनमें हेमनलिनी बैठती थी—सब खुली खिड़कियोंसे कोठरीमें बिना रुकावटके प्रकाश आता था और उस प्रकाश द्वारा, आकाश द्वारा और वायुके द्वारा वह अपने हृदयको अभिषिक्त कर लेती थी। अन्नदाबाबू पूरी तरहसे हेमनलिनीका साथ दे नहीं सकते थे—किन्तु नियमके पालनसे हेमनलिनीके चेहरेपर जो परितृप्तिका प्रकाश दिखाई देता था, उसे देख वृद्ध परितृप्त हो जाता था। अब नलिनाक्षके आनेपर हेमनलिनीकी उसी कोठरीमें जमीन के ऊपर बैठ उन तीनों आदमियोंमें बातचीत होती थी।

योगेन्द्र बिलकुल ही विद्रोही हो उठा,—"यह सब क्या हो रहा है। तुम सब लोगोंने तो मिलकर मकानको भयानक रूपसे पवित्र कर डाला है—मेरे जैसे आदमीके लिये तो यहाँ पैर रखनेकी भी जगह नहीं।"

पहले योगेन्द्रके कटाक्षसे हेमनलिनी बहुत संकुचित हो पड़ती थी - अब अन्नदाबाबू योगेन्द्रकी बातपर कभी-कभी नाराज हो उठते हैं, किन्तु, हेमनलिनी नलिनाक्षका साथ देती हुई शान्त और स्निग्ध भावसे हँसती रहती है। अब उसने दुविधा-विहीन एक निश्चित सहारेका अवलम्बन किया है—इस बारेमें लज्जा करनेको भी वह कमजोरी समझती है। लोग उसके आजकलके आचरणोंको अद्भुत समझ उसकी हँसी उड़ाते हैं; इसे वह समझती है; किन्तु नलिनाक्षके प्रति

जिसकी भक्ति और विश्वासने सब लोगोंको ढँकसा दिया है—इसलिये लोगोंके सामने वह किसी तरहका सङ्कोच नहीं करती।

एक दिन हेमनलिनी प्रातःस्नानके बाद उपासना समाप्त कर अपनी एकान्त कोठरीमें खिड़कीके सामने चुपचाप बैठी थी। ऐसे समय एकाएक अन्नदाबाबू नलिनाक्षको लिये हुए वहाँ आ पहुँचे। उस समय हेमनलिनीका हृदय परिपूर्ण था। उसने उसी समय जमीन पर बैठ पहले नलिनाक्षको और फिर अपने पिताको प्रणाम कर पैरकी धूलि माथेसे लगाया। नलिनाक्ष संकुचित हो उठे। अन्नदाबाबूने कहा,—"आप सङ्कोच न करें, हेमनलिनीने अपना कर्त्तव्य किया है।"

और दिनों इतने सबेरे नलिनाक्ष यहाँ आते नहीं थे। इसलिये बहुत उत्सुकताके साथ हेमनलिनीने उसके मुँहकी ओर देखा। नलिनाक्षने कहा,—"काशीसे माँका समाचार मिला है, उनका शरीर उतना अच्छा नहीं है, इसीसे मैंने ठीक किया है, कि आज शामकी गाड़ीसे काशी जाऊँगा। दिन-ही-दिन मुझे अपना सब काम कर लेना पड़ेगा, इसीसे इस समय आप लोगोंसे बिदा होने आया हूँ।"

अन्नदाबाबूने कहा,—"इसपर मैं और क्या कहूँ आपकी माँ बीमार हैं; भगवान् करें, वे शीघ्र अच्छी हो जायँ। इधर कुछ दिनोंसे आपसे हम लोगोंका जो उपकार हुआ है, वह ऋण हमलोग कभी भी चुका न सकेंगे"

नलिनाक्षने कहा,—"यह निश्चित समझें, कि आप लोगोंसे मेरा बड़ा उपकार हुआ है। पड़ोसीका जितना आदर-सत्कार होना चाहिये, वह तो हुआ ही है—इसके अतिरिक्त जिन सब गम्भीर बातोंपर मैं अकेले मन-ही-मन आलोचना किया करता था, आप लोगोंकी श्रद्धासे उसमें नया तेज आया है—मेरी भावना और साधना आप लोगोंके जीवनका अवलम्बनकर मेरे लिये और भी दृढ़ आश्रयस्थल बन गया है। मैं इस बातको अच्छी तरह समझ गया हूँ, कि किसी के

हृदयकी सहयोगितासे सार्थकताकी प्राप्ति कितनी सहज हो उठती है।"

अन्नदाने कहा,—"मुझे यह आश्चर्य है, कि हमलोगोंमें किसी बातकी बहुत खोज थी, किन्तु किस बातकी खोज, इसे हम समझते नहीं थे—ठीक ऐसे समय न जाने कहाँसे आप मिल गये और देखा, कि आपके न मिलनेसे हमारा कुछ चलता नहीं था। हमलोग बहुत ही सङ्कोची हैं—हम लोग समाजमें अधिक आते-जाते भी नहीं—किसी सभामें जाकर वक्तृता सुननेकी आदत भी हमलोगोंमें नहीं है—हो सकता है, कि मैं जाऊँ भी, किन्तु हेमनलिनीको ले जाना बहुत कठिन हो जाता है। किन्तु उस दिन कैसे आश्चर्यकी बात हुई, योगेन्द्रसे सुना, कि आप व्याख्यान देंगे, हम दोनों ही कोई आपत्ति प्रकट न कर सीधे वहाँ उपस्थित हुए - ऐसी घटना कभी हुई नहीं। यह बातें याद रखियेगा नलिनबाबू। इससे आप समझ सकेंगे, कि निःसन्देह आपकी हमलोगों को जरूरत है; नहीं तो ऐसी घटनाएँ क्यों होतीं। हमलोग आपके लिये भारस्वरूप हैं।"

नलिनाक्ष—आप लोग भी यह याद रखियेगा कि आप लोगोंको छोड़ किसीके आगे मैंने अपने जीवनकी गूढ़ बातें प्रकट नहीं की हैं। सत्यको प्रकाश करना ही सत्यकी चरमशिक्षा है। उसके प्रकाश करनेके गूढ़ प्रयोजनको मैं आपलोगोंके द्वारा ही मिटा सका हूँ। अतएव आपलोग भी इस बातको न भूलियेगा, कि आप लोगोंकी मुझे कितनी जरूरत है।

हेमनलिनी कुछ नहीं बोली, खिड़कीकी राहसे धूप आकर जमीनमें चढ़ रही थी, उसी ओर देखती हुई वह चुपचाप बैठी थी। अब नलिनाक्षके उठनेका समय हुआ, तब उसने कहा,—"खबर दीजियेगा, कि आपकी माताजी कैसी हैं।"

नलिनाक्षके खड़े होनेपर हेमनलिनीने फिर भूमिष्ठ होकर प्रणाम किया।

४४

इधर कई दिनसे अक्षय दिखाई नहीं दिया। नलिनाक्षके काशी चले जानेपर आज वह योगेन्द्रके साथ अन्नदा बाबूके चायके टेबिलपर दिखाई दिया है। अक्षयने मन ही-मन ठहराया था, कि रमेशकी याद हेमनलिनीके मनमें कहाँतक मौजूद है, इसके समझानेका सहज उपाय अक्षयके प्रति उसकी नाराजी है। आज उसने देखा कि हेमनलिनीका चेहरा शान्त है—अक्षयको देखकर उसके चेहरेका भाव बिलकुल नहीं बिगड़ा। सहज प्रसन्नताके साथ हेमनलिनीने कहा,—"आप कई दिनसे दिखाई नहीं दिये?"

अक्षयने कहा,—'क्या मैं नित्य देखने योग्य हूँ।"

हेमनलिनीने हँसकर कहा,—'यह योग्यता न होनेसे मिलना-जुलना भी बन्द कर दिया जाय, तो हम सभी लोगोंका निर्जनवास करना चाहिये।"

योगेन्द्र अक्षय समझे थे, कि अकेले विनयकर बहादुरी लूटें, किन्तु हेमने उसपर भी धक्का दे समस्त मनुष्य जातिके लिये विनय किया, किन्तु इसके बारेमें मैं कुछ कहना चाहता हूँ। हमलोगों जैसे साधारण आदमी ही नित्य मिलने-जुलनेके योग्य हैं और जो असाधारण हैं उनसे कभी कभी मिलना ही अच्छा है, इससे अधिक बर्दाश्तसे बाहर है। इसीसे तो ऐसे लोग जङ्गल पहाड़ और गुफाओंमें ही घूमते फिरते हैं अगर वह लोगोंमें स्थायी भावसे बैठने लगें, तो अक्षय और योगेन्द्र जैसे बिलकुल मामूली लोगोंको जङ्गल-पहाड़में छिपना पड़ेगा।

योगेन्द्रकी बातोंमें जो खोंचा था, उसने हेमनलिनीको छेद दिया। इसका कोई जवाब न दे उसने तीन प्याला चाय तैयार कर अन्नदा,

अक्षय और योगेन्द्रके सामने रख दिया। योगेन्द्रने कहा,—"क्या तुम चाय न पियोगी ?"

हेमनलिनी समझती थी, कि अब योगेन्द्र कुछ कठोर वचन कहेगा, फिर भी उसने शान्त और दृढ़ भावसे कहा,—"मैंने चाय छोड़ दिया है।"

योगेन्द्र—शायद अब कायदेके साथ तपस्या आरम्भ हुई है। शायद चायकी पत्तियोंमें यथेष्ट आध्यात्मिक तेज नहीं है, जो कुछ है, वह केवल हरीतकीमें। कैसी आफत है। हेम, यह सब छोड़ो। एक प्याला चाय पीनेसे ही यदि तुम्हारा योगध्यान छूट जाय, तो छूट जाने दो—इस संसारमें बहुत मजबूत चीज भी कायम नहीं रहती, ऐसा भाव लेकर चार आदमियोंमें शामिल रहना असम्भव है।

यह कह योगेन्द्रने अपने हाथ एक प्याला चाय तैयार कर हेमनलिनीके सामने रख दिया। उसने उसमें हाथ न लगा अन्नदाबाबूसे कहा,—'पिताजी, आज तुमने केवल चाय ही पी है, और कुछ न खाओगे ?"

अन्नदाबाबूकी आवाज और हाथ काँपने लगा। उन्होंने कहा,—"बेटी, मैं सच कहता हूं। इस टेबिलपर कुछ खाना मुझे रुचता ही नहीं। योगेन्द्रकी बातोंको मैं बहुत देरसे चुपचाप सहनेकी चेष्टा कर रहा हूँ। मैं यह जानता हूँ, कि अपने शरीर और मनकी इस अवस्थामें कुछ बोलते समय मैं न जाने क्या कह बैठ सकता हूँ—किन्तु पीछे पछताना पड़ता है।"

हेमनलिनीने अपने पिताकी कुरसीके पास खड़ी होकर कहा,—"पिताजी, तुम नाराज न हो। दादा मुझे चाय पिलाना चाहते हैं, यह तो अच्छा ही है—मैं तो इसका कुछ खयाल भी नहीं करती। नहीं पिताजी, तुम कुछ खाओ—खाली पेट चाय पीनेसे तुम्हें नुकसान पहुँचता है ; यह मैं जानती हूँ।"

यह कह हेमनलिनीने जलपानकी रकाबी खींचकर अपने पिताके सामने रख दी। अन्नदा धीरे-धीरे जलपान करने लगे।

हेमनलिनी अपनी कुरसी पर बैठकर योगेन्द्रके दिये हुए चायके प्यालेसे चाय पीनेको तैयार हुई। किन्तु चटपट उठकर अक्षयने कहा,—"माँफ कीजियेगा, यह प्याला मुझे दे दीजिये, मेरा प्याला खाली हो गया।"

योगेन्द्रने हेमनलिनीके हाथसे प्याला लेकर अन्नदासे कहा,—"माँफ करो, मुझसे भूल हुई।"

अन्नदा इसका कोई जवाब दे न सके, देखते-देखते उनकी आँखोंसे आँसू टपक पड़े।

योगेन्द्र, अक्षयके साथ धीरे-धीरे कोठरीसे बाहर निकल गया। अन्नदाबाबू जलपानकर हेमनलिनीका हाथ पकड़ काँपते पैरोंसे ऊपर चले गये।

उसी रात अन्नदाबाबूको शूल वेदना जैसी बीमारी हुई। डाक्टरने परीक्षाकर कहा,—"उन्हें यकृतका विकार है—अभी रोग बढ़ा नहीं है, इस समय पश्चिमके किसी स्वास्थ्यकर स्थानमें जाकर वर्ष—छः महीने रह आनेसे शरीर निर्दोष हो सकता है।"

दर्द कम होने और डाक्टरके चले जानेपर अन्नदाबाबूने कहा,—"हेम चलो बेटी, हो सके तो हमलोग कुछ दिन काशीमें चलकर रहें।"

इसी समय हेमनलिनीके मनमें भी यही बात आई थी। नलिनाक्षके चले जानेके बादसे हेम अपने साधनके सम्बन्धमें कुछ कमजोरीका अनुभव करने लगी थी। नलिनाक्षके रहते हेमनलिनीकी सब नित्यक्रियाएँ दृढ़ताके साथ चल रही थीं। नलिनाक्षके मुखश्रीमें एक स्थिर निष्ठा और प्रशान्त प्रसन्नताकी दीप्ति थी, उसीने हेमनलिनीके विश्वासको सदा विकसित कर रखा था। नलिनाक्षके न रहनेपर उसके उत्साहमें

मानो एक मलिन छाया आ पड़ी। इसीसे आज सारे दिन हेमनलिनीने नलिनाक्षके बताये अनुष्ठानोंको बड़े जोर और बहुत अधिक रूपमें किया। किन्तु उससे थकावट आकर ऐसी निराशा उत्पन्न हो गई थी, कि वह अपने आँसुओंको रोक न सकी। चायके टेबिलपर बड़ी दृढ़ताके साथ उसने आतिथ्य किया था, किन्तु उसका मन एक बोझसे दबा था। उसकी पुरानी स्मृतिने फिर उसपर दूने वेगसे आक्रमण किया है—फिर उसका मन मानो गृहहीन और आश्रयहीनकी तरह हाय हायकर घूमने लगा है। इसीसे जब उसने काशी चलनेका प्रस्ताव सुना, तब घबड़ाकर कहा, "पिताजी, यहीं ठीक है।"

दूसरे दिन तैयारी होते देख योगेन्द्रने पूछा,—"क्या बात है।"

अन्नदाने कहा,—"हमलोग पश्चिम जा रहे हैं।"

योगेन्द्रने पूछा—"पश्चिम किस जगह।"

अन्नदाने कहा,—"घूमते-फिरते कोई जगह पसन्द कर लेंगे।" उन्होंने योगेन्द्रके सङ्कोचसे काशी जानेका नाम नहीं लिया।

योगेन्द्रने कहा, "किन्तु मैं इस बार तुम लोगोंके साथ जा न सकूँगा। मैंने हेडमास्टरीके लिये जो दरखास्त भेजी है, उसके जवाबकी राह देखूँगा।"

४५

रमेश सवेरे ही इलाहाबादसे गाजीपुर लौट आया। उस समय रास्तेमें अनेक लोग नहीं थे और शीतकी अधिकतासे राह किनारेके पेड़ मानों पत्तोंकी आड़में जड़ाये हुए खड़े थे। महल्लेकी बस्ती पर उस समय भी सफेद ओस अण्डेके ऊपर चुपचाप बैठे हुए बत्तखकी तरह छाया हुआ था। उस निर्जन राहमें घोड़ागाड़ीके भीतर एक मोटे ओवर कोटके नीचे रमेशकी छातीके भीतर हृदय आघात कर रहा था।

बँगलाके बाहर गाड़ी खड़ी करा रमेश उतरा। सोचा, कि गाड़ीकी आवाज निश्चय ही कमलाने सुनी होगी—आवाज सुनकर शायद वह बाहर बरामदेमें आ गई होगी। अपने हाथ कमलाके गलेमें पहनानेके लिये इलाहाबादसे रमेश सोनेका एक कीमती नेकलेस ले आया था। जेवरका बक्स रमेशने ओवरकोटसे निकालकर हाथमें ले लिया।

बँगलेके सामने आकर रमेशने देखा, कि बिशुन बैरा बरामदेमें पड़ा सो रहा है। बँगलेका दर्वाजा बन्द है। दुःखी हो रमेश कुछ ठिठककर खड़ा हो गया। जरा ऊँचे स्वरसे आवाज दी,—"बिशुन"। सोचा, कि इस आवाजसे घरके भीतर भी नींद खुल गई होगी। उसने सोचा, कि ऐसी ही आवाज देनेकी जरूरत है। रमेश आधी रातसे सोया नहीं था।

दो-तीन बार बुलानेपर भी बिशुन नहीं जागा। अन्तमें उसे हिलाकर जगाना पड़ा। बिशुन उठकर कुछ देर बेवकूफोंकी तरह ताकता रहा। रमेशने पूछा,—"बहूजी घरमें हैं।"

पहले बिशुन मानो रमेशकी बात समझ ही नहीं सका। इसके बाद एकाएक चौंक कर कहने लगा,—"हाँ, वह घरमें ही हैं।" इसके बाद वह फिर लेटकर सोनेकी चेष्टा करने लगा।

रमेशके ठेलते ही दर्वाजा खुल गया। भीतर जाकर उसने हर कोठरीमें देखा, कहीं कोई नहीं। फिर भी उसने एकबार ऊँचे स्वरसे बुलाया,—"कमला।" कहीं कोई आवाज नहीं। बाहर बागमें नीमके नीचे तक घूम आया, रसोई घरमें, नोकरोंकी कोठरीमें, अस्तबल घरमें ढूँढ आया, किन्तु कहीं भी कमला दिखाई नहीं दी। उस समय धूप निकल आई है—कौवा बोलने लगे है और बंगलेके कुएँसे पानी लेनेके लिये घड़ा माथेपर धरे पड़ोसकी दो-एक औरतें भी दिखाई दीं। सड़कके उस किनारेके मकानमें गाँवकी स्त्री विचित्र ऊँचे स्वरसे गाती हुई आंगनमें गेहूँ पीस रही है।

रमेशने बँगलेमें लौट कर देखा, कि बिशुन फिर गहरी नींदमें सो रहा है। तब उसने झुककर खूब जोरसे बिशुनको जगाया—देखा, कि उसकी साँससे ताड़ीकी बदबू निकल रही है।

हिलानेपर बहुत कुछ होशमें आ बिशुन चटपट उठ बैठा। रमेशने फिर पूछा,—"बहूजी कहाँ हैं?"

बिशुनने कहा,—"बहूजी तो घरमें ही हैं।"

रमेश—घरमें तो कहीं नहीं हैं।

बिशुन—कल तो यहीं आई हैं।

रमेश—इसके बाद कहाँ गईं?

बिशुन रमेशका मुँह देखता रह गया।

इसी समय खूब चौड़े किनारेकी बढ़िया धोती पहने चादर ओढ़े लाल-लाल आँखें किये उमेश आ पहुँचा। रमेशने उससे पूछा,—"उमेश, तेरी माँजी कहाँ हैं?"

उमेशने कहा,—"माँ तो कलसे यहीं हैं।"

रमेशने पूछा,—"तू कहाँ था?"

उमेशने कहा,—"मुझे माँने कल सुधू बाबूके घर यात्रा सुननेको भेज दिया था।"

गाड़ीवानने आकर कहा—"बाबू, मुझे किराया चाहिये।"

रमेश चटपट उसी गाड़ीपर सवार हो चाचाके घर पहुँचा। वहाँ जाकर देखा, कि मकानमें सभी लोग घबराये हुए हैं। रमेश समझा कि शायद कमला कुछ बीमार है। किन्तु यह बात नहीं थी। कल सन्ध्याके बाद ही उमा एकाएक चीखकर रोने लगी और उसका मुँह नीला तथा हाथ पैर ठण्ठा होनेसे सभी लोग घबरा गये। उसकी दवा करनेमें कल मकानके सभी लोग घबरा उठे थे। सारी रात कोई सो न सका।

रमेशने सोचा, कि उमाके बीमार होनेसे कल रात निश्चय ही कमला बुलाई गई होगी। उसने अपनेसे कहा,—"तब कमला तो उमाके लिये बहुत घबराई होगी।"

विपिन जानता नहीं था, कि कमला कल रात यहाँ आई थी या नहीं। इसीसे रमेशकी हाँ-में-हाँ मिला उसने कहा,—"हाँ, वह उमाको जितना चाहती थीं, उससे खूब घबराई होंगी। किन्तु डाक्टरने कहा है, कि भयका कोई कारण नहीं।"

जो हो, बहुत ही प्रसन्न मुखसे कल्पनामें बाधा पानेपर रमेशका मन विकल हो उठा। उसने सोचा, कि इन लोगोंका मिलन भी एक बड़ी व्याघात है।

इसी समय रमेशके बँगलेसे उमेश आ पहुँचा। यहांके जनानखानेमें वह आता-जाता था। इस बालक पर शैलजा प्रेम भी करती थी। घरके भीतर शैलजाके कमरेकी ओर वह जा रहा था, यह देख उमाकी नींद खुलनेके भयसे शैल शीघ्र ही कोठरीसे बाहर निकल आई।

उमेशने पूछा,—"माँ कहाँ है मासीजी?"

शैलने विस्मयके साथ पूछा,—"क्यों तू तो उन्हें साथ लेकर कल उस मकानमें गया न? शामके बाद मैं लछमिनियाको वहाँ भेजनेवाली थी, किन्तु लड़कीकी बीमारीसे वह वहाँ जा न सकी।"

उमेशने उदास होकर कहा,—"उस मकानमें तो वह दिखाई नहीं दीं।"

शैलने भी घबराकर पूछा,—"यह कैसी बात। कल रात तू कहाँ था?"

उमेश—मुझे तो माँने रहने नहीं दिया। उस मकानमें जाते ही उन्होंने मुझे सिधू के घर यात्रा देखनेको भेज दिया।

शैल—तू तो बड़ा बुद्धिमान दिखाई देता है। बिशुन कहाँ था?

उमेश—बिशुन तो कुछ बता ही नहीं सका। कल उसने खूब ताड़ी पी थी।

शैल—जा जा, जल्दीसे बाबूको बुला ला।

विपिनके आते हीं शैलने कहा,—"अरे, यह कैसा सर्वनाश हुआ ?"

विपिनका मुँह पीला पड़ गया। उसने घबराकर पूछा,—"क्यों, क्या हुआ ?"

शैल—कमल कल उस बँगलेमें गई थी, वह वहाँ नहीं है।

विपिन—क्या वह कल रात यहाँ नहीं आई ?

शैल—नहीं, उमाकी बीमारीसे मनमें आया, कि उन्हें बुलाऊँ, लेकिन आदमी कहाँ था ? क्या रमेशबाबू आये हैं ?

विपिन—जान पड़ता है कि उस बँगलेमें न देखकर वह समझे हैं, कि कमल यहाँ ही आई हैं। वह तो हमारे यहाँ आकर बैठे हैं।

शैल—जाओ जाओ, जल्दी जाओ, उन्हें साथ लेकर खोज करो। उमिया इस समय सो रही है—वह अच्छी है।"

विपिन और रमेश फिर उसी गाड़ीपर सवार हो बँगले लौट आये और बिशुनसे पूछ-ताछ करने लगे। बहुत पूछ-ताछ करनेपर यह पता लगा, कि कल शामको कमला अकेली गङ्गा किनारेकी ओर गई थी। बिशुनने उसके साथ जानेको कहा, किन्तु कमलाने उसके हाथ एक रुपया दे, उसे लौटा दिया। वह पहरा देनेके लिये बगीचेके फाटकपर बैठा रहा। उसी समय पेड़से ताजा फेनिल ताड़ीका बर्तन लिये ताड़ी-वाला उसके सामनेसे जा रहा था, इसके बाद संसारमें क्या हुआ, इसकी कोई खबर बिशुनको नहीं। जिस राहसे उसने कमलाको गङ्गा किनारे जाते देखा, वह बता दिया।

उसी राहसे ओससे सिंचे हुए खेतोंके बीचसे रमेश, विपिन और उमेश कमलाको ढूँढ़ने चले। उमेश शिकारीके पंजेकसे छूटे खरगोशकी तरह चारों ओर तेज निगाहसे देखता चला। गङ्गाके किनारे आकर तीनों एक बार खड़े हो गये। वहाँ चारों ओर खुलता था। सफेद बालू सवेरेकी धूलसे चमक रही थी। कहीं कोई भी दिखाई न दिया। उमेश ऊँचे स्वरसे चिल्लाया,—"माँ, माँ कहाँ हो।" उस पारके ऊँचे कगारेसे लड़कर उसकी प्रतिध्वनि लौट आई। कहीं कोई पता नहीं।

ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उमेशने एकाएक कुछ सफेद चीज देखा। उसने जल्दीसे वहाँ पहुँच कर देखा, कि पानीके किनारे एक रूमालमें बँधा चाबीका गुच्छा पड़ा है। "वह क्या है" कहता हुआ रमेश भी वहाँ पहुँच गया। उसने देखा, कि चाबीका गुच्छा कमलाका ही है।

जहाँ चाबी पड़ी थी, वहीं बालूके किनारे-किनारे दल-दल मिट्टी भी थी। इस कच्ची मिट्टीसे गङ्गाके भीतर तक छोटे-छोटे पैरके निशान पड़े थे। थोड़ेसे पानीमें कुछ झिलमिला रहा था, वह उमेशकी निगाहसे बँच न सका—उसने जल्दीसे उठाया तब दिखाई दिया, कि वह सोनेके ऊपर पच्चीकारी किया हुआ एक छोटा ब्राच था—यह रमेशका दिया उपहार था।

इस तरह सारी दुँढाईने जब गङ्गाके किनारेकी ओर ही उँगली उठाई, तब उमेश अब शान्त रह न सका। वह "माँ-माँ" चिल्लाकर पानीमें कूद पड़ा। वहाँ पानी अधिक नहीं था—उमेश बार-बार डुबकी लगा जमीन थहाने लगा—उसकी दुँढाईसे पानी गँदला हो गया।

रमेश हतबुद्धि हो खड़ा रहा। विपिनने कहा,—उमेश, यह तू क्या कर रहा है, निकल आ।"

उमेश मुँहसे पानी फेंकते-फेंकते कहने लगा,—"मैं न निकलूँगा, मैं न निकलूँगा। माँ, तुम मुझे छोड़कर कहाँ जाओगी !"

विपिन डर गया। किन्तु रमेश मछलीकी तरह पानीमें तैर सकता है—उसका पानीमें आत्म हत्या करना कठिन था। बहुत छटपटानेके बाद पानीसे निकल किनारे आ गया। रोने लगा।

विपिनने चुपचाप खड़े रमेशको हिलाकर कहा,—"रमेश बाबू, चलिये। यहाँ खड़े रहनेसे क्या फायदा। जरा पुलिसमें रिपोर्ट की जाय, वह सब पता लगायेंगे।"

शैलजाके घर उस दिन खाना-पीना बन्दकर रुलाई होती रही। नदीमें जालवालोंने बहुत दूर तक जाल डाला। पुलिसने चारो ओर खोज की। स्टेशन पर भी खोज हुई, कमलासे मिलती-जुलती कोई भी लड़की रातको गाड़ीपर सवार नहीं हुई।

उस दिन तीसरे पहर चाचा भी आ गये। कई दिनसे कमलाके व्यवहार और शुरूसे—आखीर तक सब वृत्तान्त सुन उन्हें उसके डूब मरनेमें कोई भी सन्देह न रहा।

लछमिनियाने कहा,—इसीलिये लड़की कल रात बिना किसी कारणके रोते-रोते बीमार हो गई, उसकी अच्छी तरह झाड़-फूँक होना चाहिये।"

रमेशकी छाती मानो सूख गई—उसमें आँसूका भाप भी नहीं था। वह बैठे-बैठे सोचने लगा, कि एक दिन यही कमला गङ्गाके पानीसे निकलकर मेरे पास आई थी, फिर पूजाके पवित्र फूलकी तरह उसी गङ्गाके पानीमें समा गई।

उस समय सूर्य अस्त हो गये थे, तब रमेश फिर गङ्गा किनारे आया। जिस जगह चाबीका गुच्छा पड़ा था, वहाँ खड़े ही एक दृष्टिसे पैरोंका निशान देखने लगा। इसके बाद जूता उतार धोती चढ़ा कुछ दूर तक पानीमें उतर गया। उसने बाकससे नया नेकलेस निकालकर दूर पानीमें फेंक दिया।

रमेश गाजीपुरसे कब चला गया, इसकी खबर किसीको नहीं।

४६

अब रमेशके लिए कोई काम रह नहीं गया। उसके मनमें आया, कि शायद इस जीवनमें वह कोई काम न कर सकेगा। यह नहीं, कि हेमनलिनी उसे याद नहीं आई—उसने मन-ही-मन सोचा, कि मेरे जीवन पर भयानक घटनाओंने चोट पहुँचाई, उसने मुझे सदाके लिये संसारमें अयोग्य बना डाला। बिजलीका मारा हुआ पेड़ खिले बगीचेमें स्थान पानेकी आशा कैसे करे।

रमेश घूमने-फिरनेके लिये बाहर निकला। कहीं भी दो-एक दिनसे अधिक न रहा। उसने नावपर चढ़के काशीके घाटोंकी शोभा देखी। वह दिल्लीके कुतुबमीनारपर चढ़ा। आगरामें चाँदनी रातमें ताजमहल देख आया। अमृतसरमें गुरुद्वारा देखा। राजपूतानेके आबू पहाड़के मन्दिर देखने गया—इस तरह रमेशने शरीर और मनको विश्राम नहीं दिया।

अन्तमें भ्रमणसे थका हुआ वह युवक हृदयसे केवल घरकी खोजमें हाहाकार करने लगा। उसके मनमें शान्तिमय घरकी अतीत स्मृति और सम्भवपर घरकी सुखमयी कल्पना चोट पहुँचाने लगी। अन्तमें एक दिन उसका शोक काटनेका समय बिताना समाप्त हो गया और वह ठण्ढी साँस भर कलकत्तेका टिकेट ले गाड़ीपर सवार हो गया।

कलकत्ते पहुँचने पर रमेश कोलूटोलावाली गलीमें सहसा प्रवेश कर न सका। इसका कोई ठिकाना नहीं, कि वहाँ जाकर वह क्या देखे—सुनेगा। उसके मनमें केवल यही एक आशङ्का होने लगी, कि वहाँ कोई बहुत बड़ा परिवर्त्तन हो गया है। एक दिन वह गलीके मोड़ तक जाकर लौट आया। दूसरे दिन शामके समय उसने अपनेको जबर्दस्ती उस मकानके सामने पहुँचाया। देखा, कि मकानके सब खिड़की दर्वाजे बन्द हैं—ऐसा नहीं जान पड़ता, कि भीतर कोई है

सोचा, कि शायद सुक्खन बैरा सन्नाटे मकानमें हो, यह समझ रमेशने बैराको आवाज देते हुए दर्वाजेपर कई धक्के दिये। किसीने जवाब नहीं दिया। पड़ोसी चन्द्रमोहन अपने दर्वाजेपर बैठे तम्बाकू पी रहे थे; उन्होंने कहा,—"कौन, रमेश बाबू हैं क्या। अच्छी तरह तो हैं? इस मकानमें इस समय अन्नदाबाबू वगैरः कोई नहीं हैं।"

रमेश—आप जानते हैं, वह लोग कहाँ गये हैं?

चन्द्रमोहन—यह तो नहीं कह सकता, किन्तु यह जानता हूँ, कि पश्चिम गये हैं।

रमेश—कौन कौन गये हैं?

चन्द्र०—अन्नदाबाबू और उनकी लड़की।

रमेश—अच्छी तरह जानते हैं, कि उनके साथ और कोई नहीं गया?

चन्द्र—ठीक जानता हूँ जानेके समय मुझसे मुलाकात हुई है।

रमेशने धीरज न धरकर फिर पूछा,—मैंने एक आदमीसे सुना है, क नलिनबाबू नामके कोई बाबू उनके साथ गये हैं।"

चन्द्र—यह खबर गलत है। नलिनबाबू आपकी कोठरीमें कई दिन तक रहे। इन लोगोंके जानेसे दो-चार दिन पहले ही वह काशी चले गये थे।

तब रमेशने नलिनबाबूके बारेमें पूछ-ताछ कर चन्द्रमोहनसे बहुत कुछ मालूम कर लिया। उसका नाम नलिनाक्ष चट्टोपाध्याय है। सुनते हैं, कि पहले रङ्गपुरमें डाक्टरी करते थे, इस समय अपनी माँके साथ काशीमें हैं। रमेश कुछ देर चुप रहा। फिर पूछा,—"आप बता सकते हैं, कि योगेन्द्र इस समय कहाँ हैं?"

चन्द्रमोहनने बताया, कि योगेन्द्र गयमनसिंहके किसी जमींदार द्वारा स्थापित हाईस्कूलके हेडमास्टर होकर विशाईपुरगये हैं।

चन्द्रमोहनने पूछा—"रमेश बाबू, आप बहुत दिनपर दिखाई दिये—अब तक कहाँ थे ?"

रमेशको अब छिपानेका कोई कारण दिखाई न दिया-उसने कहा,-"वकालतकी प्राक्टिसके लिये गाजीपुर गया था।"

चन्द्र—तो क्या अब वहीं रहना होगा ?

रमेश—नहीं, मैं वहाँ रह न सका-अभी कुछ ठीक नहीं; कि कहाँ जाऊँगा।

रमेशके चले जानेके कुछ देर बाद अक्षय आया। योगेन्द्रने अपने जानेके समय बीच-बीचमें मकानकी देख-रेख करनेके लिये अक्षयको नियुक्त किया था। अक्षय जिस भारको लेता है, उसके निभानेमें किसी तरहकी शिथिलता नहीं करता-इसीसे वह कभी आकर देख जाया करता है, कि मकानकी रखवालीके लिये रखे गये दो बैरोंमें कोई समयसे रहता है या नहीं।

चन्द्रमोहनने कहा,-"अभी कुछ ही पहले रमेशबाबू यहाँसे गये हैं।"

अक्षय—आप क्या कह रहे हैं ? वह क्या करने आये थे ?

चन्द्र—यह तो मैं नहीं कह सकता। मुझसे वे अन्नदाबाबूकी सब खबर पूछ गये हैं। ऐसे दुर्बल हो गये हैं, कि उन्हें पहचानना कठिन है-अगर वह बैराको न बुलाते, तो मैं पहचान न सकता।

अक्षय—आपको मालूम है, कि इस समय वे कहाँ हैं ?

चन्द्र—इतने दिन गाजीपुर में थे-अब वहाँसे छोड़कर यहाँ आये हैं, यह नहीं मालूम कि कहाँ ठहरे हैं।

अक्षय "ठीक" कह कर अपने काममें लगा।

रमेश अपने बासेमें आकर सोचने लगे, कि अदृष्ट यह कैसे खेल खेल रहा है। एक ओर मेरे साथ कमलाका और दूसरी ओर नलिनाक्षके साथ हेमनलिनीका यह मिलन; यह तो बिलकुल उपन्यास जैसी बातें हैं—वह भी बिना लिखा उपन्यास। इस तरह ठीक उलटा-पलटा

मिलाप कर देना अदृष्टके समान ही लापरवाह लेखकके लिये सम्भव है—संसारमें ऐसे अद्‌भुत काम होते हैं, जिसे भीरु लेखक काल्पनिक उपाख्यानमें लिखनेका भी साहस नहीं करता। रमेशने सोचा अब जब वह अपने जीवनकी समस्याओंसे मुक्त हुआ है, तब खूब सम्भव है, कि अदृष्ट इस जटिल उपन्यासके अन्तिम अध्यायमें रमेशके लिये भयानक उपसंहार न लिखेगा।

योगेन्द्र विशईपुरमें जमींदारके मकानके बगलमें एक एक मंजिले मकानमें रहता है—वहाँ वह रविवारके सवेरे समाचार-पत्र पढ़ रहा था, उसी समय बाजारके एक आदमीने उसके हाथ एक चिट्ठी दी। लिफाफेके ऊपरकी लिखावट देखकर वह आश्चर्यमें आया। खोलकर देखा, कि रमेशने लिखा है—वह विशईपुरकी एक दूकानमें उसके आसरे है, कुछ जरूरी बातें कहनी हैं।

योगेन्द्र एकदम कुरसी छोड़ उठ खड़ा हुआ। यद्यपि एक दिन वह रमेशका अपमान करनेको बाध्य हुआ था, फिर भी वह अपने बचपन-के मित्रको इस दूरदेशमें लौटा न सका। यहाँ तक कि उसके मनमें बड़ा आनन्द आया—कौतूहल भी हुआ। विशेषतः जब हेमनलिनी यहाँ नहीं है, तब रमेशसे उसे कोई आशङ्का भी जान न पड़ी।

चिट्ठी लानेवालेको साथ ले योगेन्द्र स्वयं रमेशकी खोजमें चला। देखा, कि, वह एक बनियेकी दूकानमें किरासिनके खाली बाकसको उलटकर चुपचाप बैठा है। बनिया ब्राह्मणके हुक्केमें उसे तम्बाकू देनेको तैयार हुआ, किन्तु यह जानकर, कि चश्मा पहने बाबू तम्बाकू नहीं पीते, वह उसे शहरके किसी अद्‌भुतश्रेणीके पदार्थोंमें समझ बैठा था। इसलिये दोनोंमें परिचयकी भी कोई बातचीत नहीं हुई।

योगेन्द्रने तेजीके साथ आकर रमेशका हाथ पकड़कर खींचा। कहा,—"तुमसे मैं हारा। तुम अपनी दुविधाको साथ ही लेते गये।

कहाँ तुम्हें सीधे मेरे घर आना चाहिये, कहाँ रास्तेमें बनियेकी दूकानमें गुड़-बताशे और फरुईके चक्तोंके बीच अटल होकर बैठे हुए हो।

रमेश शर्मसे हँस दिया। योगेन्द्र राहमें न जाने क्या बकता हुआ चला। उसने कहा,—"चाहे कोई कुछ ही क्यों न कहे, हमलोग विधाताको पहचान न सके। उन्होंने मुझे शहरमें मनुष्य बना इतना बड़ा नागरिक बना दिया; क्या यह इसीलिये कि मैं इस गाँवमें अपनी जीवात्माको खेतोंके बीच मारूँ ?"

रमेशने चारो ओर देखकर कहा,—"क्यों, जगह तो अच्छी है।"

योगेन्द्र—अर्थात् ?

रमेश—अर्थात् निर्जन है—

योगेन्द्र—इसलिये मैं अपने ही जैसे और किसीको बाद दे इस निर्जनताको और बढ़ानेके लिये नित्य व्याकुल होता रहता हूँ।

रमेश—यह कहो; मनकी शान्तिके लिये तो-

योगेन्द्र—यह सब बातें मुझसे न कहो—कुछ दिनसे खूब मनको शान्ति देते-देते मेरा प्राण कण्ठगत है। मैंने अपने भरशक इस शान्तिको तोड़नेमें काई त्रुटि नहीं। इसी बीच सेक्रेटरीसे हाथापाई होनेकी नौबत आ गई। जमींदार बाबूको भी मैंने अपने मिजाजका जैसा परिचय दिया है, उसपर सहज ही वह हस्तक्षेप करने न आयेंगे। वह मुझसे समाचारपत्रके बारेमें मुसाहिबी करना चाहते थे-किन्तु मैंने उन्हें अच्छी तरह समझा दिया, कि मैं स्वतन्त्र स्वभावका आदमी हूँ। फिर भी मैं जो यहाँ टिका हुआ हूँ, वह अपने गुणसे नहीं। यहाँके ज्वाइण्ट साहबने मुझे बहुत पसन्द किया है-इसीसे जमींदार मारे भयके मुझे छुड़ा नहीं सकता-जिस दिन गेजेटमें देखूँगा, कि ज्वाइण्ट साहबकी बदली हो गई, उसी दिन समझ जाऊँगा, कि मेरी हेडमास्टरीका सूर्य विशईपुरके आकाशमें अस्त हो गया। इस बीच यहाँ मेरा एक ही

मुलाकाती पैदा हुआ है-यह पंचू कुत्ता, और सब लोगोंकी मुझपर जैसी दृष्टि है, उसे मैं किसी तरहसे भी शुभदृष्टि नहीं कह सकता।

योगेन्द्रके बासेमें आकर रमेश एक कुरसीपर बैठ गया। योगेन्द्रने कहा,—'नहीं बैठो मत, मैं जानता हूँ, कि प्रातःस्नानके नामसे तुममें एक घोर कुसंस्कार है—उसे कर डालो। इसी बीच में गर्म पानीका बर्तन आगपर चढ़ाये देता हूँ। आतिथ्यकी दुहाई देता हुआ आज दूसरी बार चाय पी लूँगा।"

इस प्रकार भोजन, बातचीत और विश्राममें दिन बीत गया। रमेश किस खास बातके लिये यहाँ आया था, उसे कहनेके लिये योगेन्द्रने दिनभर कोई मौका नहीं दिया। संध्याके बाद भोजनके उपरान्त किरासिन तेलकी रोशनीमें दोनों आदमी कुरसी खींचकर बैठ गये। समीप ही सियाल बोलने लगे और अँधेरी रातमें झिल्लीकी झनकार होने लगी।

रमेशने कहा,—"योगेन्द्र, तुम तो समझते ही होंगे, कि मैं क्या कहनेके लिये यहाँ आया हूं। एक दिन तुमने मुझसे जो पूछा था, उसका जवाब देनेका समय वह नहीं था। अब उसका जवाब देनेमें कोई बाधा नहीं।"

यह कह रमेश कुछ देर चुप बैठा रहा। इसके बाद धीरे-धीरे वह शुरूसे आखीरतक सब बातें कह गया। बीच-बीचमें उसका गलारुद्ध होता और आवाज काँप उठती थी—कहीं कहीं वह दो एक मिनटके लिये चुप भी हो जाता था। योगेन्द्र कुछ न कह कर चुपचाप रमेशकी बातें सुनता रहा।

जब बातें खतम हुई तब एक गहरी साँस लेकर योगेन्द्रने कहा,—"अगर यह सब बातें तुम उस दिन कहते, तो मैं विश्वास न करता।"

रमेश—विश्वास करनेका कारण जो उस समय था, वही अब भी है। इसलिये तुमसे मेरी यही प्रार्थना है, कि जिस गाँवमें मैंने विवाह

किया था, उस गाँवमें तुम्हें एकबार जाना पड़ेगा। इसके बाद मैं तुम्हें वहाँसे कमलाके मामाके यहाँ भी ले चलूँगा।

योगेन्द्र—मैं कहींके लिये एक कदम भी न बढ़ाऊँगा—मैं इस कुरसीपर बैठे-ही-बैठे तुम्हारी बातके अक्षर-अक्षर पर विश्वास कर रहा हूं। तुम्हारी बातोंपर विश्वास करनेका मुझे सदासे अभ्यास है—जीवन-में सिर्फ एकबार उसमें फर्क पड़ा है, इसके लिये मैं तुमसे माँफी चाहता हूँ।

यह कह योगेन्द्र कुरसीसे उठ रमेशके सामने आया—रमेश भी खड़ा हो गया; बचपनके दोनों मित्र! गले गले लगे। रमेशने अपने रुधे हुए गलेको साफकर कहा,—"मैं न जाने कैसे भाग्य-विरचित इस कठिन मायाजालमें पकड़ गया था, कि उसमें पूरी तरहसे पकड़ जानेके सिवा और किसी ओरसे कोई उपाय देख नहीं पाता था। आज मैंने उससे छुटकारा पाया है, अब मुझे कोई बात किसीसे छिपाना नहीं है; अब मेरे प्राणमें प्राण आया है। मैं यह भी समझ नहीं सका, कि कमलाने क्यों और किसलिये आत्महत्या की; अब उसके समझनेकी कोई सम्भावना भी नहीं है—किन्तु यह निश्चय है, कि यदि मृत्यु हम दोनोंके बीचकी कठिन गाँठको काट न देती, तो अन्तमें हम दोनोंकी जैसी दुर्गति होती, उसे यादकर अब भी मेरा हृदय काँप उठता है। जैसे एक दिन मृत्युके ग्राससे एकाएक वह समस्या उत्पन्न हुई थी, वैसे ही मृत्युके गर्भमें एकदिन वह समस्या समा गई।"

योगेन्द्र—लेकिन संशयमें यह न समझ बैठना, कि कमलाने निश्चय ही आत्महत्या कर ली है। जो हो, तुम्हारी राह तो साफ हो गई, अब मैं नलिनाक्षकी बात सोच रहा हूँ।

इसके बाद योगेन्द्र नलिनाक्षके बारेमें बातें करने लगा। कहा,—"मैं ऐसे आदमियोंको अच्छा नहीं समझता, और जो नहीं समझता, उसे पसन्द भी नहीं करता। किन्तु अनेक लोगोंकी कुछ और ही समझ

पाता हूँ, ऐसे लोग जो नहीं समझते, उसे ही पसन्द करते हैं। इसीसे हेमके लिये मुझे बहुत भय है। जब देखा. कि उसने चाय छोड़ दिया, माँस-मछली भी नहीं खाती, यहाँतक, कि हँसी करनेसे पहलेकी तरह उसकी आँखें चमक नहीं उठतीं, बल्कि मुस्करा देती है, तब समझ गया, कि गति तो ठीक नहीं है। जो हो, अब तुम्हारी सहायता पानेसे मुझे उसका उद्धार करनेमें कुछ भी देर न होगी; यह भी मैं निश्चय समझता हूँ—अतएव तैयार हो जाओ—दोनों मित्रोंको मिलकर संन्यासीके विरुद्ध युद्ध यात्रा करनी होगी।"

रमेशने हँसकर कहा,—"मैं वीर पुरुषके नामसे मशहूर तो नहीं हूँ, किन्तु तैयार हूँ।"

योगेन्द्र—ठहरो, मेरी बड़े दिनकी छुट्टी होने दो।

रमेश—इसमें तो अभी देर है—तबतक मैं अकेला ही क्यों न आगे बढ़ूँ।

योगेन्द्र—नहीं नहीं, यह किसी तरह भी न होगा। तुम दोनोंका विवाह मैंने ही तोड़ा था, इसलिये मैं अपने हाथ उसका प्रतिकार करूँगा। तुम आगे पहुँचकर मेरे इस शुभकार्यकी चोरी करोगे, यह मैं कभी होने न दूँगा। छुट्टीमें कुल दश दिनकी देर है।

रमेश—तब इस बीचमें मैं एकबार—

योगेन्द्र—नहीं नहीं, मैं यह सब कुछ सुनना नहीं चाहता—यह दश दिन तुम मेरे ही साथ बिताओ। यहाँ झगड़ा करने वाले जो-जो लोग थे, उन सबका मैं एक-एक करके खातमा कर चुका हूं—अब मनका भाव बदलनेके लिये एक मित्रकी जरूरत है, ऐसी हालतमें मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकता। अब तक रातको केवल सियालकी बोली सुनता आया हूँ—अब तुम्हारी आवाज मुझे वीणाके स्वरके समान जान पड़ती है; मेरी हालत बहुत ही शोचनीय है।

———

४७

चन्द्रमोहनसे रमेशका हाल सुनकर अक्षयके मनमें अनेक चिन्ताएँ उत्पन्न हुई। वह सोचने लगा, कि बात क्या है? रमेश गाजीपुरमें प्राक्टिस कर रहा था—इतने दिनसे अपनेको अच्छी तरह छिपाये हुए था—इस बीच ऐसी कौनसी बात हुई, जिससे वह वहाँकी प्राक्टिस छोड़ फिर हिम्मत बाँध कोलूटोलाकी गलीमें अपनेको प्रकट करनेके लिये उपस्थित हुआ। किसी दिन रमेश कहींसे यह समाचार पाकर, कि अन्नदा बाबू वगैरः काशीमें है, कहीं वहाँ न जा पहुँचे। अक्षयने स्थिर किया, कि इसी बीच वह गाजीपुर पहुँचकर सब बातें मालूम करे और इसके बाद काशी जाकर अन्नदाबाबूसे मुलाकात कर आये।

एक दिन अगहनके महीनेमें तीसरे पहर हाथमें बेग लटकाये अक्षय गाजीपुरमें आ पहुँचा। पहले उसने बाजारमें पूछा कि रमेश बाबू नामक एक बङ्गाली वकीलका मकान कहाँ है? लोगोंसे मालूम हुआ, कि बाजारमें रमेश बाबूके नामसे कोई वकील मशहूर नहीं। तब वह अदालतमें गया। अदालत उठ गई थी। एक बङ्गाली वकील गाड़ीपर सवार होने जा रहे थे, उनसे अक्षयने पूछा,—"महाशय, रमेशचन्द्र चौधरीके नामसे एक नये बङ्गाली वकील गाजीपुरमें आये हैं, आप जानते हैं, कि वह कहाँ रहते हैं?"

अक्षयको इनसे मालूम हुआ, कि रमेश तो अबतक चाचाके मकानमें थे, अब वह कहाँ हैं, यह नहीं मालूम। उसकी स्त्री मिल नहीं रही है, शायद वह पानीमें डूबकर मर गई है।

अक्षय चाचाके मकान चला। राह चलते सोचने लगा,—अब रमेशकी चाल समझमें आ रही है। स्त्री मर गई है, अब वह निःसङ्कोच हेमनलिनीके आगे यह प्रमाणित करनेकी चेष्टा करेगा, कि उसकी स्त्री

कभी थी ही नहीं। हेमनलिनी की जैसी हालत है, इससे रमेश पर अविश्वास करना उसके लिये असम्भव होगा। जो लोग धर्मनीतिके ढोंगसे अपनेको खूब बढ़ा-चढ़ा बनाये फिरते हैं छिपे-छिपे वह कैसे भयानक होते हैं, मन-ही-मन इसकी आलोचना कर अक्षय आप ही अपनी ओर श्रद्धाका अनुभव करने लगा।

चाचाके पास पहुँच रमेश और कमलाकी बात पूछते ही वह शोक सँभाल न सके—उनकी आँखोंसे आँसू बहने लगे। उन्होंने कहा,—"जब आप रमेश बाबूके मित्र हैं, तब बेटी कमलाको निश्चय ही आप जानते होंगे; किन्तु मैं ठीक कह रहा हूँ, कि कई दिनकी मुलाकातमें ही मैं उसे अपनी कन्याके समान ही मानता था मैं नहीं जानता था, कि दो दिनके लिये प्रीति बढ़ाकर वह इस तरह वज्राघात कर मुझे छोड़ जायगी।"

अक्षयने चेहरेको उदास बनाकर कहा,—"मेरी समझमें नहीं आता, कि ऐसी घटना कैसे हो गई। निश्चय ही रमेशने कमलासे अच्छा व्यवहार न किया होगा।"

चाचा—आप नाराज न होइयेगा—आपके रमेशको मैं आज तक पहचान न सका। देखनेमें बाहरसे तो बहुत भले आदमी, किन्तु मनमें क्या सोचते और समझते हैं, यह जानना कठिन था। नहीं तो कमला जैसी स्त्रीका वह क्यों अनादर करते थे, यह समझमें नहीं आता। कमला सती लक्ष्मी थी, मेरी लड़कीसे उसका बहन जैसा बर्ताव था—फिर भी उसने कभी अपने पतिके विरुद्ध कोई बात नहीं कही। मेरी लड़की कभी-कभी समझती थी, कि वह मन-ही-मन बहुत कष्ट उठाती है, किन्तु आखिरी दिनतक वह उससे एक बात भी कहला न सकी। यह तो आप समझ ही सकते हैं, कि ऐसी स्त्री बिना असह्य यातना पाये ऐसा काम कर नहीं सकतीं। उसकी याद करनेसे भी छाती फटती है। फिर मेरा भाग्य देखिये,

उस समय मैं इलाहाबादमें था; नहीं तो मेरी बेटी मुझे छोड़कर जाने न पाती।

दूसरे दिन सवेरे चाचाको साथ ले अक्षय रमेशके बँगले और गङ्गाके किनारे घूम आया। घर लौटनेपर उसने कहा,—"देखिये महाशय, कमलाके गङ्गामें डूबकर आत्म हत्या करनेके बारेमें आप जितने निःसंशय हैं, उतना मैं नहीं हूँ।"

चाचा—आप क्या समझते हैं ?

अक्षय--मुझे जान पड़ता है, कि वह घर छोड़कर कहीं चली गई हैं--उन्हें अच्छी तरह ढूँढना चाहिये।

चाचाने एकाएक उत्तेजित होकर कहा,--'आप ठीक कह रहे हैं; यह बात बिलकुलसम्भव है।"

अक्षय--समीप ही काशीतीर्थ है। वहाँ मेरे मित्र हैं—हो सकता है, कि कमला उन्हींके पास चली गई हो।

चाचाने आशान्वित होकर कहा,--"उन मित्रकी बात तो रमेश बाबूने हमलोगोंसे कभी कही नहीं। अगर मैं जानता, तो खोजमें कसर न करता।"

अक्षय--तब एक बार चलिये न, हम दोनों ही काशी चलें--पश्चिम अञ्चल आपका खूब जाना समझा है, आप अच्छी तरह खोज कर सकेंगे।

चाचा इस प्रस्तावपर बड़े उत्साहके साथ राजी हो गये। अक्षय जानता था, कि हेमनलिनी उसकी बातका विश्वास न करेगी; इसलिये प्रमाण-स्वरूप चाचाको लेकर वह काशी गया।

———

४८

शहरके बाहर कन्टूनमेण्टके हलकेमें खुले स्थानके एक बँगलेको किरायेपर लेकर अन्नदाबाबू वहीं ठहरे हुए थे।

अन्नदाबाबू आदिने काशीमें पहुँचते ही खबर पाया, कि नलिनाक्ष-की माता क्षेमंकरीको मामूली बुखार-खाँसीसे अब न्यूमोनिया हो गया है। बुखारके रहते भी इस जाड़ेके दिनमें उन्होंने नियमित प्रातःस्नान बन्द नहीं किया; इसीसे उनकी हालत इतनी बिगड़ गई।

कई दिन बड़े परिश्रमसे हेमने उनकी सेवा की, जिससे क्षेमंकरी-की खतरनाक हालत दूर हो गई है। किन्तु अब भी वह बहुत कमजोर हैं। पवित्रताके कारण बहुत विचार रखनेसे पथ्य और पानीके बारेमें हेमनलिनीकी सहायता उनके किसी काम न आई। इससे पहले वह अपने हाथ बनाती खाती थीं, अब नलिनाक्ष स्वयं उनका पथ्य तैयार कर देते और भोजन-पानीकी सेवा नलिनाक्ष स्वयं करते थे। इससे क्षेमंकरी सदा आक्षेपकर कहा करतीं,—"मेरा जाना ही अच्छा था, केवल तुम लोगोंको कष्ट देनेके लिये ही विश्वेश्वरने मुझे फिरसे बचाया है।"

क्षेमङ्करीने अपने बारेमें कठोरताका आवलम्बन किया था, किन्तु अपने चारो ओरकी परिपाटी तथा सौन्दर्यकी ओर उनकी अधिक दृष्टि थी। हेमनलिनीने यह बात नलिनाक्षसे सुन रखी थी। इसलिये वह बड़े यत्नसे चारो ओर सफाई रख घर-द्वार तथा स्वयं अपनेको भी सज-धजकर क्षेमङ्करीके सामने जाती थी। अन्नदाबाबूने कण्टूनमेण्टमें जो बगीचा किरायेपर ले रखा था, वहाँसे हेमनलिनी नित्य फूल तोड़ लाती और उन्हें उनकी चारपाई तथा गुलदस्तेमें सजाकर रखती है।

नलिनाक्षने अपनी माँके लिये कई बार दासी रखनेकी चेष्टा की; किन्तु उनके हाथसे सेवा लेनेकी उनकी इच्छा न होती थी। अवश्य ही

पानी भरनेके लिये नौकर-नौकरानी थे सही, किन्तु अपने निजके कामों-में वह तनखाहदार किसी नौकरके हस्तक्षेपको बर्दाश्त नहीं करती थीं। जिस हरिकी मांने बचपनसे उन्हें पालकर बड़ी किया था, उसके मर जानेके बादसे वह किसी दासीको पंखा हाँकने या शरीरपर हाथ फेरने नहीं देती थीं।

सुन्दर बालक और सुन्दर चेहरेको वह बहुत पसन्द करती थीं। दशाश्वमेध घाटपर प्रातःस्नानकर राहमें पड़े हरेक शिवलिङ्गको फूल और गङ्गाजल चढ़ाती हुई घर लौटनेके समय कभी-कभी न जाने कहाँसे किसी सुन्दर हिन्दुस्तानी लड़के या किसी सुन्दरी हिन्दुस्तानी ब्राह्मण-की कन्याको लिये-दिये घर पहुँचाती थीं। परोसके एकाध सुन्दर लड़केको उन्होंने खिलौने, पैसे और मिठाई देकर परचा रखा था। वह सब जब-तक उनके मकान में इधर-उधर उपद्रव मचाते खेला करते थे। इससे उन्हें बहुत आनन्द होता था। उनमें और एक आदत थी; छोटी-मोटी कोई अच्छी चीज देख वह उसे बिना खरीदे नहीं रहती थीं। यह सब चीजें उनके किसी मसरफमें आती नहीं थीं—किन्तु कौन किस चीजको पसन्द करेगा, इसका विचारकर उसके यहाँ उपहार भेजनेमें उन्हें बहुत आनन्द आता था। अकसर उनके दूरके आत्मीय और जान-पहचान भी ऐसी ही किसी चीजको डाक-पार्सलसे पाकर बहुत आश्चर्य किया करते थे। उनके एक बड़ेसे आबनूसके काले सन्दूक-में इस तरहकी अनावश्यक चीजें रेशमी कपड़ेमें लपेट ढेरकी-ढेर पड़ी रहती थीं। उन्होंने मन ही-मन सोच रखा था, कि जब नलिनकी बहू आयेगी, तब यह सब चीजें उसे देंगी। उनके मनकी कल्पना थी, कि नलिनकी बहुत ही सुन्दरी छोटी-सी बहू मिलेगी वह उनके मकानको रौशन करती खेलती फिरेगी—उसे वह सजायेगी, पहनायेगी, इसी सुखकी चिन्तामें उनके अनेक दिन और अवसर बीते जाते थे।

वह स्वयं तपस्विनी जैसी थीं—स्नान और पूजामें दिन बीत जाने-

पर वह एक समय फल-दूध-मीठा खाकर रह जाती थीं, किन्तु उनका इतना नियम और संयम नलिनाक्षको अच्छा नहीं जान पड़ता था। वह कह बैठतीं,—'आदमीके लिये इतने आचार-विचारकी बाढ़ कैसी।" पुरुषको वह बड़े बालकके समान समझती थीं—खाना-पीना, चाल-चलनमें उनके परिणामको समझ या उसमें कर्त्तव्यबोध न देख, वह स्नेहके कारण उसे उचित समझती थीं—इसलिये क्षमाके साथ कह बैठतीं,—"पुरुष इतनी कठोरता क्यों करे।" अवश्य ही धर्मकी रक्षा सबको करना चाहिये, किन्तु आचार-विचार पुरुषके लिये ठीक नहीं ऐसा ही उन्होंने मनमें ठहरा रखा था। नलिनाक्ष यदि अत्यन्त साधारण पुरुषोंकी तरह कुछ अविचार और स्वेच्छाचारितासे सतर्क रह केवल उनके पूजाके घरमें प्रवेश और उन्हें छूनेमें बचाव करते रहते, तो वह बहुत खुश रहती थीं।

जब वह बीमारीसे अच्छी होकर उठीं, तब उन्होंने देखा, कि हेमनलिनी नलिनाक्षके उपदेशके अनुसार अनेक प्रकारके नियमोंका पालन करने लगी है, यहाँतक, कि बूढ़े अन्नदाबाबू नलिनाक्षकी बातोंको प्रवीण गुरु-वाक्यके समान श्रद्धा और भक्तिके साथ बड़े ध्यानसे सुना करते थे।

इससे क्षेमङ्करीको बड़ा कौतूहल हुआ। उन्होंने एक दिन हेमनलिनीको बुला हंसकर कहा,—"बेटी, देखती हूं, कि तुम लोग नलिनको और भी पागल बना डालोगी। उसकी वह पागलों जैसी बातें तुम लोग क्यों सुनती हो? तुम सज धजकर हँसी-खेल और आमोद-प्रमोदके साथ रहो; क्या यह तुम्हारे साधनाकी उम्र है। यदि कहो, कि तुम ऐसा क्यों करती हो, तो इसमें एक बात है। मेरे माँ-बाप बहुत ही निष्ठावान थे। बचपनसे हम भाई-बहन वैसी शिक्षामें बड़ी हुईं। यदि मैं इसे छोड़ दूं, तो मेरे लिये दूसरा कोई आश्रय नहीं। किन्तु तुम तो ऐसी हो नहीं—तुम्हारी शिक्षा दीक्षाको तो मैं समझती

हूं। तुम जो यह सब कर रही है, वह केवल जबर्दस्तीसे कह रही हो--इससे क्या फायदा बेटी ! जिसे जो मिला है, उसे चाहिये, कि वह उसीकी रक्षा किये चले; मेरा तो यही कहना है। नहीं नहीं, यह सब कुछ नहीं; यह सब छोड़ो। तुम लोगोंके लिये निरामिष भोजन कैसा योग और तपस्या ही कैसी ? और नलिन ही इतना बड़ा गुरु कबसे बन गया ? वह यह सब क्या जाने ? वह तो अबतक जो मनमें आया, वही करता रहा है; शास्त्रकी बात सुन बिलकुल काठ हो जाता था। मुझे खुश रखनेके लिये उसने यह सब शुरू किया, अन्तमें देखती हूँ, किसी दिन पूरा संन्यासी बन जायगा। मैं उससे बार-बार कहती हूँ, कि लड़कपनसे तुझे जैसा विश्वास था, तू वही कर--उसमें कोई खराबी नहीं, मैं इससे सन्तुष्ट या असन्तुष्ट न होऊँगी। किन्तु मेरी बात सुनकर हँसता है--उसका ऐसा ही स्वभाव है—सब बातें चुपचाप सुन लिया करता है--गाली देनेपर जवाब नहीं देता।"

तीसरे पहर पाँच बजेके बाद हेमनलिनीकी चोटी करते करते यह सब बातें चलती थीं। हेमनलिनीकी बाँधी चोट क्षेमङ्करीको पसन्द नहीं थी। वह कहती—"तुम अपने मनमें समझती होगी बेटी, कि मैं बिलकुल ही पुराने ढङ्गकी हूँ, आजकलके फैशनको जानती ही नहीं। किन्तु मैं जितने प्रकारकी चोटी करना जानती हूँ, उतना तुम लोग नहीं जान सकतीं, बेटी। मुझे एक बहुत अच्छी मेम मिली थी, वह मुझे सिलाई सिखाने जाती थी, उसीसे मैंने कितने प्रकारकी चोटी करना सीखी थी। उनके चली जानेपर फिर मुझे धोती धोनी पड़ती थी। क्या करूँ बेटी, संस्कारके बारेमें मैं उतना भला बुरा नहीं समझती—किन्तु बिना किये रह नहीं सकती। तुम लोगोंसे भी मैं छुआछूत मानती हूँ, किन्तु इसका कुछ खयाल न करना, बेटी। वह मेरे मनकी घृणा नहीं, यह एक तरहका अभ्यास है। नलिनके बड़े होते-होते जब उनकी ओर ही मति हुई, हिन्दू-पन जाता रहा, उस समय मैंने बहुत सहन किया,

कुछ बोली नहीं—मैं केवल एक ही बात कहती आई, कि जो समझो करो—मैं औरत ठहरी, इतने दिनसे जो करती आई हूँ, उसे छोड़ नहीं सकती।" यह कहते कहते क्षेमङ्करीने आँचलसे आँसू पोंछ डाले।

इसी प्रकार हेमनलिनीकी चोटी खोलकर उसके बड़े-बड़े बालोंको तरह-तरहसे बनाना क्षेमङ्करीको बहुत पसन्द था। कभी-कभी ऐसा भी होता, कि उसी अपने अचनूमके सन्दूकसे अपने पसन्दकी रङ्गीन धोती निकाल उसे पहना देतीं। अपने मनके मुताबिक शृङ्गार करनेमें उन्हें बड़ा आनन्द आता था। प्रायः नित्य ही हेमनलिनी अपनी सिलाई लाकर क्षेमङ्करीको दिखाती और ले जाती थी—क्षेमङ्करी उसे नित्य नये प्रकारकी सिलाई सिखाने लगीं। यह सब उनके शामके समयका काम था। मासिक पत्र और कहानी पढ़नेके उत्साहमें भी कोई कमी नहीं थी। हेमनलिनीके पास जो सब किताबें और मासिक पत्र थे, उन सबको वह क्षेमङ्करीके पास ले आई थी। किसी-किसी लेख और पुस्तकके सम्बन्धमें क्षेमङ्करीकी आलोचना सुन हेम आश्चर्यमें आ जाती थी—हेमको इसका विश्वास ही नहीं था, कि बिना अङ्गरेजी जाने भी ऐसी बुद्धि-चातुरीके साथ बिचार किया जा सकता है। नलिनाक्षकी माताकी बातें और उनके आचार बिचारपर हेमनलिनी उन्हें विचित्र स्त्री समझती थी। वह जो समझकर आई थी, वह सब कुछ नहीं, सब उसके लिये अनसोची बातें थीं।

४६

क्षेमङ्करी फिर बीमार पड़ी। किन्तु इस बारका बुखार जल्दी ही छूट गया। सवेरे नलिनाक्षने प्रणामकर उनके पैरकी धूलि लेते हुए कहा—"माँ, तुम्हें कुछ दिन रोगीके नियमके अनुसार रहना चाहिये। दुर्बल शरीरपर इतनी कठोरता सही नहीं जाती।"

क्षेमङ्करीने कहा,—"मैं रोगीके नियमसे रहूँ और तुम योगीके नियमसे रहो। नलिन, तुम्हारा यह सब काम अधिक दिन न चलेगा। मैं आज्ञा देती हूँ, कि तुम्हें अब विवाह करना ही होगा।"

नलिनाक्ष चुपचाप बैठा रहा। क्षेमङ्करीने कहा,—"देखो बेटा, मेरा यह शरीर अब न चलेगा – अब मैं तुम्हें गृहस्थ बना देखकर सुखसे मर सकूँगी। पहले मैं समझती थी, कि एक छोटीसी खूब-सूरत बहू मुझे मिलेगी, मैं उसे अपने हाथ सिखा-पढ़ाकर बड़ी करूँगी; उसे सजधजकर मनमें सुख मानूँगी। किन्तु इस बारकी बीमारीमें भगवान्‌ने मुझमें चेतन्यता दी है। अपनी आयुपर विश्वास रखनेसे काम नहीं चलता; इसका कोई ठिकाना नहीं, कि यह शरीर कब है और कब नहीं। एक छोटी लड़कीको तुम्हारी छातीपर बैठा जाना तुम्हें और भी मुश्किलमें डालना है। इसके बदले तुम अपनी रायसे बड़े उम्रकी लड़कीसे ही विवाह कर लो। बुखारके समय यह सब चिन्ता करते-करते मुझे नींद नहीं आती थी। मैं अच्छी तरह समझती हूँ, कि यही मेरे लिये आखिरी काम है—इसीको पूरा करनेके लिये मुझे जीना पड़ेगा; नहीं तो मुझे शान्ति न मिलेगी।"

नलिनाक्ष - अपने लोगोंके साथ मेल खाने लायक यात्री मैं कहाँ ढूँढूँ।

क्षेमङ्करीने कहा,—"अच्छा, मैं खुद ठीक करके तुमसे कहूँगी; इसके लिये तुम्हें चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं।"

आजतक क्षेमकरी अन्नदाबाबूके सामने नहीं आईं। शाम होनेसे कुछ पहले जब नियमानुसार हवाखोरी करते हुए अन्नदाबाबू नलिनाक्ष-के मकानतक आये तब क्षेमङ्करीने अन्नदाबाबूको बुलवा भेजा। उन्होंने उनसे कहा,—"आपकी लड़की मानों लक्ष्मी है—उसपर मेरा स्नेह बहुत बढ़ गया है। मेरे नलिनको तो आप जानते ही हैं, उस लड़केको

कोई किसी तरहका दोष दे नहीं सकता—डाक्टरीमें भी उसका अच्छा नाम है। आपकी लड़कीके लिये क्या ऐसा सम्बन्ध ढूँढनेसे मिलेगा?"

अन्नदाबाबू घबराकर बोल बैठे,—"यह आप क्या कह रही हैं? मुझे तो ऐसी बातकी आशाका साहस भी नहीं होता। नलिनाक्षके साथ यदि मेरी लड़कीका विवाह हो तो उससे बढ़कर मेरा और क्या सौभाग्य हो सकता है। किन्तु क्या वह—"

क्षेमङ्करीने कहा,—"नलिन इसमें आपत्ति न करेगा। वह आज कलके लड़कों जैसा नहीं है—वह मेरी बात मानता है। फिर इसमें जोर देनेकी जरूरत ही क्या है। आपकी लड़कीको कौन पसन्द न करेगा? किन्तु इस कामको मैं बहुत जल्द कर चलना चाहती हूँ। अपने शरीरकी हालत मैं अच्छी नहीं समझ रही हूँ।"

उस दिन अन्नदाबाबू प्रसन्न होकर लौटे। उसी रात उन्होंने हेमनलिनीको बुलाकर कहा,—'बेटी मेरी उम्र बहुत हुई, अब शरीर भी अच्छी तरह नहीं चलता। तुम्हार कोई ठिकाना न कर जानेसे मेरे मनको सुख न होगा। हेम, मेरे आगे लज्जा करनेसे काम न चलेगा। तुम्हारी माँ नहीं है, अब तुम्हारा कुल भार मेरे ही ऊपर है।'

हेमनलिनी उत्कण्ठाके साथ अपने पिताके मुँहकी ओर देखती रही।

अन्नदाबाबूने कहा,—"बेटी, तुम्हारे लिये एक ऐसे सम्बन्धकी बात आई है, जिसे मारे आनन्दके मैं छिपाये नहीं रह सकता। मुझे यही भय जान पड़ता है, कि पीछे कहीं कोई बाधा न पड़े। आज नलिनाक्षकी माँने मुझे बुलाकर अपने पुत्रके साथ तुम्हारे विवाहका प्रस्ताव किया।"

हेमनलिनीका मुँह लाल हो गया। उसने बड़े सङ्कोचके साथ कहा,—पिताजी, तुम यह क्या कह रहे हो? नहीं-नहीं, यह कभी नहीं हो सकता।

इस सम्भावनाका सन्देह भी कभी हेमनलिनीके मनमें नहीं आया, कि नलिनाक्षसे कभी उसका विवाह किया जा सकता है—एकाएक पिताके मुँहसे यह प्रस्ताव सुन वह मारे लज्जा और सङ्कोचसे घबरा उठी।

अन्नदाबाबूने पूछा,—"विवाह क्यों नहीं हो सकता?"

हेमनलिनीने कहा,—"नलिनाक्षबाबू, यह कभी नहीं हो सकता।" ऐसे जवाबको ठीक युक्ति नहीं कहा जा सकता—किन्तु युक्तिकी अपेक्षा यह बहुत कुछ प्रबल है।

हेम वहाँ बैठ न सकी। वह बरामदेमें चली गई।

अन्नदाबाबू बहुत उदास हो गए। उन्होंने ऐसी बाधाकी कल्पना भी नहीं की थी। बल्कि उनको विश्वास था, कि नलिनाक्षसे विवाहकी बात सुन हेमनलिनी मन ही-मन खुश होगी। हतबुद्धि वृद्ध उदास किरासिन तेलकी रोशनीकी ओर देखते हुए स्त्री-प्रकृतिके गूढ़-रहस्य और हेमनलिनीकी माँके अभावसे मन-ही-मन चिन्ता करने लगे।

हेम बहुत देरतक बरामदेके अन्धकारमें बैठी रही। इसके बाद कमरेकी ओर निगाह जानेपर अपने पिताके हताश चेहरेके भावको देख उसके मनको चोट पहुँची। उसने चटपट अपने पिताकी कुरसीके पीछे खड़ी हो, उसके सिरको उँगलीसे सुहलाते हुए कहा,—"पिताजी चलो, बहुत देरसे खाना तैयार है—ठण्डा हो जानेपर।"

अन्नदाबाबू पुतलेकी तरह उठकर खाने गये, किन्तु अच्छी तरह खा न सके। हेमनलिनीके सम्बन्धमें सारे ग्रहोंको दूर हुए समझ वे बहुत ही आशान्वित हो गये थे, किन्तु हेमनलिनीकी ओरसे ही इतनी कड़ी चोट पहुँची, जिससे वह बहुत ही दब गये। उहोंने फिर व्याकुल हो ठण्डी साँस ली और मन ही मन कहा,—"हेमनलिनी अभीतक रमेशको भूल न सकी।"

अन्य दिनों भोजनके बाद ही अन्नदाबाबू सो रहते थे, आज बरामदेकी कुरसीपर बैठ बागके सामनेकी कण्टूनमेण्टकी सड़ककी ओर देखते हुए वे चिन्तामें डूब गये।

हेमनलिनीने आकर मीठे स्वरमें कहा,—"पिताजी, यहाँ बहुत सर्दी है, चलो सो रहो।"

अन्नदाने कहा,—"तुम सोने जाओ, मैं थोड़ा ठहरकर सोऊँगा।" हेमनलिनी चुपचाप उनके पास खड़ी रही। कुछ देर बाद उसने फिर कहा,—"पिताजी, तुम्हें सर्दी लग रही होगी, न हो, तो बैठकमें ही चलो।"

तब अन्नदाबाबू कुछ बिना बोले उठकर सोने चले गये।

कहीं काममें नुकसान न पहुँचे, इसलिये हेमनलिनी रमेशकी याद कर अपने मनको पीड़ित नहीं होने देती थी। इसके लिये वह अबतक अपने मनके साथ खूब लड़ती आई है। किन्तु जब बाहरसे चोट पड़ती है, तब उसकी चोटका दर्द बढ़ जाता है। हेमनलिनी अबतक यह नहीं सोच सकी थी, कि उसका भविष्य जीवन कैसे बीतेगा। इसीलिये एक मजबूत अवलम्बन खोज और नलिनाक्षको गुरु मान वह उनके उपदेशके अनुसार चलनेको तैयार हुई थी। किन्तु जब विवाहके प्रस्तावसे उसके हृदयकी गहराईके भीतरसे उसके आश्रयसूत्रको कोई खींचना चाहता है, तब वह समझ सकती है, कि वह बन्धन कितना कठिन है। उसे जब कोई काटने आता है, तब हेमनलिनीका मन व्याकुल हो उस बन्धनको दूने बलसे पकड़नेकी चेष्टा करना चाहता है।

———

५०

इधर क्षेमङ्करीने नलिनाक्षको बुलाकर कहा,—"मैंने तुम्हारे लिए यात्री ठीक कर ली है।"

नलिनाक्षने हँसकर कहा—"बिल्कुल ठीक कर लिया है?"

क्षेमङ्करी—नहीं तो क्या? मैं सदा जीती रहूँगी। सुनो, मैंने हेम-नलिनीको ही पसन्द किया है—ऐसी लड़की फिर न मिलेगी। रङ्ग उतना साफ नहीं है सही, किन्तु—

नलिनाक्ष—दुहाई मां, मैं साफ रङ्गकी बात नहीं सोच रहा हूँ। किन्तु हेमनलिनीसे कैसे होगा, यह भी कभी हो सकता है?

क्षेमङ्करी—अब यह कैसी बात? न होनेका कोई कारण तो दिखाई नहीं देता?

नलिनाक्षके लिये इसका जवाब देना कठिन था। किन्तु हेम-नलिनी—जिसे वह अपने पास बैठा निःसङ्कोच गुरुकी तरह उपदेश देता आया है, एकाएक उसके साथ विवाहके प्रस्तावसे नलिनाक्षको मानो लज्जाकी चोट लगी।

नलिनाक्षको चुपचाप देख क्षेमङ्करीने कहा,—"अब मैं तुम्हारी कोई आपत्ति न सुनूँगी। मेरे लिए तुम इस भ्रममें सब छोड़-छाड़कर काशीवासी हो तपस्या करोगे, इसे मैं किसी तरह सह न सकूँगी। अब जब शुभ दिन होगा, वह दिन खाली न जायेगा, यह मैं कहे रखती हूँ।"

नलिनाक्षने कुछ देर चुप रहनेके बाद कहा,—"तब एक बात सुन रखो माँ! मैं पहले ही कहे देता हूँ, कि तुम घबराओ नहीं। मैं जिस घटनाकी बात कह रहा हूँ, उसे नौ-दश महीने हो गये, अब उसके लिये उतावला होनेकी जरूरत नहीं। किन्तु तुम्हारा जैसा स्वभाव है माँ, एक अमङ्गलके दूर हो जानेपर भी उसका भय तुम्हारे मनसे कभी

नहीं जाता। इसलिये इतने दिनसे मैं तुमसे कुछ कहते-कहते भी कह न सका। मेरे ग्रहकी शान्तिके लिये तुमसे जितना स्वस्त्ययन कराते बने कराओ। किन्तु अनावश्यक मनको पीड़ा न दो।"

क्षेमङ्करीने घबराकर पूछा,—"क्या जाने बेटा तुम क्या कहोगे; किन्तु तुम्हारी भूमिका सुनकर मेरा मन और भी घबरा गया। जबतक मैं संसारमें हूँ, तबतक अपनेको इतना छिपाकर न चलो। मैं तो दूर रहना चाहती हूँ, किन्तु खराबीको ढूँढ़कर निकाला नहीं जा सकता; वह तो आप ही गर्दनपर सवार हो पड़ता है। फिर भी अच्छा हो या बुरा, कहो, जरा तुम्हारी बात तो सुनूँ।"

नलिनाक्षने कहा,—"इसी माघ महीनेमें मैं रङ्गपुरमें अपना सब सामान बेचकर और अपने बाग और मकानको किरायेपर देकर लौट रहा था। साँडामें आकर मेरी ऐसी मति फिरी, कि रेलगाड़ीसे कलकत्ते न जाकर नावसे चलूँ। साँडामें एक बहुत बड़ी नाव किरायेपर लेकर मैं चला। नावसे दो दिन चलनेके बाद एक दिन रेतीके किनारे नाव बाँध मैं स्नान करने लगा। उसी समय एकाएक देखा, कि हमारे भूपेन्द्र हाथमें बन्दूक लिये खड़े हैं। मुझे देखते ही वह उछल पड़े; कहने लगे—'शिकारकी खोजमें निकलनेपर एक बड़ा शिकार मिला।' वह उसी ओर कहींका डिप्टी मजिस्ट्रेट था—तम्बूके साथ दौरा करने निकला था। बहुत दिन बाद मुलाकात हुई, मुझे वह किसी तरह छोड़ता ही न था। साथ-साथ घुमाने फिराने लगा। धोपापूकुर नामक स्थानमें एक दिन उसका तम्बू गड़ा। तीसरे पहर हमलोग गाँवमें घूमने निकले—बहुत बड़ा गाँव है—एक बड़े खेतके किनारे चहारदीवारीसे घिरे एक मकानमें हमलोग पहुँचे। मकानके मालिकने आँगनमें बैठनेके लिये हम दोनोंको भाढ़ा दिया। उस समय वहाँ एक स्कूल चल रहा था। प्राइमरी स्कूलके पण्डित लकड़ीकी एक कुरसीपर बैठे दीवारकी एक खूँटीपर दोनों पैर चढ़ाकर लेटे थे। नीचे जमीनपर बैठ हाथमें स्लेट लिये खूब शोर

मचाते हुए लड़के विद्यालाभ कर रहे थे। मकानके मालिकका नाम तारणी चटर्जी था। भूपेन्द्रसे पूछ-पूछकर उन्होंने मेरा परिचय लिया। तम्बूमें लौटकर आते-आते भूपेन्द्रने कहा,—"तुम्हारा भाग बहुत अच्छा है - तुम्हारे लिये विवाहकी बात आ रही है।" मैंने पूछा,—"यह कैसे ?" भूपेन्द्रने कहा,—"यह तारणी चटर्जी महाजनी करते हैं, इतना बडा कजस संसारमें कोई न होगा। उसने स्कूलके लिये वह जमीन दी है, किसी मजिस्ट्रेटके आनेपर वह उसी लोक-हितैषीके नाते खूब आडम्बर करता है। किन्तु स्कूलके पण्डितको सिर्फ भोजन देकर रात दश बजेतक अपने यहाँ सूदका हिसाब कराता है। पण्डितकी तनख्वाह गवर्नमेण्टकी सहायता और स्कूलकी फीससे निकल आता है। इसकी एक बहन है जो विधवा होनेपर कहींका आसरा न देख इसीके घर आई। उस समय वह गर्भिणी थी। यहाँ एक कन्या पैदाकर वह बेइन्तजामीसे बीमार हो मर गई। और एक विधवा बहन थी, जिसने घरकी मजदूरिनीका खर्च बचाया और लड़कीको पालकर बड़ी किया। लड़कीके कुछ बड़ी होनेपर वह भी मर गई। तबसे मामा और मामीकी दासताकर वह लड़की बड़ी हुई है। विवाहकी उम्र हो गई है, किन्तु ऐसी अनाथाके लिये पात्र कहाँ मिले ? विशेषतः उसके माँ-बाप-को यहाँ कोई जानता भी नहीं। पितृहीन अवस्थामें उसका जन्म हुआ, इसलिये गाँवके विवाह करनेवाले उसपर बहुत शङ्का करते हैं। यह सभी लोग जानते हैं, कि तारणी चटर्जीके पास बहुत रुपये हैं, लोगोंकी इच्छा है कि इस लड़कीके विवाहके उपलक्षमें उसे तङ्ग कर अच्छी तरह रुपये वसूल करें। वह तो आज चार वर्षसे लड़कीकी उम्र दश वर्ष बता रहा है। अतएव इस हिसाबसे उसकी उम्र चौदह वर्ष होना चाहिये। किन्तु जो हो, लड़कीका नाम कमला है और वह सब विषयोंमें ही लक्ष्मीकी प्रतिमा है। ऐसी सुन्दरी लड़की तो मैंने नहीं देखी। इस गाँवमें विदेशसे किसी ब्राह्मणके आते ही तारिणी उससे विवाहके लिये

हाथ-पैर जोड़ता है। यदि कोई राजी हो जाय, तो गाँवके लोगोंको वह लाठीसे भगा दे। अतएव आज तुम उसकी निगाहमें आये हो।" तुम तो जानती हो माँ, उस समय मेरी हालत बहुत नाजुक थी—मैंने बिना कुछ विचार किये कह दिया,—"इस लड़कीसे मैं विवाह करूँगा।" इससे पहले ही मैंने ठीक किया था, कि किसी हिन्दू घरकी लड़कीसे विवाहकर मैं तुम्हें चौंका दूँ। मैं जानता था कि एक सयानी ब्राह्मणकी लड़की लानेसे उससे घरमें लोग सब तरह सुखी होंगे। भूपेन्द्र तो एकदम आश्चर्यमें आ गया। उसने कहा कि तुम यह क्या कर रहे हो! मैंने कहा, कि कहने सुननेकी बात नहीं, मैंने अच्छी तरह मन स्थिर कर लिया है। भूपेन्द्रने पूछा "पक्का", मैंने कहा, "हाँ पक्का।" उसी दिन शामको तारिणी चटर्जी हमलोगोंके तम्बूमें आकर हाजिर हुए। ब्राह्मणने हाथमें जनेऊ ले हाथ जोड़कर कहा, कि मेरा उद्धार करो। लड़कीको अपने आँखसे देख लीजिये, अगर पसन्द न हो तो दूसरी बात है। किन्तु मेरे दुश्मनोंकी बात न सुनिये। मैंने कहा कि देखनेकी जरूरत नहीं, दिन ठीक करिये। तारिणीने कहा, कि परसो अच्छा दिन है, परसो विवाह हो। शीघ्रताकी दुहाई देकर वह अपना रुपया बचाना चाहता था। इस तरह विवाह हो गया।"

क्षेमङ्करीने चौंककर कहा,—"विवाह हो गया? यह क्या कहते हो, नलिन?"

नलिनाक्ष—हाँ, हो गया? मैं बहूको लेकर नावपर सवार हुआ। जिस दिन तीसरे पहर नावमें सवार हुआ, उसी दिन दो घण्टे बाद, सूर्यास्तके एक दण्ड बाद एकाएक कुसमय फाल्गुनके महीनेमें बहुत गर्म हवाके साथ एक बवण्डर उठा, जिसने क्षणभरमें हमलोगोंकी नावको उलट दिया; हमलोग कुछ भी समझ न सके।

क्षेमङ्करीने कहा—'मधुसूदन।" उनका सारा शरीर रोमांचित हो उठा।

नलिनाक्ष—क्षणभर बाद जब होश आया, तब देखा, कि मैं नदीमें एक जगह तैर रहा हूँ, किन्तु पासमें किसी नाव या आदमीका पता नहीं। पुलिसमें खबर देकर बहुत जाँच कराई, किन्तु कोई फल न हुआ।

क्षेमङ्करीने मुँह पीलाकर कहा,—"जाने दो, जो होना था हो गया। यह बात अब मेरे सामने कभी न कहना—याद आते ही मेरी छाती काँप उठती है।"

नलिनाक्ष—यह बात मैं कभी तुम्हारे सामने न कहता, किन्तु विवाहके लिये तुम जिद कर रही हो, इसलिये कहना पड़ा।

क्षेमङ्करीने कहा,—"एक बार एक दुर्घटना होनेके कारण तू इस जीवनमें कभी विवाह ही न करेगा?"

नलिनाक्षने कहा,—"इसलिये नहीं माँ, शायद वह लड़की जीती हो?"

क्षेमङ्करी—पागल हुआ है? जीती होती, तो तुझे खबर न देती?"

नलिनाक्ष—मेरा पता वह क्या जाने? मुझसे बढ़कर अपरिचित उसके लिये और क्या है। शायद उसने मेरा मुँह भी नहीं देखा। काशीमें आनेपर मैंने तारिणी चटर्जीको अपना पता दिया है—उन्होंने मुझे चिट्ठीमें लिखा है, कि उन्हें कमलाका कोई पता नहीं लगा।

क्षेमङ्करी—तब फिर क्या?

नलिनाक्ष—मैंने मन-ही-मन ठीक कर रखा है, कि एक वर्ष बीतने पर मैं समझूँगा, कि उसकी मृत्यु हो गई है।

क्षेमङ्करी—तुम सब विषयोंमें जिद करते हो। अब एक वर्ष किस आशासे बिताओगे!

नलिनाक्ष—माँ, एक वर्षमें अब देर ही क्या है। आजकल अगहन है। पूसमें विवाह हो ही नहीं सकता—फिर माघके बाद फागुन।

क्षेमङ्करी—अच्छी बात है। किन्तु मैं पात्री ठीक किये रहूँगी। हेम नलिनीके बापको मैंने बचन दे रखा है।

नलिनाक्षने कहा,—'माँ, मनुष्य तो केवल वचन ही दे सकता है उसकी सफलता जिसके हाथ है, उन्हींपर भरोसा रखो।"

क्षेमङ्करी—जो हो, बेटा, तुम्हारी यह बातें सुनकर अभीतक मेरा शरीर काँप रहा है।

नलिनाक्ष—यह तो मैं जानता हूँ माँ, तुम्हारे मनको स्थिर होते कुछ दिन लगेंगे। तुम्हारा मन एकबार हिलते ही फिर किसी तरह रुकना नहीं जानता। इसीसे तो माँ मैं तुम्हें ऐसे समाचार देना ही नहीं चाहता।

क्षेमङ्करी—अच्छा ही करते हो, बेटा, मैं नहीं जानती, कि आजकल मुझे क्या हो गया है—कोई अशुभ समाचार सुनते ही किसी तरह उसका भय जाता ही नहीं। मुझे डाककी चिट्ठी खोलनेमें भी भय जान पड़ता है—कहीं उसमें कुसमाचार न हो। मैं भी तुम लोगों से कहे रखती हूँ, कि मुझे कोई समाचार देनेकी जरूरत नहीं—मैं तो समझती हूँ, कि इस संसारके लिये मैं मर ही गई; अब मेरे हृदयपर चोट क्यों दी जाती है।

५१

कमला जब गङ्गाके किनारे पहुँची, उस समय जाड़ेके दिनके सूर्य किरणकी छटासे हीन हो पश्चिम आकाशमें उतर चुके थे। कमलाने आनेवाले अन्धकारके सामने अस्तगामी सूर्यको प्रणाम किया। इसके बाद माथेपर गङ्गाजलका छींटा दे कुछ दूर पानीमें उतर गई और हाथ

जोड़कर गङ्गाजल अंजलीमें भर फूल सहित अर्घ्य दिया। इसके बाद उसने सब बड़ोंके उद्देश्यसे प्रणाम किया। प्रणामकर शिर उठाते ही उसे और एक आदमीकी याद आई। कभी निगाह उठाकर उसने उनके मुँहकी ओर देखा भी नहीं—जब एक रात कुछ देर उनके पास बैठी रही, तब उसने उनके पैरकी ओर भी निगाह नहीं किया—कोहबरमें अन्य औरतोंसे वे दो-चार बार बोले थे, उसे भी वह घूँघटके भीतरसे मारे लज्जाके सुन नहीं सकी। आज उनके कण्ठस्वरको याद करनेके लिये उसने गङ्गामें खड़ी हो ध्यानपूर्वक बहुत चेष्टा की, किन्तु किसी तरह भी याद न आई।

बहुत रातको उसके विवाहका लग्न था, बहुत थकावटके कारण वह कब कहाँ सो गई, यह भी याद नहीं—सवेरे जागकर उसने देखा, कि उसके पड़ोसकी एक बहू उसे जगाकर खिलखिलाकर हँस रही है—बिछौनेपर और कोई नहीं है। जीवनके इस अन्तिम समयमें जीवनेश्वरको याद करनेका उसके पास कोई सहारा नहीं। उस तरफ बिलकुल ही अन्धकार है—कोई मूर्ति नहीं, कोई वाक्य नहीं, कोई चिह्न नहीं। जिस लाल चूनरीके साथ उनके चादरकी गाँठ बाँधी गई थी—तारिणी चरणकी दी हुई उस बहुत ही कम दामकी चूनरीका मूल्य तो कमला समझी नहीं—वह चूनरी भी वह यत्नसे रख न सकी।

रमेशने हेमनलिनीको जो चिट्ठी लिखी थी, वह कमलाके अञ्चलके कोनेमें बंधी थी—उस चिट्ठीको खोल बालूके किनारे बैठ वह उसके एक अंशको गोधूलीकी रौशनीमें पढ़ने लगी। उसी अंशमें उसके स्वामीका परिचय था—अधिक बातें नहीं, केवल उनका नाम नलिनाक्ष चट्टोपाध्याय, और वे रङ्गपुरमें डाक्टरी करते थे, अब वहाँ उनका पता नहीं—बस। चिट्ठीके बाकी अंशमें उसे ढूँढ़नेपर भी कुछ न मिला। "नलिनाक्ष" नाम उसके हृदयमें सुधाकी वर्षा करने लगा। इस नामने उसके हृदयको परिपूर्ण कर दिया—इस नामने मानों बहुत हीन शरीर

धारणकर उसे धर रखा—उसकी आँखोंसे लगातार आँसूकी धाराने बहकर उसका हृदय ठण्डा कर दिया—जान पड़ा मानों उसके असह्य दुःखकी ज्वाला बुझ गई। कमलाका हृदय कहने लगा,—यह तो शून्यता, यह अन्धकार भी नहीं—मैं देख रही हूं, कि यह जो है, वह मेरा ही है।" तब कमला जीजानसे कह उठी,—"अगर मैं सती होऊँगी, तो इस जीवनमें ही उनके चरणकी धूलि पाऊँगी, विधाता मुझे कभी बाधा न दे सकेंगे। जब मैं हूँ, तब वह कहीं गये नहीं, उन्हींकी सेवा करनेके लिये भगवानने मुझे बचा रखा है।"

यह कहकर उसने रुमालमें बँधे चाबीके गुच्छेको वहीं फेंक दिया। एकाएक उसे याद आया, कि रमेशका दिया ब्राच उसके कपड़ेमें बँधा है। उसे भी जल्दीसे खोल उसने पानीमें फेंक दिया। इसके बाद पश्चिम मुँहकर वह चलने लगी—कहाँ जायगी, क्या करेगी, यह उसके मनमें नहीं आया। वह केवल इतना जानती थी, कि चलना चाहिये, यहाँ एक मूहूर्त्त रहनेका भी स्थान नहीं।

जाड़ेके दिनकी रोशनीके समाप्त होते देर न लगी। अन्धकारमें सफेद बाल स्पष्टरूपसे चमकने लगी। कृष्णपक्षकी अँधेरी रात तारोंसे भरी हुई जनशून्य नदीके किनारेके ऊपर धीरे-धीरे साँस फेंकने लगी।

कमलाको अपने सामने गृहहीन अनन्त अन्धकारके अतिरिक्त और कुछ भी दिखाई न दिया। वह यही समझी, कि उसे चलना होगा—कहीं तो पहुँचेगी ही, उसमें सोचनेका कोई सामर्थ्य नहीं था।

उसने यही ठीक किया था, कि बराबर नदीके किनारे-किनारे चली चलेगी—इससे किसीसे भी राहमें पूछना न पड़ेगा और यदि उसपर कोई विपद् आये, तो एक क्षणमें माँ गङ्गा उसे आश्रय दे देंगी।

आकाशमें कुहरेका नाम भी न था। अन्धकारने कमलाको छिपा रखा था, किन्तु उसकी दृष्टिको रोक नहीं सका था।

रात बढ़ने लगी। जबके खेतके किनारे सियाल बोल गये। कमलाके बहुत दूर चलनेपर बालूकी रेती समाप्त हो मट्टीका ढाँड़ा शुरू हुआ। नदी किनारे ही एक गाँव दिखाई दिया। कमलाने काँपते हुए हृदयसे गाँवके पास आकर देखा, कि सारा गाँव सो रहा है। डरते-डरते गाँव पारकर चलते-चलते उसका शरीर थक गया। अन्तमें वह एक ऐसी जगह आ पहुँची, जहाँ सामने कोई राह नहीं थी। बहुत थकनेकी वजह वह एक वटवृक्षके नीचे सो रही, सोते ही उसे नहीं मालूम कि कब नींद आ गई।

सवेरे आँख खोलकर देखा, कि कृष्णपक्षके चन्द्रमाकी चाँदनीसे अन्धकार क्षीण हो रहा है और एक प्रौढ़ा स्त्री उससे पूछ रही है,—"तुम कौन हो? जाड़ेकी रात इस पेड़के नीचे कौन सोया है?"

कमला चौंककर उठ बैठी। उसने देखा, कि पास ही दो बजरे बँधे हुए हैं। यह प्रौढ़ा लोगोंके उठनेसे पहले स्नान करनेको आई थीं।

प्रौढ़ाने कहा,—"क्योंजी, तुम तो बङ्गाली जैसी दिखाई देती हो।"

कमलाने कहा—"हाँ, मैं बङ्गाली ही हू।"

प्रौढ़ा—"यहाँ क्यों पड़ी हो?"

कमला—मैं काशी जानेके लिए चल पड़ी हूँ। रात बहुत गई, नींद आई, तो यहीं सो रही।

प्रौढ़ा—हे राम, यह कैसी बात। पैदल काशी जाओगी? अच्छा चलो, इस बजरेमें चलो। मैं स्नान करके आती हूँ।

स्नानके बाद उस स्त्रीसे कमलाका परिचय हुआ।

गाजीपुरमें जिन सिद्धेश्वर बाबूके घर खूब धूमधामसे विवाह हो रहा था, यह लोग उन्हींकी आपसदारीके हैं। इस प्रौढ़ाका नाम नवीनकाली है। इनके पतिका नाम मुकुन्दलाल दे है—कुछ दिनसे

काशीमें ही रहते हैं। यह लोग आपसदारीके निमन्त्रणको टाल नहीं सके; फिर भी उनके घर रहना और खाना पड़े, इसलिये बजरेसे गये थे। विवाहके घरकी मालकिनने इसपर क्षोभ किया, तब नवीनकालीने कहा था, कि जानती तो हो, उनका शरीर अच्छा नहीं रहता। फिर बचपनसे उनका अभ्यास ही ऐसा है। मकानमें गऊ रखकर उसके दूधसे मक्खन निकाल उस मक्खनके घीसे पूरी तैयार होती है—फिर उस गऊको ऐसा-वैसा चारा खिलाया नहीं जाता - इत्यादि इत्यादि।

नवीनकालीने पूछा,—"तुम्हारा नाम क्या है?"

कमलाने कहा,—'मेरा नाम कमला है।"

नवीनकाली—तुम्हारे हाथमें लोहेकी चूड़ी है, स्वामी हैं?

कमलाने कहा,—"विवाहके दूसरे दिनसे ही पति गायब हैं।"

नवीनकाली—अरे राम, यह कैसी बात। तुम्हारी उम्र तो अधिक नहीं जान पड़ती।

उसे शिरसे अच्छी तरह देखकर उसने फिर कहा,—"यही, पन्द्रह वर्षकी होगी।"

कमलाने कहा,—"उम्र ठीक मालूम नहीं, छ ही होगी।"

नवीनकाली--तुम ब्राह्मणकी लड़की हो न?

कमलाने कहा,--"हाँ।"

नवीनकालीने कहा,—"तुम्हारा मकान कहाँ है?"

कमला--"अभीतक मैं ससुराल नहीं गई, मेरे बापका मकान विशूखाली है।"

कमला जानती थी, कि उसके बापका मकान विशूखालीमें था।

नवीनकाली—तुम्हारे माँ-बाप?

कमला—मेरे माँ-बाप कोई नहीं हैं।

नवीनकाली--राम-राम, तब तुम क्या करोगी?

कमला—काशीमें अगर कोई भले गृहस्थ मुझे अपने घर रख दोनों समय दो मुट्ठी खानेको देंगे, तो मैं रसोई बनाऊँगी।

नवीनकाली बिना तनखाहकी रसोईदारिन ब्राह्मणी पाकर मन-ही-मन खुश हुईं। उन्होंने कहा,—"मेरे साथ सब ब्राह्मण ही नौकर हैं। हमारे घर ऐसे-वैसे ब्राह्मणका ठिकाना नहीं—घरके मालिकके खानेमें जरा भी इधर-उधर होनेसे फिर क्या पूछना। ब्राह्मणको चौदह रुपया महीना दिया जाता है, उसपर खाना-कपड़ा भी। जो हो, तुम ब्राह्मणकी लड़की विपदमें पड़ गई हो—तब चलो, मेरे ही घर चलो। कितने लोग खाते-पीते हैं, कितने आते-जाते हैं; और एक आदमीके बढ़ जानेसे कुछ जान भी न पड़ेगा। हमारे यहाँ उतना अधिक काम भी नहीं। यहाँ केवल मेरे पति और मैं हूँ। लड़कियोंका विवाह कर दिया है, वह सब अच्छे बड़े घरानेमें गई हैं। मेरा एक लड़का है, वह हाकिम है; आजकल सिराजगञ्जमें है; लाट साहबके पाससे दो महीनेपर उसकी चिट्ठी आती है। मैं मालिकसे कहती हूं, कि हम लोगोंको कोई अभाव तो है नहीं, क्यों उससे नौकरी कराते हो। मैं जानती हूँ, कि इतनी बड़ी हाकिमी किसीके भाग्यमें बदी नहीं, किन्तु फिर भी मेरे बच्चेको विदेशमें पड़े रहना पड़ता है। जरूरत ही क्या है इसकी! किन्तु मालिक कहते हैं,—अजी यह बात नहीं, यह बात नहीं, तुम औरत जात, समझती नहीं। मैंने क्या रोजगारके लिये उसको नौकरी दिलाई है? मुझे कमी काहेकी है? फिर भी आदमीके लिये कोई काम होना चाहिये; नहीं तो छोटी उम्र, न जाने कब कैसी बुद्धि हो जाय।

पालमें हवाका जोर था, काशी पहुँचनेमें अधिक देर नहीं लगी। शहरके बाहर ही एक छोटे बगीचेवाले दो-मञ्जिले मकानमें सब लोग पहुँचे।

वहाँ चौदह रुपये महीनेके किसी ब्राह्मणका पता नहीं लगा। एक बुड्ढा ब्राह्मण था, कई दिन बाद ही नवीनकालीने उसपर आग

बगूला हो बिना तनखाहके उसे बिदा कर दिया। इसी बीच चौदह रुपये महीनेके बहुत ही दुर्लभ दूसरे रसोईदारके आनेतक रसोई-घरका सब भार कमलापर पड़ा।

नवीनकालीने कमलाको बार-बार सावधान कर दिया,—"देखो बेटी, काशी शहर अच्छी जगह नहीं है। तुम्हारी उम्र कम है। मकानसे कभी बाहर न जाना। जब मैं गङ्गास्नान और विश्वेश्वर दर्शनके लिये जाऊँगी, तब तुम्हें भी साथ ले चलूँगी।

नवीनकालीने उसे इसलिये सावधानीसे रखा, कि कहीं वह हाथसे बेहाथ न हो जाय। बङ्गाली लड़कियोंके साथ भी उसे अधिक बात-चीत करनेका मौका नहीं देती थीं। दिनको तो कामकी कमी नहीं थी, रातको कुछ देर नवीनकाली अपने ऐश्वर्य की आलोचनाकर कहा करती थी, कि वह अपने गहने-जेवर, सोने-चाँदीके बर्तन, मखमल क मखाब-की घरकी सजावट आदि चोरोंके डरसे काशीमें ला नहीं सकीं। "काँसेकी थालीमें तो मालिकको कभी खानेका अभ्यास ही नहीं; पहले वह इस बारेमें बहुत बकझक कर चुके हैं। उनका कहना है, कि बहुत होगा, तो दो-चार बर्तन चोरी जायेंगे, वह भी अच्छा है, दूसरा गढ़ाने-में कितनी देर लगेगी। किन्तु क्या रुपये होनेसे ही नुकसान होना चाहिये, इसे मैं किसी तरह भी बरदाश्त नहीं कर सकती। उससे तो कुछ कष्ट सहकर रहना ही अच्छा है। देखो न, देशमें हमारा बहुत बड़ा मकान है, वहाँ नौकर चाकर सभी भरे हैं, इसलिये क्या यहाँ भी सात गण्डे नौकरोंकी जरूरत है। मालिकका कहना है, कि आस-पासके और मकानोंको भी किरायेपर ले लेना चाहिये। मैं कहती हूँ, यह मुझसे न होगा—कहाँ यहाँ आरामसे रहना चाहिये या कई मकान और नोकर-चाकर बढ़ाकर दिन रात हाय-हाय करना चाहिये।" इत्यादि।

———

५२

नवीनकालीके आश्रयमें कमलाका प्राण मानों थोड़े पानीकी गड़हीकी मछलीकी तरह व्याकुल होने लगा। यहाँसे बाहर निकलनेमें उसकी जानमें जान आये, किन्तु बाहर जाकर खड़ी कहाँ होगी? उस दिन रातको गृहहीन बाहरी संसारको उसने समझ लिया है; उस तरह अन्धी होकर आत्म-समर्पण करनेमें उसे साहस नहीं होता।

यह नहीं कि नवीनकाली कमलाको चाहती न हों, किन्तु उनके प्रेममें रस नहीं था। दो-एक दिन बीमारी-तीमारीमें उन्होंने कमलाकी सेवा भी की थी, किन्तु उस सेवाको कृतज्ञताके साथ मानना कठिन है। बल्कि वह कामकाजके समय अच्छी रहती है, किन्तु जो समय उसे नवीनकालीके सखीत्वमें बिताना पड़ता है, वही उसके लिये सबसे दुःखीमय है।

एक दिन शामको नवीनकालीने कमलाको बुलाकर कहा,—"अजी ए ब्राह्मणी, आज मालिकका शरीर अच्छा नहीं, आज चावल न बनेगा, रोटी बनेगी। किन्तु इसी खयालसे बहुत-सा घी न ले लेना। मैं तुम्हारी रसोईका स्वाद जानती हूं, समझमें नहीं आता, कि उसमें इतना घी कैसे खर्च होता है। इससे तो वह उड़िया ब्राह्मण ही अच्छा था,—वह घी लेता था सही, किन्तु उसकी रसोईमें थोड़ा-बहुत घीका स्वाद आता था।"

कमला ऐसी बातोंका कोई जवाब देती नहीं थी - वह इस तरह चुपचाप काम करती जाती थी, मानो कुछ सुना ही नहीं।

आज अपमानके छिपे भारसे आक्रान्त-हृदय कमला चुपचाप तरकारी काट रही थी—उसे सारा संसार नीरस और जीवन भार जान पड़ता था। ऐसे समय गृहिणीके घरसे एक आवाज उसके कानमें पहुँची, जिसने कमलाको बिलकुल ही चौंका दिया। नवीनकाली अपने

नौकरको बुलाकर कह रही थीं,—"अरे तुलसी, जा तो शहरसे नलिनाक्ष डाक्टरको जल्दी बुला ला, उनकी तबीयत अच्छी नहीं है।"

नलिनाक्ष डाक्टर! कमलाकी आँखोंके सामने समस्त आकाशकी रोशनी वीणाके सोनेके तारके समान काँप उठी। वह तरकारी काटना छोड़ दर्वाजेपर आ खड़ी हो गई। तुलसीके नीचे उतरते ही कमलाने पूछा,—"कहाँ जाता है, तुलसी।" उसने कहा,—"नलिनाक्ष डाक्टरको बुलाने जा रहा हूँ।"

कमलाने कहा—"यह कौन डाक्टर है?"

तुलसीने कहा,—"यह यहाँके एक बड़े डाक्टरोंमें हैं।"

कमला—वह कहाँ रहते हैं?

तुलसीने कहा,—"शहरमें ही रहते हैं, यहाँसे करीब कोसभर होगा।"

भोजनकी सामग्रीमें थोड़ा-बहुत जो बचता था, उसे कमला मकानके नौकरोंमें बाँट देती थी। इसके लिये उसने बहुत बातें सुनी हैं, किन्तु अपने इस अभ्यासको वह छोड़ न सकी। विशेषतः मालकिनके कड़े कानूनके अनुसार इस मकानके नोकरोंको खाने-पीनेका बड़ा कष्ट था। इसके अतिरिक्त जब मालिक-मालकिन खा-पी लेतीं, तब बादको नौकरोंको खाना मिलता था। जब वह सब आकर कमलासे कहते,—'महाराजिन्, बड़ी भूख लगी है।" तब उन सबको कुछ खिलाये बिना उनसे रहा नहीं जाता था। इस तरह मकानके नौकर-चाकर दो दिनमें ही कमलाके बिलकुल वशमें आ गये।

ऊपरसे आवाज आई,—रसोईघरके दर्वाजेपर खड़े हो किससे सलाह हो रही है, रे तुलसी, तू समझता है, कि मेरे आँख नहीं है। शहर जानेके समय शायद एकबार रसोई घरका चक्कर काटे बिना काम नहीं चलता। इसी तरह सब चीजें हटाई जाती हैं। और मैं तुमसे कहती

हूँ, महराजिन ! तुम राहमें पड़ी थीं, दया करके तुम्हें आश्रय दिया, उसका बदला शायद इसी तरह चुकाया जाता है।"

नवीनाकालीका यह सन्देह किसी तरह भी दूर नहीं होता, कि सब लोग उनकी चीजें चुराते हैं। जब प्रमाणका कोई सहारा नहीं मिलता, तब भी वह अन्दाजसे नाराज हो लेती हैं। उन्होंने समझ लिया है, कि अन्धकारमें भी कोई ढेला फेंकनेसे अधिकांश ढेले ठीक निशानेपर पड़ते हैं। वह सदा सतर्क रहती हैं और समझती हैं, कि उन्हें कोई धोखा नहीं दे सकता। इस बातको नौकर भी अच्छी तरह समझते हैं।

आज नवीनकालीके तीव्र वचन कमलाको लगे नहीं। वह आज मशीनकी तरह काम कर रही हैं, उसका मन कहाँ उड़ रहा है, इसका कोई पता नहीं।

नीचे रसोई घरके दर्वाजेपर खड़ी हो कमला आसरा देख रही थी। इसी समय तुलसी लौटकर आया, किन्तु अकेला आया।

कमलाने पूछा,—"तुलसी, डाक्टर बाबू नहीं आये ?"

तुलसीने कहा,—"नहीं, वह नहीं आये।"

कमला—क्यों ?

तुलसी—उनकी मा बीमार हैं।

कमला—मा बीमार हैं ? क्या घरमें और कोई नहीं है।

तुलसी—नहीं, उन्होंने विवाह नहीं किया है।

कमला—तुमने कैसे जाना, कि उन्होंने विवाह नहीं किया।

तुलसी—नौकरोंके मुँहसे सुना, कि उनकी स्त्री नहीं है।

कमला—शायद उनकी स्त्री मर गई।

तुलसी—यह हो सकता है। किन्तु उनके नौकर बुजका कहना है, कि जब वह रङ्गपुरमें डाक्टरी करते थे, तब भी उनकी स्त्री नहीं थीं।

ऊपरसे आवाज आई "तुलसी"। कमला जल्दीसे रसोई घरमें घुस गई। तुलसी ऊपर चला गया।

नलिनाक्ष रङ्गपुरमें डाक्टरी करते थे—कमलाके मनमें अब और सन्देह रह न गया। तुलसीके उतरनेपर फिर कमलाने उससे पूछा,—"देख तुलसी, डाक्टर बाबूके नामके मेरे एक सम्बन्धी हैं—यह बता, कि डाक्टर बाबू हैं न ?"

तुलसी—हां ब्राह्मण, चटर्जी हैं।

मालकिनके देख लेनेके भयसे तुलसी मङ्गाजिनसे अधिक बातें करनेका साहस न कर चला गया।

कमलाने नवीनकालीके पास जाकर कहा,—"कामकाज समाप्तकर आज मैं जरा दशाश्वमेध घाट स्नान करने जाऊँगी।"

नवीनकाली—तुम्हारी सब बातें ही निराली हैं। आज वह बीमार हैं—नहीं कहा जा सकता, कि कब किस चीजकी जरूरत पड़े—आज तुम्हारे जानेसे कैसे काम चलेगा ?

कमलाने कहा,—"मुझे खबर लगी है, कि मेरे एक आपसके आदमी काशीमें हैं, उन्हींसे मिलने जाऊँगी।"

नवीनकाली—यह सब अच्छी बात नहीं है। मैं बड़ी बूढ़ी हुई, यह सब खूब समझती हूँ। यह पता तुम्हें किसने दिया। तुलसीने ? उस पाजीको अब मैं न रखूंगी। सुनो महाराजिन, जबतक तुम मेरे यहाँ हो, तबतक अकेली गङ्गास्नानको जाना या आपसके लोगोंसे मिलने शहरमें जाना हो न सकेगा—यह मैं पहले ही कहे देती हूँ।

दरबानको हुक्म हो गया, कि तुलसी अभी निकाल दिया जाय, वह इस मकानके दर्वाजेपर भी आने न पाये।

मालकिनके शासनसे अन्यान्य नौकर भी कमलासे यथासम्भव दूर दूर रहने लगे।

नलिनाक्षके बारेमें जबतक कमला कुछ जानती न थी तबतक उसे धीरज था। अब उसके लिये धीरज धरना कठिन हो गया। इसी शहरमें उसके स्वामी हैं; अतएव एक क्षण भी पराये घरमें आश्रय लेना

उसके लिये असह्य हो उठा। कामकाजमें कदम-कदमपर उससे भूल होने लगी।

नवीनकालीने कहा,—"देखो महाराजिन, तुम्हारी चाल अच्छी नहीं दिखाई देती। तुम्हें क्या भूत लगा है? तुमने अपना खाना पीना तो बन्द ही कर रखा है, क्या हमलोगोंको भी उपवास कराके मारोगी। आजकल तुम्हारी रसोई मुँहमें नहीं दी जाती।"

कमलाने कहा,—"मुझसे अब यहाँका काम होता नहीं है—मेरा मन किसी तरह लगाता ही नहीं। मुझे बिदा कीजिये।"

नवीनकाली झनककर बोलीं,—"यह बात है; कलिकालमें किसीकी भलाई करना न चाहिये, तुमपर दयाकर आश्रय देनेके लिये मैंने इतने दिनके पुराने अच्छे ब्राह्मणको छुड़ा दिया, एक बार उसकी खबर भी नहीं ली - तुम सचमुच ब्राह्मणकी लड़की हो या नहीं। आज कह रही हो, कि मुझे बिदा कीजिये। यदि भागनेकी चेष्टा करोगी, तो पुलिसमें रिपोर्ट कर दूँगी। मेरा लड़का हाकिम है—उसके हुक्मसे कितने फाँसी चढ़ गये—मेरे आगे तुम्हारी चालाकी न चलेगी। सुना तो होगा, कि गदा मालिकके मुँह लगा, उसे ऐसा मजा चखाया, कि आज भी वह जेलखाना भोग रहा है। हमलोगोंको तुम ऐसा-वैसा न समझना।"

बात सही है—गदा नौकरको घड़ी चुरानेका लांछन लगा, जेल भेज दिया गया।

कमलाको कोई उपाय न मिला। उसके चिरजीवनकी सार्थकता जब उसे हाथ बढ़ानेसे ही मिल सकती है, तब उसी हाथमें बन्धन पड़नेसे बढ़कर और कौन-सी निष्ठुरता हो सकती है। कमला अपने काममें घरमें किसी तरह भी बन्द होकर रह नहीं सकती। रातका काम समाप्त होनेपर वह जाड़ेमें एक रैपर ओढ़ बागमें निकल पड़ती। चहारदीवारीके पास खड़ी हो, जो राह शहरकी ओर गई है, उसी

राहकी ओर देखा करती थी। उसका तरुण हृदय सेवाके लिये व्याकुल है, भक्तिके लिये व्यग्र है—उस हृदयको कमला इस अँधेरेमें सन्नाटी राहसे चलकर न जाने किस अपरिमित गृहस्थके घर पहुँचती—इसके बाद बहुत देरतक चुपचाप खड़ी रहनेके बाद भूमिष्ठ हो प्रणाम करती और फिर अपनी कोठरीमें आकर सो जाती थी।

किन्तु यह सुख और यह स्वाधीनता भी कमलाके लिये अधिक दिन न चली। रातका सब काम समाप्त हो जानेपर भी एक दिन न जाने किस कारण नवीनकालीने कमलाको बुला भेजा। बैराने आकर खबर दी,—"महराजिन तो दिखाई नहीं दीं।"

नवीनकालीने घबराकर कहा,—"यह कैसी बात रे, क्या कहीं भागी ?"

नवीनकाली स्वयं लालटेन लेकर हर कोठरीमें घूम आई, कहीं भी कमला दिखाई नहीं दी। मुकुन्दबाबू अधखुली आँखों तम्बाकू पी रहे थे, उन्हींने उनसे जाकर कहा,—'सुना, शायद महराजिन भाग गई।"

इससे भी मुकुन्दबाबूकी शान्ति भङ्ग नहीं हुई। उन्होंने सिर्फ आलस्यके साथ कह दिया,—"मैं तो पहले ही मना करता था, कि जान-पहचानको आदमी नहीं है; कुछ लेकर तो नहीं भागी ?"

गृहिणी—उस दिन उसे जाड़ेका रैपर दिया था, वह उसके घरमें नहीं है; इसके अलावा अभी मैंने देखा नहीं, कि क्या-क्या ले गई।"

मालिकने बिना घबराहटके गम्भीर भावसे कहा,—"पुलिसमें खबर दे दी जाय।"

एक नौकर लालटेन लेकर बाहर निकला। इसी समय कमलाने अपनी कोठरीमें आकर देखा, कि नवीनकाली उस घरकी जरा-जरासी चीजोंको उलट-पलट देख रही हैं। वह यह पता लगा रही हैं, कि कोई चीज चोरी गई हैं या नहीं। इसी समय एकाएक कमलाको देख नवीन-काली बोल उठी,—"क्या कर आई ? कहाँ जाना हुआ था ?"

कमलाने कहा,--"काम समाप्त करने के बाद जरा बागमें टहल रही थी।"

नवीनकालीके मुँहमें जो आया, वह बक गई। मकानके सब नौकर-चाकर दर्वाजेके पास जमा हो गये।

कमलाने किसी दिन नवीनकालीकी किसी नाराजीपर उनके सामने आँसू नहीं बहाया था। आज भी वह काठ होकर चुपचाप सामने खड़ी रही।

नवीनकालीके बक-झक लेनेके बाद कमलाने कहा,--"मुझपर आप लोग असन्तुष्ट हुए हैं, तो मुझे बिदा कीजिये।"

नवीनकाली--बिदा तो करूँगी ही। तुम्हारी जैसी अकृतज्ञको सदा रोटी-कपड़ा देती रहूँगी, यह न समझना। किन्तु कैसे आदमीके पाले पड़ी हो, यह अच्छी तरह बताकर तब बिदा करूँगी।

इसके बादसे कमला बाहर निकलनेका भी साहस नहीं करती थी। उसने भीतरसे दर्वाजा बन्दकर मन-ही-मन कहा,—"जो इतना दुःख उठा रही है, भगवान् निश्चय उसके लिये कोई रास्ता निकालेंगे।

मुकुन्दबाबू अपने दो नौकरोंको साथ ले गाड़ीपर सवार हो हवा खाने गये हैं। मकानके सदर दर्वाजेपर सिकड़ी बन्द हैं। सन्ध्या हो चली है।

दर्वाजेपर आवाज दी गई,—"मुकुन्दबाबू घरमें हैं?"

नवीनकाली चौंककर बोल उठीं,—"अरे, नलिनाक्ष डाक्टर आये हैं। बुधिया, बुधिया।"

बुधिया नामसे किसीका पता न लगा। तब नवीनकालीने कहा,—"महराजिन, जाओ, जल्दी दर्वाजा खोल दो। डाक्टर बाबूसे कहो, कि वह बाहर हवा खाने गये हैं—अभी आजायेंगे, जरा बैठिये।

कमला लालटेन लेकर नीचे उतर गई—उसका पैर काँपने लगा। उसकी छाती धड़कने लगी, उसका हाथ ठण्डा हो गया। उसे भय होने

लगा, कि इस व्याकुलताके मारे वह उन्हें अच्छी तरह देख भी न सकेगी।

कमला भीतरसे सिकड़ी खोल घूँघट खींच दर्वाजेकी ओटमें खड़ी हो गई।

नलिनाक्षने पूछा,—"बाबू घरमें हैं ?"

कमलाने किसी तरह कहा,—"नहीं, आप आइये।"

नलिनाक्ष आकर बैठकमें बैठ गये। इसी समय बुधियाने आकर कहा, "बाबू हवाखाने गये हैं, अभी आ जायेंगे, आप जरा बैठें।"

कमलाकी साँस तेज होनेसे उसकी छातीमें कष्ट हो रहा था। वह बरामदेमें ऐसी जगह खड़ी हुई, जहांसे वह नलिनाक्षको अच्छी तरह देख सके किन्तु खड़ी न रह सकी। विक्षुब्ध हृदयको शान्त करनेके लिये वह वहीं बैठ गई। उसके हृदयकी चञ्चलताके साथ शीतकालकी हवाने मिलकर उसे थरथर कँपा दिया।

नलिनाक्ष किरासिनकी रोशनीके पास बैठे न जाने क्या सोच रहे थे। अन्धकारके भीतरसे कमला नलिनाक्षकी ओर देख रही थी। देखते-देखते उसकी आँखोंमें बार-बार आँसू आने लगे। जल्दीसे आँसू पोंछ उसने अपनी एकाग्र दृष्टि द्वारा नलिनाक्षका अपने हृदयके गहरे पटपर आकर्षण कर लिया। उस उन्नत ललाट, शान्त मुखपर चिरागकी रोशनी झिलमिला उठी है, यह चेहरा कमलाके हृदयमें जितना अङ्कित और परिस्फुट होने लगा, वैसे ही उसका सारा शरीर अवश हो चारों ओर आकाशके साथ मिलने लगा। विश्व-जगत्में और कुछ भी रह न गया, केवल वह चमकता हुआ चेहरा ही रह गया—जिसके सामने रहा, वह भी उसी मुखके साथ सम्पूर्णरूपसे मिल गई।

इसी तरह कमला कुछ देरतक अचेतन रही या सचेतन; यह नहीं

कहा जा सकता। इसी समय उसने एकाएक चौंककर देखा, कि नलिनाक्ष बाबू कुर्सीसे उठ खड़े हुए हैं और मुकुन्द बाबूसे बातें कर रहे हैं।

अभी यह लोग बरामदेमें आयेंगे और कमला पकड़ जायगी; इस डरसे कमला बरामदेसे हट अपनी रसोईकी कोठरीमें जा बैठी। रसोई घर आँगनके एक किनारे है और उसी आँगनसे मकानसे बाहर जानेकी राह है।

कमला सर्वाङ्ग पुलकित हो बैठी-बैठी सोचने लगी,—"मेरी जैसी हतभागिनीका ऐसा स्वामी देवता, ऐसी सौम्यमूर्त्ति! अहा भगवन्! मेरा दुःख सार्थक हो गया।"

यह कहकर उसने बार बार भगवान्को प्रणाम किया।

सीढ़ीसे नीचे उतरनेका पदशब्द सुनाई दिया। कमला चटपट अँधेरे दर्वाजेके पास खड़ी हो गई। बुधिया लालटेन लेकर आगे-आगे चली, उसीके पीछे-पीछे नलिनाक्ष बाहर निकल गये।

कमलाने मन-ही-मन कहा,—"तुम्हारे श्रीचरणकी सेविका होकर यहाँ परायेके दर्वाजे दासत्वमें कैद पड़ी हुई हूं, सामनेसे चले गये, फिर भी, तुम पहचान न सके।

मुकुन्द बाबूके भीतर भोजन करने जानेपर कमला धीरे-धीरे उनके बैठकके कमरेमें गई। जिस कुरसीपर नलिनाक्ष बैठे थे, वहाँकी जमीनमें माथा टेक बार-बार उसने उस जमीनको चूमा। सेवा करनेका कोई अवसर न पा सकनेके कारण बँधी हुई भक्तिसे कमलाका हृदय कातर हो उठा।

दूसरे दिन कमलाको समाचार मिला, कि वायु-परिवर्तनके लिये डाक्टरबाबूने मुकुन्दबाबूको दूर पश्चिममें, काशीसे भी स्वास्थ्यकर स्थानमें जानेकी सलाह दी है। इसीसे आजसे यात्राकी तैयारी हो रही है।

कमलाने जाकर नवीनकालीसे कहा,—'मैं काशी छोड़कर जा न सकूँगी।"

नवीनकाली—हमलोग जा सकेंगे और तुम न जा सकोगी। बड़ी भक्ति है।

कमला—आप चाहे जो कहें, मैं यहीं रहूँगी।

नवीनकाली—अच्छा, देखना है, कैसे रहती हो।

कमलाने कहा,—"मुझपर दया कीजिये मुझे यहाँसे न ले जाइये।"

नवीनकाली—तुम तो बहुत भयानक दिखाई देती हो। ठीक चलनेके समय बहाने निकाल रही हो। हम लोग अब इतनी जल्दीमें आदमी कहाँसे पायें? हमारा काम कैसे चलेगा?

कमलाकी सब प्रार्थनाएँ व्यर्थ गयीं—कमला अपना घर द्वार बन्द कर भगवान्‌को बुलाने लगी।

५३

जिस दिन सन्ध्याके समय नलिनाक्षसे विवाहके बारेमें हेमनलिनी और अन्नदाबाबूमें बातचीत हुई, उस रात अन्नदाबाबूको फिर शूल वेदना जान पड़ी।

रात तो कष्टसे बीत गई। सवेरे दर्दमें कमी होनेपर वह मकानसे बाहर सड़कके किनारेके बागमें जाड़ेके प्रातःकालकी हलकी धूपमें एक तिपाई रखकर बैठे। हेमनलिनीने उनको वहीं चाय पिलानेकी व्यवस्था की। गई रातके कष्टसे अन्नदाबाबूका चेहरा बदरङ्ग और उतरा हुआ था, उनकी आँखोंके नीचे कालिमा आ गई है, जान पड़ता है मानो एक ही रातमें उनकी उम्र और बढ़ गई हो।

जब अन्नदाबाबूके सूखे चेहरेकी ओर हेमनलिनीकी निगाह पड़ती है, तब उसकी छातीमें मानो छुरी-सी लगती है। हेमनलिनीके लिये

यह बड़े परितापका विषय हो गया, कि नलिनाक्षके साथ विवाहके लिये इनकार करनेसे ही वृद्ध व्यथित हुए हैं और उनकी वह मनोवेदना ही उनकी बीमारीका कारण है। वह क्या करे, कैसे वृद्ध पिताको धीरज दे, इसे बार-बार सोचनेपर भी वह कुछ स्थिर कर न सकी।

ऐसे समय एकाएक चाचाको साथ लिये अक्षय वहाँ आ पहुँचा। हेमनलिनीको शीघ्रतासे चली जाते देख अक्षयने कहा,—"आप वहीं जाइये नहीं, यह गाजीपुरके चक्रवर्त्ती महाशय हैं, इन्हें पश्चिम ओरके सभी लोग जानते हैं—आप लोगोंसे इन्हें कुछ विशेष कहना है।"

उसी जगह एक चौतरा बँधा था,—उसीपर चाचा और अक्षय बैठ गये।

चाचाने कहा,—"सुना, कि रमेशबाबूके साथ आपलोगोंकी बड़ी मित्रता है—मैं यही पूँछने आया हूँ, कि उनकी स्त्रीका कोई समाचार आप लोगोंको मिला है?'

अन्नदाबाबू क्षणभरके लिये चुप रह गये, इसके बाद उन्होंने कहा,—"रमेशबाबूकी स्त्री!"

हेमनलिनी निगाह नीची किये हुई थी। चक्रवर्तीने कहा,—"बेटी, तुम मुझे शायद पुराने समयका वही असभ्य समझती होगी। जरा धीरज धर सब बातें सुननेसे ही समझ सकोगी, कि मैं खामखाह गले पड़ पराई चर्चा ले तुम लोगोंसे आलोचना करने नहीं आया हूँ। रमेश-बाबू पूजाके समय जब स्टीमरपर सवार हो अपनी स्त्रीके साथ पश्चिमकी यात्रा कर रहे थे, तब उसी स्टीमरमें उनके साथ मेरी जान-पहचान हुई। आप लोग तो जानते हैं, कमलाको एकबार जिसने देखा है, वह उसे पराई नहीं समझ सकता। इस वृद्ध वयसमें बहुत शोक और ताप सहनेके कारण मेरा हृदय कठिन हो गया है; किन्तु मैं अपनी उस लक्ष्मीबेटीको किसी तरह भी भूल नहीं रहा हूँ। रमेशबाबूका कुछ ठीक नहीं था, कि कहाँ जायेंगे—किन्तु मुझ बूढ़ेकी दो दिनकी

मुलाकातसे कमलाका इतना स्नेह उत्पन्न हो गया था, कि उन्होंने रमेश-को गाजीपुरमें मेरे घरमें रहनेको राजी कर लिया। वहाँ कमला मेरी मझली लड़की शैलके पास सगी बहनसे भी अधिक यत्नके साथ रही। किन्तु न जाने क्या हुआ, यह कोई नहीं कह सकता—बेटी न जाने क्यों हम लोगोंको इस तरह रुलाकर चली गई। आजतक मुझे इस कारणका पता ही न लगा। तभीसे शैलकी आँखोंका आँसू किसी तरह सूख नहीं रहा है।"

कहते-कहते चक्रवर्तीकी दोनों आँखोंसे आँसू गिरने लगे। अन्नदा-बाबू घबरा उठे—उन्होंने कहा,—"उन्हें क्या हुआ, वह कहाँ गई?"

चाचाने कहा,—"अक्षयबाबू, आपने तो सब बातें सुनी हैं, आप ही कहिये। मेरे तो कहते छाती फटती है।"

अक्षयने आदिसे अन्ततक सब हाल विस्तारके साथ कह डाला। उसने स्वयं उसपर किसी तरहकी टीका नहीं की; किन्तु उसके वर्णनसे रमेशका चरित्र रमणीय नहीं हुआ।

अन्नदाबाबू बार-बार कहते रहे,—"हमलोगोंने तो यह सब बातें कभी सुनी भी नहीं। रमेश जिस दिनसे कलकत्तेसे बाहर निकले, उसके बाद आजतक उनका एक पत्र भी नहीं मिला।"

अक्षयने उसीके साथ जोड़ दिया,—"यहाँतक, कि उनका कमलासे विवाह होनेकी खबर भी हम लोगोंको नहीं। अच्छा चक्रवर्ती महाशय, मैं आपसे पूछता हूँ, कमला रमेशकी स्त्री ही थी न? बहन या और कोई आत्मीय तो नहीं?

चक्रवर्तीने कहा,—"आप क्या कहते हैं अक्षयबाबू। स्त्री नहीं तो और क्या थी। ऐसी सती लक्ष्मी स्त्री किसके भाग्यमें बदी होगी?"

अक्षयने कहा,—"किन्तु आश्चर्यकी यही बात है, कि स्त्री जितनी अच्छी होती है, उसका अनादर भी उतना ही अधिक होता है। भगवान्

शायद अच्छे लोगोंको ही सबसे अधिक परीक्षामें डालते हैं।" यह कह अक्षय ने एक ठण्डी सांस भरी।

अन्नदाने अपने शिरको उँगलीसे सुहलाते हुए कहा,—"इसमें सन्देह नहीं कि बहुत दुःखद समाचार है, किन्तु जो होना था, वह हो गया; अब नाहक शोक करनेसे फायदा।"

अक्षयने कहा,—"मुझे ऐसा सन्देह हुआ, कमला आत्महत्या न कर घर छोड़कर चली गई है। इसीसे चक्रवर्त्ती महाशयको साथ ले काशीमें पता लगाने आया हूँ। अच्छी तरह मालूम हो गया, कि आपलोगोंको इसकी कोई खबर नहीं। जो हो, दो-चार दिन यहाँ उसकी खोज होना चाहिये।"

अन्नदाबाबूने कहा,—"रमेश इस समय कहाँ हैं?"

चाचा—वह तो हमलोगोंसे कुछ न कह न जाने कहाँ चले गये।"

अक्षयने कहा,—"मुझसे भी मुलाकात नहीं हुई, किन्तु लोगोंसे सुना, कि वह कलकत्ते ही गये हैं। शायद अलीपुरमें प्राक्टिस करेंगे। मनुष्य अनन्तकालतक शोक तो कर नहीं सकता; विशेषतः इस कम उम्रमें। चक्रवर्त्ती महाशय, चलिये, जरा शहरमें अच्छी तरह ढूँढ़ा जाय।"

अन्नदाबाबूने पूछा—"अक्षय तुम तो यहीं आओगे न?"

अक्षयने कहा—"ठीक नहीं कह सकता। मेरा मन बहुत ही खराब है अन्नदाबाबू। जबतक काशीमें हूँ, मुझे खोज ही करना पड़ेगा। आपकी क्या राय है; भले घरकी लड़की मनके कष्टसे घर छोड़कर चली आई है, तब आज वह कैसे कष्टमें होगी, सोचिये। रमेशबाबू अच्छी तरह निश्चिन्त हो सकते हैं; किन्तु मैं तो हो नहीं सकता।"

चाचाको साथ ले अक्षय चला गया।

अन्नदाबाबूने बहुत ही उद्विग्न हो एकबार हेमनलिनीके मुँहकी ओर देखा। हेमनलिनी जीजानसे अपनेको संयत किये हुई थी। वह जानती थी, कि उसके पिता मन ही-मन इसकी आशङ्का कर रहे होंगे।

हेमनलिनीने कहा—"पिताजी, आज डाक्टरसे अपने शरीरकी अच्छी तरह परीक्षा कराओ। जरासी बातमें तुम्हारा स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है। इसका कुछ उपाय करना चाहिये।"

अन्नदाबाबूको मन-ही-मन बड़ा आराम मिला। रमेशके बारेमें इतनी बड़ी बातचीतके बाद भी हेमनलिनीने उनकी बीमारीके बारेमें इतनी चिन्ता प्रकट की, इससे उनके मनका बहुत बड़ा बोझ टल गया। और समय होता, तो वह अपनी बीमारीके प्रसङ्गको उड़ा देनेकी चेष्टा करते—आज उन्होंने कहा—"यह तो अच्छी बात है। शरीरकी परीक्षा कराना ही चाहिये। तब आज जरा नलिनाक्षको बुलाना चाहिये। क्या कहती हो?"

नलिनाक्षके नामसे हेमनलिनी कुछ सङ्कोचमें पड़ गई। पिताके सामने उनके साथ पहलेकी तरह मिलना उसके लिये कठिन होगा; फिर भी उसने कहा—"यही ठीक है। उनको बुलवानेके लिये आदमी भेज दूँ।"

अन्नदाबाबूने हेमका अविचलित भाव देख साहसके साथ कहा—'हेम, रमेशके ऐसे ही सब काण्ड हैं—"

हेमनलिनीने उसी समय बाधा देकर कहा—"पिताजी, धूपकी कड़ाहट बढ़ती जा रही है—चलो, अब घरमें चलो।" यह कह उन्हें आपत्ति करनेका मौका न दे हाथ पकड़कर भीतर ले गई। वहाँ उन्हें आराम कुरसीपर बैठा, उनके शरीरपर गम कपड़ा डाल उनके हाथमें एक अखबार दे दिया और चश्मेकी खोलीसे अपने हाथ चश्मा निकाल उन्हें पहनाते हुए कहा—"अखबार पढ़ो, मैं अभी आती हूँ।"

अन्नदाबाबूने समझदार बालकोंकी तरह हेमनलिनीके आज्ञापालन-की चेष्टा की, किन्तु उनका मन किसी तरह भी न लगा। हेमनलिनीके लिये उनका मन उत्कण्ठित होने लगा। अन्तमें वह अखबार रखकर हेमकी खोज लेने गये--देखा, कि इस प्रातःकालमें असमय उसका दर्वाजा बन्द है।

किन्तु कुछ न कहकर अन्नदाबाबू बरामदेमें टहलने लगे। बहुत देर बाद फिर एकबार हेमनलिनीकी खोजमें जाकर उन्होंने देखा, कि तब भी उसका दर्वाजा बन्द है। तब थके हुए अन्नदाबाबू धमसे एक कुरसीपर बैठ बारबार माथेके बाल खुजलाते हुए बालोंको बीहड़ करने लगे।

नलिनाक्षने आकर अन्नदाबाबूकी परीक्षाकर कर्त्तव्य बता दिया और हेमको पूछा—"अन्नदाबाबू, क्या आपके मनमें कोई विशेष चिन्ता है?" हेमने कहा—"हाँ, यह हो सकता है।"

नलिनाक्षने कहा—"यदि सम्भव हो, तो उनके मनको पूरा विश्राम मिलना चाहिये। मैं अपनी माँके बारेमें भी इसी मुश्किलमें पड़ा हूँ—वह जरासेमें इतनी चिन्तित हो पड़ती हैं, कि उनका शरीर ठीक रखना कठिन हो जाता है। मामूली किसी चिन्तामें पड़कर कल शायद सारी रात वह सो नहीं सकीं। मैं यही चेष्टा करता हूँ, कि वह किसी तरहसे विचलित न हों, किन्तु संसारमें रहनेसे यह किसी तरह भी हो नहीं सकता।"

हेमनलिनीने कहा—"आप भी वैसे अच्छे दिखाई नहीं देते।"

नलिनाक्ष—नहीं, मैं तो अच्छी तरह हूँ। चिन्ता करनेका मुझे अभ्यास नहीं। किन्तु शायद कल रात कुछ देर जागना पड़ा था, इस-लिये आज मैं उतना ताजा नहीं दिखाई दे रहा हूँ।

हेमनलिनी—आपकी माँकी सेवाके लिये यदि सदा उनके पास

एक स्त्री रहे, तो शायद अच्छा होता। आप अकेले हैं और आपके लिये कामकाज भी है, आप कैसे उनकी सेवा कर सकेंगे ?

यह बात हेमनलिनीने सहज भावसे ही कही थी, बात उचित भी थी, इसमें कोई सन्देह नहीं—किन्तु कहनेके साथ ही उसपर लज्जाने आक्रमण किया, उसका चेहरा लाल हो गया—एकाएक उसके मनमें आया, कि नलिनाक्षबाबू मनमें न जाने क्या समझेंगे। एकाएक हेमनलिनीमें लज्जाका आविर्भाव देख नलिनाक्ष भी अपनी माँके प्रस्तावको भूल न सके।

किन्तु हेमनलिनीने शीघ्रतासे सँभालकर कहा—"उनके पास किसी नोकरानीके रखनेसे काम न चलेगा ?"

नलिनाक्ष—मैंने कई बार चेष्टा की, किन्तु माँ किसी तरह भी राजी नहीं होतीं। वह शुद्धाचारके प्रति बहुत सतर्क रहती हैं, इसलिये तनख्वाहदारोंपर उनकी श्रद्धा नहीं होती। इसके अलावा उनका स्वभाव ऐसा है; कि कोई कर्त्तव्य समझकर उनकी सेवा करता है, तो उसे वह सह नहीं सकतीं।"

इसके बाद हेमनलिनीने इसके बारेमें और कोई बात नहीं चलाई। उसने कुछ देर चुप रहनेके बाद कहा—"आपके उपदेशके अनुसार चलते हुए कभी-कभी एकाध बार बाधा पड़ जाती है, इससे मैं फिर पीछे हट जाती हूँ। मुझे भय होता है, कि मेरे लिये कोई आशा नहीं। क्या कभी मेरे मनकी स्थिति न सुधरेगी—क्या मुझे बाहरी आघातसे इधर उधर मारे-मारे फिरना पड़ेगा ?"

हेमनलिनीकी इस कातर प्रार्थनासे नलिनाक्षने कुछ चिन्तित होकर कहा—"देखिये, विघ्न हम लोगोंके हृदयकी समस्त शक्तिको जगानेके लिये ही उपस्थित होता है। इससे आप हताश न हों।"

हेमनलिनीने कहा—"कल सवेरे एक बार आप आ सकेंगे ? आपकी सहायता पानेसे मुझे बड़ा बल हो आता है।"

नलिनाक्षके मुँह और आवाजमें एक अविचलित शान्तिका भाव है; उससे हेमनलिनीको मानो आश्रय मिल जाता है। नलिनाक्ष चले गये, किन्तु हेमनलिनीके मनमें धीरजका स्पर्श कर गये। उसने अपनी सोनेकी कोठरीके सामनेके बरामदेमें खड़ी हो एक बार जाड़ेकी धूमसे प्रकाशमय सड़ककी ओर देखा। उसके चारो ओर संसारकी प्रकृतिमें उस रमणीय मध्याह्नमें कामके साथ विराम, शक्तिके साथ शान्ति, उद्योगके साथ वैराग्य एक साथ विराजमान दिखाई दिया। उस वृहत् भावकी गोदमें उसने अपने व्यथित हृदयको समर्पण कर दिया। तब सूर्यालोक और उन्मुक्त उज्ज्वल नील-आकाशने उसके हृदयमें जगत्के नित्य उच्चारित सुगभीर आशीर्वादके पानेका अवकाश प्राप्त किया।

हेमनलिनी नलिनाक्षकी माताकी बात सोचने लगी। कौन-सी चिन्ता उनमें व्याप्त है, वह क्यों रातको सो नहीं सकतीं, उसे हेमनलिनी समझ न सकी। नलिनाक्षके साथ उसके विवाहके प्रस्तावकी पहली चोट, प्रथम सङ्कोच भी दूर हो गया। नलिनाक्षके प्रति हेमनलिनीका भरोसा भक्तिके सहारे बढ़ गया था। किन्तु इसमें प्रेमकी विद्युत् सञ्चारमयी वेदना नहीं है—वह न सही। वह आत्मप्रतिष्ठ नलिनाक्ष किसी स्त्रीसे प्रेमकी आशा रखे, यह तो हो ही नहीं सकता। फिर भी, सेवाकी आवश्यकता तो सबको ही है। नलिनाक्षकी माता बीमार और बूढ़ी हैं—नलिनाक्षका खयाल कौन करे। इस संसारमें नलिनाक्षका जीवन कुछ अनादरकी सामग्री नहीं—ऐसे लोगोंकी सेवा भक्तिकी सेवा ही होना चाहिये।

आज सवेरे हेमनलिनीने रमेशके जीवनके इतिहासका जो अंश सुना है, उससे उसके हृदयके बीच एक प्रचण्ड चोट लगी है, इसी भयानक चोटसे अपनी रक्षा करनेके लिये आज उसके मनकी समस्त शक्ति उद्यत हो खड़ी हो गई है। आज ऐसी अवस्था हो रही है, कि रमेशके लिये दुःख करना भी उसके लिये लज्जाकर हो गया है। वह

रमेशका विचारकर उसे अपराधी भी बनाना नहीं चाहती। संसारमें शत-सहस्र आदमी भले-बुरे कितने ही प्रकारके काममें लिप्त रहते हैं, संसारका चक्र चलता रहता है—हेमनलिनी इसके विचारका भाव ग्रहण नहीं करती। रमेशकी बात हेमनलिनी अपने मनमें आने भी नहीं देना चाहती। कभी-कभी आत्मघातिनी कमलाकी बातोंकी कल्पना करनेसे उसका शरीर काँप उठता है—उसके मनमें आता है, कि उस हतभागिनीकी आत्महत्यासे मेरा कौन-सा लगाव है। तब लज्जासे, घृणासे, करुणासे उसका सारा हृदय मथित हो उठता है। तब वह हाथ जोड़कर कहती है,—'हे ईश्वर, मैंने तो कोई अपराध किया नहीं, तब मैं क्यों इस तरह इसमें शामिल की जाती हूँ। मेरे इस बन्धनको काटो, एकदम तोड़ दो। मैं और कुछ नहीं चाहती, तुम मुझे इस संसारके सहज भावसे बँधकर जीने दो।"

अन्नदाबाबू यह जाननेके लिये उत्सुक हैं कि रमेश और कमलाकी घटना सुन हेमनलिनी अपने मनमें क्या सोच रही है। फिर भी, बातको स्पष्ट करनेकी हिम्मत नहीं हो रही है। हेमनलिनी बरामदेमें चुपचाप बैठी सिलाई कर रही थी; वहाँ कई बार जाकर हेमनलिनीके चिन्तामें डूबे चेहरेको देख-देख लौट आते थे।

सन्ध्या समय डाक्टरके उपदेशके अनुसार जाकर चूर्णमिश्रित दूध पिलाकर हेमनलिनी उनके पास बैठी।

अन्नदाबाबू ने कहा,—"रौशनी मेरे चेहरेके सामनेसे हटा दो।"

घरमें कुछ अन्धेरा होनेपर अन्नदाबाबूने कहा,—"सवेरे जो वृद्ध आये थे, वह तो देखनेमें बहुत सरल जान पड़े।

हेमनलिनीने इस प्रसङ्गपर कोई बात नहीं कही—चुप रही। अन्नदाबाबू और अधिक भूमिका बाँध न सके। उन्होंने कहा,—"रमेशका मामला सुनकर मैं बड़े आश्चर्यमें आया हूँ—लोगोंने उसके बारेमें बहु-

तेरी बातें कहीं,—"किन्तु आजकल मैंने किसीकी बातका विश्वास नहीं किया—किन्तु अब—

हेमनलिनीने गिड़गिड़ाकर कहा,—"पिता, यह सब बातें छोड़ो।'

अन्नदाबाबूने कहा,—"बेटी, बातचीत करनेकी तो इच्छा ही नहीं होती। किन्तु विधिके विधानसे किसी न किसी आदमीके साथ हम लोगोंका सुख दुःख जड़ित हो जाता है; तब उसके किसी आचरणसे लापरवाही दिखानेकी जगह नहीं रहती।"

हेमनलिनी बेगके साथ कह उठी,—"नहीं-नहीं, सुख-दुःखकी गाँठ ऐसे-वैसे आदमीके साथ क्यों बँधे। पिताजी, मैं बहुत अच्छी तरह हूँ—मेरे लिये नाहक उद्विग्न हो मुझे लज्जित न करो।"

अन्नदाबाबूने कहा,—"बेटी हेम, मेरी उम्र हो गई है, अब तुम्हारा कोई ठिकाना न करनेसे मेरा मन स्थिर नहीं हो रहा है। तुम्हें इस तरह तपस्विनीकी तरह छोड़कर मैं जा नहीं सकता।"

हेमनलिनी चुप रह गई। अन्नदाबाबूने कहा,—"देखो बेटी, संसारमें किसी आशाके टूट जानेपर यह समझना चाहिये, कि अन्य मूल्यवान चीजोंको भी अग्राह्य करना चाहिये। हो सकता है, कि मनके क्षोभसे तुम इसे न भी समझ सको, कि तुम्हारा जीवन कैसे सुखी होगा और सार्थक होगा। किन्तु मैं सदा तुम्हारे मङ्गलकी कामना करता हूँ—मैं जानता हूँ, कि तुम्हें किसमें सुख है और किसमें तुम्हारा मङ्गल है। मेरे प्रस्तावसे तुम बिलकुल उपेक्षा न करो।"

हेमनलिनीकी दोनों आँखें भर आईं; वह बोल बैठी,—"ऐसी बात न कहो, मैं तुम्हारी किसी बातकी कभी उपेक्षा नहीं करती। तुम जो आज्ञा दोगे, मैं निश्चय उसका पालन करूँगी। किन्तु मैं केवल एक बार हृदयको साफकर अच्छी तरहसे तैयार हो जाना चाहती हूँ।"

अन्नदाबाबूने उसी अन्धकारमें एक बार हेमनलिनीके आँसूसे गीले मुँहपर हाथ फेर उसके मस्तकका स्पर्श किया, फिर कोई बात न हुई।

दूसरे दिन सवेरे जब अन्नदाबाबू हेमनलिनीके साथ बाहर पेड़के नीचे चाय पीने बैठे तब अक्षय भी आ पहुँचा। अन्नदाबाबू मानो चुपचाप प्रश्न करते हुए उसके मुँहकी ओर देखने लगे। अक्षयने कहा,—"अभीतक कोई पता नहीं लगा।" यह कहते एक प्याला चाय लेकर वहीं बैठ गया।

उसने धीरे धीरे बात शुरू की,—"रमेश बाबू और कमलाका कुछ असबाब चक्रवर्त्ती महाशयके यहाँ रह गया है, वह इसी चिन्तामें हैं, कि उसे वह कहाँ और किससे पास भेजे। रमेशबाबू निश्चय ही आपलोगोंका पता पानेपर यहाँ आयेंगे। इसलिये यदि आपके यहाँ—"

अन्नदाबाबूने एकाएक बड़े क्रोधमें आकर कहा,—"अक्षय तुममें कर्त्तव्यकी समझ बिलकुल ही नहीं है। रमेश मेरे यहाँ क्यों आयेगा और उसकी चीजें मैं क्यों रखने लगा।"

अक्षयने कहा,—"अन्याय हुआ हो या भूल हुई हो, रमेशबाबू निश्चय ही इस समय अनुतप्त हुए हैं, इस समय उन्हें धीरज देना क्या उनके पुराने मित्रोंका कर्त्तव्य नहीं है? क्या उन्हें परित्यागकर दिया जायागा?"

अन्नदाबाबूने कहा,—"अक्षय, तुम केवल हमलोगोंको दुखी करनेके लिये इस बातको बार-बार उठाते हो। मैं तुम्हें अच्छी तरह समझाये देता हूँ—यह प्रसङ्ग तुम मेरे सामने कभी न उठाया करो।"

हेमनलिनीने स्निग्ध स्वरमें कहा,—"पिताजी, तुम क्रोध न करो, तुम्हारी तबीयत खराब हो जायगी—अक्षयबाबू जो कहना चाहते हैं, कहने दो; इसमें हर्ज ही क्या है।"

अक्षयने कहा,—"नहीं-नहीं, मुझे माफ कीजिये। मैं अच्छी तरह समझ नहीं सका था।"

४५

ठीक हो गया है, कि मुकुन्दबाबू काशी छोड़कर मेरठ जायेंगे। असबाब बँध गया है, कल सवेरे ही यात्रा है। कमला बहुत आशा किये हुई थी, कि इसी बीच कोई ऐसी घटना हो जाय, जिससे उन लोगोंका जाना बन्द हो जाय। उसने मनमें यह भी आशा कर ली थी, कि नलिनाक्ष डाक्टर और दो एक बार अपने रोगीको देखने आयेंगे। किन्तु दोनोंमें कोई बात भी नहीं हुई।

कहीं महराजिन यात्राकी घबराहटमें भागनेका मौका न पा जाय, इस आशङ्कासे नवीनकाली कई दिन कमलाको अपने साथ ही साथ रखती थीं—उन्होंने उसीसे असबाब बँधवा डाला।

कमला मनसे यह मनाने लगी, कि आज रात उसे कोई ऐसी कठिन बीमारी हो जाय, कि उसे साथ लेजाना नवीनकालीके लिये असम्भव हो उठे। साथ ही उसने मन-ही-मन यह भी सोच लिया, कि उस भयानक बीमारीमें दवा किस डाक्टरकी होगी। इस बीमारीमें यदि उसकी मृत्यु हो जाय, तो मृत्युसे पहले वह चिकित्सकके पैरकी धूलि लेकर मर सके; यह भी वह सोच रही थी।

रातको नवीनकाली कमलाको लेकर अपने घरमें सोईं। दूसरे दिन स्टेशन जानेके समय उसे अपने साथ घोड़ागाड़ीमें चढ़ा लिया। मुकुन्दबाबू सेकेण्डक्लासमें बैठे – नवीनकाली महराजिनके साथ ड्योढ़े जनाने दर्जेमें बैठीं।

अन्तमें गाड़ीने काशी स्टेशन छोड़ा--मतवाला हाथी जैसे लताको तोड़ देता है, वैसे ही रेलगाड़ी गर्जन करती हुई कमलाको तोड़कर ले भागी। कमला बड़े चावसे खिड़कीसे बाहर देखती रही। नवीनकालीने कहा,—"महराजिन, पानका डब्बा कहाँ है?"

कमलाने पानका डब्बा निकालकर दिया। डब्बा खोलकर नवीन-कालीने कहा,—"यह देखो, जो सोचा था, वही हुआ। चूनेकी डिबिया भूल आईं? अब मैं क्या करूँ। जिस चीजको मैं न देखूँ, उसमें कुछ न कुछ भूल हो ही जाती है। किन्तु महाराजिन तुमने शैतानीसे यह काम किया है। केवल मुझे तङ्ग करनेके खयालसे। तुम जान-बूझकर मुझे जलाती हो। आज तरकारीमें नमक नहीं, कल दूधमें धुएँकी बदबू; समझती हो कि तुम्हारी यह सब चालाकी मैं समझती नहीं। अच्छा, चलो मेरठमें, इसके बाद देखा जायगा, कि तुम कौन हो और मैं कौन हूँ।"

जब गाड़ी पुलपरसे चली, तब कमलाने खिड़कीसे झाँक गङ्गा किनारेके काशी शहरको एकबार देख लिया। किन्तु कुछ भी जान न सकी, कि उस शहरमें किस ओर नलिनाक्षका मकान है। इसलिये रेलगाड़ीके तेजीसे चलनेके समय घाट, मकान, मन्दिरकी चोटी, जो कुछ उसे दिखाई दिया, उन सबने नलिनाक्षके आविर्भाव द्वारा मण्डित हो उसके हृदयको स्पर्श किया।

नवीनकाली—अरे, इतना झुककर क्या देख रही हो। तुम चिड़िया तो हो नहीं, न तुम्हारे पर ही हैं, कि उड़ जाओगी।"

काशी नगरीका चित्र न जाने कहाँ चला गया। कमला चुपचाप बैठ आकाशकी ओर देख रही थी।

अन्तमें गाड़ी मोगलसरायमें रुकी। कमलाके लिये स्टेशनका शोरगुल, लोगोंकी भीड़, सब छायाकी तरह स्वप्नके समान जान पड़ने लगा। वह लकड़ीके पुतलेकी तरह एक गाड़ीसे दूसरी गाड़ीमें चढ़ी।

गाड़ी छूटनेका समय हो गया, ऐसे समय कमलाने एकाएक चौंककर सुना, कि उसे किसी परिचित आवाजने "माँ' कहकर बुलाया। कमलाने प्लाटफार्मकी ओर मुँह फेरकर देखा, कि उमेश है।

कमलाका मुँह चमक उठा—'क्या रे उमेश?"

उमेशने गाड़ीका दर्वाजा खोल दिया और देखते-देखते कमला नीचे उतर पड़ी। उमेशने चटपट प्रणामकर उसके पैरकी धूलि लेकर अपने माथेसे लगाई। उसका सारा चेहरा प्रसन्नतासे खिल उठा।

उसी दम गार्डने गाड़ीका दर्वाजा बन्द कर दिया। नवीनकाली चीखने-चिल्लाने लगी,—"महाराजिन यह क्या कर रही हो। गाड़ी छूटती है। चढ़ो, जल्दी चढ़ो।"

कमलाके कानमें मानो उनकी आवाज पहुँची ही नहीं। गाड़ी भी सीटी देकर गड़गड़ाती हुई स्टेशनसे निकल गई।

कमलाने पूछा,—"उमेश, तू कहाँसे आ रहा है?"

उमेशने कहा,—"गाजीपुरसे।"

कमलाने पूछा,—"वहाँ सब लोग अच्छी तरह हैं न। चाचाजीका क्या हाल है?"

उमेशने कहा,—"वह अच्छे हैं।"

कमला—मेरी दीदी कैसी हैं?

उमेश—माँ, वह तुम्हारे लिये रो-रो मर रही हैं।

उसी समय कमलाकी दोनों आँखोंमें आँसू आ गये। उसने पूछा,—"उमिया कैसी है रे, वह अपनी मौसीको कभी कभी याद करती है।"

उमेशने कहा,—"तुमने उसे जो एक जोड़ा गहना दिया था, उसके न पानेसे वह किसी तरह दूध नहीं पीती। उसे पहन वह दोनों हाथ घुमा-घुमाकर कहती है, मासी ग-ग-गई, बस, उसकी माँ रोने लगती है।"

कमलाने पूछा,—"तू यहाँ क्या करने आया है?"

उमेशने कहा,—"मुझे गाजीपुर अच्छा नहीं लगता था, इसीसे मैं चला आया।"

कमला--अब कहाँ जायगा ?

उमेश--माँ, मैं तो तुम्हारे साथ रहूँगा।

कमलाने कहा,—"मेरे पास तो एक पैसा भी नहीं है।"

उमेशने कहा,—'मेरे पास है।'

कमला—तूने कहाँ पाया ?

उमेश—वही जो तुमने मुझे पाँच रुपये दिये थे, वह अभीतक खर्च नहीं हुए।

यह कह उसने कमरसे पाँच रुपये निकालकर दिखाये।

कमला—तब चल उमेश, हमलोग काशी चलें, क्यों ? तू टिकट खरीद सकेगा ?

उमेशने कहा,—"क्यों न खरीद सकूँगा। कहकर वह उसी समय टिकट ले आया। गाड़ी तैयार थी, उसने कमलाको गाड़ीपर चढ़ा दिया, कहा.—"माँ, मैं बगलके कमरेमें हूँ।'

काशी स्टेशन उतरकर कमलाने उमेशसे पूछा,—"उमेश, बता अब कहाँ चलूँ ?'

उमेशने कहा,—"माँ, तुम कोई चिन्ता न करो, मैं तुम्हें ठीक जगह ले चलता हूँ।

कमला—ठीक जगह कहाँ रे, तू यहाँका क्या हाल जानता है ?

उमेश—सब जानता हूँ, देखो तो कहाँ ले चलता हूँ।'

यह कहकर उसने कमलाको एक किरायेकी गाड़ीमें बैठा आप कोचबक्स पर बैठ गया। एक मकानके सामने गाड़ी खड़ी होनेपर उमेशने कहा,—"मां, यहां उतरो।"

कमला गाड़ीसे उतर उमेशके साथ-साथ घरमें घुसी, इसी समय उमेश बुला बैठा,—"दादा महाशय घरमें हैं ?'

पास हीकी कोठरीसे आवाज आई,—"कौन, उमेश ? तू कहाँसे आया ?"

इसके बाद ही हाथमें हुक्का लिये चक्रवर्ती चाचा सामने आ पहुँचे। उमेश प्रसन्नमुख हो चुपचाप हँसने लगा। विस्मयमें भरी कमलाने जमीन टेक चक्रवर्तीको प्रणाम किया। बूढ़ेके मुँहसे कुछ देरतक कोई बात न निकली। वह कुछ भी समझ न सके, कि क्या कहें और हुक्का कहाँ रखें। अन्तमें कमलाकी ठोड़ी पकड़ उसके लज्जित मुँहको ऊपरकी ओर कर उन्होंने कहा,—"बेटी, तू लौट तो आई, चल-चल ऊपर चल।"

"अरी शैल, देख बेटी कौन आई है।"

शैलजा चटपट कमरेसे निकल बरामदेकी सीढ़ीके सामने आ खड़ी हुई। कमलाने पैरकी धूलि लेकर उसे प्रणाम किया। शैलने उसे छातीसे लगाकर बारबार उसके ललाटका चुम्बन किया। आँसुओंसे चेहरेको भिगाकर उसने कहा,—हे राम, भला इस तरह भी कोई सबको रुलाकर जाता है।"

चाचाने कहा,—यह सब बात रहने दो शैल, अभी उसके नहाने-खानेका बन्दोबस्त करो।"

इसी समय उमा "मासी-मासी" कहती दोनों हाथ फैलाये बाहर निकल आई। कमलाने उसे उसी समय गोदमें ले छातीसे लगा चूमते-चूमते उसे हैरान कर डाला।

शैलजा कमलाके रूखे बाल और मैले कपड़े देखकर रह न सकी। उसे उसने ले जाकर नहलाया,—अपनी एक अच्छी धोती निकालकर पहनाया। कहा,—"जान पड़ता है, कि कल रात अच्छी नींद नहीं आई। आँखें बैठ गई। मैं रसोई खतमकर आती हूँ, तबतक तुम जरा लेट रहो।"

कमलाने कहा,—"नहीं दीदी, चलो तुम्हारे साथ मैं भी रसोई घरमें चलूँगी।

दोनों सखियाँ एक साथ रसोई घरमें गईं।

चक्रवर्ती चाचा अक्षयकी सलाहसे जब काशीमें आनेको तैयार हुए, तब शैलजाने जिद की, पिताजी, मैं भी तुम्हारे साथ काशी चलूँगी।"

चाचाने कहा,—"विपिनको तो अभी छुट्टी है नहीं।"

शैलने कहा,—"न हो मैं अकेली ही चलूँगी। माँ है न, उन्हें कोई असुविधा न होगी।"

पतिके साथ इस तरह विच्छेदका प्रस्ताव उसने कभी किया नहीं था।

चाचाको राजी होना पड़ा। यह लोग गाजीपुरसे चले।

काशी स्टेशनपर उतरके देखा, कि उमेश भी गाड़ीसे उतर रहा है—"अरे तू क्यों आया रे।" सब लोग जिस कारणसे आये, उसी कारणसे वह भी आया। उमेश आजकल चाचाके घरका काम करता है। उसके एकाएक चले आनेसे माँजी बहुत नाराज होंगी, यह समझकर लोगोंने बड़ी चेष्टासे उमेशको फिर गाजीपुर भेज दिया। इसके बाद जो हुआ, उसे सभी लोग जानते हैं। वह गाजीपुरमें किसी तरह भी रह न सका। माँजीने बाजार सौदा लानेको भेजा था, वह पैसे ले गङ्गापारकर स्टेशन पहुँचा। गाजीपुरमें चक्रवर्तीकी स्त्री उसकी राह ही देखती रह गईं।

५५

दिनमें एकबार अक्षय चक्रवर्तीसे मुलाकात करने आया था। किन्तु उन्होंने उससे कमलाके लौटनेका हाल नहीं कहा। क्योंकि चक्रवर्ती समझ गये थे, कि रमेशके साथ उसकी विशेष मित्रता नहीं है।

घरमें किसीने यह नहीं पूछा, कि कमला क्यों चली गई थी और कहाँ चली गई थी। कमला मानो इन लोगोंके साथ ही काशी

घूमने आई थी, इसी प्रकार दिन बीत गया। उमियाकी दाई लछमिनिया कुछ स्नेहमिश्रित डाँटके साथ कुछ कहने चली, किन्तु चाचाने उसी समय उसे एकान्तमें बुलाकर डाँट दिया।

रातको शैलजा कमलाको लेकर अपने बिछौनेपर लेटी। उसने उसके गलेमें बाँह डाल खींचकर छातीसे लगा लिया और दाहने हाथसे उसे सुहलाने लगी। इस हाथके स्पर्शसे मानो चुपचाप वह कमलाकी छिपी वेदनाके बारेमें प्रश्न करने लगी।

कमलाने कहा,—"दीदी, तुम लोगोंने मनमें क्या सोचा था ? मेरे ऊपर नाराज तो नहीं हुईं ?"

शैलने कहा,—"हम लोगोंमें बुद्धि तो है नहीं। मैं क्या इतना भी नहीं समझ सकती, कि संसारमें यदि तेरे लिये कोई राह होती, तो तू ऐसे भयानक पथपर न जाती। हमलोग केवल यही समझकर रोते रहे, कि भगवान्‌ने तुझपर ऐसा सङ्कट क्यों डाला। जो आदमी कोई अपराध करना नहीं जानता, उसे भी दण्ड मिलता है।"

कमलाने कहा,—"दीदी, मेरी सब बातें तुम सुनोगी ?"

शैलने कहा,—"सुनूँगी क्यों नहीं।"

कमला,—नहीं मालूम, कि उस समय मैंने तुमसे कुछ क्यों नहीं कहा। उस समय मुझे किसी बातके समझने या विचारनेका समय ही न था। एकाएक शिरपर ऐसा वज्राघात हुआ, कि मारे लज्जाके मैं तुम लोगोंके आगे मुँह नहीं दिखा सकती थी। संसारमें तुम मेरी माँ-बहन दोनों हो। इसीसे तुम्हारे आगे सब बातें कहती हूँ, नहीं तो मेरी बात किसीसे कहने लायक नहीं है।

कमला अब लेटी रह न सकी, उठके बैठ गई। शैल भी उठकर उसके सामने बैठी। उस अँधेरेमें बिछौनेपर बैठ कमला विवाहसे आरम्भकर अपने जीवनकी कहानी कहने लगी।

कमलाने जब कहा, कि विवाहसे पहले या विवाहकी रातको उसने अपने पतिको नहीं देखा। तब शैलने कहा,—"तेरी जैसी बेवकूफ लड़की मैंने नहीं देखी। तुमसे कम उम्र में मेरा विवाह हुआ था—तू क्या समझती है, कि मारे लज्जाके मैं किसी बहाने अपने पतिको देख नहीं सकी?"

कमलाने कहा,—"लज्जा नहीं दीदी। मैं विवाहकी उम्रको पार कर गई थी। उस समय जब एकाएक मेरे विवाहकी बात पक्की हो गई, तब गाँवकी सङ्गिनी मुझे बहुत चिढ़ाने लगीं। तब यह दिखानेके लिये मैंने उनकी ओर देखा भी नहीं कि अधिक उम्रमें वर पाकर सात राज्यका धनमानिक नहीं पा लिया है। यहाँतक, कि उनके लिये कुछ भी आग्रह प्रकट करना लज्जाकर और अगौरव समझ बैठी थी। आज उसीका बदला चुका रही हूं।"

यह कह कमला कुछ देरके लिये चुप हो रही। इसके बाद उसने फिर कहना शुरू किया, "विवाहके बाद नाव डूबनेसे हमारी जैसी रक्षा हुई, वह तो मैं तुमसे पहले ही कह चुकी हूँ। किन्तु जब मैंने तुमसे कहा था, तब भी मैं जानती नहीं थी, कि मांतसे रक्षा पानेपर मैं जिसके हाथ पड़ी, जिसे मैं अपना पति समझी, वह मेरे पति नहीं।

शैलजा चौंक उठी—चटपट उसने कमलाके गलेमें हाथ डालकर कहा—"हायरे फूटा भाग्य! तभी तो—अब सब बातें समझमें आ गईं। इस तरह भी सर्वनाश हुआ करता है!

कमलाने कहा,—"जरा देखो न दीदी, मर जाती तो सब खतम हो जाता, तब विधाता इतनी विपद क्यों डालते।"

शैलजाने पूछा,—"रमेश बाबू भी कुछ जान न सके।"

कमलाने कहा,—"विवाहके बाद एक दिन उन्होंने मुझे सुशीला कहकर बुलाया, तब मैंने उनसे कहा, कि मेरा नाम कमला है, तुम लोग मुझे सुशीला कहकर क्यो बुलाते हो। मैं समझती हूँ, कि उसी दिन

उनका भ्रम दूर हुआ। किन्तु दीदी, उन दिनोंकी याद करके भी मेरा माथा झुक जाता है।" यह कह कमला चुप रह गई।

शैलजाने एक-एक प्रश्नकर उसकी सब बातें जान लीं। सब बातें मालूम होनेपर उसने कहा—"बहन, तू भाग्यकी दुखिया है, किन्तु मैं तो यह सोच रही हूं, कि बड़े भाग्यसे तू रमेशके हाथ पड़ी थी। चाहे जो हो, बेचारे रमेशकी बात याद करनेसे बड़ा दुःख होता है। आज बहुत रात गई कमल, अब तू सो जा। कई दिन रात जागनेसे और रोनेसे तेरा चेहरा काला पड़ गया है। अब इस समय क्या हो सकता है, कल सवेरे सब ठीक होगा।"

रमेशकी लिखी वह चिट्ठी कमलाके पास थी। दूसरे दिन उस चिट्ठीको लेकर शैलजाने अपने पिताको एकान्तमें बुला वह चिट्ठी उन्हें दे दी। बूढ़ेने चश्मा चढ़ाकर बहुत धीरे-धीरे चिट्ठी पढ़ी फिर चश्मा उतारकर लड़कीसे कहा—"अब क्या करना चाहिये?"

शैलने कहा—"पिताजी, उमियाको कई दिनसे सर्दी-खाँसी है, एकबार नलिनाक्ष डाक्टरको बुला लाओ न। काशीमें उनका और उनकी माँका बड़ा नाम सुनाई देता है। जरा एकबार उन्हें दिखा दूँ।

रोगीको देखनेके लिये डाक्टर आये और डाक्टरको देखनेके लिये शैल व्यग्र हो उठी। उसने कहा—"कमला आओ, शीघ्र आओ।"

नवीनकालीके घर जो कमला नलिनाक्षको देखनेके लिये व्यग्र हो उठी थी और अपनेको भूल गई थी, वही कमला आज लज्जासे उठना भी नहीं चाहती।

शैलने कहा—"देख मुँहकाली, मैं तुझे बहुत न मनाऊँगी, यह याद रखना—मुझे इतना समय नहीं है—उमियाकी बीमारी केवल बहाना है, डाक्टर अधिक देरतक न ठहरेंगे—तुझे मनानेमें मैं भी उन्हें देख न सकूँगी।"

यह कह जबर्दस्ती कमलाको खींच लाई और दर्वाजेकी आड़में खड़ी हो गई। नलिनाक्ष उमियाकी छाती और पीठ देख दवा लिखकर चले गये।

शैलने कमलासे कहा—"कमल, विधाताने तुझे चाहे कितना ही दुःख क्यों न दिया हो, तेरा भाग्य बहुत अच्छा है। अब दो एक दिन बहन, तुझे धीरज धरना पड़ेगा, मैं कोई न कोई व्यवस्था करती हूँ। इस बीच उमियाके लिये बारबार डाक्टरकी जरूरत पड़ेगी, इसलिये तुझे वञ्चित होना न पड़ेगा।"

चाचा एक दिन ऐसा समय देखकर डाक्टर बुलाने गये, जब नलिनाक्ष मकानमें नहीं थे। नौकरने कहा—"डाक्टर बाबू नहीं हैं।" चचाने कहा—"माताजी तो हैं, उन्हें जरा खबर कर दो। कह दो, कि एक वृद्ध ब्राह्मण उनसे मिलना चाहता है।"

ऊपरसे बुलाहट हुई। चाचाने जाकर कहा—"आपका नाम काशीमें विख्यात है। इसीसे आपका दर्शनकर पुण्य सञ्चय करने आया हूँ। मेरी और कोई इच्छा नहीं। मेरी एक नतिनी बीमार है, आपके लड़केको बुलाने आया था, वह घरमें नहीं है—इसीसे सोचा कि खाली-खाली क्या लौटूँ, आपका दर्शन करता चलूँ।"

क्षेमङ्करीने कहा—"नलिन अभी आयेगा, तबतक आप जरा बैठिये—दिन बहुत चढ़ आया है, आपके लिये कुछ जलपान मँगा दूँ।"

चाचाने कहा—"मैं जानता था, कि आप मुझे बिना खिलाये न रहेंगी—मुझे भी खानेका शौक है, इसे मुझे देखते ही लोग समझ जाते हैं—और सब लोग इस बारेमें मुझपर कुछ दया भी करते हैं।"

क्षेमङ्करी चाचाको जलपान कराके बहुत खुश हुईं। उन्होंने कहा—"कल मेरे यहाँ आपका मध्याह्न भोजनका निमंत्रण है। आज मैं तैयार नहीं थी, इसलिये आपको अच्छी तरह खिला न सकी।"

चाचाने कहा—"जब आप तैयार हों, तब इस ब्राह्मणको याद कीजियेगा। आप लोगोंके मकानसे मैं अधिक दूर नहीं रहता। अगर कहें, तो आपके नौकरको ले जाकर अपना घर दिखा दूँ।"

इस तरह चाचा दो-चार दिन जानेमें ही नलिनाक्षके घर जम बैठे।

क्षेमङ्करीने नलिनाक्षको बुलाकर कहा—"नलिन, तुम चक्रवर्ती महाशयसे फीस न लिया करो।"

चाचाने हँसकर कहा—"माताकी आज्ञा पानेसे पहले ही वह उसका पालन करते आते हैं—मुझसे उन्होंने कुछ नहीं लिया। जो लोग दाता हैं, वह गरीबको देखते ही पहचान जाते हैं।"

दो-एक दिनतक बाप-बेटीमें सलाह चलती रही। इसके बाद एक दिन सवेरे चाचाने कमलासे कहा—"चलो बेटी, हमलोग दशाश्वमेध स्नान कर आयें।"

कमलाने शैलसे कहा—"दीदी, तुम भी चलो न।"

शैलने कहा—"नहीं जी, उमियाकी तबीयत अच्छी नहीं है।"

चाचा एक रास्तेसे घाटपर स्नान करने गये, लौटनेके समय एक दूसरी राहसे चले। कुछ दूर जाकर उन्होंने देखा, कि एक बूढ़ी स्नान कर रेशमी वस्त्र पहने हाथमें गङ्गाजलकी लोटिया लिये धीरे-धीरे चली आ रही है।

कमलाको सामने करके चाचाने कहा—"बेटी, उन्हें प्रणाम करो। यह डाक्टर बाबूकी माता हैं।"

यह सुन कमलाने चौंककर उसी समय क्षेमङ्करीको प्रणाम किया और उनके चरणकी धूलि अपने माथेसे लगाई।

क्षेमङ्करीने कहा—"तुम कौन हो बेटी? आहा, कैसा रूप है! मानो लक्ष्मीकी प्रतिमा है।" यह कह उन्होंने कमलाका घूँघट हटा नीची आँखें किये उसके मुँहको अच्छी तरह देखा। फिर कहा—"तुम्हारा नाम क्या है, बेटी।"

कमलाके जवाब देनेसे पहले ही चाचाने कहा—"इसका नाम हरिदासी है। यह दूरके सम्बन्धमें मेरी भतीजी है। इसके माँ-बाप कोई नहीं हैं—मेरे ऊपर ही सब कुछ निर्भर है।"

क्षेमङ्करीने कहा—"आइये चक्रवर्ती महाशय, मेरे घर चलिये।"

मकान जाकर क्षेमङ्करीने एकबार नलिनाक्षको बुलाया। नलिनाक्ष उस समय बाहर चले गये थे।

चाचा आसन जमाके बैठे—कमला जमीनमें बैठी। चाचाने कहा—"देखिये, मेरी इस भतीजीका भाग्य बहुत खराब है। विवाहके दूसरे ही दिन इसके पति संन्यासी होकर बाहर चले गये—इससे फिर उनकी मुलाकात नहीं हुई। हरिदासीकी इच्छा है, कि अपने धर्म-कर्मको बचाये रखकर काशीवास करे। सिवा धर्मके उसके धीरजके लिये और कोई सामग्री नहीं। यहाँ मेरा मकान नहीं, मेरी नौकरी है—उपार्जन करके गृहस्थी चलाता हूँ। मेरे लिये यह सुविधा नहीं है, कि मैं यहाँ आकर इसे साथ लेकर रहूँ। इसीसे आपकी शरणमें आया हूँ। इसको अपनी लड़कीकी तरह यदि आप अपने पास रखें, तो मैं बहुत निश्चिन्त हो जाऊँ। जब आपको असुविधा हो तब मेरे पास गाजीपुर भेज दीजियेगा। किन्तु मैं जैसा कहता हूँ, दो दिन इसे अपने पास रखनेसे ही आप समझ जायेंगी कि लड़की कैसी रत्न है—तब आप इसे क्षण-भरके लिये भी न छोड़ियेगा।"

क्षेमङ्करीने खुश होकर कहा—"आहा, यह तो बहुत अच्छी बात है। यह तो मेरे लिये बहुत बड़ा लाभ है, कि ऐसी लड़कीको आप मेरे पास छोड़ जायँगे। मैं कितने दिनसे रास्तेसे पराई लड़की पकड़कर घरमें लाती और खिला-पिलाकर आनन्द लेती हूँ किन्तु उन सबको रख तो सकती नहीं। तब हरिदासी मेरी ही होकर रहे—आप इसके लिये कोई चिन्ता न करिये। मेरे लड़केकी बात भी आपने चार

आदमियोंसे सुनी होंगी—नलिनाक्ष बहुत भला लड़का है। उसके अलावा और कोई घरमें है ही नहीं।'

चाचाने कहा,—'नलिनाक्ष बाबूको सभी जानते हैं। यह यहाँ आपके पास रहेगी, यह जानकर मैं और भी निश्चिन्त रहूँगा। मैंने सुना है, कि विवाहके बाद उनकी स्त्रीके पानीमें डूबकर मर जानेके कारण वह तभीसे ब्रह्मचारीकी तरह रहते हैं।"

क्षेमङ्करीने कहा,—"जो होना था, वह हो गया। उन बातोंको अब न उठाइये—याद करनेसे भी मेरा शरीर रोमांचित हो उठता है।'

चाचाने कहा,—"यदि आज्ञा दें, तो लड़कीको आपके पास छोड़ मैं बिदा होऊँ। कभी-कभी आकर देख जाया करूँगा। इसकी एक बड़ी बहन है, वह भी आपको प्रणाम करने आयेगी।"

चाचाके चले जानेपर क्षेमङ्करीने कमलाको अपने पास बैठाकर कहा,—"मेरे पास तो आओ बेटी, तुम्हारी उम्र तो अधिक नहीं है। तुम्हें छोड़कर चले जानेवाले पत्थर भी इस संसारमें है! मैं आशीर्वाद देती हूँ, वह फिर लौटकर आयेंगे विधाताने ऐसा रूप वृथा जानेके लिये नहीं बनाया है।" यह कह उन्होंने कमलाकी ठोड़ी पकड़ उँगलियोंको चूम लिया।

क्षेमङ्करीने कहा,—"यहाँ तुम्हारे उम्रकी कोई सङ्गिनी नहीं है। तुम अकेली मेरे पास रह सकोगी?"

कमलाने अपनी बड़ी-बड़ी आँखोंसे पूरी तरह आत्मनिवेदन करते हुए कहा,—"रह सकूँगी, माँ।"

क्षेमङ्करीने कहा,—"तुम्हारा दिन कैसे बीतेगा, मैं इसी चिन्तामें हूँ।"

कमलाने कहा,—"मैं तुम्हारा काम किया करूँगी।"

क्षेमङ्करी—मेरे मन्दभाग्य! मेरा और काम। संसारमें यही तो मेरा एक लड़का है—वह भी संन्यासीकी तरह रहता है—कभी अगर कहता,

कि माँ, मुझे इस चीजकी जरूरत है, यह खाना चाहता हूँ, मुझे यह पसन्द है, तो मैं कितनी खुश होती--किन्तु यह सब कभी नहीं कहता। रुपये बहुत कमाता है, किन्तु हाथमें कुछ नहीं रखता। कितने ही भले कामोंमें कहाँ-कहाँ खर्च करता है, यह किसीको जानने भी नहीं देता। देखो बेटी, जब मेरे पास तुम्हें चौबीस घण्टे रहना पड़ेगा, तब यह बात मैं पहलेसे ही कहे देती हूँ, कि मेरे मुँहसे मेरे लड़केकी तारीफ तुम्हें बारबार सुनना पड़ेगा--इससे तुम्हें विरक्ति होगी--किन्तु उसे तुम्हें सहना पड़ेगा।

कमलाने प्रसन्न हो आँखें झुका लीं।

क्षेमङ्करीने कहा,—"मैं तुम्हें कौनसा काम बताऊँ, यही सोच रही हूं। तुम सिलाई करना जानती हो?"

कमला—अच्छी तरह नहीं जानती, माँ!

क्षेमङ्करीने कहा,—"अच्छा, मैं तुम्हें सिलाई सिखाऊँगी।"

क्षेमङ्करीने फिर पूछा,—"पढ़ना जानती हो?

कमलाने कहा,—"हाँ, जानती हूं।"

क्षेमङ्करीने कहा,—"यह बहुत अच्छी बात है। मैं आँखपर चश्मा लगाये बिना देख नहीं सकती। तुम मुझे पढ़कर सुना सकोगी?

कमलाने कहा,—"मैं रसोई पानी, घरका सब काम जानती हूँ।"

क्षेमङ्करीने कहा,—"ऐसा अन्नपूर्णा जैसा चेहरा, तुम रसोई-पानीका काम न जानोगी, तो कौन जानेगा। आजतक मैंने नलिनको स्वयं बनाकर खिलाया है—मेरे बीमार होनेपर वह अपने हाथ बनाता खाता है, किसीके हाथका नहीं खाता। अब तुम्हारे कल्याणसे मैं उसे अपने हाथ बनानेसे बचाऊँगा। कभी अक्षम होनेपर यदि मुझे भी पवित्र अन्न बनाकर खिलाओगी, तो मैं उसमें अनिच्छा न करूँगी। चलो बेटी, मैं तुम्हें अपना भण्डारघर रसोईघर, सब दिखला लाऊँ।"

यह कहकर क्षेमङ्करीने अपनी छोटीसी गृहस्थीका सब कुछ कमलाको दिखलादिया। कमलाने इसी बीचमें मौका देख अपनी दरखास्त लगाई। उसने कहा,—"माँ आज मुझे ही रसोई बनाने दो न।"

क्षेमङ्करीने हँसकर कहा,—'गृहिणीका राजत्व उसका भण्डारघर और रसोई घर ही है—इस जीवनमें मैंने सब चीजें छोड़ दी हैं—फिर भी, गृहस्थी मेरे साथ लगी हुई है। अच्छा बेटी, आज तुम्हीं बनाओ—दो-चार दिन बीतने दो—फिर तो धीरे-धीरे सब भार आप ही तुम्हारे ऊपर पड़ेगा—मुझे भी भगवान्में मन लगानेका समय मिलेगा। बन्धन एकबारगी ही तो छूटता नहीं—अभी दो-चार दिन मन चंचल रहेगा—भण्डारघरका सिंहासन कम नहीं है।"

यह कह क्षेमङ्करी क्या बनाना और क्या करना है, यह सब कमला को समझाकर स्वयं पूजाकी कोठरीमें चली गईं। क्षेमङ्करीके आगे आज कमलाकी गृहस्थीकी परीक्षा शुरू हुई।

कमला अपनी स्वाभाविक शीघ्रताके साथ रसोईका सारा समान तैयार कर कमरमें अंचल खोंस और शिरके बालोंको समेट रसोईमें लग गई।

नलिनाक्ष बाहरसे मकानमें आते ही पहले अपनी माँको देखने जाता था। माताके स्वास्थ्यकी चिन्ता उसे कभी छोड़ती न थी। आज मकानमें आते ही रसोईघरकी आवाज और सुगन्धने पहले उसपर आक्रमण किया। माताको रसोईमें लगी समझ नलिनाक्ष सीधे रसोई-घरके दर्वाजे-पर चला आया।

पैरकी आवाजसे कमलाके पीछे पलटकर देखते ही एकबार नलिनाक्ष-की ओर उसकी आँखें चार हो गईं। उसने शीघ्रतासे हाथ बढ़ा घूँघट खींचनेकी वृथा चेष्टा की—कमरमें अंचल खुँसा हुआ था—खींच-तानकर जब कपड़ा माथेतक आया, तब विस्मित नलिनाक्ष वहाँसे चला

गया था। इसके बाद जब कमलाने कलश्री उठाई, तब उसका हाथ काँपने लगा।

जल्दी ही पूजा समाप्तकर जब क्षेमङ्करी रसोईघरमें गईं, तब उन्होंने देखा, कि रसोई हो चुकी है। घरके धुएँको भी कमलाने निकाल दिया है—कहीं लकड़ीका ठूँठ, तरकारीका छिलका या किसी प्रकारकी गन्दगी उन्हें दिखाई न दी। यह देखकर क्षेमङ्करी मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हुईं। उन्होंने कहा,—"बेटी, तुम जरूर ब्राह्मणकी लड़की हो।"

नलिनाक्षके भोजन करने बैठनेपर क्षेमङ्करी उसके सामने बैठीं—और एक संकुचित स्त्री कान लगाकर दर्वाजेकी ओटमें खड़ी थी—उसे भीतर झाँकनेका साहस नहीं हो रहा था—भयसे मरी जा रही थी—कि कहीं उसकी रसोई खराब तो नहीं बनी।

क्षेमङ्करीने पूछा,—"नलिन, आज रसोई कैसी बनी है?"

नलिनाक्ष भोजनके बारेमें उतना समझदार नहीं था—इसीसे क्षेमङ्करी ऐसा अनावश्यक प्रश्न उससे कभी करती न थीं,—आज उन्होंने विशेष कौतूहलके कारण ही पूछा।

उसकी माँ यह नहीं जानती थीं, कि नलिनाक्ष को आजके रसोई-घरके नये रहस्यका परिचय है। इधर माताका शरीर खराब होनेसे नलिनाक्षने रसोईके लिये आदमी रखनेके बारेमें माँको बहुत तङ्ग किया है, किन्तु किसी तरह भी उन्हें राजी न कर सका। आज नये आदमीको रसोईमें देख वह मन-ही-मन खुश हुआ है। उसने इसपर विशेष ध्यान नहीं दिया, कि रसोई कैसी हुई है—किन्तु उसने उत्साहके साथ कहा,—"रसोई बहुत अच्छी बनी है।"

ओटमें छिपी कमला यह उत्साह-वचन सुन खड़ी न रह सकी। उसने तेजीसे बगलकी एक कोठरीमें जाकर अपने चंचल हृदयको दोनों हाथसे दबा लिया।

भोजनके बाद नलिनाक्ष अपने मन-ही-मन न जाने किस अस्पष्टता-को स्पष्ट करनेकी चेष्टा करते हुए नित्यके अभ्यासके अनुसार अपनी एकान्त कोठरीमें चले गये।

तीसरे पहर क्षेमङ्करीने कमलाकी चोटी अपने हाथोंकर शिरमें सिन्दूर पहना दिया—उसके मुँहको जरा इधर घुमाकर और जरा उधर घुमाकर अच्छी तरह देखा—कमला लज्जासे निगाहें नीची किये बैठी रही। क्षेमङ्करीने मन-ही-मन कहा,—"अहा, अगर मैं ऐसी ही एक बहू पाती।"

उसी रात क्षेमङ्करीको फिर बुखार आया। नलिनाक्ष घबरा उठा। उसने कहा,—"माँ, तुम्हें मैं कुछ दिनके लिये काशीसे और कहीं ले चलूँगा। यहाँ तुम्हारा शरीर अच्छा नहीं रहता।"

क्षेमङ्करीने कहा,—"यह मुझसे न होगा बेटा। दो-चार दिन बचा रखनेकी आशासे मुझे काशी छोड़ और कहीं जाकर मरना पड़े, यह मुझसे न होगा। यह क्या बेटी, तू दर्वाजेके पास क्या खड़ी है? जा, जाके सो रह। सारी रात इस तरह जागनेसे कैसे चलेगा। मैं न जाने कितने दिन बीमार रहूँ, देखना-सुनना तो तुम्हीं लोगोंको पड़ेगा। रात जागोगी, तो सेवा कैसे कर सकोगी—जाओ तो नलिन, जरा तुम उस घरमें तो जाओ।"

नलिनाक्षके दूसरे कमरेमें जाते ही कमला क्षेमङ्करीके पैरके पास बैठ उनके तलवे सुहलाने लगी। क्षेमङ्करीने कहा,—"दूसरे जन्ममें तुम निश्चय मेरी माँ थी बेटी। नहीं तो कहीं कोई बात नहीं, तुम्हें मैंने पाया कैसे? देखो, मेरी एक आदत है, मैं नाहक कभी किसीकी सेवा सह नहीं सकती—लेकिन तुम मेरे शरीरपर हाथ लगाती हो, तो मेरा शरीर मानो जुड़ा जाता है। आश्चर्य यही है, कि मनमें होता है मानो कितने दिनसे हमारी-तुम्हारी जान-पहचान है। तुम जरा भी मुझे पराई नहीं जान पड़ती। तब सुनो बेटी, तुम निश्चिन्त हो जाकर सो रहो। बगलकी

कोठरीमें नलिन रहेगा— क्योंकि माँकी सेवा और किसीके हाथ छोड़ नहीं सकता—चाहे मैं हजार मना करूँ या जो कहूं—उससे कौन पार पाये। किन्तु उसमें एक गुण है, रात जागे या चाहे जो करे, उसके चेहरेको देख बिलकुल मालूम ही नहीं होता—उसका कारण यह है, कि वह कभी बातसे घबराता नहीं। मुझमें ठीक उसका उलटा है। बेटी, मैं समझती हूँ, कि तुम मन-ही मन हँस रही हो। सोचती होगी, कि अब नलिनकी बात उठी, जो किसी तरह खतम ही न होगी। सो बेटी, एक लड़का होनेसे ऐसा ही होता है। और कितनी माँ हैं, जिनके नलिन जैसा बेटा है। मैं सच कह रही हूँ, मैं कभी-कभी सोचती हूँ, कि—नलिन मेरा बाप है; वह मेरे लिये जितना करता है, उतना मैं उसके लिये कर नहीं सकी। देखो, फिर मैंने नलिनकी बात छेड़ दी। किन्तु अब बस, जाओ बेटी सो रहो। नहीं-नहीं, यह किसी तरह भी न होगा, तुम जाओ तुम्हारे रहते मुझे नींद न आयेगी। बूढ़े आदमीके पास कोई रहता है, तो वह बके चलता है।"

दूसरे दिन कमलाने ही गृहस्थीका सारा भार लिया। नलिनाक्षने पूर्व ओर बरामदेका एक हिस्सा घेरकर उसमें मार्बेल पत्थर बिछवाकर एक छोटी कोठरी बनवा ली थी—यही उसका उपासना गृह था। दोपहरमें यहीं आसनपर बैठकर वह पढ़ता है। उस दिन सवेरे नलिनाक्षने उस कोठरीमें जाकर देखा, कि घर धोया धाया साफ-सुथरा है। धूना जलानेके लिये पीतलकी एक धूपदानी थी, वह आज सोनेकी तरह चमक उठी है। सेल्फके ऊपर उसकी कई पुस्तकें सजाकर रखी हुई हैं। इस घरकी सफाई और निर्मलतापर खुली खिड़कीसे सवेरेकी धूप उज्वल होकर फैली हुई है। यह देख स्नान करके आये हुए नलिनाक्षके मनमें विशेष तृप्तिका संचार हुआ।

कमला सवेरे लुटियामें गङ्गाजल लेकर क्षेमङ्करीके बिछौनेके पास आई। उन्होंने उसे नहाई-धोयी देखकर कहा—"यह क्या बेटी, तू

अकेली ही घाट गई थी ? मैं आज सवेरेसे ही सोच रही थी, कि मैं तो बीमार हूँ, तुम नहाने किसके साथ जाओगी। किन्तु तुम्हारी उम्र कम है, इस तरह अकेली—"

कमलाने कहा,—"माँ, मेरे बापके घरका एक नोकर मेरे बिना रह नहीं सका, मुझे देखनेके लिये कल रातको ही वह आ पहुँचा। मैं उसीको साथ ले गई थी।"

क्षेमङ्करी—आहा, शायद तुम्हारी चाचीने घबराकर नोकरको भेज दिया है। यह बहुत अच्छा हुआ—उसे अपने पास ही रखो—तुम्हारे काम-काजमें सहायता देगा। वह कहाँ है, जरा बुलाओ न।"

कमलाने उमेशको हाजिर किया। उमेशके क्षेमङ्करीको प्रणाम करने-पर उन्होंने पूछा,—"तेरा नाम क्या है ?"

उसने कहा,—"मेरा नाम उमेश है।" कहकर बिना किसी कारण-के हँस दिया।

क्षेमङ्करीने हँसकर पूछा,—"उमेश, तुझे यह बहारदार धोती किसने दी ?"

उमेशने कमलाको दिखाकर कहा,—"माँ ने दिया है।"

क्षेमङ्करीने कमलाकी ओर देख दिल्लगीमें कहा,—"मैं समझी, कि उमेशकी सासने जमाईषष्ठीमें दिया है।'

क्षेमङ्करी द्वारा आदर पाकर उमेश वहीं रह गया।

उमेशकी सहायता पा कमलाने दिनका सारा काम निबटा डाला। अपने हाथसे नलिनाक्षके घरमें झाड़ू दे, उसके बिछौनेको धूप दिखला, उसने सब साफ कर दिया। नलिनाक्षकी छोड़ी हुई एक मैली धोती घरके एक कोनेमें पड़ी थी। कमलाने उसे धोकर सुखाकर तह बना अर्गनीपर झुला दिया। घरमें जो चीजें साफ थीं, उसे भी पोंछ-पाछकर ठिकानेसे रख दिया। बिछौनेके सिरहाने दीवारमें एक आलमारी बनी थी—उसे उसने खोलकर देखा, कि उसमें कुछ नहीं है, सिर्फ नीचेके

स्थानमें नलिनाक्षकी एक जोड़ा खड़ाऊँ है। चटपट उस खड़ाऊँको उठाकर—कमलाने माथेसे लगाया—और छोटे लड़कोंकी तरह उसे गोदमें रख अञ्चलसे उसकी धूल पोंछ दी।

तीसरे पहर कमला क्षेमङ्करीके पैरके पास बैठ उनके पैरको हाथसे सुहला रही थी. इसी समय हेमनलिनी फूलोंके गुच्छे लिये हुई आई। हेमने क्षेमङ्करीको प्रणाम किया।

क्षेमङ्करीने उठकर कहा,—"आओ-आओ;हेम, आओ बैठो। अन्नदा बाबू अच्छे हैं?"

हेमनलिनीने कहा—कल उनकी तबीयत अच्छी न होनेकी वजह मैं आ न सकी। आज वह अच्छे हैं।

कमलाको दिखाकर क्षेमङ्करीने कहा,—"यह देखो बेटी, बचपनमें ही मेरी मां गई; वह दूसरा जन्म लेकर कल मुझे राहमें मिल गई। मेरी मांका नाम था, हरिभाविनी—अब हरिदासीके नामसे आई हैं। किन्तु हेम सच कहो, ऐसी लक्ष्मीमूर्ति तुमने कहीं देखी है?

कमलाने लज्जासे शिर झुका लिया। हेमनलिनीसे धीरे धीरे उसक परिचय हो गया।

हेमनालनीने क्षेमङ्करीसे पूछा,—"मां, आपकी तबीयत कैसी है?"

क्षेमङ्करीने कहा,—देखो. जितनी उम्र हुई, उससे अब शरीरकी हालत पूछनेसे कोई फायदा नहीं। मैं अभी जीती हूँ, यही बहुत है। किन्तु इस तरह कालको हमेशा धोखा देनेसे तो काम चलेगा नहीं। तुमने यह बात उठाई है, अच्छा ही किया--तुमसे कई दिनसे कहते-कहते कर रही थी. किन्तु मौका नहीं मिलता था। कल रात जब मुझे फिर बुखार आया, तब मैंने ठीक किया, कि अब देर करनेसे कोई फायदा नहीं। देखो बेटी, लड़कपनमें जब कोई मुझसे विवाहकी बात कहता था, तब मैं मारे लज्जाके मर जाती थी--किन्तु तुम लोगोंकी शिक्षा वैसी नहीं है। तुम लोगोंने लिखना-पढ़ना सीखा है--उम्र भी

हुई है—तुम लोगोंके आगे यह सब बातें साफ-साफ कही जा सकती हैं। इसीसे मैंने बात उठाई है, तुम मेरे आगे लज्जा न करना। अच्छा बताओ तो बेटी, उस दिन तुम्हारे पितासे जो प्रस्ताव किया था, उसके बारेमें उन्होंने तुमसे कुछ नहीं कहा ?"

हेमनलिनीने शिर झुकाकर कहा,—"हाँ, कहा था।"

क्षेमङ्करीने कहा,—"किन्तु तुम बेटी, उस बातपर तुम निश्चय राजी नहीं हुईं। यदि राजी होतीं, तो अन्नदाबाबू उसी समय मेरे पास दौड़ आते। तुमने सोचा, कि मेरा नलिन सन्यासी आदमी है, दिन रात न जाने किस योगमायामें लगा रहता है; उससे क्या विवाह करना। मेरा लड़का ऐसा ही सही, किन्तु बात उड़ा देने लायक नहीं है। उसे बाहरसे देखनेसे मालूम होता है, कि उसमें कभी आसक्ति उत्पन्न होनेकी सम्भावना नहीं, किन्तु यह तुम लोगोंकी भूल है—मैं उसे जन्मसे जानती हूँ, मेरी बातका विश्वास करो। वह इतना प्रेमी है, कि इसी भयसे वह अपनेको इतना दबाये रहता है। उसके संन्यासी-के खोलको उतारकर जो उसके हृदयको पायेगा, वह बहुत मधुर वस्तु पायेगा, यह मैं कहे रखती हूँ। बेटी हेम, तुम छोटी नहीं हो, तुम शिक्षित हो, तुमने मेरे नलिनसे ही दीक्षा ली है, तुम्हें यदि मैं नलिनके घर बैठाकर मर सकूँ, तो बहुतही निश्चिन्त होकर मर सकूँगी। नहीं तो मैं निश्चय जानती हूँ, कि मेरे मरनेपर विवाह ही न करेगा। तब जरा सोचकर देखो, कि उसकी क्या दशा होगी। बिलकुल ही बहता फिरेगा। जो हो, तुम तो बेटी नलिनपर श्रद्धा करती हो, मैं जानती हूँ, तब तुम्हें आपत्ति किस बातकी है।"

आँखें नीचीकर हेमनलिनीने कहा—"माँ, अगर तुम मुझे योग्य समझो, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"

यह सुनकर क्षेमङ्करीने हेमको अपनी तरफ खींच उसका माथा चूम लिया। इस बारेमें फिर कोई बातचीत नहीं हुई।

'हरिदासी, यह सब फूल" कहती हुई जब उन्होंने घूमकर देखा, तब हरिदासी वहाँ नहीं थी। चुपचाप उठकर चली गई है।

पहली बातचीतके बाद क्षेमङ्करीसे हेमनलिनीको संकोच होने लगा। क्षेमङ्करी भी संकुचित हुईं। तब हेमने कहा—"माँ, अब आज जल्दी ही जाऊँ। पिताजीका शरीर अच्छा नहीं है। कहकर उसने क्षेमङ्करीको प्रणाम किया। क्षेमङ्करीने उसके माथेपर हाथ फेरकर कहा—"जाओ बेटी, जाओ।"

हेमनलिनीके चली जानेपर क्षेमङ्करीने नलिनाक्षको बुलाया। कहा—"नलिन, अब मैं देर नहीं कर सकती।"

नलिनाक्षने पूछा—"बात क्या है?"

क्षेमङ्करीने कहा – मैंने आज हेमसे सब बातें खोलकर कह दीं—वह राजी हो गई है। अब मैं तुम्हारी कोई बात सुनना नहीं चाहती। मेरा शरीर तो देख ही रहे हो। तुम लोगोंका कोई ठिकाना किये बिना मैं स्थिर नहीं रह सकती हूँ। आधी रातको नींद खुल जानेपर मैं इसी चिन्तामें रहती हूँ।"

नलिनाक्षने कहा – अच्छा मां, तुम चिन्ता न करो। तुम सुखसे सोओ; तुम जो चाहती हो, वही होगा।

नलिनाक्षके चले जानेपर क्षेमङ्करीने बुलाया,—"हरिदासी?"

कमला पासकी कोठरीसे निकल आई। तब शामकी रोशनी मैली पड़ कुछ अँधेरा फैल रहा था। हरिदासीका चेहरा अच्छी तरह दिखाई न दिया। क्षेमङ्करीने कहा,—"बेटी इन फूलोंपर पानी छिड़क घरमें सजा दो।" यह कहकर उन्होंने चुनकर गुलाबका एक फूल ले डलिया कमलाको देदी।

कमलाने उनमेंसे कुछ फूल चुनकर एक रकाबीमें सजा नलिनाक्षके उपासना-गृहमें आसनके सामने रख दिया। कुछको एक कटोरीमें सजाकर नलिनाक्षके सिरहाने तिपाईपर रख दिया। बाकीके दो-चार फूल

ले आलमारी खोल खड़ाऊँपर चढ़ा प्रणाम करते-करते उसकी आँखोंसे आँसू बहने लगे। खड़ाऊँके अतिरिक्त संसारमें उसके लिये और कुछ नहीं—पदसेवाका अधिकार भी अब जाया चाहता है।

इसी समय एकाएक किसीके घरमें प्रवेश करते ही कमला चटपट उठ खड़ी हो गई। जल्दीसे आलमारीका दर्वाजा बन्दकर उसने देखा, कि नलिनाक्ष खड़े हैं। किसी ओर कमलाको जानेकी राह न मिली—लज्जाके मारे कमला उस आनेवाले सान्ध्य अन्धकारमें मिल क्यों न गई!

नलिनाक्ष कोठरीमें कमलाको देख बाहर लौट गया। कमला भी देखकर तेजीके साथ दूसरी कोठरीमें चली गई। तब नलिनाक्षने फिर कोठरीमें प्रवेश किया। कमला आलमारी क्यों खोल रही थी और उसे देख उसने चटपट बन्द क्यों कर दिया? कौतूहलवश नलिनाक्षने आलमारी खोलकर देखा, कि उसकी खड़ाऊँपर कुछ ताजे फूल चढ़े हैं। तब वह फिर आलमारी बन्दकर सोनेकी कोठरीमें खिड़कीके पास आकर खड़ा हुआ। बाहर आकाशकी ओर देखते-देखते जाड़ेके सूर्यकी क्षणकालीन आभाके साथ मिलकर अँधेरा छा पड़ा।

५६

हेमनलिनी नलिनाक्षसे विवाह करनेकी सम्मति देकर मनको समझाने लगी,—'यह मेरे लिये सौभाग्यका विषय है।" उसने मन-ही-मन हजार बार कहा,—"मेरा पुराना बन्धन टूट गया है—मेरे जीवनके आकाशमें घिरकर जो तूफानी बादल जमा हो गये थे, वह सब एक बारगी फट गये। अब मैं स्वाधीन हूँ, अपने अतीतकालके अविश्राम आक्रमणसे निर्मुक्त हूँ।" इस बातको बारबार दुहराकर उसने बहुत बड़े वैराग्यके आनन्दका अनुभव किया। श्मशानमें दाह-क्रियाके बाद यह

प्रकाण्ड संसार अपने विपुल भारको हलकाकर जब खेल जैसा दिखाई देने लगता है, तब कुछ समयके लिये मन हलका हो जाता है—वैसी हालत हेमनलिनीकी भी हुई—उसने अपने जीवनके एक अंशकी निःशेष समाप्तिकी शान्तिको प्राप्त किया।

मकान लौटकर हेमनलिनीने सोचा, कि यदि आज माँ होती, तो आज मैं उन्हें अपने आनन्दकी बात सुनाकर आनन्दित करती—पितासे कैसे सब हाल कहूँ।"

शरीर कमजोर होनेकी वजह जब आज अन्नदाबाबू जल्दी ही सोने चले गये, तब हेमनलिनी एक कापी लेकर रातको अपनी निर्जन कोठरीमें बैठकर टेबिलपर लिखने लगी,—मैं "मृत्युजालमें जकड़कर सारे संसारमें अलग हो गई। मैं मनमें कभी सोचती भी नहीं थी, कि इससे उद्धारकर ईश्वर फिर एक दिन मुझे नवीन जीवनकी राहमें प्रतिष्ठित करेंगे। आज मैं उनके चरणोंमें सहस्रबार प्रणामकर नये कर्त्तव्यक्षेत्रमें प्रवेश करनेको तैयार हूँ। मैं किसी तरह भी जिस सौभाग्यके उपयुक्त नहीं हूँ उसे ही मैंने प्राप्त किया है। ईश्वर मुझे चिरजीवनतक उसीकी रक्षा करनेका बल प्रदान करें। जिनके जीवनके साथ मेरा यह क्षुद्र जीवन मिलने जा रहा है, वही मुझे सब तरहसे परिपूर्णता देंगे, यह मैं निश्चय समझती हूँ, मेरी यही प्रार्थना है, कि मैं उस परिपूर्णताके समस्त ऐश्वर्यको पूर्णरूपसे उन्हें ही प्रत्यर्पण कर सकूँ।"

इसके बाद कापी बन्दकर हेमनलिनी उस तारे जड़े अन्धकारमें सन्नाटी ठण्डी रातमें कंकड़ बिछे बागकी पटरियोंपर बहुत देरतक टहलती रही। अनन्त आकाशने उसके आँसूसे धुले हृदयमें निःशब्द शान्तिमय मन्त्रका उच्चारण किया।

दूसरे दिन तीसरे पहर जब अन्नदाबाबू हेमनलिनीको लेकर नलिनाक्षके घर जानेको तैयार हुए, उसी समय उनके दर्वाजेपर एक

गाड़ी आकर खड़ी हुई। कोचबक्सके ऊपरसे नलिनाक्षके एक नोकरने आकर खबर दी, कि मा आ रही हैं।

अन्नदाबाबू जल्दीसे दर्वाजेके पास आकर पहुँचे, तबतक क्षेमङ्करी गाड़ीसे उतर आईं। अन्नदाबाबूने कहा,—"आज मेरा परम सौभाग्य।"

क्षेमङ्करीने कहा, "आज आपकी लड़कीको देखकर आशीर्वाद कर जाऊँगी, इसीलिये मैं आई हूँ।"

यह कहती हुई वह घरमें चली आईं। अन्नदाबाबूने बैठकमें एक बड़े काउचपर उन्हें बैठाकर कहा,—आप बैठिये, मैं हेमको बुला लाऊँ।

हेमनलिनी बाहर जानेके लिये कपड़े बदलकर तैयार थी—क्षेमङ्करी-का आना सुन उसने जल्दीसे बाहर निकल उन्हें प्रणाम किया। क्षेमङ्करीने कहा,—"सौभाग्यवती हो तुम, दीर्घायु लाभ करो। देखूँ बेटी तुम्हारा हाथ देखूँ।" यह कहकर उन्होंने उसके एकएक हाथमें मगर-मुँहा मोटे-मोटे सोनेके कड़े पहना दिये। हेमनलिनीके दुबले हाथोंमें मोटे-मोटे कड़े ढल-ढल करने लगे। कड़े पहननेपर हेमनलिनीने फिर उन्हें प्रणाम किया। क्षेमङ्करीने दोनों हाथसे उसका माथा पकड़ चुम्बन किया। इस आशीर्वाद और आदरसे हेमनलिनीका हृदय एक गम्भीर माधुर्यसे परिपूर्ण हो उठा।

क्षेमङ्करीने कहा,—"समधी महाशय, कल मेरे घर सवेरे आप दोनोंका निमन्त्रण है।"

दूसरे दिन सवेरे हेमनलिनीके साथ अन्नदाबाबू यथानियम बाहर चाय पीने बैठे। अन्नदाबाबूका रोगी चेहरा एक रातमें ही आनन्दसे सरस और नवीन हो उठा है। वह बारबार हेमनलिनीके शान्त और उज्ज्वल चेहरेकी ओर देखते थे; उन्हें जान पड़ता था मानो आज उनकी परलोकगता पत्नीके मङ्गल-मधुर आविर्भाव

उनकी कन्याको घेरे हुए है और सुदूरव्याप्त अश्रुजलके आभासके सुखकी उज्ज्वलताको स्निग्ध और गम्भीर बना रहा है।

अन्नदाबाबूके मनमें आज केवल यही हो रहा है, कि क्षेमङ्करीके निमन्त्रणमें जानेके लिये तैयार होनेका समय आ गया है—अब देर करना उचित नहीं। हेमनलिनी उन्हें बारबार याद दिला रही है, कि अब भी बहुत समय है—अभी आठ ही बजे हैं। अन्नदाबाबू कहते हैं,—"तैयार होनेमें भी तो समय चाहिये। देरी करनेसे कुछ पहले ही पहुँच जाना अच्छा है।"

इसी समय कई ट्रङ्क और बिछौने आदिसे लदी एक किरायेकी घोड़ागाड़ी उनके बागके सदर फाटकपर आकर लगी।

एकाएक हेमनलिनी "दादा आये हैं" कहकर आगे बढ़ी। योगेन्द्रने प्रसन्नमुख गाड़ीसे उतरकर कहा,—"क्यों हेम, अच्छी हो न?"

योगेन्द्रने हँसकर कहा,—"है ही, पिताजीके लिये बड़े दिनका एक उपहार ले आया हूँ।"

इसी समय रमेश गाड़ीसे उतरा। हेमनलिनी क्षणभरके लिये देख फिर पीछे पलटकर चली गई।

योगेन्द्रने कहा,—"हेम, जाओ मत, एक बात है, सुने जाओ।"

यह आवाज हेमनलिनीके कानतक नहीं पहुँची—वह मानो किसी प्रेममूर्तिके पीछा करनेसे आत्मरक्षाके लिये भागकर चली।

रमेश क्षणभरके लिये ठमक गया—यह सोच न सका, कि आगे बढ़ें या लौट जायँ। योगेन्द्रने कहा,—"रमेश आओ, पिताजी यहाँ बाहर ही बैठे हैं।" यह कह उसने रमेशका हाथ पकड़ अन्नदाबाबूके सामने लाकर खड़ा कर दिया।

अन्नदाबाबू दूरसे रमेशको देख हतबुद्धि हो बैठे। वह माथेपर हाथ फेर-फेरकर सोचने लगे,—"अब यह कौनसा विघ्न आ पहुँचा।"

रमेशने अन्नदाबाबूको झुककर नमस्कार किया। अन्नदाबाबूने उसे कुरसीपर बैठनेका इशाराकर योगेन्द्रसे कहा,—"योगेन्द्र, तुम बड़े समयसे आ गये। मैं तुम्हें तार देनेवाला था।"

योगेन्द्रने पूछा,—"क्यों ?"

अन्नदाबाबूने कहा,—"हेमके साथ नलिनाक्षका विवाह ठीक हो गया है। कल नलिनाक्षकी मां हेमको आशीर्वाद कर देख गई हैं।"

योगेन्द्रने कहा,—"क्या कहते हो पिताजी, विवाह बिलकुल ही पक्का हो गया है ? मुझसे तुमने एकबार पूछा भी नहीं ?"

अन्नदाबाबू—योगेन्द्र, तुम कब क्या कहते हो, कोई ठीक नहीं। जब मैं नलिनाक्षको नहीं जानता था, तब तुम्हीं लोग न इस विवाहके लिये उद्योग कर रहे थे। ?

योगेन्द्र—तब तो था, किन्तु जो हो, अभी समय गया नहीं है। बहुतेरी बातें कहनेको हैं। पहले वह सब सुन लो, इसके बाद जो करना हो करियेगा।

अन्नदाबाबूने कहा. "समय होनेपर किसी दिन सुन लूँगा—किन्तु आज मुझे इतनी फुरसत नहीं है। अभी मुझे बाहर जाना है।"

योगेन्द्रने पूछा—"कहाँ जाना है।"

अन्नदाबाबूने कहा —"—नलिनाक्षकी मांके यहाँ मेरा और हेमका निमन्त्रण है। तब तुम्हारे भोजनके लिये यहीं —"

योगेन्द्रने कहा,—"नहीं नहीं। हमलोगोंके लिये चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं। मैं रमेशके साथ यहाँके किसी होटलमें खा-पी लूँगा। शामतक तो तुम लोग लौटोगे न ? उसी समय हमलोग भी आयेंगे।"

अन्नदाबाबू किसी तरह भी रमेशके साथ किसी प्रकारकी शिष्ट बातचीत कर न सके। उसके मुँहकी ओर देखना भी उन्हें कठिन हो गया। रमेश भी अबतक चुप रह जानेके समय अन्नदाबाबूको नमस्कार कर चला गया।

५७

क्षेमङ्करी कमलासे जाकर कहा,—"बेटी, कल हेम और उसके बापको दोपहरमें यहाँ भोजन करनेका निमन्त्रण दे आई हूँ। बताओ, क्या तैयारी की जाय। मछलीके इस तरह खिलाना चाहिये, जिससे वह निश्चिन्त हो सकें, कि यहाँ उनकी लड़कीको खानेकी तकलीफ न होगी। ठीक है न बेटी। यह जानती हूँ, कि तुम्हारे हाथकी रसोईसे बदनामी न होगी। मेरे लड़केने आजतक कि दिन किसी प्रकारकी रसोई खाकर अच्छा-बुरा कुछ नहीं कहा। कल तुम्हारी रसोईकी उसने बड़ी प्रशंसा की। किन्तु आज तुम्हारा चेहरा सूखा सूखा क्यों दिखाई दे रहा है? क्या तबीयत अच्छी नहीं है?"

मलिन मुखपर जरा हँसी लाकर कमलाने कहा,—"अच्छी तो है मां!"

क्षेमङ्करीने शिर हिलाकर कहा,—"नहीं-नहीं, मैं समझ रही हूँ, कि तुम्हारे मनमें क्या हो रहा है। मनमें तो ऐसा होगा ही, इसमें लज्जा काहेकी। मुझे पराई न समझो बेटी। मैं तुम्हें अपनी लड़कीके समान ही मानती हूँ—यहाँ अगर तुम्हें किसी तरहकी असुविधा हो, या तुम अपने परिवारके लोगोंमें किसीको देखना चाहो तो मुझसे कहे बिना कैसे काम चलेगा।"

कमलाने व्यग्र हो कहा,—"नहीं मां, तुम्हारी सेवा कर सकनेके अतिरिक्त मैं और कुछ नहीं चाहती।"

क्षेमङ्करीने इस बातपर ध्यान न दे कहा—"न हो, तो कुछ दिनके लिये अपने चाचाके घर जाकर रहो, इसके बाद जब इच्छा हो चली आना।'

कमलाने घबराकर कहा,—"मां, मैं जबतक तुम्हारे पास हूँ, तबतक संसारमें और किसीकी चिन्ता नहीं। अगर मैं कभी तुम्हारे

चरणोंमें अपराध करूँ, तब तुम जो मनमें आये, दण्ड देना, किन्तु एक दिनके लिये भी दूर न भेजो।"

क्षेमङ्करीने कमलाके गालपर अपना दाहना हाथ फेरकर कहा—"यही तो मैं कहती हूँ बेटी। किसी जन्ममें तुम मेरी माँ थी। नहीं तो देखते ही ऐसा बन्धन कैसे हो जाता। अच्छा जाओ बेटी, आज जरा जल्दी सो रहो। सारे दिन एक तरहसे बैठी रही हो।"

कमला अपने सोनेकी कोठरीमें जा दर्वाजा बन्दकर और चिराग बुझाकर जमीनमें बैठ रही। बहुत देर बैठ और बहुत देर सोचनेके बाद उसने मन ही मन कहा—"भाग्यका दोष है, कि जिसपर मैं अपना अधिकार खो चुकी हूं, उसे मैं देखती हुई बैठी रहूँ, यह कैसे होगा?"

सब कुछ छोड़नेके लिये मनके लिये तैयारी करनी पड़ेगी। केवल सेवा करनेके सुयोगको जैसे बने, जी-जानसे बनाये रखना पड़ेगा। भगवान् करें, मैं हँसमुख चेहरेसे सेवा करती रहूं—सिवा इसके और किसीपर निगाह न डालूँ। बहुत दुःख पाया है, अब इसे भी यदि प्रसन्नमुखसे न सहूँगी, मुँहको भारी बनाये रखूँगी, तं सब कुछ गँवाना पड़ेगा।"

ऐसा समझ उसने मनमें बार-बार सङ्कल्प किया कि "मैं कलसे किसी दुःखको मनमें स्थान न दूँगी। जिसमें एक क्षणके लिये भी मुँहपर उदासी न आये। जो आशासे परे है, उसके लिये मनमें कोई कामना न जागने पाये। केवल सेवा करूँगी, जबतक जीवन है, केवल सेवा करूँगी, और कुछ न चाहूँगी, न चाहूँगी।"

इसके बाद कमला सो गई। इधर-उधर करवट बदलते नींद आ गई। रातमें दो तीन बार नींद खुली। नींद खुलते ही उसने उसी मन्त्रको दोहराया,—"मैं कुछ न चाहूँगी, कुछ न चाहूँगी, कुछ न चाहूँगी।" सवेरे वह बिछौनेसे उठते ही हाथ जोड़कर बैठ गई। सारे दिनके लिये उसने अपने मनपर प्रयोगकर कहा—"मैं मरते दमतक

तुम्हारी सेवा करूँगी, और कुछ न चाहूँगी, कुछ न चाहूंगी, कुछ न चाहूँगी।"

यह कह वह जल्दीसे मुँह-हाथ धो, बासी कपड़ा बदलकर नलिनाक्षके उसी छोटे उपासना-गृहमें गई। उसने अपने अञ्चलसे तमाम घर पोंछा और ठीक जगह आसन बिछाकर तेजीसे पैर बढ़ाती गङ्गास्नान करने चली गई। आजकल नलिनाक्षके बहुत अनुरोधसे क्षेमङ्करीने सूर्योदयसे पहले स्नान करने जाना छोड़ दिया है। इसीसे उमेशको लेकर इस असहनीय शीतमें सवेरे कमलाको स्नान करने जाना पड़ा।

स्नान करके लौट आनेपर कमलाने क्षेमङ्करीको प्रसन्नमुख हो प्रणाम किया। उस समय वह स्नान करने जानेकी तैयारी कर रही थीं। उन्होंने कमलासे कहा—"इतने सवेरे क्यों नहाने गईं। मेरे साथ चली होती।"

कमलाने कहा—"आज काम है न माँ! कल शामको जो तरकारी आई है, उसे अभी काट रखती हूँ—और जो बाजारसे लाना बाकी है, वह उमेश जल्दीसे ला देगा।"

क्षेमङ्करीने कहा—"अच्छी बुद्धिमानी की बेटी। समधी जैसे ही आयेंगे, वैसे ही उन्हें खाना तैयार मिलेगा।"

इसी समय नलिनाक्षके बाहरसे आनेपर कमला अपने भीगे बालोंपर जल्दीसे घूँघट खींच घरमें चली गई। नलिनाक्षने कहा—"माँ आज ही तुम स्नान करने चली? सिर्फ कल जरासी अच्छी रही हो।"

क्षेमङ्करीने कहा—"नलिन, अपनी डाक्टरी रहने दे। सवेरे गङ्गास्नान न करनेवाले भी अमर नहीं होते। तुम इस समय बाहर जा रहे हो? जरा जल्दी ही आना।"

नलिनाक्षने पूछा—"क्यों माँ?"

क्षेमङ्करी—कल तुझसे कहना भूल गई थी--आज अन्नदाबाबू तुझे आशीर्वाद करने आयेंगे।

नलिनाक्ष—आशीर्वाद करने आयेंगे ? क्यों एकाएक मुझपर ऐसे प्रसन्न कैसे हो गये ? उनसे तो रोज ही मेरी मुलाकात होती है।

क्षेमङ्करी—कल मैं हेमनलिनीको एक जोड़ा कड़ा देकर आशीर्वाद कर आई हूँ—अब अन्नदाबाबू न करेंगे, तो काम कैसे चलेगा। जो हो, लौटनेमें देर न करना--वह लोग यहाँ ही भोजन करेंगे।

यह कह क्षेमङ्करी स्नान करने चली गई। नलिनाक्ष शिर नीचाकर न जाने क्या सोचता बाहर चला गया।

———

५८

हेमनलिनी रमेशके आगेसे भाग अपनी कोठरीका दर्वाजा बन्दकर बिछौनेपर बैठ गई। पहला आवेग समाप्त होनेपर उसे लज्जाने घेर लिया। "क्यों मैं रमेशबाबूसे सहज रूपमें मिल न सकी। मैं जिसकी आशा नहीं करती। वह क्यों इस तरह अशोभन रूपमें मेरे सामने आता है। विश्वास नहीं, किसीपर विश्वास नहीं। मुझसे इस तरहके काम हो नहीं सकते।"

यह कह उसने जबर्दस्ती उठकर दर्वाजा खोल दिया। बाहर निकल आई—मन ही-मन उसने कहा—"मैं भागूँगी नहीं, मैं जीतूँगी।" फिर रमेश बाबूसे मिलने चली। एकाएक न जाने क्या याद आया। फिर वह कमरेमें गई। ट्रङ्क खोल उसमेंसे क्षेमङ्करीका दिया कड़ा निकालकर पहन लिया और अस्त्र लेकर युद्धमें जानेकी तरह वह दृढ़ताके साथ शिर ऊँचाकर बाहर आई।

अन्नदाबाबूने कहा—"हेम, तुम कहाँ जा रही हो ?"

हेमनलिनीने कहा--"रमेशबाबू नहीं हैं और दादा भी नहीं हैं ?"

अन्नदा—नहीं, वह लोग चले गये।

बहुत जल्द आत्मपरीक्षा हो जानेसे छुटकारा पाकर हेमनलिनीको आराम जान पड़ा।

अन्नदाबाबूने कहा—"तब, अब ?"

हेमनलिनीने कहा—"हाँ, पिताजी, मैं चलती हूँ—मुझे स्नान करनेमें देर न होगी, तुम गाड़ी लानेको कह दो।"

इस तरह हेमनलिनीने निमन्त्रणमें जानेके लिये एकाएक अपने स्वभावके विरुद्ध अत्यन्त उत्साह प्रकट किया। इस उत्साहकी बाढ़को अन्नदाबाबू भूले नहीं, उनका मन और भी उत्कण्ठित हो पड़ा।

हेमनलिनीने चटपट स्नानकर सजधजकर कहा—पिताजी, गाड़ी आ गई ?"

अन्नदाबाबूने कहा—"नहीं, अभी नहीं आई।"

तबतक हेमनलिनी बागमें टहलने लगी। अन्नदाबाबू बरामदेमें बैठ शिरपर हाथ फेरने लगे।

अन्नदाबाबू जब नलिनाक्षके मकान पर पहुँचे, उस समय साढ़े दशसे अधिक समय नहीं हुआ था। उस समयतक नलिनाक्ष भी अपना काम समाप्तकर मकान लौटे नहीं थे। लाचार अन्नदाबाबूकी अभ्यर्थनाका भार क्षेमङ्करीको ही लेना पड़ा।

क्षेमङ्करी अन्नदाबाबूके शरीर और संसारकी तरह-तरहकी बातें उठा मन बहलाये रही—बीच-बीचमें हेमनलिनीकी ओर भी देखती जाती थीं। उस मुँहपर उत्साहका कोई लक्षण क्यों नहीं है ? आनेवाली उक्त घटनाकी सम्भावनासे सूर्योदयके पहले अरुणकी किरणोंकी छटाके सामने उसका मुँह खिल क्यों न उठा ? बल्कि हेमनलिनीकी उड़ी हुई दृष्टिमें उन्हें एक प्रकारकी भावनाका अन्धकार दिखाई दिया।

थोड़ी-सी बात भी क्षेमङ्करीपर चोटकर बैठती है। हेमनलिनीका ऐसा मलिन भाव देख उनका मन दब गया "नलिनाक्षके साथ ब्याह चाहे जिस लड़कीके लिये सौभाग्यकी बात है, किन्तु यह शिक्षाके मदमें मतवाली लड़की मेरे नलिनको अपने योग्य समझ ही नहीं रही है। इतनी चिन्ता और ऐसी दुविधा किसलिये? यह मेरा ही दोष है। बूढ़ी हो गई, फिर भी मैं धीरज न धर सकी। जैसे ही इच्छा हुई, बस सब्र न कर सकी। बड़ी उम्रकी लड़कीके साथ नलिनाक्षका विवाह ठीक किया। फिर भी, उसे अच्छी तरह पहचाननेकी चेष्टा नहीं की। हाय-हाय, पहचाननेके लिये समय भी पास नहीं था। समय ऐसा है कि जल्दीसे सब काम खतम कर लेना चाहिये।

अन्नदाबाबूके साथ बात करते-करते क्षेमङ्करीके मनके भीतर यही सब चिन्ताएँ घूमने लगीं। बातचीत करना उनके लिये कष्टकर हो गया। उन्होंने अन्नदाबाबूसे कहा,--देखिये, विवाहके बारेमें बहुत जल्दीबाजी करनेकी जरूरत नहीं। इन दोनों हीकी उम्र हो गई है, अब यह लोग आप ही विचार कर काम करेंगे, हमलोगोंका जोर देना अच्छा नहीं। अवश्य ही मैं हेमके मनका भाव नहीं समझती—किन्तु मैं नलिनकी बात कह सकती हूं; उसका मन अभीतक ठिकाने नहीं आया है।

यह बात क्षेमङ्करीने विशेषरूपसे हेमनलिनीको सुनानेके लिये ही कहा था। क्योंकि वह दूसरे पक्षको यह नहीं जानने देना चाहती कि हेमनलिनी अप्रसन्न मनसे न जाने क्या सोच रही है और उनका लड़का विवाहके प्रस्तावसे एक दम उछल पड़ा है।

हेमनलिनी आज यहाँ आनेके समय बड़ी चेष्टासे उत्साह लेकर आई थी। इसलिये उसका विपरीत फल हुआ। क्षणिक उत्तेजना गहरी उदासीके रूपमें बदल गयी। जब क्षेमङ्करीने कोठरीमें प्रवेश

किया, तब जिस नई जीवन यात्राकी राहमें वह कदम रखनेको तैयार हुई हैं, उसके सामने उन्हें दुर्गम पहाड़ी रास्ते जैसी झलक दिखाई दे गई।

समस्त शिष्ट बातोंके बीच अपने अविश्वास हेमनलिनीके मनको आज भीतरी ही भीतर व्यथित करने लगा।

इस अवस्थामें जब क्षेमङ्करीने विवाहके प्रस्तावको बहुत कुछ लौटा लिया, तब हेमनलिनीके मनमें दो विपरीत भाव आये। विवाहके बन्धनमें शीघ्र पड़कर अपने संशयसे हिलती हुई दुर्बल अवस्थासे शीघ्र छुटकारा पानेकी इच्छासे वह इस प्रस्तावको शीघ्र पक्का कर लेना चाहती थी—फिर प्रस्तावको टूटते देख उपस्थित विचारसे उसे कुछ आराम भी मिला।

क्षेमङ्करीने यह बात कहते ही निगाहोंसे घूमकर हेमनलिनीके मुँहके भावको समझ लिया। उनके मनमें आया, मानों अब हेमनलिनीके मुँहपर जरा शान्तिकी स्निग्धता आई। इससे उनका मन उसी समय हेमनलिनीसे विमुख हो गया। उन्होंने मन-ही-मन कहा,—"अपने नलिनको मैं इतने सस्तेमें गँवाने चली थी।" नलिनाक्षके आनेमें आज देर होते देख वह मन ही-मन खुश हुईं। उन्होंने हेमनलिनी की ओर देखकर कहा,—'देखती हो नलिनाक्षकी बुद्धि। तुम लोगोंके आनेका हाल उसे मालूम है. फिर भी आया नहीं। आज काम कम करता, तो क्या कुछ बिगड़ जाता। अभी मैं बीमार हो जाऊँ, तो सारा कामकाज छोड़कर घरमें बैठा रहेगा--उससे क्या बनता-बिगड़ता है।"

यह कहती भोजनकी तैयारी देखनेके लिये क्षेमङ्करी कुछ देरकी छुट्टी लेकर उठ गईं। उनकी इच्छा थी, कि हेमनलिनीको कमलासे बातचीतमें लगा वह कुछ देर निरीह वृद्धसे एकान्तमें बातचीत करें।

उन्होंने देखा, कि तैयार भोजन मीठी आँचपर रख कमला रसोई घरके एक कोनेमें बैठी चुपचाप गम्भीर भावसे न जाने क्या सोच रही

है। क्षेमङ्करीने कहा—"ओहो, मैं तो समझी, कि तुम रसोई घरमें बहुत व्यस्त होगी।"

कमलाने कहा—"रसोई तो हो गई है माँ।"

क्षेमङ्करीने कहा—"तब, यहाँ चुपचाप क्यों बैठी हो बेटी। अन्नदा-बाबू बूढ़े आदमी हैं, उनके सामने जानेमें लज्जा कैसी। हेम आई है, उसे अपनी कोठरीमें बुला कुछ देर बातचीतमें मन बहलाओ। मैं बूढ़ी, अपने पास बैठाकर उसे कष्ट क्यों दूँ।"

हेमनलिनीसे टकराकर क्षेमङ्करीका स्नेह कमलापर दूना हो गया है।

कमलाने संकोचमें पड़कर कहा—"माँ, मैं उनके साथ क्या बात-चीत करूँ। वह लिखी-पढ़ी हैं और मैं कुछ नहीं जानती।"

क्षेमङ्करीने कहा—"यह कैसी बात, तुम किसीसे कम नहीं हो बेटी। लिखना-पढ़ना सीखकर कोई अपनेको कितनी ही बड़ी समझे तुमसे बढ़कर आदर पाने लायक कितनी हैं? किताब पढ़नेसे सब विद्वान् हो सकती हैं. किन्तु तुम्हारी जैसी लक्ष्मी होना सबके लिये कठिन है। जाओ, बेटी जाओ, किन्तु तुम्हारा यह कपड़ा। आओ आज उपयुक्त सजावटसे तुम्हें सजा दूँ।"

सभी ओरसे आज क्षेमङ्करी हेमनलिनीके गर्वको छोटा करनेपर उद्यत हुई हैं। रूपमें भी वह उसे एक अल्पशिक्षित लड़कीके आगे मुर्झा देना चाहती हैं। कमलाको आपत्ति करनेका अवसर नहीं मिला। क्षेमङ्करीने अपने निपुण हाथोंसे मनके मुताबिक कमलाका शृंगार किया। फिरोजा रङ्गकी रेशमी साड़ी पहनाई, नये फैशनका बालका पत्ता निकाला—बारबार कमलाके मुँहको इधर-उधर घुमाकर देखा और मुग्ध हो उसके कपालका चुम्बनकर कहा—"आहा, यह रूप तो राजा-के घर लायक था।"

कमला बीच-बीचमें कह बैठी—"माँ, वह लोग अकेले हैं—देर हो रही है।"

क्षेमङ्करीने कहा—"होने दो देर। आज मैं तुम्हारा शृङ्गार किये बिना न मानूँगी।"

सजावट हो जानेपर वह कमलाको साथ लेकर चलीं—"आओ, आओ बेटी, लज्जा न करो। तुम्हें देखकर कालेजमें पढ़नेवाली विदुषी और सुन्दरी लज्जा करेंगी, तुम सबके सामने शिर ऊँचाकर खड़ी हो सकती हो।"

यह कह जिस घरमें अन्नदाबाबू बैठे थे, उसी घरमें क्षेमङ्करी कमलाको जबर्दस्ती खींच ले गईं। जाकर देखा, कि नलिनाक्ष उन लोगोंसे बात कर रहा है। कमलाने जल्द लौट जानेकी तैयारी की, किन्तु क्षेमङ्करीने उसे पकड़ रखा—कहा—"लज्जा काहेकी बेटी, लज्जा कैसी। यह सब अपने ही लोग हैं।"

कमलाके रूप और शृङ्गारसे क्षेमङ्करी अपने मनमें एक प्रकारका गर्व कर रही थीं—उनकी इच्छा थी, कि उसे देखकर सब लोग चौंक पड़ें। पुत्राभिमानिनी माता आज नलिनाक्षके प्रति हेमनलिनीकी अवज्ञाकी कल्पनाकर उत्तेजित हो उठी हैं, आज नलिनाक्षके सामने हेमनलिनीको नीचा दिखा सकनेमें वह खुश हैं।

कमलाको देखकर सब लोग चौंक पड़े। हेमनलिनीने पहले दिन जब उसका परिचय पाया था, उस समय कमलामें कोई सजावट नहीं थी—वह मलिन रूपमें संकुचित हो एक किनारे बैठी थी, वह भी अधिक देर नहीं। उस दिन उसे वह अच्छी तरह देख ही न सकी। आज क्षणभरमें उसे देख विस्मित हो पड़ी। उसने उठकर लजाती हुई कमलाका हाथ पकड़ अपने पास बैठा लिया।

क्षेमङ्करी समझ गईं, कि उनकी जीत हुई—उपस्थित सभामें सभीको मन-ही-मन स्वीकार करना पड़ा, कि ऐसा रूप दैवके प्रसादसे ही मिलता है। तब उन्होंने कमलासे कहा—"जाओ तो बेटी, तुम

हेमको अपने कमरेमें ले जाकर बातचीत करो। तबतक मैं खानेका बन्दोबस्त करूँ।"

कमलाके मनमें एक आन्दोलन उपस्थित हुआ। वह सोचने लगी,—"कौन जाने, कि हेमनलिनी मुझे कैसी लगेगी।"

यही हेमनलिनी एक दिन इस घरकी बहू होकर आयेगी, मालकिन बन जायगी--उसके सौभाग्यसे कमला उपेक्षा नहीं कर सकती। इस मकानकी गृहिणीका पद तो उसका ही था, किन्तु उस बातको वह याद भी नहीं करना चाहती--डाहको भी वह किसी तरह मनमें स्थान देना नहीं चाहती--उसका कोई दावा नहीं। इसीसे हेमनलिनीके साथ जाते उसका पैर काँप गया।

हेमनलिनीने धीरे-धीरे कमलासे कहा,--"तुम्हारी सब बातें मैंने माँसे सुनी हैं। सुनकर मुझे बहुत ही कष्ट हुआ। तुम मुझे अपनी बहनके समान समझना जी। तुम्हारी कोई बहन है।"

कमलाने हेमनलिनीके सस्नेह और करुण कण्ठस्वरको सुन धीरजके साथ कहा,—"मेरी सगी बहन कोई नहीं है, मेरी एक चचेरी बहन है।"

हेमनलिनीने कहा—"मेरी कोई बहन नहीं। जब मैं छोटी थी, तभी मेरी मां मर गई। कितने ही दुःख-सुखके समय चिन्तामें पड़ी, कि मां तो नहीं है, फिर भी अगर मेरी एक बहन होती। बचपनसे ही सब बातें मनमें दबा रखना पड़ा है; अन्तमें ऐसा अभ्यास हो गया है, कि आज मन खोलकर मैं कोई बात कर ही नहीं सकती। लोग समझते हैं, कि मैं बड़ी अभिमानिनी हूँ—लेकिन कभी अपने मनमें यह बात न लाना। मेरा मन पागल जैसा हो गया है।"

कमलाके मनसे सब बाधाएँ दूर हो गईं--उसने कहा,—"दीदी, मैं तुम्हें अच्छी लगूँगी, मुझे तो तुम जानती हो, मैं बिलकुल मूर्ख हूँ।"

हेमनलिनीने हँसकर कहा—"जब तुम मुझे अच्छी तरह जानोगी, तब समझोगी, कि मैं भी मूर्ख हूँ। मैं केवल कुछ किताबें रट चुकी हूँ, और कुछ नहीं जानती। इसीसे तुमसे कहती हूँ, कि अगर मेरा इस घरमें आना हो, तो तुम मुझे कभी न छोड़ना। मुझे भय होता है, कि किसी दिन गृहस्थीका भार मुझपर पड़ेगा।"

कमलाने बालकों जैसे सरल चित्तसे कहा—"भार सब तुम मुझपर लाद देना। मैं बचपनसे ही काम करती आई हूँ, मैं किसी भारको लेनेसे नहीं डरती। हम दोनों बहन मिलकर गृहस्थी चलायेंगी—तुम उन्हें सुखसे रखना, मैं तुम लोगोंकी सेवा करूँगी।"

हेमनलिनीने कहा—"अच्छा, तुमने अपने पतिको तो अच्छी तरह देखा नहीं, उनकी याद है?"

कमलाने इस बातका साफ जवाब न देकर कहा—"स्वामीकी भी याद होती है, यह मैं नहीं जानती थी बहन। जब मैं चाचाके घर आई, तब अपनी चचेरी बहन शैल दीदीके साथ मेरा परिचय हुआ। वह अपने पतिकी जिस तरह सेवा करती हैं, उसे देख मुझे पहले पहल चैतन्य हुआ। यह कहना ही ठीक है, कि मैंने अपने पतिको कभी देखा नहीं। किन्तु मैं नहीं कह सकती, कि मेरे मनकी भक्ति उनकी ओर कैसे गई। भगवान्‌ने मुझे उस पूजाका फल दिया है—अब मेरे पति मेरे मनके आगे स्पष्ट रूपसे जाग उठे हैं; उन्होंने मुझे ग्रहण नहीं किया, तो न सही, मैंने अब उन्हें पा लिया है।"

कमलाकी यह भक्तिसिंचित बातें सुन हेमनलिनीका हृदय भर आया। उसने कुछ देर चुप रहनेके बाद कहा—"तुम्हारी बातको मैं अच्छी तरह समझ रही हूँ। इसी पानेको पाना कहते हैं। और कुछ पाना लोभका पाना है—वह नष्ट हो जाता है।"

नहीं कह सकते, कि कमला इस बातको अच्छी तरह समझी या नहीं। वह हेमनलिनीकी ओर देखती रह गई। कुछ देर बाद उसने

कहा,—"तुम जो कहती हो दीदी, वह सच ही है। मैं मनमें कोई दुःख आने नहीं देती—इसीमें मैं अच्छी तरह हूँ। मैंने जो पाया है, वही मेरा लाभ है।"

हेमनलिनीने कमलाका हाथ अपने हाथमें लेकर कहा,—"जब त्याग और लाभ, दोनों बराबर हो जाता है, तब वही यथार्थ लाभ है; यह बात मेरे गुरुकी कही है। सच कहती हूँ बहन, तुम्हारी ही तरह सब निवेदन करनेमें जो सार्थकता है, वही यदि मुझे मिले, तो मैं धन्य होऊँ।"

कमलाने कुछ विस्मित होकर कहा,—क्यों दीदी, तुम तो सब कुछ पाओगी, तुम्हें तो किसी बातका अभाव न रहेगा।"

हेमनलिनीने कहा,—"जो पाना, पाना है, उसे ही पानेपर सुखी हो सकती हूँ—उससे अधिक जो पाया जाता है, उसमें बहुत भार और बहुत दुःख है। मेरे मुँहसे यह सब बातें तुम्हें विचित्रतासी जान पड़ेंगी तुम्हें पाकर मेरा हृदय हलका हुआ है—मुझे बल मिला है—इसीसे मैं इतना बोल रही हूँ। मैं कभी बात करना नहीं जानती—तुम कैसे मुझसे सब बातें कहलाये लेती हो?"

———

५६

क्षेमङ्करीके पाससे लौटकर हेमनलिनीने अपने बैठकके टेबिलपर एक बड़ीसी चिट्ठी पाई। लिफाफेके ऊपरका हस्ताक्षर देखकर ही समझ गई, कि चिट्ठी रमेशकी लिखी है। काँपते हुए हाथसे चिट्ठीको उठा वह अपनी सोनेकी कोठरीका दर्वाजा बन्दकर पढ़ने लगी।

चिट्ठीमें रमेशने कमलाकी सारी कहानी विस्तारके साथ लिखी थी। उपसंहारमें उसने लिखा—

"तुम्हारे साथ मेरे जिस बन्धनको ईश्वरने दृढ़ कर दिया था, उसे संसारने तोड़ डाला है। तुमने अब दूसरेको चित्त समर्पण किया है—इसके लिये मैं तुम्हें कोई दोष नहीं दे सकता—तुम भी मुझे दोष न देना। यद्यपि मैंने एक दिन भी कमलाके साथ स्त्री जैसा व्यवहार नहीं किया, तथापि क्रमशः उसने मनको आकर्षित कर लिया था, इस बातको तुम्हारे सामने मुझे स्वीकार करना चाहिये। आज मेरा हृदय किस अवस्थामें है, उसे मैं भी निश्चय नहीं समझता। अगर तुम मुझे त्याग न करतीं, तो तुममें मैं आश्रय पा सकता। इसी आशासे मैं अपना पागल चित्त लेकर दौड़ा-दौड़ा तुम्हारे पास आया था। किन्तु आज जब मैंने स्पष्ट देखा, कि तुम मुझसे घृणाकर मेरे सामनेसे विमुख हुई हो, जब सुना, कि—दूसरेसे विवाह करनेमें तुमने अपनी सम्मति दे दी है, तब मेरा मन भी हिल उठा। देखा, कि अभीतक कमलाको पूरी तरहसे भूल नहीं सका हूँ। भूलूँ या न भूलूँ, उससे संसारमें सिवा मेरे और किसीका कोई नुकसान नहीं। मेरा ही नुकसान कैसा! संसारमें जिन दो रमणियोंको मैं हृदयसे ग्रहण कर सका हूँ, उन्हें भूलनेकी ताकत मुझमें नहीं और उन्हें चिरजीवन याद करते रहनेमें ही मेरा लाभ है। आज सवेरे जब तुम्हारी मुलाकातसे बिजली जैसी चोट खाकर बासेमें लौटा, तब एकबार मन-ही-मन कहा, कि मैं अभागा हूँ। किन्तु अब मैं यह स्वीकार नहीं करूँगा। मैं सरलचित्तसे आनन्दके साथ तुमसे बिदा होना चाहता हूँ—मैं परिपूर्ण हृदय हो तुमसे बिदाई लूँगा। तुम्हारे कल्याण और विधाताके कल्याणसे मैं अपने हृदयमें इस बिदाईके समय किसी प्रकारकी दीनताका अनुभव न करूँ। तुम सुखी रहो, तुम्हारा मङ्गल हो। मुझसे तुम घृणा न करना—मुझपर घृणा करनेका कोई कारण भी तो नहीं है।"

अन्नदाबाबू कुरसीपर बैठे किताब पढ़ रहे थे। एकाएक हेमनलिनीको देख वह चौंक पड़े—कहा,—"हेम, क्या तुम्हारी तबीयत खराब है?"

हेमनलिनीने कहा,—"खराब नहीं है। पिताजी, रमेशबाबूकी एक चिट्ठी मिली है। यह लो, पढ़नेके बाद मुझे वापस कर देना।"

यह कहती हेमनलिनी चिट्ठी देकर चली गई। अन्नदाबाबूने चश्मा लगाकर दोबार चिट्ठी पढ़ी—इसके बाद उसे हेमनलिनीके पास वापस भेज बैठे-बैठे विचार करने लगे। अन्तमें सोचकर उन्होने स्थिर किया, कि यह एक प्रकारसे अच्छा ही हुआ है। पात्रके हिसाबसे रमेशकी अपेक्षा नलिनाक्ष बहुत प्रार्थनीय है। इससे जो रमेश आप ही हट गया, यह अच्छा हुआ।"

यह सोच ही रहे थे, उसी समय नलिनाक्ष आ पहुँचा। उसे देख अन्नदाबाबू कुछ आश्चर्यमें आये। आज उस समय नलिनाक्षसे बहुत देरतक बात हुई है, फिर कई घण्टे बीतते-बीतते वह कैसे आ गया। वृद्धने मन-ही-मन हँसकर यह ठहराया, कि हेमनलिनीकी ओर नलिनाक्षका मन आकर्षित हुआ है।

वह किसी बहाने हेमनलिनीके साथ नलिनाक्षकी मुलाकात करानेकी बात सोच रहे थे, ऐसे समय नलिनाक्षने कहा,—"अन्नदाबाबू, मेरे साथ आपकी कन्याके विवाहका प्रस्ताव हुआ है। इस बातके बहुत आगे बढ़नेसे पहले मेरा जो कर्त्तव्य है, उसे मैं कहना चाहता हूँ।"

अन्नदाबाबूने कहा,—"ठीक है, यह तो होना ही चाहिये।"

नलिनाक्षने कहा,—"आप नहीं जानते, कि मेरा विवाह पहले ही हो गया है।"

अन्नदाबाबूने कहा,—"जानता हूँ। किन्तु—"

नलिनाक्ष—आप जानते हैं, यह सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। लेकिन उसकी मृत्यु हो गई है, आप ऐसा ही अनुमान करते होंगे। मैं निश्चय नहीं कह सकता। किन्तु मेरा विश्वास है, कि वह जीवित है।

अन्नदाबाबूने कहा,—"ईश्वर करे, कि यही सत्य हो। हेम, हेम!"

हेमनलिनीने आकर कहा,—"क्या है पिताजी!"

अन्नदाबाबू—रमेशने तुम्हें जो चिट्ठी लिखी है, उसका कुछ अंश "

हेमनलिनीने वह चिट्ठी नलिनाक्षके हाथमें देकर कहा,—इस चिट्ठीका सब कुछ उन्हें पढ़कर देखना चाहिये।" यह कहती हुई हेमनलिनी चली गई।

चिट्ठी समाप्तकर नलिनाक्ष स्तब्ध हो बैठे रह गये। अन्नदाबाबूने कहा,— 'ऐसी शोचनीय घटना संसारमें प्रायः नहीं ही होती। चिट्ठी देकर आपके हृदयमें चोट पहुँचाई गई। किन्तु इसे छिपाना भी हमलोगोंका अन्याय था।

नलिनाक्षने कुछ देर बैठ-उठकर अन्नदाबाबूसे विदा माँगा। जानेके समय उत्तरके बरामदेमें समीप ही हेमनलिनी खड़ी दिखाई दी।

हेमनलिनीको देख नलिनाक्षके मनको चोट पहुँची। यह जो नारी स्तब्ध हो खड़ी है, उसको स्थिर शान्तिमूर्ति उसके हृदयको कैसे सँभाले हुए है? इसके समझनेका कोई उपाय नहीं, कि इस समय उसके मनमें क्या हो रहा है—नलिनाक्षकी उसे कोई जरूरत है या नहीं, इसका जवाब मिलना भी कठिन है। नलिनाक्ष पीड़ित चित्त हो सोचने लगा, कि इसे किसी तरहका धीरज दिया जा सकता है या नहीं। किन्तु मनुष्य मनुष्यके लिये दुर्भेद्य व्यवधान है। मन भी कैसा भयङ्कर अकेला है।

नलिनाक्षने विचार किया कि जरा घूमकर वह बरामदेके सामने गाड़ीपर सवार हो—मनमें आया, कि शायद हेमनलिनी उससे कुछ पूछ बैठे। जब वह बरामदेके सामने आया, तब देखा, कि हेमनलिनी बरामदेसे हटकर कोठरीमें चली गई। हृदयके साथ हृदयका साक्षात् सहज नहीं है, मनुष्यके साथ मनुष्यका सम्बन्ध सरल नहीं है, यही सब सोच-विचार करते भाराक्रान्तचित्तसे नलिनाक्ष गाड़ीपर सवार हुए।

नलिनाक्षके चले जानेपर योगेन्द्र आ पहुँचा। अन्नदाबाबूने पूछा—"क्यों योगेन्द्र, अकेले कैसे ?"

योगेन्द्रने कहा—"सुनूँ तो, तुम और किसकी प्रत्याशा कर रहे हो?"

अन्नदाबाबूने कहा—"क्यों, रमेश ?"

योगेन्द्र—उसकी पहले दिनकी अभ्यर्थना ही क्या भले आदमीके लिये यथेष्ट नहीं थी ? काशीकी गङ्गामें कूदकर अगर उसे शिवत्व प्राप्त नहीं हुआ, तो और क्या हुआ, यह मैं निश्चय नहीं कह सकता। कलसे अबतक उससे मुलाकात नहीं हुई। टेबिलके ऊपर एक कागजमें लिखा पाया "भागता हूँ—तुम्हारा रमेश।" ऐसी कविताओंका मुझे कभी भी अभ्यास नहीं। इसलिये मुझे भी यहाँसे भागना पड़ा—मेरी हेडमास्टरी ही अच्छी—उसमें सब साफ-साफ है—अन्धेरा कहीं नहीं।

अन्नदाबाबूने कहा—"हेमके लिये तो कुछ स्थिर—"

योगेन्द्र—अब यह सब क्यों। मैं स्थिर करता रहूँ और तुम लोग अस्थिर करते रहो, यह खेल अधिक दिन अच्छा नहीं लगता। मुझे अब किसी पचड़ेमें न डालो। जिसे मैं अच्छी तरह समझ नहीं सकता, उसकी मुझे बर्दाश्त भी नहीं। एकाएक नासमझ बन जानेकी जो अद्भुत क्षमता हेममें है, वह मुझे कुछ काबूमें ले आती है। कल सवेरेकी गाड़ीसे मैं बिदा हो जाऊँगा, राहमें बाँकीपुरमें कुछ काम है।

अन्नदाबाबू चुपचाप बैठे अपना माथा सुहलाने लगे। संसारकी समस्या फिर उलझनमें पड़ गई।

६०

शैलजा और उसके पिता नलिनाक्षके घर आये हैं। शैलजा कमलाको लेकर एक कोनेमें चुपचाप बात कर रही थी। क्षेमङ्करीसे चक्रवर्ती बातें कर रहे थे।

चक्रवर्ती—मेरी छुट्टी तो पूरी हो गई—कल गाजीपुर जाना पड़ेगा। यदि हरिदासी आप लोगोंको किसी तरह तङ्ग करती हो—यदि वह आपके लिये—

क्षेमङ्करी—यह कैसी बात चक्रवर्ती महाशय। आपका मतलब तो मैं सुनूँ। आप क्या किसी बहानेसे लड़कीको लौटा ले जाना चाहते हैं?

चक्रवर्ती—मुझे ऐसा आदमी न समझियेगा। मैं देकर लौटानेवाला आदमी नहीं—लेकिन यदि आपको किसी तरहकी असुविधा हो—

क्षेमङ्करी—चक्रवर्त्ती महाशय, आपकी यह बातें सरल नहीं हैं—आप मन ही-मन अच्छी तरह जानते हैं, कि हरिदासी जैसी लक्ष्मीको अपने पास रखनेमें असुविधाकी सीमा नहीं, फिर भी—

चक्रवर्त्ती—नहीं-नहीं, अब कुछ कहनेकी जरूरत नहीं—मैं पकड़ गया। यह तो आपके मुँहसे हरिदासीका गुण सुननेके लिये एक बहाना था। किन्तु एक चिन्ता है—कहीं नलिनाक्षबाबू यह न समझ बैठें कि यह एक भार कहाँसे ऊपर आ पड़ा। मेरी लड़की बहुत अभिमानिनी है, यदि नलिनाक्षकी जरा भी विरक्ति उसे दिखाई दी, तब उसके लिये बहुत कठिन हो जायगा।

क्षेमङ्करी—राम कहो, नलिनको चिढ़? उसकी मजाल क्या है?

चक्रवर्त्ती—यह बात सही है। किन्तु देखिये, हरिदासीको हमलोग प्राणसे भी अधिक चाहते हैं। इसीसे मन उसके बारेमें थोड़ेमें सन्तुष्ट नहीं होता। नलिनाक्ष उससे विरक्त न हों साथ ही उदासीन भी न रहें इतना भी हमलोगोंके लिये यथेष्ट नहीं। जब हरिदासी उनके घर है, तब उसे वह अपनी समझकर स्नेह करें, ऐसा न होनेसे मनमें बहुत संकोच होता है। वह घरकी दीवार तो है नहीं, वह भी मनुष्य है। उसपर विरक्त भी न हों और स्नेह भी न करें, वह है तो है, इतना ही सम्बन्ध है; यह न जाने कैसा—

क्षेमङ्करी—चक्रवर्त्ती महाशय, आप अधिक चिन्ता न करें—किसी आदमीको आपका आदमी समझकर स्नेह करना नलिनके लिये कठिन नहीं। बाहरसे कुछ समझमें नहीं आता, किन्तु यह जो हरिदासी हमारे यहाँ है, वह कैसे स्वच्छन्दमें रहे और कैसे उसका भला हो, यह चिन्ता निश्चय नलिनके मनमें लगी हुई है, खूब सम्भव है, ऐसी कोई न कोई व्यवस्था भी वह करें, और हमलोगोंको उसकी खबर भी न हो।"

चक्रवर्त्ती--यह सुनकर मैं बहुत निश्चिन्त हुआ। फिर भी मैं जानेसे पहले एक बार विशेषरूपसे नलिनाक्षबाबूसे कुछ कह जाना चाहता हूँ। एक स्त्रीका पूरा भार ले सके, ऐसे पुरुष संसारमें थोड़े ही हैं—भगवान्‌ने जब नलिनाक्षबाबूको यथार्थ पौरुष दिया है, तब वह मिथ्या संकोचमें हरिदासीको अलग छोड़कर न चलें, वह यथार्थ आत्मीयकी तरह बहुत सहजरूपमें उसे ग्रहण करें और उसकी रक्षा करें, मैं उनसे यही प्रार्थना किया चाहता हूँ।

नलिनाक्षके प्रति चक्रवर्त्तीका ऐसा विश्वास देख क्षेमङ्करीका मन पिघल गया। उन्होंने कहा—"कहीं आप कुछ खयाल न करें, इस भयसे मैं हरिदासीको नलिनाक्षके सामने उतना निकलने नहीं देती—किन्तु अपने लड़केको मैं जानती हूँ, उसपर विश्वासकर आप निश्चिन्त रह सकते हैं।"

चक्रवर्त्ती—तब आपके सामने में सब बातें खोलकर कह दूँ। सुना है, कि नलिनाक्षबाबूके विवाहका प्रस्ताव हो रहा है—बहूकी उम्र भी कम नहीं है और उसकी शिक्षा-दीक्षा हमारे समाजके साथ मेल भी नहीं खाती। इसीसे सोच रहा था, कि शायद हरिदासी—"

क्षेमङ्करी—मैं इतना समझती हूँ। ऐसा होनेसे चिन्ता किस बातकी थी। किन्तु वह विवाह न होगा।

चक्रवर्त्ती--सम्बन्ध टूट चुका है?

क्षेमङ्करी—सम्बन्ध हुआ ही नहीं, तब टूटेगा क्या। नलिनकी तो बिलकुल इच्छा नहीं थी, मैं ही जिद कर रही थी। किन्तु उस जिदको मैंने भी छोड़ दिया है। जो होनेवाला नहीं, उसे जबर्दस्ती करनेमें मङ्गल नहीं। नहीं जानती, कि भगवान्‌की क्या इच्छा है—देखती हूं, कि मरनेसे पहले बहू देखकर जा न सकूँगी।

चक्रवर्त्ती—ऐसी बात न कहिये। हम लोग हैं किस लिये? शादी-की बिदाई और मिठाई खाये बिना मैं छोड़ूँगा?

क्षेमङ्करी—आपके मुँहमें फूल-चन्दन पड़े चक्रवर्त्ती महाशय मेरे मनमें बहुत दुःख है, कि नलिन इस उम्रमें मेरे ही कारण संसार-धर्ममें प्रविष्ट नहीं हो सका। इसीसे मैं बहुत घबराकर चारो ओर देख एक सम्बन्ध कर बैठी थी—वह आशा भी त्याग चुकी हूँ, किन्तु अब जरा आपलोग चिन्ता करें। देर न करें—क्योंकि मैं अधिक न जिऊँगी।

चक्रवर्त्ती—यह कहनेसे सुनेगा कौन। आपको बचना भी होगा और बहूका मुँह भी देखना पड़ेगा। आपको जैसी बहूकी जरूरत है, उसे मैं समझता हूं। बहुत छोटी होनेसे भी काम न चलेगा, फिर भी वह आपपर भक्ति और श्रद्धा करनेवाली हो और मानकर चले—नहीं तो वह हमलोगोंके पसन्द न आयेगी। इसके लिये आप कुछ चिन्ता न करें—ईश्वरकी कृपासे वह सब ठीक ही है। अब अगर आज्ञा दें तो एकबार हरिदासीको उसके कर्त्तव्यके सम्बन्धमें दो चार उपदेश दे मैं चलूँ—अभी शैलको भी यहाँ भेजे देता हूँ—आपको देखनेके बादसे उसके मुँहसे आपकी प्रशंसा ही निकलती रहती है।

क्षेमङ्करीने कहा—नहीं, आप तीनों ही एक कोठरीमें चलकर बैठिये, मुझे कुछ काम है।

चक्रवर्त्तीने हँसकर कहा—"संसारमें आपको काम है, इसीलिये हमलोगोंका कल्याण है। कामका परिचय निश्चय यथासमय मिलेगा।

नलिनाक्षबाबूके बहूके कल्याणसे ब्राह्मणके भाग्यमें मिठाई बदी है।"

चक्रवर्तीने शैल और कमलाके पास आकर देखा, कि कमलाकी दोनों आँखोंमें अभीतक आँसू भरे हैं। चक्रवर्त्तीने शैलजाके पास बैठ चुपचाप उसके मुँहकी ओर एकबार देखा। शैलने कहा,—"पिताजी, मैं कमलसे कह रही थी, कि नलिनाक्षबाबूसे सब बातें खोलकर कहनेका यही समय है; इसीपर तुम्हारी यह नासमझ हरिदासी मुझसे झगड़ा करती है।"

कमला बोल उठी,—"नहीं दीदी, नहीं, तुम्हारे पैर पड़ती हूँ—तुम ऐसी बात जुबानपर न ले आओ। यह किसी तरह न होगा।"

शैलने कहा,—"क्या तुम्हारी बुद्धि है? तुम चुप बैठी रहो और नलिनाक्षबाबूसे हेमनलिनीका विवाह हो जाय। विवाहके दूसरे दिनसे आजतक तो सब तरहकी अघटन घटनामें जब मरी जा रही हो, तो अब और एक नये विपदकी जरूरत है।"

कमलाने कहा,—"दीदी, मेरी बात किसीसे कहने लायक नहीं है। मैं सब सह लूँगी, किन्तु यह लज्जा नहीं सह सकती। मैं जैसी हूँ, बहुत अच्छी हूँ, मुझे कोई दुःख नहीं है; किन्तु अगर सब बातें प्रकट कर दोगी, तब मैं किस मुँहसे एक दण्डके लिये भी इस घरमें रह सकती हूँ? तब मैं कैसे जिऊँगी?"

शैल इस बातका कोई जवाब न दे सकी। किन्तु इसी कारण हेमनलीनीके साथ नलिनाक्षका विवाह हो जाय, इसे भी चुपचाप सहना कठिन है।

चक्रवर्त्तीने कहा,—"जिस विवाहकी बात कह रही हो, उसके बारे में यह क्या प्रमाण है, कि वह होगा ही।"

शैल—क्या कहते हो पिताजी, नलिनाक्षबाबूकी माँ आशीर्वाद दे कर आई हैं।

चक्रवर्त्ती—विश्वेश्वरके आशीर्वादसे वह आशीर्वाद फँस गया है। बेटी कमल, तुम्हें कोई भय नहीं, धर्म तुम्हारा सहायक है।

कमला सब बातोंको स्पष्ट न समझ दोनों आँखें फाड़ चाचा महाशयके मुँहकी ओर देखने लगी।

उन्होंने कहा,—"उस विवाहका सम्बन्ध टूट चुका है। उस विवाहपर नलिनाक्षबाबू राजी नहीं हैं और उनकी माके माथेमें भी सुबुद्धि आ गई है।"

शैलजाने बहुत खुश होकर कहा—"बच गई बाबा। कल यह समाचार सुनकर मुझे नींद नहीं आई। जो हो, किन्तु क्या कमल अपने घरमें सदा इसी तरह बितायेगी? कब सब सफाई हो जायगी?"

चक्रवर्त्ती—घबराती क्यों है शैल! जब ठीक समय आयेगा, तब सब आप ही हो जायगा।

कमलाने कहा,—"अभी जो हो गया है वही सहज है—इससे सहज और क्या हो सकता है। मैं बड़े सुखमें हूँ, मुझे इससे अधिक सुख देने जाकर कहीं मेरे भाग्यको घुमा न देना चाचा। मैं तुम लोगोंके पैर पड़ती हूँ, तुम लोग कोई कुछ न कहो। मुझे इस घरके एक कोनेमें फेंक भूल जाओ। मैं बड़े सुखसे हूँ।" कहते-कहते कमलाकी दोनों आँखोंसे आँसू बहने लगे।

चक्रवर्त्तीने घबराकर कहा,—"यह क्या बेटी, रोती क्यों है। तुम जो कह रही हो, उसे मैं अच्छी तरह समझता हूँ। तुम्हारी इस शान्तिमें हमलोग हाथ नहीं डालना चाहते। विधाता आप ही धीरे-धीरे जो कर रहे हैं, हम लोग नासमझीकर क्या उसे मट्टी कर दें? कोई डर नहीं है। मेरी इतनी उम्र हुई, मैं क्या शान्त हो रह नहीं सकता।"

इसी समय हंसता हुआ उमेश घरमें दाखिल हुआ।

चाचाने पूछा,—क्या है रे उमेश, क्या खबर है।"

उमेशने कहा,—"रमेशबाबू नीचे खड़े हैं, डाक्टरबाबूको पूछ रहे हैं।"

कमलाका मुँह पीला पड़ गया। चाचा जल्दीसे उठ बैठे। उन्होंने कहा,—"कोई भय नहीं बेटी! मैं सब ठीक किये देता हूँ।

चाचाने नीचे आकर रमेशका हाथ पकड़के कहा,—"आइये रमेश बाबू, राहमें घूमते फिरते मैं आपसे कुछ बातें करूँगा।"

रमेश बाबूने आश्चर्यमें आकर कहा,—"चाचा महाशय, आप यहाँ कहाँसे आये?"

चाचाने कहा,—"आपके लिये ही हूँ—बहुत अच्छा हुआ, कि मुलाकात हो गई। आइये, अब देर नहीं है, कामकी बात समाप्त कर ली जाय।" कहते हुए रमेशको रास्तेमें कुछ दूर खींच ले जाकर कहा,—"रमेशबाबू, आप इस मकानमें किसलिये आये हैं?"

रमेशने कहा,—"डाक्टर नलिनाक्षसे मिलने आया हूँ। मैंने स्थिर किया है, कि उनसे कमलाका सारा किस्सा कह दिया जाय। मेरा मन बार-बार कहता है, कि शायद कमला जीवित है।"

चाचाने कहा,—"अगर कमला जीती ही हो और यदि नलिनाक्षसे उसकी मुलाकात हो, तब आपके मुँहसे नलिनाक्षके सब इतिहास सुननेपर क्या सुबिधा होगी। उनकी बूढ़ी माँ हैं, उनके यह सब बातें जाननेपर क्या कमलाके हकमें अच्छा होगा?"

रमेशने कहा,—"मैं नहीं समझ सकता, कि सामाजिक रूपमें क्या फल होगा। किन्तु नलिनाक्षको यह तो मालूम होना चाहिये, कि कमलाको किसी अपराधने स्पर्श नहीं किया है। अगर कमला मर गई होगी, तब भी नलिनाक्षबाबू उसकी स्मृतिका तो सम्मान करेंगे।"

चाचाने कहा,—"आप लोगोंके आजकलके व्यवहारको मैं समझ नहीं सकता—कमला मर ही गई हो, तो उसकी एक रातकी यादको लेकर खींच-तान करनेकी कोई जरूरत नहीं। वह जो मकान दिखाई

दे रहा है, उसीमें हमलोग रहते हैं। कल सवेरे जरा आप आ सकें, तो आपसे सब बातें साफ-साफ कहूँ। किन्तु मेरा अनुरोध है, कि इससे पहले आप नलिनाक्षसे न मिलें।"

रमेशने कहा,—"अच्छा।"

चाचाने लौटकर कमलासे कहा,—"कल सवेरे तुम्हें मेरे घर चलना पड़ेगा। मैंने ठीक किया है कि वहाँ तुम खुद रमेशबाबूको सब समझा देना।"

कमला शिर नीचा किये बैठी रही। चाचाने कहा,—"मैं निश्चय समझता हूं, कि ऐसा न होनेसे काम न चलेगा—आजकलके लड़कोंकी समझ पुराने लोगोंकी समझसे नहीं मिलती। बेटी, मनसे सङ्कोचको दूर कर दो। अब यहाँ तुम्हारा अधिकार है, यहाँ और किसीको पैर न रखने देना, यह काम तुम्हारा है। इसमें हमलोगोंका जोर न चलेगा।'

कमला तबतक शिर झुकाये ही रही। चाचाने कहा,—"बेटी बहुत कुछ सफाई हो गई है, अब छोटे-मोटे कतवारको झाड़कर फेंक देनेमें सङ्कोच न करना।"

इसी समय पैरकी आवाज सुन कमलाने शिर उठाकर देखा, कि दरवाजेके सामने ही नलिनाक्ष हैं। एकाएक उसकी आँखोंसे नलिनाक्षकी आँखें मिल गईं—अन्य दिन जैसे नलिनाक्ष तुरत निगाह फेरकर चला जाता था, आज वैसा नहीं किया। यद्यपि क्षणभरके लिये ही उसने कमलाकी ओर देखा, किन्तु उसकी क्षणभरकी दृष्टिने कमलाके मुँहपर न जाने क्या असर किया। अन्य दिनकी तरह उसने अनाधिकार सङ्कोचसे देखनेकी वस्तुसे लापरवाही नहीं की। इसके बाद ही शैलजाको देख चले जानेपर तैयार होते ही चाचाने कहा,—"नलिनाक्षबाबू, भागिए नहीं – आपको मैं अपना आत्मीय ही समझता हूं। यह मेरी लड़कीकी

आपने दया की है।" शैलने नलिनाक्षको नमस्कार किया और नलिनाक्षने भी प्रति नमस्कार किया—"आपकी लड़की अच्छी है?"

शैलजाने कहा—"अच्छी है।"

चाचाने कहा—"आप ऐसा मौका ही नहीं देते, कि आपको वह अच्छी तरह देख सके, आज आ गये हैं, तो जरा बैठिये।"

नलिनाक्षको बैठाकर चाचाने देखा, कि कमला वहाँसे न जाने कब हट गई है।

इसी समय क्षेमङ्करीने आकर कहा—"चक्रवर्ती महाशय, कष्ट करके जरा उठिये।"

चक्रवर्तीने कहा—जब आप कामसे चली गईं, तबसे ही मैं कष्ट करके यहाँ बैठा हुआ हूँ।"

भोजन समाप्त होनेपर चक्रवर्ती महाशयने बैठकमें बैठकर कहा—"जरा बैठिये, मैं आता हूँ।" इसके बाद ही कमलाका हाथ पकड़कर वह उसे नलिनाक्ष और क्षेमङ्करीके सामने ले आये, उनके पीछे-पीछे शैलजा भी आई।

चक्रवर्तीने कहा—"नलिनाक्षबाबू, आप मेरी हरिदासीको पराई समझकर सङ्कोच न कीजियेगा—इस दुःखिनीको मैं आपलोगोंके घर ही छोड़े जाता हूँ—इसे पूरी तरहसे अपना लीजियेगा, इसे और कुछ नहीं देना होगा, अपने सब लोगोंकी सेवा करनेका अधिकार दीजियेगा। आप लोग निश्चय समझें, कि यह जानबूझकर कभी अपराध न करेगी।"

कमला लज्जासे लाल मुँह किये सिर झुकाये बैठी रही। क्षेमङ्करीने कहा—"चक्रवर्त्ती महाशय, आप कुछ भी चिन्ता न करें, हरिदासी मेरे घरकी ही लड़की हुई। उसे अपनी ओरसे कभी कोई सौंपनेकी जरूरत नहीं पड़ती। इस मकानकी रसोई और भण्डार घरमें

अबतक मेरा ही शासन प्रबल था, अब मैं कोई नहीं। नौकर-चाकर भी अब मुझे गृहिणी नहीं समझते। कैसे धीरे-धीरे मेरी यह हालत हुई, इसकी मुझे खबर भी नहीं। मेरी कई चाबियाँ थीं, उन्हें भी कौशलसे हरिदासीने अपना लिया है—चक्रवर्त्ती महाशय, आप अपनी इस डकैत लड़कीके लिये और क्या चाहते हैं, यह कहिये? अब सबसे बड़ी डकैती तो यह होगी, जब आप कहेंगे, कि मैं लड़कीको ले जाता हूँ।"

चक्रवर्त्तीने कहा—मैं कहूँ भी, तो क्या लड़की डिगेगी? यह न सोचियेगा। उसे आप लोगोंने ऐसा फुसला लिया है, कि आज आप लोगोंके अतिरिक्त वह संसारमें और किसीको जानती भी नहीं। दुःखमें इतने दिन बाद आप लोगोंके पास ही उसे शान्ति मिली है—भगवान उसकी इस शान्तिको निर्विघ्न बनायें; हमारा यही आशीर्वाद है, कि आपलोग सदा उससे प्रसन्न रहें।"

कहते-कहते चक्रवर्त्तीकी आँखोंमें आँसू आ गये। नलिनाक्ष कुछ न कह चुपचाप चक्रवर्त्तीकी बातें सुनते रहे। जब सब लोग विदा हो गये, तब वह धीरे-धीरे अपनी कोठरीमें गया। उस समय जाड़ेके सूर्यास्तकाल उसके शयनगृहको नये विवाह जैसी लाल छटासे रँग हुए था। उस लालीने नलिनाक्षके रोम-रोमसे प्रवेशकर उसके हृदयको रँग डाला।

आज सवेरे नलिनाक्षके किसी हिन्दुस्तानी मित्रके यहाँसे एक टोकरी गुलाबका फूल आया था। घरकी सजावटके लिये हेमङ्करीने वह टोकरी कमलाके हाथ दे दी थी। नलिनाक्षके सोनेकी कोठरीके एक किनारे फूलदानीसे उन गुलाबोंकी खुशबू उसके मस्तिष्कमें बसने लगी। उस निस्तब्ध कोठरीकी खिड़कीसे सन्ध्याकी लालीके साथ गुलाबकी खुशबूने नलिनाक्षके मनको बावला बना रखा था। अबतक उसके लिये संसारमें चारों ओर संयमकी शान्ति थी,

ज्ञानकी गम्भीरता थी, आज वहाँ एकाएक सुरीली नौबत बज उठी—किसी अदृश्य नाचके पैरोंकी गतिसे घुँघुरूकी झनकारसे मानो आकाश आज चञ्चल हो उठा।

नलिनाक्षने खिड़कीसे हट घरकी ओर देखा, उसके बिस्तरके सिरहाने इधर-उधर गुलाबके फूल सजाये हुए हैं। यह फूल न जाने किसकी आँखोंकी तरह उसकी ओर देख रहे थे, वह फूल निःशब्द अपनेको अर्पण करते हुए उसके हृदयके दर्वाजेपर झुक पड़े।

नलिनाक्षने इनमेंसे एक फूल उठा लिया—वह सोने जैसा पीला गुलाब था, अभी पँखड़ियाँ खुली नहीं थीं, किन्तु सुगन्ध छिपाये छिपता नहीं था। उस गुलाबको हाथमें लेते ही मानो किसीकी उँगलीने उसकी उँगलीसे स्पर्श किया, उसने उसके शरीरकी मुलायम नसोंको झनकारकर बजा दिया। नलिनाक्ष उस स्निग्ध कोमल फूलको अपने मुँह और आँखकी पँखड़ियोंपर फेरने लगा।

देखते-देखते सन्ध्याके आकाशमें सूर्यास्तकी आभा मिल गई। नलिनाक्षने घरसे बाहर निकलनेके पहले एकबार अपने बिछौनेके पास जा शय्याके चादरको उलट दिया और सिरहानेके तकियेपर गुलाबके फूलको रख दिया। रखकर जैसे ही पलटा, वैसे ही चारपाईके उस किनारे जमीनपर कोई अञ्चलसे मुँह ढाँके लज्जासे जमीनमें मिली जाती हुई दिखाई दी। हायरे कमला, लज्जाका कोई ठिकाना नहीं। आज वह फूलदानीमें फूल सजा और बिछौना दुरुस्तकर लौट रही थी, इसी समय नलिनाक्षके पैरकी आवाज सुन जल्दीसे चारपाईके उस किनारे छिप गई—उस समय भागना भी असम्भव था, छिपना भी कठिन था। इस तरह ढेरकी ढेर लज्जाके सहित वह जमीनमें ऐसे एकान्तभावमें पकड़ा गई।

नलिनाक्ष इस लज्जाधुरको मुहलत देनेके लिये कोठरीसे बाहर

निकल जानेको तैयार हुआ। दर्वाजेतक जाकर जरा खड़ा हो गया। कुछ देर न जाने क्या सोचकर फिर धीरे-धीरे लौट आया—उसने कमलाके सामने खड़े होकर कहा—"तुम उठो मुझसे तुम्हें लज्जाकी जरूरत नहीं।"

६१

दूसरे दिन सवेरे ही कमला चाचाके घर पहुँची। जैसे ही निर्जनमें जरा फुरसत मिली, वैसे ही वह शैलजासे लिपट गई—शैलने कमलाकी ठोड़ी पकड़कर कहा—"क्या बहन, इतनी खुश क्यों हो?"

कमलाने कहा—"मैं नहीं जानती दीदी, किन्तु मेरे मनमें हो रहा है, कि मानो मेरे जीवनका सब बोझ दूर हो गया है।"

शैल—कहो न, सब बातें मुझसे कहो। अभी तो कल शामतक मैं रही, इसके बाद क्या हुआ।

कमला ऐसी कोई बात नहीं हुई। किन्तु मेरे मनमें ऐसा हो रहा है, कि मैंने उन्हें पा लिया—मानो भगवान् मुझपर सदय हुए हैं।

शैल—ऐसा ही हो बहन, किन्तु मुझसे कुछ छिपाना नहीं।

कमला—छिपाने लायक कोई बात ही नहीं है बहन, क्या कहने जा रही थी, वह भी याद नहीं आ रही है। रात बीत जाने और सवेरा होनेपर मेरे मनने कहा, कि मेरा जीवन सार्थक हो गया है—मेरा समस्त दिन मीठा हो गया है, मेरे सब काम ऐसे हलके हो गये हैं, कि कुछ कहा नहीं जाता। मैं इससे अधिक और कुछ नहीं चाहती। भय होता है, कि कहीं यह भी नष्ट न हो जाय। मेरे मनमें यह कभी आया ही नहीं, कि मैं ऐसे सुखसे दिन बिताऊँगी और भाग्य इतना प्रसन्न होगा।

शैल—मैं जो कहती हूँ बहन, तेरा भाग्य इतना ही देकर तुझे धोखा न देगा—तुझे जो मिलना है, वह सब तुझे मिलेगा।

कमला—नहीं-नहीं दीदी, ऐसा न कहो—मैं सब पा चुकी हूँ—मैं विधाताको कोई दोष नहीं देती—मुझे कोई कमी नहीं।

इसी समय चाचाने आकर कहा—"बेटी, तुम्हें जरा एकबार बाहर आना होगा—रमेशबाबू आये हैं।"

चाचा अभीतक रमेशसे बातें कर रहे थे। वह रमेशसे कह रहे थे,—"आपका कमलासे जो सम्बन्ध है, उसे मैं जानता हूँ। अब आपको मेरी यही सलाह है, कि आपका जीवन अब साफ हो गया है; अब आप कमलाकी सब बातें भूल जाइये। कमलाके सम्बन्धमें यदि कहींसे कोई गाँठ खोलनेकी जरूरत हो, वह भार विधातापर छोड़िये, अब आप हाथ नहीं लगा सकते।"

रमेशने इसके जवाबमें कहा था,—"कमलाके साथ सारा सम्बन्ध परित्याग करनेसे पहले नालिनाक्षसे सब हाल कहे बिना मेरा छुटकारा नहीं। इस संसारमें कमलाकी बातोंका सब प्रयोजन दूर हो गया है और नहीं भी हुआ है—यदि न हुआ हो, तो मुझे उससे कुछ कहना है, उसे कहकर मैं छुट्टी पा जाऊँगा।"

चाचाने कहा,—"अच्छा आप जरा बैठिये, मैं अभी आता हूं।"

रमेश मुहँ फेरकर खिड़कीकी राहसे सड़ककी ओर देख रहा था—कुछ देर बाद पैरकी आवाजसे सतर्क हो उसने पलटकर देखा, कि कोई रमणी भूमिमें माथा टेक उसे प्रणाम कर रही है। जब वह प्रणाम करके उठी, तब रमेश बैठा न रहा···चटपट उठकर उसने कहा,—"कमला।" कमला चुपचाप खड़ी रही।

चाचाने कहा,—"रमेशबाबू, कमलाके सारे दुःख सौभाग्यमें परिणत कर ईश्वरने उसके चारों ओरके कुहरेको काट दिया है। आपने बहुत बड़े सङ्कटके समय उसकी जैसी रक्षा की है, उसके लिये आपको

बहुत दुःख उठाना पड़ा है। इसलिये आपसे सम्बन्ध तोड़नेके समय बिना कुछ कहे कमला बिदा नहीं हो सकती। आज यह आपसे आशीर्वाद लेने आई है।"

रमेशने कुछ देर चुप रह जोरसे गला साफ करनेके बाद कहा,—"तुम सुखी हो कमला—मैंने जान या अजानमें जो कुछ अपराध किया है, उसे माफ करना।"

कमला इसके जवाबमें कुछ भी कह न सकी— वह दीवारके सहारे खड़ी रही।

कुछ ठहरकर फिर रमेशने कहा,—"अगर किसीसे कुछ कहनेके लिये या किसी बाधाको दूर करनेके लिये तुम्हें मेरी जरूरत पड़े, तो मुझसे कहना।

कमलाने हाथ जोड़कर कहा,—"मेरी बातें किसीसे न कहियेगा, मेरी यही प्रार्थना स्वीकार करें।"

रमेशने कहा,—"बहुत दिन हुए, तुम्हारी बात किसीसे कही नहीं—खूब झमेले आनेपर भी मैंने चुपचाप अपने दिन काटे हैं। कुछ दिन हुए, जब मैंने सोचा कि तुम्हारी बात कहनेसे कोई हर्ज न होगा, तब मैंने केवल एक परिवारके आगे तुम्हारी बात प्रकट की है। उससे भी शायद तुम्हारा अनिष्ट न होकर फायदा ही होगा। शायद चाचाजी-को यह खबर मिली हो,—अन्नदाबाबूकी लड़की—"

चाचाने कहा,—"हेमनलिनी, मैं जानता हूँ। आपकी सब बातें उसने सुनी हैं?"

रमेशने कहा,—"हाँ, उन लोगोंसे यदि आप और कुछ कहनेकी जरूरत समझें, तो मैं जा सकता हूँ—किन्तु अब मेरी इच्छा नहीं होती मेरा बहुत समय नष्ट गया और भी बहुत कुछ बिगड़ा, अब मैं छुट-कारा चाहता हूँ—रुपये-पैसे सब चुकताकर अब मैं हट जाऊँ, तो जीमें जी आये।"

चाचाने रमेशका हाथ पकड़कर स्नेहके साथ कहा,—"नहीं रमेश-बाबू, अब आपको कुछ न करना होगा। आपने बहुत भार उठाया, अब भारसे हलके होकर अपनेको स्वाधीन भावसे चलाइये, मेरा आशीर्वाद है, कि आप सुखी हों सार्थक हों।"

जानेके समय रमेशने कमलाकी ओर देखकर कहा,—"मैं जाता हूँ।"

कमलाने कुछ न कह फिर एक बार जमीनमें माथा टेककर प्रणाम किया।

रमेश बाहर निकल स्वप्नमें पड़े आदमीकी तरह चलते-चलते सोचने लगा,—"कमलासे मुलाकात हुई, अच्छा ही हुआ, मुलाकात न होनेसे यह अध्याय अधूरा रह जाता। यद्यपि मैं ठीक नहीं समझ सका, कि कमला क्या जान और क्या समझकर उस रात एकाएक गाजीपुरके बँगलेसे चली आई, तथापि यह समझमें आ गया, कि मेरी अब कोई जरूरत नहीं। अब मेरी आवश्यकता मेरे जीवनके साथ है। अब उस जीवनके साथ ही मैं संसारमें बाहर निकलता हूँ—अब मुझे पीछे फिरकर देखनेकी कोई जरूरत नहीं।"

६२

कमलाने अपने मकान पलटकर देखा, कि अन्नदाबाबू और हेमनलिनी चेमङ्करीके पास हैं। कमलाको देख चेमङ्करीने कहा—"यह हरिदासी आई, अपनी सखीको तुम अपने कमरेमें ले जाओ बेटी। मैं अन्नदाबाबूको चाय पिलाती हूँ।"

कमलाके कोठरीमें पहुँचते ही हेमनलिनीने उसके गलेमें हाथ डालकर कहा,—"कमला।"

कमलाने बहुत विस्मित होकर कहा,—"तुमने कैसे जाना, कि मेरा नाम कमला है ?"

हेमनलिनीने कहा,—"एक आदमीसे मैंने तुम्हारे जीवनकी सब घटनाएँ सुनी हैं, उसी समय मेरे मनमें आया, कि तुम्हीं कमला हो। कैसे, यह नहीं कह सकती।"

कमलाने कहा,—"मेरी यह इच्छा नहीं है, कि कोई मेरा वह नाम जाने। मुझे स्वयं अपने नामपर धिक्कार उत्पन्न हो गया है।"

हेमनलिनी—लेकिन उसी नामके जोरसे तो तुम्हें तुम्हारा अधिकार मिलेगा।"

कमलाने सिर हिलाकर कहा,—"मैं ऐसा नहीं समझती। मेरा जोर कुछ भी नहीं, मेरा अधिकार कुछ नहीं, मैं जोर लगाना भी नहीं चाहती।"

हेमनलिनीने कहा—"किन्तु अपने पतिको तुम अपने परिचयसे वञ्चित कैसे रखोगी ? क्या अपनी भलाई-बुराई सब उनके आगे निवेदन न करोगी ? उनसे कुछ छिपानेसे काम चलेगा ?"

एकाएक कमलाका मुँह उतर गया—वह कोई जवाब न पा निरुपाय हो हेमनलिनीके मुँहकी ओर ताकने लगी। धीरे-धीरे कमलाने जमीनमें बिछी चटाईपर बैठकर कहा,—"भगवान् तो जानते हैं, मैंने कोई अपराध नहीं किया है, तब भगवान् क्यों मुझे ऐसी लज्जामें डालेंगे। जब मैंने पाप नहीं किया, तब मुझे दण्ड क्यों मिलेगा। मैं कैसे उनके सामने अपनी सब बातें प्रकट करूँगी ?"

हेमनलिनीने कमलाका हाथ पकड़कर कहा,—"दण्ड नहीं जी, तुम्हारा छुटकारा होगा। जबतक तुम, अपने पतिसे अपनेको छिपाये हुई हो, तबतक तुम अपनेको एक झूठे बन्धनसे जकड़ रही हो—उसे अपने तेजसे काट डालो, ईश्वर तुम्हारा मङ्गल करेंगे।

कमलाने कहा,—"कहीं पीछे सब खो न बैठूँ, यही भय जब मनमें आता है, तब सब बल गायब हो जाता है। किन्तु तुम जो कहती हो, उसे मैं समझ रही हूँ—भाग्यमें जो बदा हो, वह हो, किन्तु उनके आगे अपनेको छिपानेसे काम न चलेगा—वह मेरा सब कुछ जानेंगे ही।" यह कहते-कहते उसने जोरसे अपनी दोनों मुट्ठी बन्द कर ली।

हेमनलिनीने करुणाके साथ कहा,—"क्या तुम चाहती हो, कि और कोई उनसे सब कह दे?"

कमलाने सिर हिलाकर कहा,—नहीं-नहीं, और किसीकी बात वह न सुनेंगे—मैं अपनी बात आप ही उनसे कहूँगी—मैं कह सकूँगी।"

हेमनलिनीने कहा,—"यही बात ठीक है। नहीं मालूम, कि अब तुम्हारे साथ मेरी मुलाकात होगी या नहीं। हमलोग यहाँसे जाते हैं, तुमसे यही कहने आई हूँ।"

कमलाने पूछा,—"कहाँ जाओगी?"

हेमनलिनीने कहा —"कलकत्ते, तुम लोगोंको सबेरे बहुत काम है, अब हम लोग हर्ज न पहुँचायेंगे। मैं जाती हूँ। बहनको याद रखना।"

कमलाने उसका हाथ पकड़कर कहा,—"मुझे चिट्ठी लिखती रहना, कि अब क्या करना चाहिये। मैं जानती हूँ, कि तुम्हारी चिट्ठीसे मुझे बल मिलेगा।"

हेमनलिनीने जरा हँसकर कहा,—"मुझसे अच्छा उपदेश देनेवाला आदमी तुम्हें मिलेगा, इसके लिये चिन्ता न करना।"

आज हेमनलिनीके लिये कमलाके मनमें बहुत ही वेदना जान पड़ने लगी। हेमनलिनीके प्रशान्त मुखपर कैसा भाव था, उसे देख कमलाकी आँखोंमें आँसू आने लग गया था। किन्तु हेमनलिनीमें कैसा दूरत्व है—उसकी कोई बात कही नहीं जाती, उससे कुछ पूछनेकी हिम्मत भी नहीं होती। आज कमलाकी सब बातें हेमनलिनीके आगे

प्रकट हो गई है, किन्तु वह अपनी सुगंभीर निस्तब्धताके साथ छिपी हुई चली गई, केवल छोड़ क्या गई, जो बलवान गोधूलिके समान अपरिमेय है और विषादके वैराग्यसे परिपूर्ण है।

घरके कामोंकी फुरसतके समय आज सारे दिन हेमनलिनीकी बातें और उसके शान्त सकरुण आँखोंका भाव कमलाके मनमें आक्रमण करने लगा। कमला हेमनलिनीकी और किसी बातसे वाकिफ नहीं थी—केवल यही जानती है, कि नलिनाक्षके साथ उसका विवाहका सम्बन्ध होकर टूट गया। हेमनलिनीने आज अपने बागसे फूलोंका एक गुच्छा लाकर दिया था और फूल दिये थे। तीसरे पहर उसपर पानी छिड़क वह माला बनाने बैठ गई। बीचमें एकबार क्षेमङ्करीने आकर उसके पास बैठ एक ठण्डी साँस लेकर कहा,—"आहा बेटी, आज हेम जब मुझे प्रणामकर चली गई, उस समय मैं नहीं कह सकती, कि मेरा मन कैसा होने लगा। जो हो, हेम है अच्छी लड़की। आज मेरे मनमें आ रहा है, कि यदि उसे अपनी बहू बनाती, तो सुखी ही होती। जरा पहले ऐसा मालूम होता, तो सब हो जाता—किन्तु अपने लड़केसे तो पार पाना कठिन है—उसने क्या समझकर मुँह फेरा, यह वही जाने।"

क्षेमङ्करीने यह छिपा नहीं रखा, कि अन्तमें वही विवाहके प्रस्तावसे विमुख हुई थीं।

बाहर पैरका शब्द सुन क्षेमङ्करीने कहा,—"ए नलिन, जरा सुन।"

कमलाने झटपट अंचलमें फूल और माला ढँक माथे पर कपड़ा खींच लिया। नलिनाक्षके आनेपर क्षेमङ्करीने कहा,—"हेम तो आज चली गई—तुमसे मुलाकात नहीं हुई?"

नलिनने कहा,—"मैं तो उन्हें गाड़ीपर चढ़ाके आ रहा हूँ।"

क्षेमङ्करीने कहा,—"चाहे जो कहो बेटा, हेम जैसी लड़की अधिक नहीं दिखाई देतीं।"

मानो नलिनाक्ष अबतक इस बातका प्रतिवाद करता आया हो। नलिनाक्ष चुपचाप जरा हँस दिया।

क्षेमङ्करीने कहा,—"तू हँसा क्यों। मैंने तेरे साथ हेमका सम्बन्ध ठीक किया था; आशीर्वादतक कर आई, और तूने सब जिद करके मट्टी कर दिया। अब क्या तेरे मनमें कुछ पछतावा नहीं हो रहा है।"

नलिनाक्षने एक बार चौंककर कमलाके मुँहकी ओर देखा, कमला उत्सुकताके साथ उसकी ओर देख रही थी। आँखें चार होनेपर कमलाने लज्जासे सिर झुका लिया।

नलिनाक्षने कहा,—"माँ, तुम्हारा लड़का क्या ऐसा सत्पात्र है कि तुम्हारे सम्बन्ध ठहरानेसे ही सब काम हो जायगा। मेरे जैसे नीरस और गम्भीर आदमीको क्या कोई सहज ही पसन्द कर सकता है?"

इस बातपर कमलाकी आँख फिर ऊपरको उठी। उसने देखा, कि नलिनाक्षकी हँसीसे चमकती हुई आँखें उसीपर पड़ रही हैं—इस बार कमलाके मनमें आया, कि यहाँसे भागूँ तो जान बचे।

क्षेमङ्करीने कहा,—"जा जा, बकवाद न कर, तेरी बात सुनकर मुझे क्रोध आता है।"

बस, सभा भङ्ग हो गई। कमलाने हेमनलिनीके दिये सब फूलोंकी एक माला बना डाली। फूल की डलियामें उस मालेको रख पानीसे छींटा देकर उसे उसने नलिनाक्षके उपासना-गृहमें रख दिया। उसके मनमें आया, कि आज बिदा होकर जानेके दिन इसीलिये हेमनलिनी डाली भर फूल ले आई थी। यह सोचकर उसकी आँखोंमें पानी आ गया।

इसके बाद अपनी कोठरीमें लौटकर वह अपनी और नलिनाक्षकी दृष्टिके बारेमें विचार करने लगी। नलिनाक्ष कमलाको क्या समझता है? कमलाके मनकी सब बातें मानो नलिनाक्षके आगे प्रकट हो गई हैं। कमला जब पहले नलिनाक्षके सामने नहीं आती थी, तब वह

एक तरहसे अच्छी थी। अब नित्य कमला उसके आगे पकड़ जाती थी। अपनेको छिपाकर रखनेकी यही सजा है। कमला सोचने लगी,—"निश्चय ही नलिनाक्ष मन ही मन कहते होंगे, कि इस हरि-दासी लड़कीको कहाँसे ले आई; ऐसी निर्लज्ज तो देखी नहीं। नलिनाक्ष यदि एक क्षणके लिये भी ऐसा सोचे, तो यह असह्य है।"

कमलाने अपने बिछौनेपर लेट मन ही मन प्रतिज्ञा की, कि कल जैसे हो, अपना परिचय दे दूँगी। इसके बाद जो होना होगा, होगा।

दूसरे दिन कमला सबेरे उठकर स्नान करने गई। स्नानके बाद प्रतिदिन वह एक छोटी लोटियामें गङ्गाजल लाकर नलिनाक्षके उपासना-गृहको धो-पोंछकर तब दूसरा काम करती थी आज भी उसने सबेरेका काम करने जाकर देखा, कि नलिनाक्ष आज सवेरे ही सवेरे उस कोठरीमें पहुँच गये हैं—ऐसा तो कभी नहीं होता था। कमला अपने मनमें असमाप्त कामका बोझ ले धीरे-धीरे चली गई। कुछ दूर जाकर वह एकाएक ठहर गई—चुपचाप खड़ी हो उसने कुछ सोचा। इसके बाद फिर लौटकर उपासना-गृहके दर्वाजेपर बैठ गई। मानो उसे किसीने घेर लिया; जिसे वह समझ नहीं सकती। सारा संसार उसके सामने छायाके समान हो गया, समय कब बीत गया, उसे उसकी खबर नहीं। एकाएक उसने देखा कि नलिनाक्ष कोठरीसे निकल उसके सामने खड़े हो गये हैं। कमलाने क्षणभरमें खड़ी हो जमीनमें घुटने टेक एकदम नलिनाक्षके पैरोंपर अपना माथा रख दिया—उसके नहाये हुए गीले बाल नलिनाक्षके पैरोंको ढँक जमीनपर लोटने लगे। कमला प्रणाम करके उठी और पत्थरकी मूर्तिकी तरह चुपचाप खड़ी हो गई। उसे इसकी याद न रही, कि उसके माथेसे कपड़ा हट गया है—वह यह देख ही न सकी, कि नलिनाक्ष उसकी ओर स्थिर स्निग्ध दृष्टिसे देख रहे हैं। उसका बाहरी ज्ञान जाता रहा, उसने भीतरी चैतन्यकी आभासे अपूर्व दीप्ति प्राप्तकर अविचलित कपटसे कहा,—"मैं हूं कमला।"

यह बात कहते ही उसकी अपनी आवाजसे उसका ध्यान भङ्ग हो गया। उसकी एकाग्र चेतना बाहर फैल पड़ी। उस समय उसका सर्वाङ्ग काँपने लगा—माथा झुक गया—वहाँसे हिलनेकी शक्ति भी न रह गई, खड़ी रहना भी मुश्किल हो गया। उसने अपने समस्त बल, समस्त प्रणको मैं कमला हूँ कहकर नलिनाक्षके पैरोंपर उभल दिया—अपने पास अपनी लज्जा रखनेका भी कोई उपाय उसने हाथमें नहीं रखा। अब सब कुछ नलिनाक्षकी दयापर निर्भर है। नलिनाक्षने धीरे-धीरे उसके हाथको अपने हाथमें लेकर कहा,—"मैं जानता हूँ, कि तुम मेरी कमला हो, आओ, मेरी कोठरीमें आओ।"

उपासना गृहमें ले जाकर नलिनाक्षने उसके गलेमें उसके ही गूँथे हुए माले को पहना दिया और कहा—"आओ, हमलोग उन्हें प्रणाम करें।' दोनों आदमियोंने पास ही पास खड़े हो जब जमीनपर सिर झुकाया, उस समय खिड़कीसे सूर्यकी किरणें आकर उन दोनोंके सिरपर पड़ीं।

प्रणाम करके और फिर एकबार नलिनाक्षके पैरोंकी धूलि माथेसे लगाकर जब कमला खड़ी हुई; तब उसकी असहनीय लज्जाने उसे तकलीफ नहीं दी। हर्षका उल्लास नहीं, किन्तु एक बहुत बड़ी मुक्तिकी अचंचल शान्तिने उसके अस्तित्वको सवेरेकी साफ-निर्मल रौशनीके साथ व्याप्त कर दिया। एक गंभीर भक्ति उसके हृदयके कोने-कोनेमें परिपूर्ण हो उठी, उसके हृदयकी पूजाने समस्त संसारको धूपकी पवित्र सुगन्धिसे भर दिया। देखते देखते न जाने कब उसकी आँखें आँसुओंसे भर आईं—बड़ी-बड़ी बूँदे उसके गालोंसे लुढ़क पड़ीं, जो रोके रुकती ही नहीं, उसके अनाथ जीवनका समस्त दुःख मेघ बनकर आज आनन्दसे बरस गया। नलिनाक्ष उससे और कुछ न कहकर एकबार सिर्फ दाहने हाथसे के मुँहपर पड़े गीले बालोंको हटाकर बाहर चला गया।

कमला अपनी पूजा अभीतक समाप्त कर न सकी—वह अपने

परिपूर्ण हृदयकी धाराको अब भी बहाना चाहती है—इसलिये उसने नलिनाक्षकी कोठरीमें जाकर अपने गलेकी माला खड़ाऊँपर लपेट दिया और उसे अपने माथेसे लगा यथास्थान रख दिया।

इसके बाद सारे दिनका काम उसे देवसेवाके समान जान पड़ने लगा। उसके हरेक काम मानो आकाशमें एक एक आनन्दकी लहरके समान होने लगे। क्षेमङ्करीने उससे कहा,—"बेटी, तुम क्या कर रही हो? क्या एक ही दिनमें सारे मकानको धो-पोंछकर साफकर डालोगी।"

तीसरे पहर आज सिलाई न करके कमला अपनी कोठरीमें जमीनमें चुपचाप बैठी है, इसी समय नलिनाक्षने एक टोकरीमें कई स्थलपद्मके फूल लेकर प्रवेश किया। कहा,—"कमला, इन कई फूलोंको तुम पानीसे ताजा कर रखो, आज सन्ध्या समय हम दोनों माँको प्रणाम करने चलेंगे।"

कमलाने सिर झुकाकर कहा,—"किन्तु मेरी सब बातें, तो तुमने सुनीं नहीं।"

नलिनाक्षने कहा,—'तुम्हें कुछ कहनेकी जरूरत नहीं, मैं सब जानता हूँ।"

कमलाने दाहने हाथसे मुँह ढँककर कहा,—"माँ क्या" कहकर वह इस बातको पूर्ण कर न सकी।

नलिनाक्षने उसके मुँहसे हाथको हटाकर कहा,—"माँ मेरे जीवनमें अनेक अपराधोंको क्षमा कर आई हैं, जो अपराध नहीं है, उसे वह क्षमा कर सकेंगी।"

———

नारी-धर्म-शिक्षा

लेखिका, श्रीमती मनव्रता देवी। अपनी सहधर्मिणी को शिक्षित बनाकर अपने घरको स्वर्गरूप देखना चाहते हैं, तो 'नारी-धर्म-शिक्षा' की एक प्रति अवश्य मँगा लीजिए। स्त्रियों के लिये जिन बातों के जानने की नितान्त आवश्यकता है, वे सब इसमें सरल भाषा में मिलेंगी। यह पुस्तक अपने घरकी देवियों को जरूर पढ़ाइये। परिणाम देखकर आप चकित हो जायँगे मूल्य सिर्फ २)

कन्या-शिक्षा-दर्पण

अविवाहिता कन्याओं के योग्य पुस्तकों का हिन्दी में एक प्रकार से अभाव-सा है। इसीसे यह पुस्तक ऐसे ढंग से लिखी गयी है कि कुमारी कन्याएँ इसे खूब दिलचस्पीके साथ पढ़ शिक्षा प्राप्त करें। इसमें तन्दुरुस्ती की शिक्षा है, रोगों से बचने के उपाय हैं, गाँव-घर-वालोंके साथ वर्त्ताव करने की रीति है, कुमारी देवियों की अलौकिक जीवनियाँ हैं, चिट्ठी-पत्री लिखने की रीति है, देश और धर्म का ज्ञान है, गुणवती बनने की विधि है, नैतिक-सुधार का उपदेश है, और हैं व्यायाम-शिक्षाएँ तथा जीवन के बहुत से उपयोगी विषय। यदि आप अपनी कन्या का जीवन यशस्वी बनाना चाहें, तो अवश्य उन्हें पढ़ने को दें। इससे वे बहुत लाभ उठा सकती हैं। मूल्य सचित्र ।॥)

ब्रह्मचर्य की महिमा

अपने भोले-भाले बच्चों को तथा कुसंग में फँसकर अपना सर्वनाश कर लेनेवाले नवयुवकों को आप सतेज, बली और कान्तिमान देखना चाहते हैं, तो एकबार 'ब्रह्मचर्य की महिमा' नाम की पुस्तक अवश्य उनके हाथ में दीजिये। उनके सब ऐब इस पुस्तक के पढ़ते ही लोप हो जायँगे। वे ऐसे सुधर जायँगे कि आप आश्चर्य करने लगेंगे। मूल्य सिर्फ १॥ ८ वीं बार छपी है—

पता—शङ्कर सिंह,

हिन्दी-पुस्तकालय, बुलानाला, बनारस।

पढ़ने योग्य पुस्तकें

योगी अरविन्द लिखित ६ पुस्तकें

१ अरविन्द-मन्दिरमें १)
२ धर्म और जातीयता १॥)
३ गीताकी भूमिका १)
४ हमारी स्वतन्त्रता कैसीहो?१।)
५ योग साधन ॥।)
६ क्या भारत सभ्य है ॥)

७ मिलन-मन्दिर ४)
८ नारी-धर्म शिक्षा २)
९ ब्रह्मचर्यकी महिमा १॥)
१० कुत्सित-जीवन १॥)
११ कांग्रेसका इतिहास स० २॥)
१२ साम्यवादका बिगुल १।)
१३ आँखकी किरकिरी ४)
१४ कहानी पुञ्ज ४)
१५ फासिज्म १।)
१६ ट्रुबाडुर्स फ्रीडम १।)
१७ लव् लेटर्स सजिल्द ६)
१८ स्त्री-सङ्गीत गायन ॥।)
१९ आश्रम गीताञ्जलि ॥।)
२० उर्दूके कवि और उनका काव्य ३॥)
२१ हिन्दीके वर्तमान कवि और उनका काव्य ३॥)
२२ कांग्रेसके गायन =)
२३ ईश वन्दना =)
२४ बच्चोंके गीत " =)
२५ दिलके तराने =)
२६ कन्या-शिक्षा दर्पण ॥।)
२७ दहेज (सचित्र) २॥)
२८ किसान सुख साधन १॥)
२९ क्रांति युगकी चिनगारियाँ २)
३० ठकुरानी बहूकी बाजार २)
३१ कोकशास्त्र ४)
३२ देवदास २)
३३ हरिकीर्तन और प्रार्थना ॥)
३४ गीताञ्जलि ४)

हिन्दीकी उत्तमोत्तम पुस्तकोंके मिलनेका पता—

शंकरसिंह,

हिन्दी-पुस्तकालय,

बुलानाला, बनारस।